

प्रवागव
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम सम्बरण
स० २०३१
११०० प्रतियाँ

मूल्य—७५-००



मुद्रक
शम्भुनाथ बाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं बेवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरम्भ किया, अपितु ऐसे गुरु गभीर आयोजन भी आरम्भ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अम्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत घरती में गड़ धन की भांति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८६४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समर्थावित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यंत आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को पूर्ण रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह प्रथम खंड प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत प्रसन्नता से रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरम्भ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय-समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक भ्रष्ट लेखकों और ज्ञात लेखकों के भ्रष्ट ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अवलम्बनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का सचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लांघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एवं मूलधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध भ्रम—छंद, भ्रमकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरित्री में गड़ी हुई संपत्ति की तरह बेपटन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूंदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर दशव्यापी खोज आरम्भ हुई। रामल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बर्मी तथा मद्रास की प्रेसीडेसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध सत्ताओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्न से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक भ्रष्ट लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक भ्रष्ट ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक भ्रष्ट ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की धीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त हो रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और घनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिए हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रायत्ता पर केंद्रीय सरकार ने विचार लिया और इसने संपादन और प्रकाशन के लिए अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसका संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसका कमठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयों में बांटा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, भाषा, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, काश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र, यज्ञ, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपराक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण काष्ठों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं त्रयसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविषय की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रा या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूरा है, अपूर्ण है या वर्तमान ग्रंथ का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शेषक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सबको शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमचंद मिश्र, मयानाथ मिश्र, पारमनाथ पांडेय, वृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद गुप्त, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और धन प्रशस्नीय रहा है अतः य सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों का निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

काष्ठों के तैयार हो जाने पर इसने संयोजन और संपादन के निमित्त श्रीधीरज त्रिपाठी जी से सहयोगीय अनुरोध किया गया। उन्होंने इस स्वीकार किया और दो बार दिन आए भी पर भय में वे हमसे एकदम बिरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह प्रथम खंड है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग २,५०० ग्रंथों का विवरण आ सका है जो पूर्वोक्त विधि से संकलित हैं।

इसमें आयुर्वेद के १८८, उपनिषद् के १५८, बर्मबाह के १,१७१, शोश के ११३, गीता के २०४, तथा ज्योतिष के ४८६ ग्रंथों का विवरण प्रकाशित है। इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशन के क्रम में है। अंतिम खंड में परिशिष्ट में उन ग्रंथों का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो संपादनक्रम में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रंथ पुष्पचिह्नान्वित (●) हैं।

संस्कृत में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रंथ हिंदी में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रंथों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रंथ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय

प्रधान मंत्री,

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

विषयनिर्देश

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठसंख्या
१.	ब्राह्मवैद	२-५६
२.	उपनिषद्	५६-१००
३.	कर्मकांड	१००-४३५
४.	बोश	४३६-४६७
५.	गीता	४६८-५२६
६.	ज्योतिष	५२६-६५७

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या मुद्रांकन की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विषय संग्रह पर विशेष है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
✓ १	७२४१	ग्रंजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ २	३८१३	अजीर्ण मजरी	श्री—?		दे० का०	दे०
३	३६६	अपामार्जन			दे० का०	दे०
✓ ४	६४१७	अर्क चिकित्सा	रावण (लकानाथ)		दे० का०	दे०
✓ ५	३७२४	अथर्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✗ ६	३३६६	अथर्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✗ ७	६५६७	अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स द	६	१०	१०	
२२७ X ६२ से० मी०	१३ (१-१३)	१०	३२	५०	प्राचीन	इति श्री मदनन समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
१६४ X ८७ से० मी०	८ (१-८)	७	२७	५०	संवत्— १८४०	इति श्री वासिराज परमहंस परि- ब्राजकाचार्य श्री विरचितं अजोगर्ममजरा- समाप्त ॥ शुभमस्तु । संवत् १८४० भाद्रपदकृष्ण एकादस्या सतिदिन ॥ लिपित मंगलशौन ॥
२१ X १० से० मी०	१२ (१-१२)	६	२४	अपूर्०	प्राचीन	
२४६ X १११ से० मी०	१८ (१-१८)	११	४३	अपूर्०	प्राचीन	इति लक्षण य वृत्तात् विविक्ता नावीषधविधान चतुष्टयतया X X ॥
२४७ X १२२ से० मी०	१२ (१-१२)	६	२७	अपूर्०	प्राचीन	इति नकुलरुते अश्वचिकित्सित लक्षण नामाध्याय पद्य ॥ (पत्र संख्या ६) X X X
२४४ X ११८ से० मी०	११ (१३ २३)	६	२६	अपूर्०	संवत्— १८२७	इति श्री नकुलरुते अश्वचिकित्सितविषा- ध्यायश्चतुर्दश समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितमजीवणवाचरात्री मध्ये...मिनि चैत्र शुक्ल ५ गवत् १८२७ भाव १६६२
२३३ X ६८ से० मी०	४३ (१-४३)	१०	३३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री वाग्भट्ट विरविनायामष्टांग- हृदय मष्टिनाया तृतीयेनिदानम्यान वाग्भ्याधि निदानाध्याय पञ्चम ॥ (पत्र नं ४१)

प्रमाण और विषय	पुरातान्य की प्राग्व मगश या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रथ विम गन्तु पर निगा है	विनि
१	२	३	४	५	६	७
८	४३८	● अष्टाग हृदय	वाग्भट्ट		२० का०	२०
६	२१	अष्टाग हृदय संहिता			२० का०	२०
✓ १०	८८१	अष्टाग हृदय संहिता (संस्कृतटीका) { (१) वृत्तियम्भान } { (२) चतुर्थस्थान } { (३) चतुर्थस्थान } { (४) अष्टमस्थान } { (५) शीर्षाधिप्रकरण } { (६) क्षारतन्त्रिकर्म } { (७) क्षारतन्त्रिकर्म }	वाग्भट्ट	प्रणदत्त	२० का०	२०
✓ ११	४१३५	आतक दर्पण	वाचस्पति वैद्य	वैद्यवाचस्पति	२० का०	२०
१२	५५६५	आतक दर्पण	वैद्य वाचस्पति		२० का०	२०
✓ १३	७३२२	आतकदर्पण (निदान व्याख्या)			२० का०	२०
✓ १४	१२६७	आतकदर्पणनिदान (संस्कृत टीका सहित)	वाचस्पति मिश्र		२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पन्नि संख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
२५५ × १०७ से० मी०	३८३ (१-११५, ११७-२४०, २४३-३४१, ३४५-३८६)	११ ३५	अपूर्०	प्राचीन संवत्— १७६७	मुनिरसमृपिचन्द्रे १७६७ वत्सरे शुक्ले शितदशमिंशशवे नाथनाम्नाद्विजेना । सपदिचपठनार्थं वाग्भटोज्जेतिरभ्यस्तवरा पुरमुत्तिवा श्री हरे सुतनाय ॥ नालाकित यत्प्रतिपन्नमध्ये बुद्धेविरोधादध्वान्य दायात् ॥ सद्भिर्विशोध्यक्षपयात्तनाये प्रायण ह्यभ्रानिमित्तिलिखिता ॥
३२ × १५ से० मी०	१६ (२-२१)	१४ ५१	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री वैद्यपति सिंहमुत्तमूनो वाग्भट कृतामृष्टागहृदय संहिताया सूत्रस्थाने- क्षाराम्निकर्मविधिनाम त्रिशाध्याय श्री विश्वेश्वरार्यंरामस्तु ॥ शुभ ॥ भवतु ॥
३१ × १५ से० मी०	१४८७ (६५, ३४२ ६४, २२३, ४६१, १५१, १२१ प्रति अध्याय क्रमण)	६ ३४	अपूर्०	प्राचीन	इति वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे गृहिणीनिदानव्याख्यान ॥ (पत्र संख्या ३७)
२४७ × १०७ से० मी०	३६ (२४-३६, ४३, ८१— १००)	१३ ३७	अपूर्०	प्राचीन	इति माधवनिदाने कृती वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे अतिसारे द्वितीय (पृ० १८)
३४६ × १८ से० मी०	७१ (१-७१)	१३ ५८	अपूर्०	प्राचीन	इति माधवनिदाने कृती वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे अतिसारे द्वितीय (पृ० १८)
२६१ × १० = से० मी०	६६ (१-६६)	६ ३४	पूर्०	प्राचीन म० १६१४ (शवे १७७८)	इत्येतकदर्पणे निदान व्याख्याया विष निदान संपूर्ण समाप्ता ॥ संवत् १६१४ शवे १७७८ मासोत्तमे मासे भाद्रमासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थ्या भानु- वासरे हस्त नक्षत्रे तदिन गोविंदारमज चौरजीव X X X X X X
२४५ × १०५ से० मी०	४४ (१-४४)	१४ ४२	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३७६१	भारतवर्षरत्ननिदान	माधवाचार्य ?		दे० का०	दे०
१६	७८६६	भारतवर्षरत्ननिदान-सटीक			दे० का०	दे०
१७	३८३				दे० का०	दे०
✓ १८	७०	आयुर्वेदप्रकाश	माधव उपाध्याय		दे० का०	दे०
✓ १९	६५८७	आयुर्वेदमहोदधि	सुखेख		दे० वा०	दे०
२०	५६४	आयुर्वेदशतश्लोकानिषट	श्री निमल्ल		दे० वा०	दे०
✓ २१	१३६४	घीपघिवन्प			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का प्रकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्ष या विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	४	स द	६	१०	११
२४५×१२६ से० मी०	२४ (१-२४)	१३ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६६×११४ से० मी०	११२ (१-११२)	१४ ३६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यातदुदर्पणे निदानव्याख्यामश्मरी निदानम् ॥ (पृ० १११)
२४५×१०५ से० मी०	८ (२-७, ६-१०)	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३८×१४४ से० मी०	५० सं० १६ (१-१६)	१३ ३३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८४२	इति सीराप्पादेशोऽब्रुवसारस्वतकुला- वतम् उपाध्याय माधव विरचिते आयुर्वेदप्रकाशे पाकावली नामाध्याय संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ शुभमभवतु ॥ संवत् १८४२ शके १७०७ पीपकृतम् मदवासरे ॥ समाप्तम् ॥
२०३×६७ से० मी०	४२ (१-४२)	१३ २८	अपूर्ण	प्राचीन	इति आयुर्वेदमहोदधौ मुखेण कृते पानीय वग्ग ॥ (पत्रसख्या-६)
२५१×१०४ से० मी०	५० सं० १२ (१-१२)	१० ३२	पूर्ण	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिते आयु- र्वेदशतश्लोक्या निघट्ट समाप्तम् ॥ संवत् १७३५ वैशाखमासे बुद्धवासरे सप्तम्या श्रय समाप्तम् ॥
२३८×१०२ से० मी०	८० (२-६८, ७०-८२)	७ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमानुसार विषय	मुद्रास्तर की प्रमाण मन्त्र या मन्त्रविशेष की संख्या	प्रमाण	प्रमाण	टीकाकार	प्रमाण मन्त्र पर विशेष	विधि
१	२	३	४	५	६	७
✓ २२	७२३६	धर्मप्रमाण			दे० वा०	दे०
✓ २३	७०३५	वाचमान			दे० वा०	दे०
✓ २४	६२६५	वाचमान वंशव			दे० वा०	दे०
२५	४०६	वाचमान	रत्न		दे० वा०	दे०
२६	४४०	७ गुणरत्नवाच	भावप्रमाण		दे० वा०	दे०
२७	५३८७	चतुर्थव			दे० वा०	दे०
✓ २८	६२९५	चिन्ताप्रमाणम्			दे० वा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८ स ८ द	६	१०	११
२३६ × ८.७ से० मी०	८	८ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६७ × १०.५ से० मी०	७ (१-७)	८ २८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३ × ६.४ से० मी०	२० (१-२०)	८ ३८	पूर्ण	स० १६२४	इति अभिन्यास कालज्ञान वैद्यके नाम ग्रंथ समाप्त ॥ श्री भैरव योगेश्वरी प्रसन्नास्तु ॥ समत् १६२४ ॥ पीप कृष्ण ३० ॥ मुरवासरे ॥ बाराणस्या ॥ इदं पुस्तकं रामचन्द्र विन्म गणेश भट्ट हर्षिकर इत्युपनामक ॥
२७५ × १२.५ से० मी०	३	११ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री श्री श्रीरुद्र कृत कण्ठावली संपूर्ण ॥ करे कर पीटके चैव प्रायते स्तेतात्र भाजने अस्वस्वेवट पत्रैच भूकता धद्रा यणमाचरेत ॥ १॥ श्री ल ल ड ट
२३२ × ६.५ से० मी०	७४ (८३-८५, ८८-८९, ९१- ११०, ११२- १४३, १४६- १६२, १६४)	६ ३१	अपूर्ण	प्राचीन स० १६४६	इति श्रीमन्मिथलटकमतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला संपूर्ण ॥ सवत् १६४६ समये चैत्रसुदि चतुर्थीरवौ ॥
१६१ × ११.८ से० मी०	२ (१-२)	१३ ३०	पूर्ण	प्राचीन	अर्थ चतुर्थक ॥ (प्रारम्भ)
१६६ × ११ से० मी०	७ (१-७)	८ २७	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्म वैवर्तपुराणे ब्रह्मखंडे मालवीविष्णुसंवादे चिन्तिता प्रणयण पद्मदशोद्ध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या या सग्रहियोग की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	यद्यपि किं यस्तु पर निष्ठा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३२८१	चिन्तितासार सग्रह	बंगसेन		२० का०	२०
✓ ३०	१६३०	चूर्णविधि ?			२० का०	२०
✓ ३१	१८३७	उपरनिदान चिकित्सा	भोविद प्रकाश		२० का०	२०
३२	७७३०	ब्रह्मगुण शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		२० का०	२०
३३	२१४६	ब्रह्मसूत्र चन्द्रिका	तदभरण पंडित		२० का०	२०
३४	५४४३	द्विशतश्लोकी	ठाकुर		२० का०	२०
३५	२२३०	द्विशति			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या प्रति प्रति पक्ति म अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
३१६× १७ सें०	१० स० ५१ (२-५१)	१७ ४७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री वगसन कृते चिकित्सा सार संग्रहे द्रव्यस्य भावाभासो समाप्त ॥ (पृ० ४३)
२५×१५ से० मी०	१० स० १७	८ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
१४३× १०२ से० मी०	११ (५-१५)	६ १७	अपूर्ण	प्राचीन	इति गोविन्द प्रकाश ज्वरनिदान चिकित्सा संपूर्ण ॥ देवीसहाय ।
२४=× १०७ से० मी०	११ (१-११)	६ ४०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री विमलभट्ट विरचिताया द्रव्य गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२३७×११ से० मी०	३२ (१-३२)	१३ ४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री मदवह्मजानि दयावतस दत्तसुरि- सुत संक्षमणपठित विरचिता द्रव्यतत्त्व चदिका समाप्तिमगमत् ॥ शुभ भूयात् ॥
२५५× १०८ से० मी०	१४ (१-१४)	१० ३३	पूर्ण	प्राचीन संवत्- १८६८	गुणग्रामाभिरामेश्व पूजितेन मनस्विना श्री ठाकुरेण रचिता द्विगतीपूर्ण सामिधात् ? इति श्री द्विगती समाप्ता संवत् १८६८
२७×११ से० मी०	२१	६ ३०	पूर्ण	संवत्- १६५०	इति द्वीपनि संपूर्ण * सम्मत् १६५० फातगुण यदि १२ बार पादियवार पठितवधरा शुभ भूयात् ।

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ वित्त यन्त्र पर लिया है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६	३३५७	द्विशती	ठाकुर		२० का०	२०
✓ ३७	६५८२	धन्वतरि निघट्ट			२० का०	२०
✓ ३८	७५२१	नाडीपरीक्षा			२० का०	२०
✓ ३९	७५२६	नाडीपरीक्षा			२० का०	२०
✓ ४०	७८५५	नाडीविज्ञान			२० का०	२०
✓ ४१	२७२	निघट्ट			२० का०	२०
४२	४१८७	निघट्ट			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति म अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
३१ × ११ सें० मी०	१२ (१-१२)	१० ४३	पू०	सबत् १६२६	श्रीठाकुरेश्वरचिता द्विशती पूर्ण- तामियात ॥ ग्रहयुग्मनर्वेदो व फाल्गुने वृष्ण पक्षके पण्ड्याभीमेयुते साध्ये स्थामलानेन लेखितम् ॥
२१ × ८ १/२ सें० मी०	१६ (१-१६)	७ ३१	अपू०	प्राचीन	इति धन्वतरीये निषदौ द्रव्यगण समुच्चय ॥ (पत्र सं० ८)
२७ १/२ × ११ १/२ सें० मी०	२ १-२	६ ३०	पू०	प्राचीन (जीएल शीर्ष)	इति नाडी परीक्षा समाप्ता ॥
३६ १/२ × १० २ सें० मी०	१	७ २३	पू०	प्राचीन (जीएल शीर्ष)	इति नाडी परीक्षा ॥
२७ २ × ११ १/२ सें० मी०	११६ २-११७	१७ ३८	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ १/२ सें० मी०	१३ (६६, ६६-१०२, १०४-१०५, १०७-१०८)	७ ३५	अपू०	प्राचीन (जीएल)	
२७ ६ × ११ ८ सें० मी०	८ (१-८)	५ ३१	अपू०	प्राचीन	

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	- ६	७
✓ ४३	१३२२	निघट्ट (ज्वर निदान)			दे० का०	दे०
४४	४६४४	निदान			दे० का०	दे०
४५	२७५४	निदानप्रदीप	नागनाथ		दे० का०	दे०
४६	२०	निदानमाला	दाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ ४७	३७६०	निदानाज्ज	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ ४८	६५६६	नेत्रप्रसादन कर्म			दे० का०	दे०
✓ ४९	५३०६	पातावली			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति गणना और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
च.अ.	व.	स.द.	६	१०	११
२७.१ × ११.४ सें. मी०	१४ (१-४)	१३ ४०	अपूर्ण	प्राचीन	
३०.५ × ११.१ सें. मी०	१५० (८-५७)	१२ ४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५.५ × ११.७ सें. मी०	१२४ (१-२४)	१२ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६.५ × १५.५ सें. मी०	२६ (१-३, ५-२७)	१२ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५.६ × १२.४ सें. मी०	११ (३-१३)	११ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	इतिथीमदग्निवेशविरचित निदानाजर्त संपूर्णम् श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥
१३.१ × ६.३ सें. मी०	६ (१-६)	६ ३५	पूर्ण	प्राचीन	इक्षत्पूर्व सवृत्त स्मृत नेत्रप्रसादन ॥ नेत्र प्रसादिनौ रस त्रिधा ॥
२०.५ × १०.६ सें. मी०	४० (२-४१)	६ २६	अपूर्ण	सं. १८८१	इति गावावली समान्त जेष्ठ वदि ११ सवत् १८८१ भाके १०४६ मंगल नाम सवत्सरे लिखित १० श्रीमट् प्यारेलातेन

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६५६६	पाकावली			दे० का०	दे०
५१	६७४३	पाकावली			दे० का०	दे०
५२	२१३१	पाकानलि			दे० का०	दे०
५३	$\frac{३०००}{३}$	पिप्पली वर्धमान			दे० का०	दे०
५४	४२७६	पूतनाविद्यान			दे० का०	दे०
५५	४०१५	पूतनाविद्यान			दे० का०	दे०
५६	४७४७	पूतनाविद्यान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्र संख्या और प्रति पत्र मे प्रक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
२१५ × ६ = सं० मी०	१३ (१-४, ६-१४)	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन ग्रंथ पावाडिबार: ॥ (प्रारंभ)
३३१ × . ११५ सं० मी०	५ ६-८, १०-११	८	४४	अपूर्ण	प्राचीन
२७ + ११५ सं० मी०	७ (१-७)	६	३६	पूर्ण	प्राचीन इति पाकानसि सपूर्ण ॥
१७२ × ११८ सं० मी०	३	१२	२४	अपूर्ण	प्राचीन
१६ = × १२४ सं० मी०	१४	११	३३	अपूर्ण	सं० १६३७ इति श्री पूतनाविधान माती स्वर पुराणोक्त भाषिनी बीडासमन विधान सपूर्ण ॥ निवृत्त मिथ सागरदत्त हरसीधर्मा समुत्तमाध्य धामे निनि बैशाख शुदि १० बुधवार १६३७ शुभ श्रीकृष्ण नमः ॥
२३५ × १५४ सं० मी०	सं० ११ (१-११)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१४ इति श्री पूतनाविधान समार्थ गवत् १६१४ पत्र यदि तृतीयाया पत्रोत्तराय नगरे छद्ममायान वैद्य रपान दिग्- दाह " " ॥
२४३ × १२७ सं० मी०	= १-८	११	३६	पूर्ण	प्राचीन इति ब्रह्मावत मन्त्र ग्रंथि रत्नगरे पूतनाविधान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ५७	१३१२	पूतनाविधान (बालचिकित्सा)			दे० का०	दे०
५८	७०६५	प्रकाशचक्र निघट्ट	द्विज बोपदेव		दे० का०	दे०
५९	१३३४	बाल चिकित्सा		।	दे० का०	दे०
६०	१३६५	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६१	३६००	बालचिकित्सा पूतनाविधान	राजसिंह		दे० का०	दे०
६२	६५६५	बाल तन्त्र	कल्याण		दे० का०	दे०
✓ ६३	८३४	बालरोग चिकित्सा	भीमदिगिध		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ म पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	कथा ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
सं. अ.	ब	सं. द.	१०	१०	१०
२१२X १०८ से० मी०	६ (१-६)	१० २८	अपू०	प्राचीन	
३२४X१३ से० मी०	६ १-६	६ ४५	पू०	प्राचीन	वाग्भट्टकृते प्रसूते प्रवर्णन चक्रे निषट्ट- ममन द्विजबापदेव १७६ श्रीमा रामानुजाय नमः X X X ॥
१६X१३५ से० मी०	६	१६ १६	पू०	संवत्- १६२५	इति श्री स्वाश्रित्या ज्ञाने एव स्वामी वर्तितव्य उमासदाय वाच विरचित्या पुस्तक द्वादश वषः पर्यंत वर्तित उपाय समाप्तम् ॥ आ० कृ० द्वि० २ संवत् १६२५ ॥
२४१X ११२ से० मी०	६(१-६)	६ ३५	अपू०	प्राचीन	
१२४X७६ से० मी०	२४ (१-२४)	८ १६	पू०	संवत्- १६३०	इति श्री महाशक्तिप्रदाय श्रीराजनिधि कृतो स्वधर्मनिघा नाम्नि ग्रंथेन वाच विरचित्या पूतनाविघ्न समाप्त ... - सं० १६३० नियत सं० श्रीगणेश हजारीमान् वामिन मरहनी श्री कृष्णाय नमः ॥
२२X१०६ से० मी०	३ (१-३)	१६ ४६	अपू०	प्राचीन	इति कल्याणेश्वर कृतो बाल लगे माधाराय वर्तितव्य कथा नाम द्वितीय ग्रंथ ॥ (पत्रमध्या २)
०२२७X १०६ से० मी०	२१ (१,६-२२ २४-२६)	८ ३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	३५	भावप्रकाश	भावमिश्र		१० का०	१०
६५	५८२०	भावप्रकाश (माध्यम खंड)			१० का०	१०
६६	५८३६	भानुप्रकाशनिघण्टु			१० का०	१०
✓ ६७	"	भियक चक्र वितोत्साव	हंसराज		१० का०	१०
✓ ६८	१४५०	भियक चक्र वितोत्साव	हंसराज		१० का०	१०
६९	३६२४	भियक चक्र वितोत्साव	हंसराज		१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठा या पारार	पत्रमस्या	प्रति पृष्ठ म पत्रिमस्या और प्रति पत्रि म पारारमस्या	नया मस पूर्ण है ? मपूर्ण है ता वर्त- मान मस का विवरण	मवस्था और प्राचीनता	मस्य मावश्यक विवरण
८ म	९	१०	११	१२	१३
२८०५ १३१ से० मी०	५० म० १२८ (३-११ २५-२६, २८, ३२-३३, ३८, ६०-४१, ४४, ४६, ६७-५७ ५६-६०, ६५-७४, ७७ ७८, ८१-८२, ८४ ८५, ८६-८७, ८८-१०५, ११६-१२५, १२७- १३१ १३५-१३६, १३८ १४३, १४७, १५०, १५२-१५३, १५७-१५८, १६६, १६८-१७०, १७२, १७४-१८६, १८७- २१०, २१२-२१३, २२६-२२६)	१२ ३४	मपूर्ण	प्राचीन	
३३६५ १३१ से० मी०	१६ (१-१६)	६ ३३	मपूर्ण	प्राचीन	
२७६५ ११६ से० मी०	१६ (१-२, २-६, ११-१७, १६)	३ २६	मपूर्ण	प्राचीन	
२०५५ १३५ से० मी०	६३	२१ १६	पूर्ण	वि० सं० १६०६	
२८५५ १६१ से० मी०	७ (२-५)	१२ ३३	मपूर्ण	प्राचीन	
२३४५ १०३ से० मी०	५६ (१-५६)	१० ३५	पूर्ण	मवत्- १६००	इति धीमिपकवक वित्तोत्सवेहसराज कृते वैद्यशास्त्रे सप्तदशोऽध्याय १७ समाप्त । लिपितमिदमुक्तक सवत् १६०० भाद्रशुक्ल ११ चद्रवातरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या मसहूबिमेप की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७०	१०६३	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७१	७२६	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७२	४७६७	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७३	४८८४	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७४	६७४४	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७५	$\frac{७०५६}{३}$	मदन विनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर मध्या	नया ग्रन्थ पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	व	स द	६	१०	११
३१ × १६ ३ से० मी०	८१ (१-८५-८५)	१३ २८	अपू०	संवत् १६४७	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ प्रशस्ति वर्गश्वतुदश १४ ॥ चत्ते मासेशिते पक्षे मध्याह्ने श्राद्ध वासरे चतु-दश्या लिखित फकीरीचद्रेण पुस्तक शुभदायक स० ११४७ वि० चै० सु० १४ दीन श्राद्धवार वहेडिमध्ये सेवण रामात्मज श्री लक्ष्मणाय नमः ॥
२७ × १० = से० मी०	५६ (११ १२, ३२ ६२, ८२-८५, ८७-६७)	६ ३४	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११ २ से० मी०	७ (१-२४, २६-७१)	१० ३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदन-विनोदे निघटौ कृती नवगं एकदश ११ ॥ (पक्ष, सव्या-६२)
२६ × ११ से० मी०	५२ (७, ६-१७ २६ ६७)	१० ४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदन-विनोदे निघटौ प्रशस्तिवर्गश्वतुदश समाप्त ॥१४॥ वाचस्पति पितृहदार सुविद्या वाचस्पतिशचरणपत्रक*** इति मदन विनोद समाप्त ॥
३२ × १२ ६ से० मी०	४२ ४०-८१, ८३	६ ३७	अपू०	प्राचीन संवत्-१८६०	इति श्री मदनपाल विरचिते मदन-विनोदे निघटौ प्रशस्ति वर्ग श्वतुदशम समाप्त श्री शुभमस्तु फाल्गुण-मासि कृष्णपक्षे पंचम्या शुभवासरे स० १८६० के साल श्रीकृष्णचंद्रम-हम्मजामि ॥
१२ × १६ से० मी०	८६	१२ २३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदन-विनोदे निघटौ मिथ वर्गश्वतुदश समाप्त २३ इति निघटसंपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७६	२२३२	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७७	७७३७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७८	५२३१	मधुकोश (माधवनिदान की टीका) भू० ग्रन्थ माधव मिश्र	विजयरसित		दे० का०	दे०
७९	५७३२	मधुकोश	विजयरसित		दे० का०	दे०
८०	६३३०	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८१	६०३१	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
✓ ८२	६६८३	माधवनिदान (उच्चर प्रकरण) ('मधुकोश वध' संस्कृतटीका)	माधव मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण १ तो बर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७ X १४ से० मी०	१३	१६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोद निघटी विद्या वर्णस्तोदश ॥ शुभ भूयात् ॥
२६ X १० से० मी०	१६ ३८-४७	१०	३८	अपूर्ण	प्राचीन	इति मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटी कुलानवर्ण एकादश X X ॥ (पृ० ५७)
२८ X १३ X से० मी०	४ (१-४)	१३	३८	अपूर्ण	प्राचीन	तत्तदग्र्य तत्तद्व्यो व्याख्या कुमुद रस- लेश माहृत्य भ्रमरेणैव मया य व्याख्या मधुकोप आरब्ध ॥ उपमुक्तमिहानु- वृत्तिनिदानमाश्रयेन यत् ॥ अथ व्याख्या प्रसंगेन भयां तदपि लिख्यते ॥ (पत्र संख्या-१ पंक्ति सं०-६)
२५ X १० से० मी०	३४	६	३२	अपूर्ण	(जीण) प्राचीन	आरोग्य सातीय वैद्यक महोपाध्याय श्री विजय रक्षित कृते मध्यादे उच्चर निदान सभाषिभगवत ॥ (पृ० ६३)
२४ X १० से० मी०	४८ (१-४८)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ X ११ से० मी०	७ (१-७)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ X १० से० मी०	१६ (१-१६)	१२	४१	पूर्ण	प्राचीन	तेनोज्ज्वलाविवृति रत्नप्रिया हिताय सब- ध्यते विवक्ष माधव सप्रहस्य ॥ विज्ञाय तार्किक चरैकविचार वैद्य वैपश्य मुपनवशांमधुकोश वध ॥ ८ ॥ (पत्र संख्या-२)

क्रमिक और विषय	पुस्तकानुसारी प्रागत शब्दा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम विस यस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३	६६=६	माधवनिदान	माधव		१० का०	१०
८४	६६५	माधवनिदान	माधवाचार्य		१० का०	१०
८५	३७५६	माधवनिदान	माधव		१० का०	१०
८६	३७६०	माधवनिदान (प्रातःकर्मपंथनिदान व्याख्या)	माधवाचार्य	वाचस्पति	१० का०	१०
८७	३९८९	माधवनिदान	माधव		१० का०	१०
८८	९०४६	माधवनिदान	माधवाचार्य		१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	व	स द	६	१०	११
२५ × १० से० मी०	६२ (१-६२)	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
३३३ × १३५ से० मी०	११४	१० ४०	पूर्ण	संवत्— १६४२	इति श्री माधवाचार्य विरचितो हवि- निश्चय समाप्तम् ॥ संवत् १६४२ शके शालिवाहनस्य १८०७ मास १३ पक्ष २६ मितौ अश्विन वदि प्रतपदा १ शुनवामरात्रिवासा इदं पुस्तकं लिखित फकीरचंद सेवगरामात्मज बहेहि- मध्य शुक्ल सुच्योक्तेशोचिनी शुक्लरस्याप परोपकार्य । शुभ भगन- मस्तु ॥ मंगल दशातु ॥
२४ × १० ५ से० मी०	१२२ (१-४१, ४३-११२ ११५- १२५)	८ ३२	अपूर्ण	संवत्— १८७४	इति श्री वैद्यराजकवि माधवविरचिते हविनिश्चय संपूर्ण इति माधवनिदान समाप्त ग्रन्थपरिमाण २२०० संवत् १८७४ वशाख कृष्ण १२ खौ काव्य- कृतमिदं ग्रन्थस्तेलेखको गणनायक ।
२३ × १० १११ से० मी०	६६	१३ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यादिकदर्पणे वाचस्पति कृताया माधवे निदान व्याख्याया भगवण निदान (पत्रसंख्या ११५)
२२ ७ × १० २ से० मी०	४६ (१-४६)	११ ३३	पूर्ण	प्राचीन	माधव कविविरचित स्मृद्धहेतोस्तमस्त “इति श्री माधवाभिधान द्रव्य- शुण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धे- स्वय्यनेम ॥”
३६ १ × १४ ५ से० मी०	४० सं-४४ ४ ६-४० ४३, ४६, ४८-५०, ५३-५५)	११ ४६	अपूर्ण	प्राचीन संवत्— १६१२	इति श्री माधवकृत निदान स्थान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	१८०४	माधवनिदान			दे० का०	दे०
९०	१४७	मालावति सबाद	गंगाधरभट्ट		दे० का०	दे०
✓ ९१	७२७७	मुद्गरनूटविवरण	माधव	नागेश	दे० का०	दे०
✓ ९२	६५६३	मूल परीक्षा			दे० का०	दे०
९३	६५६४	मूलपरीक्षादि			दे० वा०	दे०
९४	६५८	मूलपरीक्षा			दे० वा०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रित संख्या और प्रति पत्रित में प्रक्षर संख्या	क्या प्रश्न पूछे हैं ? अपूर्ण हैं तो वत मान प्रश्न का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ अ	७	६ द	६	१०	११
३५ × १२४ से० मी०	१० स० ६० (१-६०)	६ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६१ × १०२ से० मी०	६ (१-६)	१० २१	पूर्ण सं० १६३६	प्राचीन	इति मानावति विष्णु सवादे समाप्ती य ॥ सवत १६३६ शके १८०१ वैशाख वद्य २ गुरी तद्दिने पुस्तक समाप्त ॥ नाखरेत्मुशनामक नारायणभट्टात्मज गंगाधर भट्टन लिखित मूल हस्त न दातव्य एव वदति पुस्तक ॥
२१५ × १०७ से० मी०	३ १-३	१६ ५०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री माघविरचिता मुद्गरकूटस्त माप्तिषगमत ॥ इति धीमवीभिषग कृष्ण पडित्वात्मज मिपड नामक पत्रित विरचित मुद्गरकूट विवरणम् ॥
१६६ × १०६ से० मी०	३ (१-३)	११ २८	पूर्ण सं० १७८८	प्राचीन	इति श्री मूल परीक्षा समाप्ता ॥ सवत १७८८ वर्षे शके १६५३ प्रवत्तमाने आश्विन शुद्ध १ भीम वामरे राबल-श्रीवदत्त पुत्र शम्भू रामण पुस्तक परोपकारे अपन कर छथी ॥ व्यास उदे कृष्णस्य प्रवरणाबादे प्राप्तमिद ।
१४ × १०४ से० मी०	४ (१-२ ४-४)	११ १२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८८८	इति मूल परीक्षा समाप्त सवत १८८८ आ० ६ भा १७५३३ आवण वदी ८ भीम लि०
३४ × १३ से० मी०	२	१२ ४०	पूर्ण	सवत— १६४०	मूल परिक्षासमाप्तम् सं० १६४० मिति चत सुदि १

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६५	७६२	मूलपरीक्षा	सरजीतसिंह		दे० का०	दे०
६६	७६४	योग तरंगिणी			दे० का०	दे०
६७	५०१२	योग चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६८	४५६४	योग चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६९	३६५६	योग चिन्तामणि	हर्षकीर्ति सूरि		दे० का०	दे०
१००	७१६२	योगरत्नमालाविवृति	नागार्जन		दे० का०	दे०
१०१	२४८	योगसूत्र (टी०)			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ अ	स द	६	१०	११
२७३× १२१ से० मी०	२ (१, ५)	= २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति भूत परीक्षा लक्षणानि शुभम् लिखित सरजीत सिंह ब्राह्मणेन शुभम् ।
२५+१०५ से० मी०	४८ (२-३, ५-६, ८-१५, १७-१८, २०-२०, ७१-७३)	६ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
३०.५+ १२३ से० मी०	२ (१०७- १०८)	= ३३	अपूर्ण	प्राचीन	
३०.७+ १२६ से० मी०	२२ (८५- १०६)	८ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
३१+१२४ से० मी०	५५ (१-१४, १६-४७, ७५-८३)	८ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमन्महर्षिरीयत योगक्षीय श्री हर्ष कीर्तिमूर्ति सकलिते श्री योग वितामणो वैद्यक सप्तहे गुटिकाधि- कारो नाम तृतीयोऽध्याय । पृ० ४७
२३.५+ १०.६ से० मी०	२४ १-२४	११ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२१५+६५ से० मी०	१८ (१-१८)	१३ २७	पूर्ण	प्राचीन स० १८२३	इति श्री योगसत समाप्तम् । स० १८२३ वर्षे भाद्रमासे शुक्ल पक्षे तिथी ५ पञ्चम्यामुद्दिने लेप कथा चक्र- योजयति ।

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	११
३० × ११ ५ से० मी०	६ (१-६)	१२	४५	अपूर्०	प्राचीन
२६ ५ × ६ ६ से० मी०	७ (१-७)	७		पूर्०	प्राचीन इति योग शतक समाप्त ॥.....
२२ × १० से० मी०	८ (१-८)	८	२६	पूर्०	प्राचीन संवत्— १८७० इति श्री जगदीशभात्मज वदमिश्र विर- चित्त जोग बुद्धा निधौ प्रथमादि दिवस मास वर्ष समुदाय कृतभेदन भिन्नाना पूतना ग्रहणाचिकित्सा नामपंचकलास समाप्त*** ॥ संवत् १८७०
२७ × १२ से० मी०	६५ (१-६२, ६४-६६)	६	६३	अपूर्०	प्राचीन विदु नामय सुप्रियजामुदेरस पठति सपथ्यते (पृ १)
२२ ४ × ६ ४ से० मी०	७ १-७	८	३०	अपूर्०	प्राचीन
२५ ७ × १० ८ से० मी०	२४ ३०-३४, ३६-४५	७	३२	अपूर्०	प्राचीन इति श्री शातिनाथ विरचित्ता रममजरी काल ज्ञान रूपन नाम दशमोप्याय समाप्तोप्याय प्रथ ।
२४ ४ × ६ ६ से० मी०	४ १-४	६	३३	अपूर्०	प्राचीन
२६ ६ × ११ ४ से० मी०	१४ (११-२५)	८	३८	अपूर्०	प्राचीन इति श्री पंडित वैद्यनाथ पुत्र शातिनाथ विरचित्ता रत्नमजरी उरी उपरसमोप्यन मारण सत्वापातनमणि मारण रूपन- नाम तृतीयोप्याय ॥ (पृ० १२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
११०	७१०७	रसमंजरी	शास्त्रिनाथ		दे० का०	दे०
१११	१०४२	रसमंजरी	शास्त्रिनाथ		दे० का०	दे०
११२	४२८८	रस रत्न समुच्चय			दे० का०	दे०
११३	६४१८	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११४	७४१२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०
११५	३२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११६	११६२	रसतत्त्व			दे० का०	दे०

पन्ना या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
— द अ —	— व —	— स —	— द —	— ६ —	— १० —	
२४५ × ११ से० मी०	८ (१-२, ४-७, ६-१०)	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री रसमज्ज्या रस जारण मारणादि कथन नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ (पत्रसंख्या ७)
२४५ × १२ १/२ से० मी०	४२ (१-७, १०-११, १३-४५)	७	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६४ × ११ १/२ से० मी०	३१ (१-१३, १६-३३)	१२	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति रसरत्न समुच्चये षोडशोऽध्यायः ॥ (पत्र सं० ३०) × × ×
२६७ × ११ १/२ से० मी०	११२ (१-११२)	११	७८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनामसिद्ध विरचिते रसत्नाकरे रसायनखण्डे श्रीर्य- स्तमनादित्सी झाबणा तन्नामनव मोपदेशः ॥६॥
१२८ × १० ८ से० मी०	४७ (१-४७)	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाम विरचिते रस रत्नाकरे सिद्ध खण्डे त्रयो- दशोऽध्यायः ॥ ५ ॥ (पत्रसंख्या ३६)
३५ × १८ से० मी०	४६	१५	५२	पूर्ण	सर्वतः— १७२८	रसरत्नाकरमंत्र खण्ड पूर्ण
२७ × १२ १/२ से० मी०	६	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संस्था वा संग्रहविशेष की संस्था	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ११७	७१०३	रसायनदत्त			२० का०	२०
✓ ११८	६६८३	रसायन विद्या (काकचडीश्वर भते)			२० का०	२०
११९	४२६५	●रसिकविमोद	योगासदास		२० का०	२०
✓ १२०	७५२३	रोगचिकित्सा- श्रीपञ्चप्रकरण			२० का०	२०
१२१	६६२३	रोगचिकित्सा ?			२० का०	२०
✓ १२२	४१६१	रोगावली (हिंदी सटीक)			२० का०	२०
✓ १२३	४२६२	●वीरसिंहावलोक (वर्मविपाव)	वीरसिंह देव		२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति सख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
२०.७ × १०.५ से० मी०	११ (१-११)	८	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
१६.५ × ८.५ से० मी०	४१ (१-४१)	७	१७	अपूर्ण	प्राचीन	
२७.८ × ११.२ से० मी०	५० स० ४५ (१-२, ७-८, १४-२३, २५- २८, ३४-३८, ४३, ४९, ५३, ५६-६१, ६८, ७४, ७६, ८२, ८६-८७, ९०, ९२, ९५, ९८, १०६, १०८, ११२, ११५, ११८)	१०	३४	अपूर्ण	प्राचीन सबत्— १७६७	इति श्री मेहरा वशावतस श्री स्वामि- दासात्मज गोपालदास विरचितोरसिक विनोद नाम्नाप्रणीत परिसमाप्तः ॥ श्री शुभमस्तु मार्गस्य ददातु । सबत् १७५८ वर्ये पीप वदि पक्षमी ५ शुद्धवासरे × × × × ॥
२८.१ × १०.१ से० मी०	१३	१०	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१५.१ × ८.८ से० मी०	३ (१, ४-५)	१४	४०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६.२ × १२ से० मी०	५ (१-५)	८	४२	पूर्ण	प्राचीन	दक्षिणाचलस्वामिमत इत्युक्तं तदन्तर वृत्त्यमाह १ इति महाणुवि ॥
२४.६ × १० से० मी०	८५	८	२८	अपूर्ण	प्राचीन म० १५४४	इति श्री सोमरवशावतम—॥ श्रीरघु- देव विरचिते प्रणे श्रीमहावतने उद्योतिशारत्त बमविवासायुद्धोक्त प्रयोगे सबत् १५४४ समय आदमुदि २ अक्षरागरे । प्रणेह- वानापोनगरेमुनुवान बहुवीन गाहि- रागरे । श्रीमृगहिवादेमादमयान राग्य प्रवर्तते ॥..... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	६५८६	वैद्यक			६० का०	६०
१२५	३५७६	वैद्यक ?			६० का०	६०
✓ १२६	६११	वैद्यकग्रन्थ			६० का०	६०
१२७	३३०३	वैद्यकशास्त्र	हसरान		६० का०	६०
१२८	७५३३	वैद्यकसंदोह			६० का०	६०
१२९	६६८४	वैद्यकसंदोह			६० का०	६०
✓ १३०	७०६१	वैद्यकशास्त्र	शकर		६० का०	६०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पणित सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	९	९	९	१०	११
२०८५६४ से० मी०	१६ (१-१६)	८	३४	अपूर्ण०	प्राचीन	॥ अथ बंदक ॥ (प्रारम्भ)
२५५५१२५ से० मी०	५(१-५)	६	१६	पूर्ण०	प्राचीन	
१६६५११२ से० मी०	५० सं० ३६ (१,३-११, ४५-६२, ६४-७५)	६	२७	अपूर्ण०	प्राचीन	
२३५५१०६ से० मी०	५० सं० १७ (१-१७)	७	२२	अपूर्ण०	प्राचीन	
२४६५६६ से० मी०	७	७	३०	अपूर्ण०	प्राचीन	
१७२५८८ से० मी०	७ (१-७)	८	१७	अपूर्ण०	प्राचीन	
१५७५८३ से० मी०	२० (१-२०)	७	१७	पूर्ण०	प्राचीन सं० १८६१	इति बंदकसारे मकराक्षये पचमोऽध्याय अथ सख्या ६५० हस्ताभारभाउविठल ब्रह्मण पुरनर कुलकर्णि अथ बाह्यान्वाद्यमोजे गोण समत १८६१ कानिष्ठ गृह्य १२—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३१	३२९३	वैद्यचन्द्रोदय	वाग्भट		दे० का०	दे०
१३२	४२३६	वैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति		दे० का०	दे०
१३३	४३६३	वैद्यजीवन	शोनिबरार		दे० का०	दे०
१३४	१३५८	वैद्यजीवन (सटीक)	शोनिबरार	शोस्वामी- हरिनाथ	दे० का०	दे०
✓ १३५	१६०७	वैद्यजीवन (संस्कृत टीका सहित)	शोनिबरार	हरिनाथ शर्मा	दे० का०	दे०
१३६	११२६	वैद्यजीवन	शोनिबरार		दे० का०	दे०
१३७	३४००	वैद्यजीवन (सटीक)	शोनिबरार	धर्मराय	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
२२५ × १११ से० मी०	१० सं० ११ (१-३, ५-१२)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री वैद्य वाग्मटोक्त विरचिताया वैद्य चंद्रोदय नाम ग्रंथो पांडुराध्याय ॥ संवत् १८६८ साके १७३३ ॥
२५८ × १६६ से० मी०	३६ (३६-६१)	२३	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री योगचिंतामणौ वैद्यक भास्करा तैनाथिवाकर पण्डोष्याय समाप्त ॥ ६ (पत्रसंख्या-४३)
२३१ × १०५ से० मी०	१० सं० २३ १-२३	६	३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२३	इति श्रीमहिवाकर मनुना लानिबराज कवि विरचिते वैद्य-जीवन समाप्त । × × × समत १६२३ ॥ शाके १७५८ ॥ बहुधाय नाम सदासरे उत्तरायणे ॥
२३८ × १०६ से० मी०	३० (१-२ ४-३१)	१३	४६	पूर्ण	सं० १८६१	इति श्रीमहिवाकर मनु लोनिम्भराज विरचिते मन्त्ररोग प्रतीकारा नाम पञ्चमो विधास ॥ ६ ॥ सम्वत् १८६१ मिति फाल्गुन शुक्ल पक्ष नवम्या रविवासर ग्रहिलग्न नगर रघुवरमिश्र त्रिपिनमिन्म शुभभूयात ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविभाग की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८	३७६६	बंछजीवन	सोनिबरान		१० का०	१०
१३९	६५८४	बंछजीवन	सोनिबरान		१० का०	१०
१४०	७१८६	बंछजीवन (सटीक)	सोनिबरान		१० का०	१०
१४१	$\frac{५७४१}{२}$	बंछजीवन	सोनिबरान		१० का०	१०
१४२	७७७३	बंछजीवन	सोनिबरान		१० वा०	१०
१४३	७२६४	बंछजीवन	सोनिबरान		१० वा०	१०
↓ १४४	७१२८	बंछजीवन दीपिका	सोनिबरान	रत्नभट्ट	१० वा०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२६१ × १२२ से० मी०	५० सं० १६ (१-१६)	६ १७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री वैद्यजीवने ऊवर प्रतिकारोनाम प्रथमो विलासः । (पत्र सं० ६)
१५ × ६२ से० मी०	३१ (३-३४)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन	इति महिवाकर सूनू लोतिमराज विरचिते वैद्य जीवने ऊवर प्रकरणनाम प्रथमोल्लास ॥ १ ॥ (पत्र सं० १३)
३४ × १३२ से० मी०	३३ (१-३३)	११ ४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री वैद्य लोतिमराज विरचिते वैद्यजीवनेरसविभिन्नान् पञ्चमोविलास ५ सवत् १६२२ कातिके शुक्ल पक्षे पञ्चम्या भौमवासरे तत्तदीने राममयतेन लोतिमराज लिख्यते समाप्त शुभ भूयात् ॥ × ×
१८ × १३६ से० मी०	२३	१७ १८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री धीमहिवाकर पंडित सूनू लाल लोतिमराज विरचिते वैद्यजीवने समाप्त शुभमस्तु मिद पुस्तक लिप्या श्री त्रिपाठीनदलासेन पठरींघी ग्रामे सवत् १८५८ रामचंद्रायनम् ।
२० × १५ से० मी०	३२ (१-३२)	१४ १३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री लोतिमराजविरचिते वैद्य जीवने सकलरोग प्रतिकारो नाम पञ्चमो विलासः । इति वैद्य जीवने समाप्तम् ॥ शुभम्भूयात् सवत् ॥ १८६७ ॥
२३६ × ६५ से० मी०	२६ (१-२६)	७ ३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १७२६	इति श्री धीमहिवाकर पंडित सूनू लाल लोतिमराज विरचिते वैद्यजीवने समाप्त ॥ सवत् १७२६ समय जेठ वदि १२ मयल + + +
१६२ × १०२ से० मी०	८ (१-८)	१८ १३	पूर्ण	प्राचीन	

प्रमाण और विषय	पुस्तकानुसंगी घागा सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	प्रमाण	प्रकार	टीका	प्रमाण सम्बन्ध पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
✓ १४५	६६००	वैद्य दण्ड (द्वितीय टीका)			२० का०	२०
✓ १४६	६३६२	वैद्यमान्दरोदय मटीका	घण्टाकार	विष्णुमिरि	२० का०	२०
१४७	२०८६	वैद्यमनोत्तम	बशीघर मिश्र		२० का०	२०
१४८	२६	वैद्यमनोत्तम	बशीघर		२० का०	२०
✓ १४९	३२४२	वैद्यरत्न	शिवानन्द भट्ट		२० का०	२०
१५०	$\frac{४५३६}{२}$	वैद्यामृत	मोरेश्वर भट्ट		२० का०	२०
१५१	६५१६	वैद्यामृत	मोरेश्वर		२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठो का आवार	पट्टेसख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	कथा श्रय पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आरक्षण विवरण	
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१६ × १५५ सें० मी०	२५ (१-१२, १४-२६)	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन	थीमते रामानु जाम नम नमस्तुत्य गणेशान महेशान महेश्वरो ब्रह्मदर्पण- भावष्टे ब्रह्मानाहितकाम्यया । (प्रारम्भ)
२०४ × ८३ सें० मी०	१५८ (३- १६०)	७	३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मास्करादये धावतरिकृत विष्णु मि भाष्य विरचिताया नामरौप व्याघ्रिजग्य उत्पत्तिमान धनुश्चमणिका नाम कथन चतुर्विंशति परिच्छेद २४ सुममस्तु ॥
२६५ × १४ सें० मी०	१७ (३, ५, ७, ९, १०, १४, १६, १७, २०, २२, २३, ३३ (३७, ३८))	१०	३८	अपूर्ण	प्राचीन	इति थीमन्मिथ बगौघर विरचिते वध- मनात्सवे नात्रापरीक्षा मूलपरिक्षा पित्त कफवातकाय निदान साध्यासा ।
३० × १३ सें० मी०	म० सं० ३०	६	३४	पूर्ण	प्राचीन न० १६१६	सवत् १६१६ बंशापभासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा भीमशस्त्रे निधि कृत ...थीमस्तु शुभमस्तु दशरथे रामकृष्ण ।
२३ × १० ३ सें० मी०	४१ (३-४३)	११	४४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानन्दभट्ट विर- चिते वैद्यरत्न समान्त शुभमूषात् ॥
२७ × ११ ५ सें० मी०	१२ (१-१२)	११	४१	पूर्ण	सवत्- १८४२	इति थीमदहम्मदानगरस्थितमाणिक- भट्ट ब्रह्मराम मारेश्वरविरचिते चतुर्षो- त्तकार बाधववरोपनामभरपुनाधमूनु- नामवाते शक्तेरुतिवित्तमत् ॥ सवत् १८४२ धापाड शुद्धपञ्चम्यामिदी ॥
२४२ × १० २ सें० मी०	१२ (१-१२)	११	३५	पूर्ण	प्राचीन सवत्- १८८६	इति थीमदहम्मदानगरस्थित माणिक- भट्ट ब्रह्मराम मारेश्वर विरचिते ब्रह्ममूक्त चतुर्षोत्तकार समान्त ॥ सवत् १८८६ मित्र माध शुद्ध ४ मृगशिरा जयरामेन निमित्त ॥ कवीश्वररायनाम्ना ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५२	६५८३	बैद्यावतस	लोलिवराज		दे० का०	दे०
✓ १५३	७५३०	व्याधि ज्ञान			दे० का०	दे०
✓ १५४	६५६८	(द्रव्य गुणगुण) शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० पा०	दे०
१५५	३२६४	शतश्लोकी	त्रिमल्ल कवि		दे० का०	दे०
१५६	६५४१	शतश्लोकी टीका (द्रव्यदीपिका)	त्रिमल्ल भट्ट	कृष्णदत्त	दे० का०	दे०
१५७	$\frac{७०५६}{३}$	शतश्लोकी निषट्ट	त्रिमल्ल		दे० पा०	दे०
✓ १५८	६६००	भारीख (घण्टांग हृदय)	वाग्भट्ट		दे० पा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमह्य और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०	११
१८८×७७ से० मी०	१२ (१-१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	****रचयति घटकादीन् वीक्ष्य वैद्यावतम कवि कुल सुमतातो लाल तोर्लिव राज ॥ २ ॥**** (पत्र सं० १)
२१५× १०४ से० मी०	६	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२५×६ से० मी०	११ (१-११)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्ल विरचिता गुणा- मुखा शतरङ्गोक्ती समाप्ता ॥ ..
२३२×१३ से० मी०	५०६०१० (१-२, ८-१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन संवत् १६२५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिता शतरङ्गोक्ती समाप्ता शुभ संवत् १६२५ फाल्गुन कृष्ण १० शनी ॥
३४५× १२६ से० मी०	१३ १,१-१२	६	४०	पू०	प्राचीन संवत् १६०५	इति श्री त्रिमल्ल भट्ट कृता शत- श्लोकी टीका समाप्त शुभ संवत् १६०५ के-कार्तिक ६ बु० ।
२२४×१६ से० मी०	५ (१-५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	*****अथ श्री त्रिमल्लकविकृत शतरङ्गोक्ती निषट्ट प्रारम्भ ॥ .. (पादि)
२२×५ ६७ से० मी०	१५ (७,१२- २५)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारोरेखाने मर्म विभागो- नाम चतुर्थोऽध्याय ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत मध्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ १५६	७५६८	शास्त्रगंधर संहिता			दे० का०	दे०
✓ १६०	७४६२	शास्त्रगंधर व्याख्या	शास्त्रगंधर	सुखराम	दे० वा०	दे०
१६१	७८२७	शास्त्रगंधर संहिता (व्याख्या) टीका	शास्त्रगंधर		दे० वा०	दे०
१६२	७७०७	शास्त्रगंधर टीका	शास्त्रगंधर		दे० वा०	दे०
१६३	६०३४	शास्त्रगंधर संहिता	शास्त्रगंधर		दे० वा०	दे०
१६४	५६६२	शास्त्रगंधर संहिता (पूर्व एवं मध्यम खंड)	शास्त्रगंधर		दे० वा०	दे०
१६५	६८७०	शास्त्रगंधर संहिता	शास्त्रगंधर		दे० वा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पण्डितगण्य और प्रति पत्र में प्रशंसकगण्य	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
३४ × १ ३.१ सं० मी०	२ (१-२)	११	३२	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री शाङ्गधरे० स्नेहपानाध्याय ॥ (पत्र-सं० २)
२७ × ११ ५ सं० मी०	६०	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन (सं० १७७६) इति शाङ्गधर व्याख्याया दृष्टि प्रसादन कल्पनाध्याय । सवत् १-सं० १७७६ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे शुभे कृष्ण पक्षे त्रयो द्वितीयाया पुनर्वातरे तदिन उपनाम ज्योती गोविदात्मज चोरजीव रामेश्वर गोढरीमा सुभस्या नेन लिखित ॥
२६६ × ११ ३ सं० मी०	८ १६, ८-६	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री शाङ्गधर व्याख्याया पुटपाक कल्पना (पत्र सं० ३)
२७ × ११ ४ सं० मी०	१८ १-३, ३-१७	१३	३६	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री दामोदर गुरुना० शाङ्गधर विरचिताया चिकित्सा स्थाने मध्यम खंड समाप्त शुभमस्तु मिति पौष सुदि द्वादशी रवौ की सवत् १६०१ के साल
२८ × १२ २ सं० मी०	५६	७	४०	अपूर्ण	प्राचीन
३३ ५ × १३ सं० मी०	६२ (१-६२)	८	३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६११
२३ ८ × १३ ६२ सं० मी०	११७	१०	२३	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री दामोदर गुरुना० शाङ्गधरेया विरचिता संहिताया चिकित्सा स्थाने युष्मज्जनवति सकल्पनाध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्या नमः ॥ शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६५१६	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१६७	६०५५	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१६८	१०१६	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१६९	३०१२	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१७०	३७६७	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१७१	३७००	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०
१७२	६४६	शास्त्रगंधरसहिता	शास्त्रगंधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या र्थय पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	अवस्था -- और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ. प्र.	ब.	स. द.	६	१०	११
२७ × ११.३ सं० मी०	३६ १-३६	१० ३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया सूत्र स्थाने परिभाषाय. प्रथमः + + + (१० ५)
२८७ × ११ सं० मी०	१६० १-२, ४-२५, २७-११३, ११५-१६२, १६४-१६८, १७१-१८२, १८४-१८९, १९३-१९८	६ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री दामोदरसूनुना शाङ्गधरेण विरचितायासहितायां चिकित्सास्थाने लेपादिविधिरध्यायः ॥ (पत्र संख्या १८६) + + +
२२.६ × १४.७ सं० मी०	५० सं० २६	१० २५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ × १२ सं० मी०	५० सं० ५६ (१-४०, ४४-६२)	१३ २६	अपूर्ण	सं० १६१८	इति श्री दामोदर सूनु शाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सास्थाने- रसकल्पनाध्यायः समाप्तः ॥ इति मध्यमखंड समाप्तः सर्व १६१८ ॥
२५.२ × ११.६ सं० मी०	५० सं० २१ (१-२१)	११ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गधरेण विरचिताया सहितायामानदाने रोगमणना संख्याध्व. इति पूर्वं खंडः समाप्तः ॥
३० × १५.७ सं० मी०	५० सं० ६ (२-६)	१४ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२८ × ११ सं० मी०	१५७ १, ३-१२, १२-३५-३५- ११३, ११३- १३६, १४१- १५६	८ ३१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७६६	इति श्री दामोदर सूनु श्री शाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सास्थाने- नक्षत्रशादवकर्म विधिरध्यायः ॥ शुभ- मस्तु सेयक पाठयो. श्रीरस्तु समस्त १७७६ वरपे रं शाप कप्य पचम्य चद्रदासरे इह पुस्तकं लिखितं शुभ प्रस्तु ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्यत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रत्येक वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	४५३	शाङ्गधर सहिता मध्य खंड	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७४	१४४	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७५	३१	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७६	४३१३	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७७	१५६०	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७८	१४४६	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
१७९	१०६१	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द. प्र.	व.	स. द.	१०	१०	१०
२८ × ११ से० मी०	६६	१० ०३	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री शाङ्गधरस्य संहितायां चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाध्यायः ॥ इति मध्यम खंड समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ अथ शुभं सवत्सरे अस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्य सं० १८७२ वर्षे चैत्र शुद्धदशमी १० बुध वासरे निख तमिर्ब लक्ष्मण चदर्वं बहवाना शुभ ॥
२५ × १० से० मी०	४६ (२-४७)	६ २६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गधरेण विरचिताया अवलेह कल्पनाध्यायः ॥
३० × १३ से० मी०	४६ (३-३४, ६१-६४, ७४, ८४-८४, ८६ (२-६४)	११ ३४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १३ से० मी०	५३	११ ३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गधरेण विरचिताया संहिताया चिकित्सा स्थाने कषादि कल्पनाध्यायः × × × ॥ (पृ० १२)
२७ × ११ से० मी०	३५ (१-७, १०-३७)	८ २८	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ से० मी०	२७ (१-२७)	११ २६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनु शाङ्गधर विरचिताया संहिताया दारस्थाने योग गणनाध्यायः ॥
२१ × १४ से० मी०	६६ (७-४०, ४२-६६, ७२-६५)	१० २४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	१०८१	शाङ्गधर संहिता	शाङ्गधर		२० का०	२०
✓ १८१	१०७७	शाङ्गधर संहिता (रसकल्पना विधि- रघ्याय)	शाङ्गधर		२० का०	२०
१८२	१०५०	शाङ्गधर संहिता	शाङ्गधर		२० वा०	२०
✓ १८३	४५	शानिहोत्र (तुरग-श्रगासा प्रकरण)	शाङ्गधर		२० वा०	२०
✓ १८४	७७७०	शिलान्तु शोधन (शिलान्तोत शोधन)			२० वा०	२५
✓ १८५	२१६०	भूतम्बर चिन्तिता			२० वा०	२०
✓ १८६	५७३७	वह्मन्तु पद्य			२० वा०	२०

पत्रो या पुष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पुष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे प्रसरसंख्या	क्या प्रथम पुष्ठ है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२६५× १४ से० मी०	८८	१२ ४०	पू०	स १८६६	इति श्री दामोदर सुनो आर्गंधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सा स्थाने नेत्र प्रसादन कर्म अध्यायः द्वाविंशदा- ख्य समाप्त सं० १८६६ मासोत्तमे मास मासे शुक्ल पक्ष शुभ तिथौ सप्तम्या उपरात अष्टम्या चंद्रवारा- न्विताया पुनर्गण लिखित हेतुदात्मज बहेडी मध्ये शुभमस्तु, मंगल ददातु ॥
३२९× १८२ से० मी०	७१ (१-७१)	६ ३४	पू०	प्राचीन स १६३२	इति श्री दामोदर सुनो आर्गंधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सा स्थाने रक्त कल्पनाविधिर्ध्याय चतुर्दश १४ इति श्री मध्यम खड समाप्त ॥ सि० सवत् १६२२ भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदाया भौम वा० ॥
२८५× १४३ से० मी०	८० (१-८०)	१३ ३७	पू०	स १८८८	इति श्री दामोदर सुनो आर्गंधरेण विरचिताया चिकित्सास्थाने नेत्र प्रसादन मर्मसिंस्थान समाप्त ॥ अथ सर्वस्त्रोऽस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राजे सवत् १८८८ वर्षे वैशाखसुदी ४ चौथ वार शनि ॥ श्रीराम श्रीराम
२४५× ११४ से० मी०	६	११ ३५	पू०	प्राचीन	इति आर्गंधर विरचिताया पत्रस्यां तुरगप्रसंग ।
१३६× ८४ से० मी०	४ (१-४)	६ २२	पू०	प्राचीन	इति शिलाजतुन शोधन विधि ॥
२११× १३८ से० मी०	१	२५ ३६	अपू०	प्राचीन	
२३१× ८६ से० मी०	११ (१-११)	७ ३०	पू०	प्राचीन	इति वद्वत्तुपय्य वर्णन ॥ शुभ- मस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीनाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८७	६४३७	पट्टकतुवर्णन	विमलवर्ण		दे० का०	दे०
✓ १८८	६४८४	हृदय दीपक			दे० का०	दे०
उपनिषद्						
१	६३२७	अथर्वणवेदोपनिषद्			दे० का०	दे०
२	१३२१	अथर्वणीय उपनिषद्			दे० का०	दे०
३	$\frac{१४२४}{१६}$	अथर्वशिखोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
४	७१४६	अथर्वशिखोपनिषद् दीपिका (टाना)		श्री अकरानन्द	दे० का०	दे०
५	$\frac{१४२५}{१६}$	अथर्वशिखोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो या आचार ।	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्र संख्या और प्रति पृष्ठ मे अक्षर संख्या	नया ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान अक्ष का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
१३४४ १२८ सं० मी०	०२ १-२	१८१	४०	पू०	प्राचीन इति विमलवर्धन विरचित पट्टभट्ट वर्णन संपूर्ण शुभमस्तु भगवत ॥
१५७४६ सं० मी०	२१ (१-२१)	११	१७	अपू०	प्राचीन इति श्री हृदयदीपके त्रिपाठर्ग ॥२॥ (पत्रसंख्या ५)
१६५४ १०२ सं० मी०	६ (१-६)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १६३२ इत्ययवर्ण वेदोपनिषत्समाप्तम् ॥ श्री रामायनम् ॥ सं० १६३२ । "
२३७४ १९७ सं० मी०	१०८०८६	११	३०	अपू०	प्राचीन
२३२४ १५७ सं० मी०	३२ (२३- २५३)	१२	४६	पू०	प्राचीन इत्ययवर्ण शिखोपनिषदीपिका ७ ॥
२५५४ १०६ सं० मी०	१६ (१-१५)	१४	४३	पू०	प्राचीन इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यान दपाद पूज्यपादशिष्यस्य श्री शंकरानंद भाषकन कृतिरयवर्ण शिखोपनिषदीपिका समाप्ता ।
३२२४ १५७ सं० मी०	११ (१२ २२)	१२	४६	पू०	प्राचीन इत्ययवर्ण शिखोपनिषदीपिका ६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६	$\frac{१५२५}{१६}$	धर्मतन्त्रनूतनिपद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	६० का०	६०
७	७७१७	भस्मोपनिषद्	अबुलफजल		६० का०	६०
८	$\frac{१५२५}{१६}$	भस्मोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	६० का०	६०
९	३७४७	आरण्यक			६० का०	६०
१०	२०३४	ईशावास्यध्याय	शंकर भगवान		६० का०	६०
११	१३७६	ईशावास्योपनिषद्			६० का०	६०
१२	$\frac{२८६०}{३}$	ईशावास्योपनिषद्			६० का०	६०
१३	३११६	ईशावास्योपनिषद्			६० का०	६०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	१६८६ २२	ईशावास्योपनिषद्			दे० वा०	दे०
१५	१०६४	ईशावास्योपनिषद् शांकरभाष्य		शंकराचार्य	दे० वा०	दे०
		"	"	"	"	"
१६	११७६	उपनिषद्मुपचार दीपिका	बैद्यनाथ		दे० वा०	दे०
१७	७१६५	उपनिषद्संग्रह			दे० वा०	दे०
१८	१६०६	उपनिषद्संग्रह			दे० वा०	दे०
१९	६१६	उपनिषद्संग्रह			दे० वा०	दे०
२०	३९६६	उपनिषद्सार संग्रह			दे० वा०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	कथा ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण	
अ	ब	ग	द	१०	११	
२६ २ × १४ १ से० मी०	१०११	१५	४६	पूर्ण	प्राचीन	इति ईशावास्य उपनिषद् समाप्त ।
२५ + १० = ३५ से० मी०	१४ (१-१४)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्सरमहामयस्त्रिराजकाचार्य वयसाविदभगवत्पूज्यपादशिष्य शर- भगवत् कृता ईशावास्यभाष्यसमाप्त श्री ब्रह्मार्पणमस्तु । ***
२८ ८ + १८ २ से० मी०	१० से०	१८	२६	पूर्ण	प्राचीन	
३३ ६ + १४ ५ से० मी०	१० १-१०	११	६०	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ + ६ से० मी०	१४ (१-१४)	१०	२३	पूर्ण	प्राचीन	तेजस्विनावधितमस्तु भाविष्ठ्यावहे ॥ श्रीम् ॥ याति ॥ याति ॥ याति ॥
२१ २ + १० ३० मा०	५६	६	२६	पूर्ण	से० १८२६	यमत १८२६ प्रमायिनाम सवत्सरे भाष्यसिपमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मदवासरेलिखित ॥
२८ + ११ = ३९ से० मी०	२३	११	४७	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१३६७	ऐतरेयोपनिषद्			१० का०	१०
२२	३६३१	ऐतरेयोपनिषद्			१० का०	१०
२३	३४१५	ऐतरेयोपनिषद्			१० का०	१०
२४	११३१	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य			१० का०	१०
२५	६३५	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य- टिप्पणी	ज्ञानामृतमति		१० का०	१०
२६	२६६२	ऐतरेयोपनिषद् सटीक			१० का०	१०
२७	२८६० ३	कठोपनिषद्			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बर्न- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द. अ.	द.	अ. द.	ह.	१०	११
१६५X८ से० मी०	६	६ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति एतरेग्रोपनिषत्समाप्तम् ॥
१६७X७६ से० मी०	५०६०५ (१-५)	७ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
१६४X १०२ से० मी०	१० (१-१०)	७ १५	पूर्ण	प्राचीन	
२५५X १०५ से० मी०	७ (१-७)	८ २८	पूर्ण	प्राचीन	ऊँ शांति शांति शांति ॥
२१६X८८ से० मी०	१३ (१-१३)	१३ ३८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री मद्भुक्तमानुत पूज्यपादशिष्यस्य ज्ञानामृतयते कृतो श्रीमद्भैरवोप- निषत्समाप्तम् ॥ प्रथमारण्यक संपूर्ण ॥ सं० १७३५ वि० सवत्सरे आश्विन शुद्ध ७ गुरुवार ॥ कुल्लदश पुस्तक पुस्तक नारायणलाल शिवरामस्य ॥
२३१X १५८ से० मी०	५०६०८	१६ ६२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३X १०१ से० मी०	५०६०६ (५-१३)	६ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति कठबल्युपनिषद् संपूर्ण समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१२८	८६३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०
२६	२४२५	कठोपनिषद् भाष्य (टीका सहित)			दे० का०	दे०
३०	१०६४	कठोपनिषद् (शावर भाष्य)		शकराचार्य	दे० का०	दे०
३१	१५७८ ६	वालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३२	१९००	वालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३३	३४३५	वालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३४	३५४१	वालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		प	द			
२५ ३/४ १०६ से० मी०	१४ (१-१४)	७	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३१४ X १६ २ से० मी०	१० सं० २८ (१-२४)	१८	५२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री शङ्करभ्य काठकोपनिषद् भाष्य टीका समाप्ता ।
२५ ३/४ १०८ से० मी०	५३ (१-५३)	६	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गोविन्दभगवत् पूज्यपाद शिष्य- स्वपरमहन् परिब्राज कार्यस्य श्री मछ- कर भगवत् रत्न काठकभाष्ये द्वितीया- ध्यायं तृतीया वल्ली ॥ सापष्टी वल्ली समाप्ता ॥
३४ X १७ ४ से० मी०	१	१६	६०	अपूर्ण	प्राचीन	
१३ X ६ ५ से० मी०	२	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत् समाप्ता ॥ सिधमस्तु ॥ श्री ॥
१५ ६ X १० ६ से० मी०	१० सं० १० (१-६, ६ १२)	७	२२	अपूर्ण	प्राचीन (स १८२४)	इति श्री नदिकेश्वर पुराणे कालाग्नि- रुद्रोपनिषत्संपूर्णम् ॥ फागुनसुदि संवत् १८२४ पटनाय ॥
२२ ५ X १० से० मी०	१० सं० १० (१-१०)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नदिके स्वर्पुराणोक्त कालाग्नि- रुद्रोपनिषद् संपूर्णम् ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सूच्या वा सग्रहविशेष की सूच्या	ग्रंथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	३३७५	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३६	४६४८	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३७	४३८१	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३८	६६६७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३९	५७६६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४०	६१०७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४१	१२८७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पवित सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो बर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
२०×११५ से० मी०	७ (१-७)	१० २६	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त श्री बालाग्निरद्वोपनिषत् संपूर्ण समाप्तम् ।
२७१×११७ से० मी०	१	८ २८	५०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरद्वोपनिषत्समाप्ता राम ।
१६१×८६ से० मी०	४ (१-४)	७ १६	५०	प्राचीन	तत्सदिति बालाग्निरद्वोपनिषत्समाप्ता ॥
१७×१०३ से० मी०	७ (१-१)	७ २१	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त कालाग्निरद्वोपनिषत्समाप्तम् ॥***
२१×१०२ से० मी०	१० (१-१०)	७ २६	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वरपालयोक्त श्री कर्गिरद्वोपनिषत् समाप्ता ॥ शुभम् *****
१६६×११७ से० मी०	६ (१-६)	१० २६	५०	सं० १८८२	इति श्री नदिकेश्वरपुराणोक्त बालाग्निरद्वोपनिषत्सुप्रथमस्तु सवत् १८८२ एकादश २ ॥
११.८×७.६ से० मी०	८० सं० १७ (२-१७, २१)	६ १२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८८८	

प्रभाव और विषय	पुस्तकालय की आगत संस्था वा संग्रहविशेष की संस्था	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ विस वस्तु पर लिखा है	विपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	२८६० ३	वेनोपनिषद्			३० वा०	३०
४३	४५७८	वनापनिषद्			३० का०	३०
४४	१०६५	वेनोपनिषद् (साकर भाष्य)			३० वा०	३०
४५	१५७८ ६	कैवल्योपनिषद् ॥			३० का०	३०
४६	७७७२	कैवल्योपनिषद्			३० का०	३०
४७	३२२४	वैवर्त्योपनिषद्			३० का०	३०
४८	४२६६	वैवर्त्योपनिषद्			३० का०	३०

पदों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म वक्ति संख्या और प्रतिपक्ति म अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्तमान अक्ष या विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	व	स	द	६	१०
२२३ × १०१ से० मी०	१०	६१		अपूर्ण	प्राचीन इति श्री तामवेदीयाना के।पनिषदे त्वमाध्याय ॥
१२६ × ११ से० मी०	७ (१-७)	७	१५	पूर्ण	प्राचीन इति जैमिनी शास्त्रा मामवेदोक्त केनो- पनिषत्समाप्त ॥ " ...
२५ × १०७ से० मी०	२२ (१-२२)	१०	३६	पूर्ण (११)	प्राचीन इति श्री गोविदभगवत्सूज्यपादमित्य- परमहंस परब्राह्मणकल्पश्रीशंकरभगवत् कृतापदभाष्य समाप्त ॥ कनभाष्य- समाप्त श्री ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
३४ × १७४ से० मी०	१	१६	६०	पूर्ण	प्राचीन इत्यथवेदे * कैवल्योपनिषत्समाप्ता ॥
१६२ × १० से० मी०	६ (१-६)	६	१८	पूर्ण	प्राचीन इति श्री कैवल्योपनिषद संपूर्णम् ॥
१३ × ८२ से० मी०	१० (१-१०)	६	१७	पूर्ण	प्राचीन इति कैवल्योपनिषद्विवरण वेदात शास्त्रोक्त । श्री गजाननार्पण मस्तु । श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु मस्तु ।
१८४ × १०८ से० मी०	७ (१-७)	७	१५	पूर्ण	माके— १७३६ इति कैवल्यउपनिषत् ॥ सम्यक्ज्ञानो सदायोगी सत्तारमनुव्रजेते ॥ परपुरु- षेष्ठ या नारी भर्तारमनुव्रते ॥ शक १७३६ आदपद आधीन शुद्ध सप्तमी तद्दिने समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	३४१४	कैवल्योपनिषद्			२० का०	दे०
४७	४५८८	कैवल्योपनिषद्			२० का०	दे०
४९	$\frac{१६८६}{२२}$	कैवल्योपनिषद् (संस्कृत टीका)		विद्यारम्भ	२० का०	दे०
५२	५२४६	कैवल्योपनिषद् (सटीक)			२० का०	दे०
५३	$\frac{१५२५}{१६}$	सुरिकोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	२० का०	दे०
५४	१३७४	महदोपनिषद्			२० का०	दे०
५५	$\frac{१५७८}{६}$	महदोपनिषद्			२० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
१७ X ६ से० मी०	३ (१-३)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषत्समाप्ता । ॐ शान्ति ।
१८.२ X १३ से० मी०	१३ (१-१३)	१४	३०	पू०	प्राचीन	एतत्कैवल्योपनिषदोज्ञानफलस्य परब्रह्म रूपस्यात् केवल पाठस्य बध्यमाण फलान्याहे..... (पत्रसंख्या-१३, पङ्क्ति संख्या ६ से)
२६.२ X १४.१ से० मी०	१३	२५.३	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गोपनिषदकैवल्योपनिषद्-दीपिका ॥ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य कृतसमाप्ताः ॥
२८.५ X १३.६ से० मी०	१३	१३	३७	पू०	सं० १८७०	इतिकैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥ सवत् १८७० मार्गशिरमासे कृष्णे-एकादश्या गृहवासरान्विताया विहित-मिदलदमणमिधामेन आत्मपठनार्थः शुभमस्तु ॥.....
३२.२ X १५.७ से० मी०	४३ (३-८)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति शूरिकापनिषद्दीपिकासमाप्ता चतुर्था ४ ॥
२० X ६.५ से० मी०	६	२५	२६	पू०	प्राचीन	इति गच्छद्वयनियमपद् संपूर्ण ॥
३४ X १७.४ से० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे शास्त्रोपनिषदीपिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६३	१६६२	गोपाल सत- तापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	४३७४	गोपीचरनोपनिषद्			दे० का०	दे०
६५	३८६४	चाक्षुषोपनिषद्			दे० का०	दे०
६६	$\frac{१५२५}{१६}$	चूलिकोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
६७	१४६५	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	२८६१	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६९	३१२६	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द. अ.	ब.	स. द.	६	१०	११
१६.३ × १०.७ से० मी०	२१ (१-२१)	६ १७	पू०	प्राचीन सं० १७६८	इति गोपालाया उपनीतम् समाप्तः ॥ संवत् १७६८ नापोशद्विंशौ लोखित मयचोलिनीर्भय राम राघवराम घोलकिया । कल्याणमस्तु । शुभव भवतु ॥
१५.८ × ८.६ से० मी०	५० सं० ५ (१-५)	६ २७	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति अथर्वनवेदगोपी चदनोपनिषत्संपूर्ण मुद्रमस्तु मंगलं ददातु भूम्यात् संवत् १८७३ मार्ग कृष्ण १४ चंद्रबासरे लिपयं श्रीगोतिपरमनुप ॥
१८.४ × ११.७ से० मी०	२ (१-२)	६ २५	पू०	सं० १६३४	इति श्री चाक्षुषोपनिषत्समाप्तम् श्री संवत् १६३४ ।
३२.१ × १५.७ से० मी०	३३ (८३-११)	११ ४८	पू०	प्राचीन	इति धूलिकोपनिषदीपिका ५ ॥
१६.५ × ८ से० मी०	११	११ २६	अपू०	प्राचीन	इति छंदोग्येष्ट प्रपाठवत्समाप्तः ॥
२३.३ × १०.४ से० मी०	५० सं० ११ (१-११)	८ ३२	पू०	प्राचीन	इति छादोग्यसप्तमः प्रपाठकः ॥ श्री सच्चिदानंदारणमस्तु ॥***
२८.५ × ११.७ से० मी०	६१ (१-६१)	८ ४०	पू०	सं० १६०६	इति छादोग्यतानिपट् बाह्यस्य संपूर्ण । समाप्तं ॥ शुभभवतु ॥ संवत् १६०६ शके १७७१ मार्गसोपे मासि शुक्ल पक्षे तिथौ --- श्री वेदपुराशायनमः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३३६०	छादोग्योपनिषद्			६० का०	६०
७०	३०७२	छादोग्योपनिषद्			६० का०	६०
७१	१६५१	छादोग्योपनिषद्			६० का०	६०
७२	४५१	छादोग्योपनिषद् प्रकाशिका			६० का०	६०
७३	७६५	छादोग्योपनिषद् (ब्राह्मण)			६० का०	६०
७४	$\frac{१५७८}{६}$	जावालीउपनिषद्			६० का०	६०
७५	७३००	जावाल्पोपनिषद्			६० का०	६०

पत्रों या पृष्ठों का मापार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रतिपवित्र में धत्तर संख्या		क्या छप पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३	१४
३२.५ × १६ से० मी०	५६ (१-५६)	१५	६०	पू०		इति छादोग्योपनिषत्पटमोऽध्यायः
२३.२ × १०.५ से० मी०	६	८	३१	पू०	प्राचीन	इति छादोग्योपनिषत्पटमोऽध्यायः ॥ इति छादोग्यो पटमः प्रपाठकः ॥ माति पाठः X X X
३०.५ × १३.५ से० मी०	२७ ४५, ७१, ६५	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
३०.२ × १३.१ से० मी०	५०, ६०, ८५	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × ११ से० मी०	५५ (१-५५, ६६-७५)	१५	३५	अपू०	प्राचीन	इति सामवेदस्य छादोग्यो उप- निषद् ब्रह्मणः समाप्तः ॥
३४ × १७.५ से० मी०	४	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे जाबालीपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × १२ से० मी०	२ (१-२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति जाबालोपनिषत्समाप्ता ॥ श्री सर्वविद्यानिघान कबीन्द्रा- चार्य्य सस्त्रचोना जाबालोपनिषत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४२७७	तुरीयातीतोबधूतोपनिषद्			दे० का०	दे०
७८	१२२५ १६	तेजोबिन्दूपनिषद् (सरकृत टीका सहित)		नारायणः	दे० का०	दे०
७९	६१३	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८०	१२५७	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८१	१०२३	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८२	१०६८	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८३	१०६६	तैत्तिरीयोपनिषद् (शाकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
८४	३४६३	दत्तात्रेयउपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
१७'५" X ११'४" से० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति तुरीयातीतोवधूतोऽपनिपत्स- माप्ता ॥
३२'५" X १५'७" से० मी०	१३ ६३-६४	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति तेजोवधूतपनिपत्दीपिका २१ ॥
२५'३" X १०'६" से० मी०	० १५ (१-१५)	=	२५	अपू०	प्राचीन	
१६'५" X ८" से० मी०	१४	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री तैत्तिरियोपनिषदि तृतीय- प्रपाठकः ॥
२५'१" X १०'६" से० मी०	५० सं० ३६ (१-३६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति यमेव यथोक्तानामस्यावस्थां ब्रह्म, विद्योपनिषत्समाप्तो विद्यामः ॥ ... समाप्ता नन्दवल्ली ।
२५'३" X १०'५" से० मी०	२५ (१-२५)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमोक्षभाष्य समाप्त श्रीब्रह्म- ण्यणमस्तु ॥
२५'२" X १०'७" से० मी०	१० (१-१०)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविन्दभगवत्सूक्तस्य शिष्य- स्यवरमहम् वरिष्ठाज्जगत्पादस्य श्री ब्रह्मभगवत्सु तैत्तिरीयोपनिषद्- भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ श्रीब्रह्मार्पणं भस्तु
२४" X १४'५" से० मी०	४ (१-४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रयोपनिषद् अष्टांश- वेदीयन समाप्तमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	$\frac{१५२५}{१६}$	ध्यानविन्दूपनिषद् (संस्कृत टीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१८६	$\frac{१५२५}{१६}$	नादविन्दूपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१८७	$\frac{३१७}{२}$	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
१८८	३४१३	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
१८९	४५७६	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
१९०	१८५४	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
१९१	$\frac{१५२५}{१६}$	नीलकण्ठोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमद्वया मोर प्रति पत्रि म प्रशरगख्या		कया ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अथ वा विवरण	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	य	स	द	६	१०	११
३२२× १५७ से० मी०	५॥ (५-६२॥)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिप्र्यानविदूषनिपद्दीपिका ।
३२२× १०४ से० मी०	२॥ (४७-४६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिनारदविदूषनिपद्दीपिका संपूर्ण ।
१२२× ११२ से० मी०	११ (१-११)	७	११	पू०	प्राचीन सवल १६३५	इत्येववेदे अथर्व नारायणोपनि- षत्समाप्तम् लिपिकृत देवीदत्त उपोतिविदा । स० १६३५ भाष कृष्ण १ तिथी ।
१८×८५ से० मी०	३ (१-३)	६	३२	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदनारायणोपनिषत्संपूर्ण शुभमस्तु ॥
१७६× ११५से०मी०	४ (१-४)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति निरालवोपनिषद । समाप्त ॥
१६×१० से० मी०	५	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्ववेदा वेदोक्त निरालम्बोपनिषद् समाप्त ॥
३२२× १५७ से० मी०	२॥ (४५- ४६॥)	११	४६	पू०	प्राचीन	इतिनीलरुद्रोपनिपद्दीपिका संपूर्णम् १६

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१ ६२	१३४८	नृसिंहोत्तर तापिनी उपनिषद् दीपिका (१-६) खड			दे० का०	दे०
६३	२१५५	नेत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	२५३६	बृहदारण्यक			दे० का०	दे०
६५	२६	बृहदारण्यक पञ्चोध्याय			दे० का०	दे०
६६	१०५६	बृहदारण्यक उपनिषद्			दे० का०	दे०
६७	३४४३	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	७०५६	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	१०	१०	१०
३२ × १५.५ सें० मी०	५१ (१-५१)	१२	४६	पू०	प्राचीन म० १८६४ इति श्री नृसिंहोत्तर तामिनी दीपिका समाप्त शुभमस्तु सं० १८६४ मी भादो सुदो क्वार सुक्करवार ॥
१६.८ × १२.२ सें० मी०	१० सं० १	१०	१६	अपू०	प्राचीन
३४.६ × १३.५ सें० मी०	१० सं० ३६ (१-३६)	११	४७	पू०	प्राचीन बृहदारण्यक चतुर्दश कांड..... सहिताया चत्वारिंशोऽध्याय ॥
२०.२ × ८.४ सें० मी०	१० सं० २४	७	२६	पू०	प्राचीन इति बृहदारण्यके पठोऽध्याय समाप्तः शुभमस्तु ॥
२३ × ६.८ सें० मी०	५५	६	२७	अपू०	प्राचीन इति श्री बृहदारण्यकोपनिषत्समाप्ता ॥ सर्वात्मने नमः ॥ श्रीकृष्णार्णवमस्तु ॥
२०.५ × ६.५ सें० मी०	१० सं० १६ (१-१६)	८	३२	अपू०	प्राचीन इति बृहदारण्यके उपनिषत्पादे चतुर्थो- ऽध्याय ॥.... तत्सत् ब्रह्माप्यमस्तु ॥
३१.७ × १५.६ सें० मी०	७ (४६- ५३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन ***बृहदारण्यकोपनिषदि पठोऽध्याय ॥ (पत्र-संख्या-५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्दिष्ट
१	२	३	४	५	६	७
६६	३६५	बृहदारण्यकोपनिषद्			१० का०	१०
१००	३४०८	बृहदारण्यकोपनिषद्			१० का०	१०
१०१	३६०१	बृहदारण्यकोपनिषद् (टीका)		शिवराचार्य	१० वा०	१०
१०२	३७३०	बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य			१० वा०	१०
१०३	३६५४	बृहदारण्यकोपनिषद् (संस्कृत टीका)*		भक्तपदानन्द- ज्ञान	१० वा०	१०
१०४	२५३८	बृहदारण्यकोपनिषद् (संभाष्य)		शिवराचार्य	१० का०	१०
१०५	१५२५ १६	ब्रम्हविदूषणनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	१० वा०	१०

पत्रा या पृष्ठो वा मातार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्ति संख्या और प्रति पत्ति में अक्षरसंख्या	नया ग्रन्थ पूरा है? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण	
८४	४	५	६	१०	११	
२६५X १०५ सं० मी०	२७(१५१- १७२ २०१- २०२, २६२- २६४)	७	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
१०५X७३ सं० मी०	५७(१-४३, ४६-५६)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	यमु साग्रिय बृहदारण्यकउपनिष ॥ समाप्त ॥
२६५X ११ सं० मी०	४६(१-४६)	११	४४	अपूर्ण	प्राचीन	श्री गोविंदभगवत्पाद शिष्यपरमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीशंकरभगवत कृताया बृहदारण्यकटीकायां अतुमोध्याय समाप्त ॥ शुभभवतु ॥
२८३X १२५ सं० मी०	२२	१७	५२	अपूर्ण	प्राचीन	
२८८X १०१ सं० मी०	६५(१-६५)	१०	५१	पूर्ण	संवत् १६४१	इति श्री परिव्राजक शुद्धानंद ऋष्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृताया बृहदा रण्यकभाष्यटीकाया अष्टमोध्याय ॥ संवत् १६४१ वर्षे आषाढ शुद्धि २ रवौतदोष्य शतीमनुपाध्याकोशवेनलेखित- मिद पुस्तक जयतु श्रीशुभमस्तु
३५X१३५ सं० मी०	३२७	१२	५७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीगोविंद भगवत्पूज्य पादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीशंकर भगवत कृताया बृहदारण्यक धृती अष्टमोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७४७ समये
३२२X १५७ सं० मी०	११ (५०-५१)	११	५१	अपूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मविदु उपनिषदीपिका अष्टादशी १८

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयवार	टीकावार	प्रय निरा वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	$\frac{१५२५}{१६}$	ब्रह्मविद्योपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	६० का०	६०
१०७	$\frac{१५२५}{१६}$	ब्रह्मोपनिषद्		नारायण	६० का०	६०
१०८	३८४४	ब्रह्मोपनिषद्			६० का०	६०
१०९	६२६	भावनोपनिषद् भाष्य		भास्कर	६० का०	६०
११०	$\frac{१५२५}{१६}$	महोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	६० का०	६०
१११	१७००	मादुकोपनिषद्		श्री शंकरानन्द	६० का०	६०
११२	७२२४	मादुकोपनिषद् भाष्य (गोउपाद भाष्य)		मधवदाबद ज्ञान	६० का०	६०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिगणना और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ की अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२२× १५७ से० मी०	२ (२-३)	११	४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मविद्योपनिषद्दीपिका तृतीयो- पनिषत् ३ ॥
३२२× से० मी०	७ (३५-४१)	११	४८	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषद्दीपिका १० ॥
१६५×११ से० मी०	२ (१-२)	११	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषत्सप्तमः ॥
२७×१२४ से० मी०	१४	१०	३६	पूर्ण	सं० १६७५	इति भावनाभाष्य समाप्त ॥ सं० १६७५ स्य संशोधनप्रवर्तने नवग्रन्थों चन्द्रबाहरे समाप्तिमगात् ॥
३३२× १५७ से० मी०	३ (३२-३४)	१३	४०	पूर्ण	प्राचीन	इति महोपनिषद्दीपिका समाप्ता ६।
१६५×८ से० मी०	५	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति माण्डूकीयनिरुद्ध समाप्त ॥
२५४× १३२ से० मी०	३० (१-३०)	१६	३८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री परमहंस योगिभक्तिकाव्यं श्री मुद्राक्षर पुस्तकाद शिष्य भगवत्पाद- ज्ञान विरचिताया गोप्याद भाष्य टीकाया प्रथम अक्षरस्य समाप्त ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकानाम की आगत मध्या या मद्रहविशेष की मध्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकारार	ग्रथ निरा वस्तु पर निर्या है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	७६३६	माहूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११४	$\frac{३८१२}{२}$	माहूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११५	३४२५	माहूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११६	३५५१	माहूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११७	$\frac{२८६२}{३}$	माहूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११८	३४१८	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०
११९	$\frac{२८६२}{३}$	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार :	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	धन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
२४५× १२४ से० मी०	७ (४-६७, ११)	११	२६	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री माहक्योपनिषद्गौडपाद व्याख्याने वैवर्ध्याख्य द्वितीय प्रकरण समाप्त ॥
१६५× ११२ से० मी०	१	११	३६	पूर्ण	प्राचीन हरि ॐ तत्सत् माहक्योपनिषत्समाप्त ॥ [नोट - इसके नीचे शकराचार्य कृत 'कोपीन पंचम' स्तोत्र भी है]
१५५× ११५ से० मी०	८ (१-८)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन इति श्री माहक्योपनिषत्संपूर्ण ॥
१५×८८ से० मी०	३ (१-३)	७	१६	पूर्ण	प्राचीन इति माहक्योपनिषत्समाप्त ॥
२३×१०२ से० मी०	१० सं० २३	७	२७	पूर्ण	प्राचीन इति माहक्योपनिषत्समाप्तम् । पूर्ववत् शांति कुर्यात् ॥
१६×१० से० मी०	७ (१-७)	११	२६	पूर्ण	प्राचीन मुदकोपनिषत्समाप्ता ॥
२३×१०२ से० मी०	१० सं० ६३	६	२६	पूर्ण	प्राचीन इति मुण्डकोपनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	६५६	मुण्डकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२१	११०२	मुण्डकोपनिषद् (शंकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१२२	११००	मैत्रायण्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२३	$\frac{१५७८}{६}$	परमहंसोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२४	६५५	पूर्वतापित्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२५	$\frac{३८४२}{३}$	प्रश्नोत्तर मालिका (प्रश्नोपनिषद्)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२६	१४५४	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो, का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२५१× १०५ से० मी०	३	८	२७	पू०	प्राचीन	
२५२× १०८ से० मी०	४४ (१-४४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीमच्छकर- भगवत हरतादाथर्वण मु ङकोपनिषदि- वरण समाप्त ॥ श्री ब्रह्मर्षिणामस्तु ॥
२८६×१११ से० मी०	१०६०१७ (१-१६, १६)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति भैक्षायन्यपनिषदि सप्तम प्रपा- ठक ॥ लिखितमिद श्री मन्महादेव कवीन्द्रसरस्वत्या ॥
३४×१७४ से० मी०	६	६	६३	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वेदे परमहंसोपनिषत्समाप्ता ॥
१७५×८ से० मी०	७	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये पूर्वतापनियोपनिषद्- समाप्त ॥ शुभ ॥
१४५× ६५ से० मी०	२ (१-२)	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिते अग्नो- त्तर मासिवादेव्य संपूर्णम् ॥
२५३× १०७ से० मी०	८०८६ (१-६)	८	२६	पू०	प्राचीन	अग्नोपनिषत्समाप्ता ॥ ***स्वतन्त्रो बृहस्पतिश्चातु ॥ कं शाति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	३४१६	प्रश्नोपनिषद्			दे० वा०	दे०
१२८	२८६२	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२९	१०००	प्रश्नोपनिषद् भाष्य			दे० वा०	दे०
१३०	१५२५ १६	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३१	६१३०	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३२	१५२५ १६	योगतत्त्वोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१३३	१५२५ १६	योगशिवोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिका संख्या और प्रति पत्रिका मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
१४ × ७ = सं० मी०	२१ (१- २१)	६	२०	५०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्समाप्त ॥
(२३ × १०२) सं० मी०	५० सं० ७ (१-७)	६	२६	५०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्संपूर्णं समाप्तम् श्री बृहस्पत्यस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२५२ × १०५ सं० मी०	५० सं० ३२ (१-२१)	६	३१	५०	प्राचीन	इति श्री शंकर भगवत् कृतौ मयर्व- खोपनिषत्प्रश्न भाष्य विवरण समाप्त ॥ ** *** द्वितिया सोमवासरे ॥
३२२ × १५७ सं० मी०	३३ (४२-४४)	१३	४६	५०	प्राचीन	इति प्राणान्निहोत्रोपनिषत्समाप्ता ११
२२ × १८५ सं० मी०	४ (१-४)	॥	२१	५०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री प्राणान्निहोत्रोपनिषत्समाप्त संपूर्ण ११ मीती माघ कृष्ण १३ त्रिपुदश्या मृगौ शवत १६०३ लोपी कृत योगपालेन नसीराबाद की छावणी मधे **
३२२ × १५७ सं० मी०	(६७- ६८) २	१२	४७	५०	प्राचीन	इति योगतत्त्वोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २३
२३२ × १५७ सं० मी०	२ (६५- ६६)	१२	४८	५०	प्राचीन	इति योगशिखोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २२

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	४१४०	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३५	७५०२	रामतापनीउपनिषद् (पूर्व एक उत्तर)			दे० का०	दे०
१३६	५६२४	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३७	$\frac{४३३०}{२}$	राममन्त्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३८	६१२७	रामोत्तरतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३९	१४०८	रामोत्तरतापनीउपनिषद् (प्रदीपिका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१४०	३३६०	रामोत्तरतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	ब	स द	६	१०	११
२४ × १०.६ सं० मी०	५६७०१८ (१-३, ३-१७)	७ २७	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति सप्ताषट्वारिगन्मर्बेनित्य देवं स्तौति तस्य देव प्रीतो भवति स्वात्मानदर्थं यतितस्माद्य एतं मर्बेनित्य देव स्तौति मदेव पश्यति सोमं तत्त्वं गच्छति इत्यथ-वर्णं रहस्येऽश्री रामस्योत्तरतापनीयोप-निषत्समाप्तं चैत्र सुदि १ गुरुवासरे संवत् १६०६ ॥ शुभ ॥
२३ × ६.५ सं० मी०	११ (३-१३)	७ २६	अपू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे रामपूर्वतापनीयमुपनिषत्समाप्ता ॥ (पत्र सं० ६)
२१.५ × १०.१ सं० मी०	१३ (१-१३)	६ २७	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे रामोपनिषद् उत्तरतापनीयं नाम संपूर्णं ॥
१३.३ × १०.६ सं० मी०	२ (१-२)	७ १६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्ववेदरहस्ये श्री राम मन्त्रोपनिषत्समाप्तः ॥
१४.५ × १०.२ सं० मी०	०२६ (१-२६)	७ १६	पू०	प्राचीन	इति इत्यथर्ववेद वेदे श्री रामोत्तर तापनीयोपनीषत्समाप्ता ॥
३१.७ × १५.६ सं० मी०	५०६०२५ (१-१५, १६-२६)	१० ४६	अपू०	प्राचीन	नारायणोत्तरचिन्ता श्रुति भास्वोपजीविना । अस्पष्ट यदवाक्याना रामोत्तर प्रदी-पिका ॥ इति रामोत्तरतापनीयोपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × ११ सं० मी०	८ (२-४, ६-१०)	६ ४४	अपू०	सं० १७१६	इत्यथर्ववेदे रामोत्तरतापनीयमुपनिषत्समाप्ता शुभमस्तु संवत् १७१६ के फाल्गुन शुक्ल ३ तृतीयाया रविवासरे ॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	प्रवक्तार	टीकाकार	प्रथम लिखित वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४३३० २	रामोपनिषद्	०		मि० का०	६०
१४२	२७५६	रुद्रोपनिषद्			६० का०	६०
१४३	३१०७	वज्रसूक्तिकोपनिषद्			६० का०	६०
१४४	३२६०	वज्रसूक्तिकोपनिषद्	शकराचार्य		६० का०	६०
१४५	२३४१	वज्रसूक्तिकोपनिषद्	शकराचार्य		६० का०	६०
१४६	२१६	वज्र सूची उपनिषद्	शकराचार्य		६० का०	६०
१४७	२८७३	वज्र (वज्र) सूची उपनिषद्	शकराचार्य		६० का०	६०

पत्रा या पृष्ठ या मातार	पत्रमात्र	प्रति पृष्ठ में पक्ति मात्रा घोर प्रतिपत्ति में प्रथम मात्रा	क्या प्रथम पंक्ति है ? पूर्ण है तो वन- मान प्रथम का विवरण	प्रयत्ना घोर प्रतीकता	अन्य ध्यायन विवरण
८४	८	८	८	१०	११
१५३५ १०६ सं० मी०	१	७	१६	पू०	प्राचीन इति श्री रामवेदे श्री रामोपनिषद गम्पूर्ण शुभमुपात् ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
२१५८५ सं० मी०	६	१०	२५	पू०	प्राचीन इति श्री नदिवेश्वर पुराणोक्तकालानि रद्वोपनिषत् संपूर्णम् ॥
१५३५६ सं० मी०	६ (४, ७-१४)	७	१६	पू०	सं० १६१८ इति श्री बज्रसूक्तोपनिषद्भिभागो रामोपनिषद समाप्ते शुभमुपात् सवत् १६१८ शके १७८३ कार्तिक शुक्ल. १२.....
१८५५ ११८ सं० मी०	१० सं० ८ (१-८)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १६०६ इति श्री मत्स्यराजार्थ विरचित बज्र- सूची उपनिषत्समाप्ते शुभमुपात् श्री सम्बत् १६०६ शके १७७१ फाल्गुन शुक्ल १२ ।
२५३५१४ सं० मी०	६	६	२०	पू०	सं० १६१४ इति श्री शिवराजार्थ विरचितामां उप- निषत्सुबोधिन्या बज्र सूची समाप्ता चैत्रे मासे नितेपक्षे पट्पक्षे शुभ वासरे लिप्तहोमासहायेन श्री शंकर प्रसादत सम्बत् १६१४ शुक्ल द्वारे लिखित मीनी सरस्वतीपठनाय ॥
१५५११३ सं० मी०	८ (१-८)	११	१७	पू०	प्राचीन सं० १८५५ इति श्री बज्र सूची उपनिषत्समाप्ता सं० १८५२ ।
२४२५ ११२ सं० मी०	१० सं० ५ (१-५)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं० १८८२) इति श्री मत्स्यराजार्थ विरचित बज्र सूची उपनिषत् समाप्ता ॥ सवत् १८८२ तत्र शके १७४७ तिथी....॥

क्रमानुसार विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस पुस्तक पर लिखा है	मूल्य
१	२	३	४	५	६	७
१४८	१६६६	वाजसनेयसंहिता- पनिपद्		शक्राचार्य	६० का०	६०
१४९	१४१०	वासुदेवोपनिषद्- दीपिका			६० का०	६०
१५०	६६८	वेदात्मतविभ्रामंती- पनिपद्	शक्राचार्य		६० का०	६०
१५१	८६१	पौण्डरीकपनिपद्			६० का०	६०
१५२	१५२५ १६	संन्यासोपनिषद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	६० का०	६०
१५३	१५७८ ६	सर्वोपनिषत्सार			६० का०	६०
१५४	१६२७	सूर्योपनिषद्			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का प्रसार	प्रथमकथा	प्रति पृष्ठ मे पत्रिका सङ्ख्या और प्रति पत्रिका मे प्रसार मङ्कल	प्रथम प्रमाण है ? प्रमाण है ता का- मान प्रमाण का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	प्रमाण विवरण
८८	८	८	८	१०	११
३२५×१२३ से० मी०	६ (१-६)	१८ २४	प्र००	प्राचीन ६०१८३६	इति श्री परमहंस परिम्राजराचार्य योगोविद भगवद्भगवत्पाद निष्पत्ति ॥ ०० भगवत् भगवत् कृतो राजमानस महिमा- पनिषद् भाष्य सप्तमम् सवत् १८७६ ॥
३३४×१७३ से० मी०	३ (३१-३३)	१२ ६१	प्र००	प्राचीन	इति वामुदेवोपनिषद्पिपरा समाप्ता ॥
२०१×११२ से० मी०	११ (३-१३)	१० २३	प्र००	प्राचीन	इति श्री गङ्गाचार्य विरचित वेदान मन्त्रविश्रामतोपनिषदसमाप्ता ॥
२१५×६१ से० मी०	४४ (२-४४)	११ २७	प्र००	प्राचीन	इति षोडशोपनिषत् ॥ १६॥
३२२×१५७ से० मी०	१३ (६६-८१)	१५ ५१	प्र००	प्राचीन	इति सन्यासोपनिषद्पिपरा समाप्ता ॥
३४×१७४ से० मी०	३	१६ ६०	प्र००	प्राचीन	इत्यपर्ववेदे सर्वापनिषत्समाप्ता ॥
१२८×७६ से० मी०	२	८ १३	प्र००	प्राचीन	इति श्री सूर्यापनिषत्समाप्तम् शुभम् ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या मसहृविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	६३७ २	सूर्योपनिषद्			दे० वा०	दे०
१५६	७१६४	सूर्योपनिषद्			मि० का०	दे०
१५७	२२६०	स्वरूपोपनिषद् प्रकरण			दे० वा०	दे०
१५८	१८८६ २२	स्वरूपोपनिषद्			दे० का०	दे०
कर्मका १	२४६७	भग्न करन्यास			दे० का०	दे०
२	३७०५	अतोष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०
३	३७७६	अतोष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
(२६२×१११) सें० मी०	१	६ ३३	पू०	प्राचीन (सं० १६१०)	इति सूर्योपनिषत्समाप्त सं० १६१० भावण वासे कृष्ण पक्ष श्री श्री श्री०
१०१×६३ सें० मी०	५ १-५	८ १५	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदोसूपनिषत् ॥
२२८×१२४ सें० मी०	३ (१-३)	१० २४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वर्णोपनिषत् प्रकरण संपूर्णम् ॥
२६२×१४१ सें० मी०	१	२० ५०	पू०	प्राचीन	इतिस्वरूपोपनिषदप्रकरणसंपूर्णसमाप्त
१७×६५ सें० मी०	४	॥ १८	पू०	प्राचीन	इति अथर्वन्यास करन्यास संपूर्ण ॥
२३२×६५ सें० मी०	२५ (१-२५)	६ ४७	अपू०	प्राचीन	
२३४×६५ सें० मी०	३२ (१-३२)	६ ५४	पू०	सं० १८१३	इति श्री महिद्वन्मुकुट माणिक्य हीरी कुर श्री मद्रामेस्वर भट्ट सूनवा श्रीमद्भट्ट नारायण कृते प्रयोगरत्ने मौर्ध्वदेहिक पद्धति समाप्तेषु सप्त १८१३ ॥

LIBRARY

V. D. Y.

क्रमानुसार क्रमिक	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किंग कम्प्यू पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	३२७८	अत्येष्टि			२० का०	२०
५	३६१७	अत्येष्टि			२० का०	२०
६	१५४	अत्येष्टि			२० का०	२०
७	७६५७	अत्येष्टि			२० का०	२०
८	६७४२	अत्येष्टि			२० का०	२०
९	४६६६	अत्येष्टि (दशमात्रपिठदान विधि)			२० का०	२०
१०	२५	अत्येष्टिकर्म			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पकित सख्या और प्रति पक्ति में आकार सख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२७ × १३ सें. मी०	१८ (१-१८)	१० २२	अपू०	प्राचीन	
२६ १ × १२ सें. मी०	४६ (१-२०, २२-५०)	६ २६	अपू०	प्राचीन	
३१ ४ × १२.६ सें. मी०	४२ (१-३४, ३६- ४१, ४३-४७)	१० ३४	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × १०.२ सें. मी०	१८ (१-१८)	१३ १४	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × १०.४ सें. मी०	४ (४६-५०, ५३-५४)	३ ३३	अपू०	प्राचीन	
२८ × १३.१ सें. मी०	२० (१-७, १०-२२)	६ ३६	अपू०	प्राचीन	
१६.४ × ११.२ सें. मी०	३४ (१२-२६, २६-४६, ४८)	८ १३	अपू०	प्राचीन	

अंशक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११	३४६२	अत्येष्टि कर्म			दे० का०	दे०
१२	१३८७	अत्येष्टी कर्म			दे० का०	दे०
१३	२७०	अत्येष्टिकर्म	हंसवरीदत्त		दे० का०	दे०
१४	७६६	अत्येष्टि कर्म पद्धति			दे० का०	दे०
१५	३२१०	अत्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१६	२६२	अत्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१७	३१२३	अत्येष्टि कर्म विपाक			दे० का०	दे०

पतो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क अ	ख	ग	द	६	१०
२०५×१४ से० मी०	४८	२२	११	अपूर्ण	प्राचीन
२१५×११ से० मी०	१८	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन
२६६×११३ से० मी०	६३ (१-६३)	१०	३४	अपूर्ण	प्राचीन
(२६२×११५) से० मी०	१४ (१-१४)	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन
२१×१४ से० मी०	३ (१-३)	१२	२८	अपूर्ण	प्राचीन
२२५×१५१ से० मी०	२० (१-२०)	१३	२३	पूर्ण	
(१४३×६१ से० मी०)	१०	१३	१२	अपूर्ण	प्राचीन

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	अथकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१८	५१२४	अत्येष्टि पद्धति	नारायणभट्ट		२० का०	२०
१९	२१७०	अत्येष्टि विधि			२० का०	२०
२०	१७६	अत्येष्टि पद्धति			२० का०	२०
२१	१८४३	अभिकास्थापन विधि			२० का०	२०
२२	५४३२	अभिकास्थापन			२० का०	२०
२३	$\frac{५०५४}{१५}$	अभ्युपगम आद्यप्रयोग			२० का०	२०
२४	६६६६	अग्निमुख प्रयोग			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
घ	व	स द	६	१०	११
२५ × १० ६ सें. मी०	७४	६ २८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८४६	इत्यौर्ध्वदेहिक पद्धति समाप्त शुभभू- यात् " " सवत् १८४६ माघ शुदि चतुर्थी भौमवासरे तद्दिने समाप्त ॥
२६ × १३ ३ सें. मी०	१४ (१-१४)	११ ४०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	इति सर्पिणीकणकर्म संपूर्ण ॥ " " सवत् १६२१ पुस्तक लिपि कृत मंगल भूयात् " " ॥
२७ ५ × १० ६ सें. मी०	७१ (१-२८, २८-७०)	१० ४३	पूर्ण	प्राचीन	॥ श्री ॥ अथयष्टि पद्धती मित्रदेविष्टि ॥ समाप्ता ॥
१४ ५ × ६ ८ सें. मी०	५ (१-५)	११ २२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अत्रिकास्थापन संपूर्ण लिखित कन्हेयालाल स्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु "
२७ ७ × १० २ सें. मी०	५ (१-५)	६ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अत्रिकास्थापन संपूर्ण लिखित पुस्तक श्रीअमहृतावस्थात्मपठनार्थ शुभमस्तु ॥
१६ × ७ ८ सें. मी०	२	८ २१	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ ४ × १० ५ सें. मी०	११ (१-११)	१७ ३०	पूर्ण	सं० १८६४	संवत् १८६४ कार्तिके माघ शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या विषी भृगुवासरे तद्दिने श्री सखी " ॥

क्रमानुसार विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या मसहूविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम वस्तु पर निष्ठा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
०५	६४६१	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२६	६२२०	अग्निष्टोम	शैबगाविद		दे० का०	दे०
२७	६७५०	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२८	६४६४	अग्निष्टोम (आष्टावाक प्रयोग)			दे० का०	दे०
२९	६७४८	अग्निष्टोम (सप्तहीन प्रयोग)			दे० का०	दे०
३०	६७०७	अग्निष्टोमहीन			दे० का०	दे०
३१	६५२३	अग्निष्टोमोष्ठावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८४	८	८	८	१०	११	
२२६×६४ से० मी०	६ (१-६)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १७८०	॥ अग्निष्टोम समाप्त ॥ सवत् १७८० माघ शुद्ध १८ नानावारे लिखित ॥ इति श्री जोशनेकर गोपीनाथन लिखित
२३×१०४ से० मी०		१२	३५	पू०	प्राचीन सं० १८१०	अपमोक्षिक क्रम प्रयोगोऽग्निष्टोम समाप्ता ॥ श्री वेद पुरुषापरामस्तु ॥ सवत् १८१० सावननाममवासर आश्विन शुद्ध १ शनी तद्विने काश्या ॥ × ×
२४७×११५ से० मी०	५(१-५)	११	२६	पू०	प्राचीन शके १६६३	इति ज्योतिष्टोमाग्निष्टोमे पोतुत्व प्रयोग ॥ इव पुस्तक कान्हू शर्मण ॥ शके १६६३ पुस्तो आश्विनशुद्ध द्वितीयाया शनी लिखित ॥
२४७× ११६ से० मी०	१८ (१-१८)	६	३२	पू०	प्राचीन सं० १८१४	अग्निष्टोमादि अष्टोर्धमात प्रछावावस्थ संस्तकृष्टि समाप्ता । सवत् १८१४ वाकिक कृष्ण १ भृगो समाप्त । पुस्तक- मिद राम हृदोपनामक विश्वनाथभट्टा- त्मज नीलकण्ठभट्टेन लिखामित
२३६× १०४ से० मी०	११६ (१-११६)	६	२६	पू०	प्राचीन शक १७३८	इत्यग्निष्टोम सप्तहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ शके १७३८ वर्षे धातु नामान्दे भाद्रपद वद्य ८ ॥
२३३×६७ से० मी०	५५ (१-५५)	११	३६	पू०	सं० १८७२	इत्यग्निष्टोम होत्र समाप्त ॥ सवत् १८७२ मिति आश्विनशुद्ध २ सोम्य वासरे तद्विने काश्याराजघान्धा कवी- श्वरेत्युपनामक महादेव भट्टात्मज लक्ष्मी नाथेन लिखित ॥
२१७×८५ से० मी०	४ (१-४)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमेछावाव प्रयोग ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथवार	टीकावार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२	६७१२	अग्निहोत्र प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३	६६०४	अग्निहोत्र			दे० का०	दे०
३४	६५२५	अन्नपण्य होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
३५	६८३७	अग्निहोत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३६	६७०२	अग्निहोत्र होम			दे० का०	दे०
३७	६७१३	अग्निहोत्र होम		शक्तीचरण	दे० का०	दे०
३८	६८२६	अन्नवाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पुष्पा या संख्या	पत्रसंख्या	प्रति पुष्प मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्ग- मात्र प्रथम का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	प्रथम आवश्यक विवरण
८८	५	११ १२	६	१०	११
२३६×१०४ सें० मी०	४० (१-४०)	११ ३३	पू०	सं० १८७८	ममाप्तमिदं अग्निहोत्र प्राप्यशिवत ॥ × × सवत् १८७८ नदन नाम सवत्सर उदगयने वसत ऋतौ वंशाक्ष शुद्ध ६ नवम्या तद्दिने कवीश्वरोप- नामक सध्यासमेण लिखित ॥
२०×१२२ सें० मी०	५ (१-५)	= १६	पू०	प्राचीन सं० १६१७	+ + + इति श्री अग्निहोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु सवत् १६१७ ॥
२१४×८ सें० मी०	२ (१-२)	७ ३१	पू०	प्राचीन	अथाश्रयण होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२०२×८३ सें० मी०	१५ (१-१५)	६ २८	अपू०	प्राचीन	
२१४×७५ सें० मी०	= (१-८)	६ ५०	पू०	प्राचीन	
२३३×१०१ सें० मी०	५ (१-५)	११ ३७	पू०	सं० १८११	इत्यग्राह्यहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ पुस्तक मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ- भट्टात्मज नीलकण्ठेन लिखापितम् सवत् १८११ कार्तिक शुद्ध पचम्या समाप्त ॥
२३५×१०१ सें० मी०	६ (१-६)	११ ३०	पू०	प्राचीन	अप्यात्यग्निष्टोमे प्रछावाक प्रयोग समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६	<u>५२३३</u> २	अजपा मायत्री			६० का०	६०
४०	१६६३	अजपा मायत्री जप विधि			६० का०	६०
४१	५४४	अजपा जप (मानस पूजा)			६० का०	६०
४२	६८३६	प्रतिपत्तिवैष्टिहीन			६० का०	६०
४३	६७०५	अध्यानहीन (अश्वारूढहीन)			६० का०	६०
४४	३६२८	अनंतपूजा			६० का०	६०

पत्रा या पृष्ठा या पातार	पत्रमङ्कला	प्रतिपृष्ठ म पत्रा मङ्कला घोरप्रतिपक्षि में प्रत्यार सङ्का	क्या प्रथम पूर्ण है ? संपूर्ण है तो वर्तमान प्रथम का विवरण	ध्वज्या घोर प्राचीनता	प्रथम प्रावस्था विवरण	
८ अ	अ	स	द	६	१०	
१५५×१०३ सं० मी०	५ (१-५)	८	२२	५०	प्राचीन	इति श्री बलिष्ठ महिनाया प्रजा विधि समाप्तम् शुभमम्
१४५×६ सं० मी०	३	६	१८	५००	प्रा०	
१६×१०५ सं० मी०	७	६	२०	५०	प्राचीन	इति ध्वज्या विधि सन्नेपन समाप्तम् यादृक् पुस्तक दृष्ट्वा तादृशं लिखितं माया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषान् विद्यते ?
२०५×७६ सं० मी०	८ १-८	७	२७	५०	प्राचीन सं० १८७७	इत्यतिपवित्रेऽभिषेकसूत्रोक्तं समाप्तम् ॥ संवत् १८७७ भाद्रपदकृष्ण ३ मङ्कलादरे सध्वीनाथ स्वोत्तरेण लिखितं ॥ शुभम् ॥
२०५×८० सं० मी०	४(१-४)	११	३६	५०	सं० १८८७	अक्षरभण्डारपाहीत्रं समाप्तम् ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामकं विश्वनाथ महात्म्यं नीलकण्ठस्य संवत् १७८७ श्री ।
२३७×१०४ सं० मी०	५० सं० ॥	१२	३४	५००	प्राचीन	

[सं० म० १५]

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	१८७	अनंतपूजा			दे० का०	दे०
४६	४७०५	अनंतोद्यापन			दे० का०	दे०
४७	७४३६	अनुवाक			दे० का०	दे०
४८	६७६१	अपाद्या अनुविस्ती होव			दे० का०	दे०
४९	$\frac{१६०४}{४}$	अभिषेक			दे० का०	दे०
५०	३००६	अर्क विवाह			दे० का०	दे०
५१	५११८	अर्क विवाह			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष वा विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ भावस्थान विवरण	
८ अ	ब	स	द	१०	१०	
२२ × ११ से० मी०	२२ (१-२२)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति अमृत पूजन संपूर्ण ॥
३४ × ४ १३३ से० मी०	१२ (१-१२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अमृतोद्यापन समाप्त ॥
१७ × ८.६ से० मी०	७	८	७	अपू०	प्राचीन (सं० १६२३)	इति सर्वानुवाक संख्या समाप्त × × × संवत् १६२३ मार्ग शु० १० सो० ×
२२ १ × ८.५ से० मी०	२ (१-२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इत्युपाद्या अनुवितीना होर्न ॥
१३.६ × ७.६ से० मी०	४ (१-४)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × ६.३ से० मी०	५ (१-५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इत्यर्क विवाह समाप्त
२४.६ × १०.६ से० मी०	५ १, ५,	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सट्टा या सग्रहविशेष की सट्टा	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	४७६२	अशीवविचार			दे० का०	दे०
५३	६७०३	अश्वमेध होत प्रयोग			दे० का०	दे०
५४	६७०५	अश्वमेध होत प्रयोग (प्राक्वलापन मूत्रानुसार अश्वमेध होत प्रयोग)			दे० का०	दे०
५५	४१६४	अष्टरा व्याख प्रयोग			दे० का०	दे०
५६	५६४६	अष्टप्रयोग			दे० का०	दे०
५७	६५०३	आग्नीध्रप्रयोग			दे० का०	दे०
५८	५५५६	आतुर सन्यास पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२५ × ११४ सें० मी०	२९	६ ३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२६ × ६७ (१-६७) सें० मी०	१०	३८	पूर्ण	सं० १७६५ प्राचीन	इत्यश्वमेध होत्र पद्धती प्रथम मुद्रयागोत- मस्तोम ॥ इव पुस्तक रामहृदस्थोपनामक विश्वनाथ भट्टारमज नीलकण्ठस्य ॥ संवत् १७६५...
२२६ × ६७ सें० मी०	१२७ (१-१२७)	१० ४१	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यश्वमेधस्याश्वलायन सूत्रानुसारेण- होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२१ × ६५ सें० मी०	८ (१-८)	६ ४०	पूर्ण	प्राचीन	इति ।
२५३ × ६६ सें० मी०	४ (१-४)	३ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ × ८७ सें० मी०	६ (१-६)	७ ३५	पूर्ण	सं० १८१६	संवत् १८१६ वर्ष मागशिर शुद्ध द्वितीया मद वासरे ॥
१५७ × ५८ सें० मी०	३ (१-३)	६ २८	पूर्ण	प्राचीन	आतुर स्यात् पद्धति समाप्ता ॥ शुभभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
५६	७३५०	घातुरसंन्यास विधि			६० का०	६०
६०	<u>१६८६</u> २२	आत्मपूजा	शंकराचार्य		६० का०	६०
६१	६५०६	आधान होत्र			६० का०	६०
६२	६५३१	आधान होत्र			६० का०	६०
६३	६५६८	आपस्तम्ब सूत्रोक्त सध्यावदन प्रयोग			मि० वा०	६०
६४	२६४१	आपस्तम्ब सूत्र मंत्र प्रश्न			६० का०	६०
६५	६८३४	आपस्तम्बसध्यावदन पद्धति (भाष्य)			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे पत्रसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
द म	ब	स	द	१०	११	
१४६×६६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति सयास विधि समाप्त ॥
२६२× १४१ सें० मी०	१३	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति शकसाचार्य भास्वपूजासंपूर्ण ॥
२१३×८७ सें० मी०	१३ (१-१३)	६	३५	पू०	प्राचीन	ग्रन्थ प्राधान होत्र लिख्यते ॥ (प्रारम्भ)
१६८×८४ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति प्राधान होत्र समाप्त ॥
११३×११ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३०	पू०	सं० १६५१	इत्यापस्तम्ब सूक्तोक्त सध्यावदन प्रयोग श्री सीताराम चन्द्रापरामर्श ॥ श्री सवत १६५१ शके १८१६ पराभवनाम सवत्सरे दक्षिणायणे शरदृतौ शरिवने मासे कृष्णपक्षे '।
२६५×११ सें० मी०	१० सं० २८ (१-२८)	८	३६	पू०	प्राचीन	शके १७ विक्रम नाम सवत्सरे दक्षिणायने वर्षा ऋतु भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे आष्टम्या त्रयो वासर शानुवासर पुस्तक समाप्त ॥
२१२× १०६ सें० मी०	६	११	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५६६	आपस्तम्बोक्त मध्या- वदन प्रयोग			दे० का०	दे०
१७	३५५४	आम्बुर्द्वं आद			दे० का०	दे०
१८	५६०४	आरामप्रतिष्ठा			दे० का० ।	दे०
१९	४४२१	आरामप्रतिष्ठाविधान			दे० का०	दे०
७०	४४५०	आरामोत्सर्ग पद्धति			दे० का०	दे०
७१	६७०८	अश्वलायनश्रौतसूत्र पूवपटक प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०
७२	६७१०	आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्तमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
२१४X ११३ से० मी०	१० (१-१०)	११ २४	पू०	आधुनिक	
२३८X१५ से० मी०	१ (१-३, ५,७,९)		अपूर्ण	स० १८८६	ग्राम्यदेक आदि समाप्त सवत् १८८६ जेष्ठ वदि २ बुधवासरे पत्र नव ॥
३२४X १४७ से० मी०	६ (१-६)	१३ ४२	पू०	जीर्ण स० १६२५	लिखित मुरलिधर स० १६२५
२२X१२ से० मी०	३ (१-३)	१० २२	अपूर्ण	प्राचीन	अथायतस्कृत्यसगात्पुस्तकामाप्रतिष्ठा विधान लिख्यते । (प्रारम्भ) X X X
२७४X ११७ से० मी०	११ (१-११)	३२	पू०	प्राचीन	इति भारमोत्सर्ग पद्धति समाप्ता ॥ विधान पाटिजाते ॥ इदं पुस्तक वासाजी महाराष्ट्रस्य लिखित स्वापपर्याय
२३४X १०१ से० मी०	६६(१-७ १-६२)	३३ ४१	अपूर्ण	प्राचीन	
२३६X १०६ से० मी०	७०(६३- १७३)	११ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	इति सचनानां विरचिताया ग्राम्य नायन सूत्र प्रयोग दीपिकाया पट्टोद्याय समाप्त ॥

माक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या मसहृविसेप की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	प्रथम विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६७२७	प्राश्वनायन सूक्त			१० का०	१०
७४	२८६६	आसुरी विधि			१० का०	१०
७५	६७११	आहिताग्निमरणविधि			१० का०	१०
७६	१०६६	आह्निक कर्म विधि	लेमकर मिश्र		१० का०	१०
७७	२३८१	आह्निक कर्म विधि			१० का०	१०
७८	१०६५	आह्निक तरण	नंद पंडित		१० का०	१०
७९	१०६७	आह्निक निरण			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिमंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वन- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द प	ब	स	द	६	१०	११
३२.५ X १०.४ सें० मी०	३० (१-३०)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति आश्वलायन सूक्तानि ॥
१७.३ X १०.८ सें० मी०	१५(१-१५)	=	१६	पू०	प्राचीन	इति आनुरी विधि समाप्त. ॥ शुभ ॥
२३.३ X १०.२ सें० मी०	२१(१-२१)	११	२६	पू०	प्राचीन	इत्यापस्तवसंहितामे. तत्कार विर्णयः ॥
१८ X ११.८ सें० मी०	८ (१-८)	८	३६	पू०	सं० १६२१	इति श्रीशेनकरमिश्र विरचित सक्षिप्ता- न्तिक कर्म विधि ॥ माघासित्तैकादश्या चन्द्रे लिखित अष्टाशेन वृत्तशुक्लेन १॥ संवत् १६२१ धीरामोजपति ...
१६.७ X १०.५ सें० मी०	१०(१-१०)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६.८ X ११.५ सें० मी०	८५ (१-८५)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्रीधर्माधिकारिकुल ३३ कमलमार्तंड नवपांडित्य वेस्मृतिसिध्दान्तिकृत रण समाप्तिमवात् ॥ श्री कृष्णमजेत् ॥
२२.५ X ६.५ सें० मी०	२५(१-२५)	१०	३७	पू०	प्राचीन	उक्त नात्रमया स्वयं स्वरचित यथाज्ञवल्ग्या- दिभिः प्रोक्त स्वहित निर्णये तदप्रिलस्यष्ट परमपुत्र्ये... श्री सावसदाशिवार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०	६७६	धार्मिक मूल पद्धति	गुणनाथ भट्ट	/	दे० का०	दे०
८१	६४२०	उग्ररथ शांति		(१)	नि० का०	दे०
८२	६६०६	उत्सर्जनोपाकरण प्रयोग (श्रावणी)			दे० का०	दे०
८३	६४२८	उदकशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८४	६८७	उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५	४८३४	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०
८६	६४७	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आधार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र सख्या और प्रति पक्ति में आधार सख्या	क्या वर्ष पूर्ण है ? भ्रूखें हैं तो वर्तमान वर्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक् विवरण
सं. प.	सं.	सं. प.	सं.	सं.	सं.
२२ x १०२ सं० मी०	१६ (१-१६)	१० ३८	१०	प्राचीन	रघुनाथेन विद्वत्पद्ममाधवसूनुता ॥ कृता निबन्धात्पद्माऽगुप्तमूलाऽप्राग्दिक पद्धतिः ॥१॥.....
१६ x ७७.६ सं० मी०	५ (१-५)	११ २५	११	प्राचीन	इति शौनकास्तोत्ररथ शान्तिः ॥ सं० १६६५ शाके १८३० भाष कृष्ण द्वितीयायां शुकवारेऽर्ध पुस्तक वेतालोपाह्व श्रीनाथेन आरभ्य च समापितम् ॥
२२ x ८८.६ सं० मी०	८ (१-८)	१० ४७	१०	प्राचीन	इत्युत्सवर्नोपाकरण प्रयोगः ॥
२४ x ६८.१ सं० मी०	२१ (१-२१)	१० ४८	१०	सं० १७८३	इत्युदक शान्तिः समाप्ता ॥ सं० १७८३ नल नाम सवत्सरे माघ शुक्ल १५ बुध वासरे सदिने
१४ x ६५ सं० मी०	६	१४ २५	१४	प्राचीन	
३१ x ११७ सं० मी०	१० (१-१०)	१० ४८	१०	सं० १८८३	इति वतवध समाप्त ॥ सं० १८८३ ॥
२३ x १२७ सं० मी०	१६ (१-१६)	११ २८	११	सं० १६११	इति श्री उपनयनपद्धति समाप्तम् सं० १६११ ज्येष्ठ शुक्लादशम्याममीवासरे लिखितं जुहायरात्रेण श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८७	१६८४	उपनयनवेदारम			१० पा०	१०
८८	४८०	उपनयन संस्कार			१० पा०	१०
८९	२३३७	उपनयन संस्कार			१० पा०	१०
९०	१६००	उपनयन संस्कार (सटीक)			१० पा०	१०
९१	२२१५	उपनयन संस्कार विधि			१० पा०	१०
९२	२३०	उपायमं			१० पा०	१०
९३	३१९७	उपायमं प्रयोग	गंगाधर भट्ट		१० पा०	१०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१४६६	उपाकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
६५	१६७१	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
६६	१८६४	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
६७	४८६४	ऋषिपञ्चमी व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६८	३७१७	ऋषिमंडल			दे० का०	दे०
६९	३४६३	एकादशाह ध्यात विधि			दे० का०	दे०
१००	४८८	एकादशाह्निक कर्म			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	१६४१	एकादशी व्रत उद्यापन			२० का०	२०
१०२	७८४	एकादशाह श्राद्ध- प्रयोग (सपिंडन पद्धति)			२० का०	२०
१०३	६१०८	एकादिक चातुर्मास्य प्रयोग			२० का०	२०
१०४	६००१	ऐवाहिक चातुर्मास प्रयोग			२० का०	२०
१०५	५१८२	एनोदिष्ट			२० का०	२०
१०६	५०५४ १५	एनोदिष्ट प्रयोग			२० का०	२०
१०७	५०५४ १५	एनोदिष्ट श्राद्ध विधि			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का अकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ म पवित सख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षर सख्या	क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था आर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ अ	ब	स द	१ ६	१०	११
३०६ X १६१ सं० मी०	६	११ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे एकादशी वृत्त (प्रत) उद्धापन समाप्त ॥
२७५ X १५ सं० मी०	२१	१० ३४	पूर्ण	स० १६०२	इति श्राद्धविवेके सविडन पद्धति समाप्तम् स० १६०२
२२५ X ६२ सं० मी०	६(१-६)	१० ४०	पूर्ण	प्राचीन	अथैकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग (प्रारम्भ)
२१८ X ८४ सं० मी०	५(१-५)	११ ४१	पूर्ण	प्राचीन	सतिष्ठत् एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग ॥ समाप्त ॥
१८८ X ११३ सं० मी०	४(१-४)	१६ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति समाप्तोऽयं (अथैकोदिष्ट प्रारम्भ)
१६ X ७८ सं० मी०	१	८ २४	अपूर्ण	प्राचीन	अथसाम्बत्तरिकैकोदिष्ट प्रयोग (प्रारम्भ)
१६ X ७८ सं० मी०	७३	६ २१	पूर्ण	प्राचीन	एकोदिष्ट श्राद्ध समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संप्रहर्षण की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	४६०५	एकोद्दिष्ट श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
१०९	५६५८	औषधैहिककृत्य	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
११०	७२४७	औषधैहिक पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१११	३७२३	औषधैहिक संपिडीकरण प्रयोग पद्धति	भट्टनारायण		दे० का०	दे०
११२	६५६४	कन्या रजस्वला शांति			दे० का०	दे०
११३	३७११	कपिलधारातिथि विधि			दे० का०	दे०
११४	१६६१	कपिला निवास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स द	६	१०	११
२३ x १० ६ सें० मी०	१८ (१-१८)	६ १६	पू०	स० १६३६	इति एकादिष्ट श्राद्धम् श्रीरामचद्रायनम. श्री कृष्णार्पणमस्तु सवत १६३६ श्री साके ७६६ मिती मार्गसिर वदि ८ भीमवारकु तिपि कृत ॥ राम ॥***
२६ x १२ सें० मी०	१४ (८२-६३, ६४-६६)	११ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचिते प्रपत्ति भूपणे श्री परमेश्वर चरण युगले द्वीपर मधुकराश्रयाना परमैकान्तिकाना-मोर्द्धर्द्धिक् कृत्यानि स्तुति समाप्तानि शुभमस्तु ।
२२ x १७ सें० मी०	४२ १-१६, २२- २४, २७-२८, ३१-४८	१० ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामश्वर सूरि सनु नारायण भट्ट न कृताया मोर्द्धर्द्धिक् पद्धतौ भरणीविधानानि । समाप्ता वेद्य पद्धति ॥
२४ x १० ४ सें० मी०	७० (१-७०)	८ ३४	पू०	स० १८७३	इति श्री भट्टरामश्वर सूरिसनु भट्टनारायण कृतायामोर्द्धर्द्धिक् पद्धत्यामरणविधानानि अस्तु स० १८७३ ॥ शुभमस्तु
१६ x ८ ६ सें० मी०	२(१-२)	१० २८	पू०	प्राचीन	इति पितृग्रहे कन्या रजस्वला शाति ॥
११ x ८ ४ सें० मी०	३(१-३)	१० १८	पू०	प्राचीन	इति वपिलघारा नियं विधि समाप्त ॥
२० x ८ ८ सें० मी०	४(१-४)	८ २४	पू०	प्राचीन स० १८३३	इति श्री वपिन निवास सपुर्ण समाप्त ॥ स० १८३३ साके १६६८ फलपुन शुदि पटो ६ रवो पुस्तक सपुर्ण निविष्ट प० श्री मिश्र जमेद मित्ररीप्रते ---

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५	३५२०	कर्मकांड			दे० का०	दे०
११६	३५६६	कर्मकांड कौमुदी			दे० का०	दे०
११७	४०६६	कर्मकांड पद्धति			मि० का०	दे०
११८	२६१६	कर्मकांडविधि			दे० का०	दे०
११९	३७४३	कर्म कौमुदी			दे० का०	दे०
१२०	३४५३	कर्म कौमुदी	वृष्णदत्त		दे० वा०	दे०
१२१	२४६०	कर्म कौमुदी	वृष्णदत्त		दे० वा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	नया ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	७	६ ५ ४ ३ २ १	६	१०	११
२१५× १०४ से० मी०	७ (२-७)	६ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
३१×१४३ से० मी०	७ (३८, ४१-४६)	१४ ५१	अपूर्ण	प्राचीन	
१६३× १२७ से० मी०	३ (१-३)	११ २४	पूर्ण	प्राचीन	इत्यन्वय ॥ नन्दलालेन लिखित ग्रंथ एतौ ॥
२१३×११ से० मी०	३३	३ २८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१४×१४ से० मी०	३६ (१-३६)	१४ ५७	अपूर्ण	प्राचीन	इति कर्म कौमुद्या नाम वर्म पद्धति । (५० से० २१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२	११४४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२३	४००६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२४	४४७६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२५	४४२६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२६	४६५२	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२७	५२६०	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२८	५६६१	कर्मविपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	९	१० ११	१२	१३	१४	
२६ X १० ७ सें० मी०	७४ (२-४, ६-१६, २१-७८)	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ X १४ सें० मी०	२१ (२-२२)	१४	५०	अपूर्ण	सं० १८६३	इति कर्म विधान ग्रन्थ संपूर्णम् सद्यत् १८६३ भाषाङ्क कृष्ण चतुर्दश्या १४ श्रीम दिने लिखित मिद पुस्तक तत्र भारद्वाज गोत्रे मिथ्य सदमण्वासात्तत्तुन मिथ्य मुरलीधरः ॥
२४ १ X १० ८ सें० मी०	२४ (१-२४)	१३	४१	पूर्ण	प्राचीन	इती श्री कर्मविधाने ब्रह्मानारद सवादे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ (पत्र संख्या २३)
३० ६ X १४ ८ सें० मी०	८ (१-३, ५-६)	१३	४२	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	४३५०	कर्म विपाक (चतुर्थ चरण)			दे० का०	दे०
१३०	६६४	कर्म विपाक कथन			दे० का०	दे०
१३१	$\frac{४६२१}{३}$	कलश प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
१३२	५८४३	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३३	१५६८	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३४	३६३४	कलशस्थापनविधि			दे० का०	दे०
१३५	६४३६	बाबू भैरव दर्शन- शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आसार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या घोर प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	वर्षा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंग वा विवरण	अवस्था घोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
(३३२ × १६७) सं० मी०	५८ (१-३, ३, ४, ४, ५, ५ -५५)	१४ ४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कर्म विपाके सहितायां पार्वती हरश्वादे देवति नक्षत्रे चतुर्थे चरणे ब्रह्मांड पुराणे पितृकामोत्तरे सप्तकुमार मारकड्यप्रपणोत्तरे कर्म विपाक सहिता- यां नारद ब्रम्हरीय प्रत्युत्तरे भ्रातृग्यादि- नक्षत्रे ॥
३० × १४५ सं० मी०	४	१२	पू०	सं० १६०६	इति श्री महाभारतेऽखिले कर्मविपाक कथन ॥ ॐ उत्तरसत् सं० १६०६ लिखत मुरलीधर ॥
१६ × १०७ सं० मी०	४	६ १७	पू०	प्राचीन	इति कलस प्रतिष्ठा ॥
१६ × ११ सं० मी०	२ (१-२)	१० २१	अपू०	प्राचीन	
१३ × ६८ सं० मी०	८	६ १८	पू०	सं० १६०६	म० १६०६ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे ११ गुरुवासरे लिखत कन्हैया ॥
१५ × ११६ सं० मी०	४	१२ १२	पू०	प्राचीन	इति कलसस्थापन विधि समाप्ता शुभमस्तु ॥ श्री देव्यं नम ॥
२२४ × ६३ सं० मी०	१	६ ४३	पू०	प्राचीन	इति काक मंथन शांति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६	६४२२	काक स्पर्श शान्ति			दे० का०	दे०
१३७	४७५६	कात्यायन त्रिकडिका सूत्र (रत्नानुराज)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३८	$\frac{२३६}{१२}$	कात्यायनी तर्पण			दे० का०	दे०
१३९	२१९८	कात्यायनी तर्पण विधि			दे० का०	दे०
१४०	२१२२	कात्यायनी शान्ति	कात्यायन		दे० का०	दे०
१४१	$\frac{३२८६}{२}$	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०
१४२	८०२	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२० × ७ ७ से० मी०	६	७	३१	पू०	प्राचीन	इति काक टाट शान्ति ॥
२४ × ६ × १०'२ से० मी०	३ (१-३)	८	३३	पू०	प्राचीन स० १८४७	इति वात्स्यायन त्रिषांडिका सूत्रं समाप्तं संवत् १८४७ माघ शुक्लाष्टम्या निधित श्री भट्टविश्वभरस्यात्मजैश्चन्द्र- शेखरेण वाराणस्याम् ॥***
१६ × १०'५ से० मी०	५	१५	१४	पू०	प्राचीन	इति कावीय तर्पण प्रयोगः ॥
१७'७ × १०'७ से० मी०	३	११	२२	पू०	स० १६४४	इति वात्स्यायनी तर्पण विधि समाप्तं संवत् १६४४ ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्यत संख्या वा संप्रहृयिषेय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिया है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४३	२२२२	कात्यायनी शांति			३० का०	३०
१४४	२२६६	कात्यायनी शांति	कात्यायन ऋषि		३० का०	३०
१४५	२२१६	कात्यायनी शांति			३० का०	३०
१४६	$\frac{७५७१}{२}$	कात्यायनी शांति प्रयोग			३० का०	३०
१४७	६३७५	काम्यवृत्तोत्सर्ग प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		३० का०	३०
१४८	१४८१	कारिकावलि			३० का०	३०
१४९	६४७१	काशीचिन्ति ह्रीत्			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
१७३ × १६'७ सें० मी०	१३ (१-१३)	१३	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१७३ × ११ सें० मी०	१७ (१-१४, १४-१६) १	१४	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कात्यायन ऋषि विरचिता कात्यायनी शांति. संपूर्णम् ॥ ...
२५'५ × १०'८ सें० मी०	१२ (१-१२)	८	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति कात्यायनी शांति समाप्ता ॥ शुभं भूयात्
२१ × १६'५ सें० मी०	१३ (१-१३)	१४	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कात्यायनी शांति समाप्ता ।
२१'७ × ६'३ सें० मी०	८ (१-८)	१०	३६	पूर्ण	सं० १७४४	इति भट्ट रामेश्वर सुत भट्टनारायणरामज भट्ट रामहृष्य कृत शौनक मतेन काम्य वृषोत्सर्ग । प्रयोग ॥ सवत् १७४४ कार्तिक १३ तिथितमिदं कृतम् ॥
२५'४ × ८'४ सें० मी०	२६ (१-२२, २५-३१)	६	४७	अपूर्ण	प्राचीन	
२०'५ × १० सें० मी०	२ (१-२)	११	३१	पूर्ण	प्राचीन सं० १७८८	लिखित मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज वीरनठेन सं० १७८८ मिति भाद्रपद ६ ० ११ श्रीमे मधुर ग्रामे समाप्तम् ॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किंग वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०	७४११	वातवोयं दीपदानपद्धति	वमसावर		दे० पा०	दे०
१५१	५७७५	वातवोयार्जुनदीपदान			दे० का०	दे०
१५२	५५३४	कातिबोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१५३	$\frac{६१६}{२}$	वालीपूजापद्धति			दे० का०	दे०
१५४	४०६६	कुट्ट प्रकाशिका	राम	रामबाजपेयी	दे० का०	दे०
१५५	१६५६	कुट्टमटपकारिका	रामचन्द्र		दे० पा०	दे०
१५६	७३३६	कुट्टमटपविधि सटीक		विद्वत्सदीक्षित	दे० पा०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूरा है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	संवत्सा और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
द म	ब	स द	६	१०	१०
२७ × ११ ५ से० मी०	८ १, ३-४, ७-८ १०, १२-१३	६ ३२	अपूर्ण ०	प्राचीन	
२४ ५ × ७ ४ से० मी०	१० (१-१०)	६ ३८	पूर्ण	प्राचीन	
२२ ७ × ५ ६ से० मी० ' -	१० (३-१२)	७ २८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणो कातिको- द्यापन विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३ ५ × १० ६ से० मी० '	२ (८-६)	६ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ × ७ ७ से० मी० -	४२ (१-४२)	७ २३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नैमिष निवासि रामरक्षिता कुड प्रकाशिका रामवाजपेय टीका समाप्ता ॥
२८ ५ × १२ से० मी०	१२ (१-२०)	१३ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ ६ × ११ से० मी०	३५ (१-३५)	११ ४२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री भक्तप्रमनोरस्य विठ्ठल दोशित विरचिता स्व कृत मंडप कुंड तिडि व्याख्या समाप्तेति शिव सवत १६१७ पौषशुक्ल १० तद्विने समाप्ताय ग्रंथ स्वाय पराय च श्री रामायणमस्तु ॥
२ (सं० १६)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकावार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	५७३०	कुडमठपसिद्धि			दे० का०	दे०
१५८	५४७६	कुडमठपसिद्धि	विद्वत्त दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५२८३	कुडमठपादिनिर्माणविधि			दे० का०	दे०
१६०	७३२१	कुडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६१	६७५६	कुडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६२	१०७३	कुडरत्नाकर टीका		विश्वनाथ द्विवेदी	दे० का०	दे०
१६३	६५१३	कुटलेष्टि होत प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
११२×१५ से० मी०	११ (१-११)	१४ ४५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१७×१०४ से० मी०	५ (२-५)	११ ४०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३०	इति श्रीमज्जिमविविज्ज विट्ठन दीप्ति विरचित कुड मङ्गलसिद्धि अ × संवत् १८३० समये कार्तिक शुक्ल १४ चतुर्दश्या पुस्तक लिखित आत्माराम भट्टन महाराष्ट्रे ॥ शुभमस्तु ॥
२१७×१० से० मी०	६ (१-६)	८ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	अथ कुडमङ्गलाधुपयुक्त भूतमत्त साधन माह ॥ (पत्र सं० ४)
२७×११५ से० मी०	७ (१-७)	११ ३८	पूर्ण	प्राचीन	इति कुडमातण्ड सपूर्ण ॥
२०६×१०१ से० मी०	६ (१-६)	१२ ४६	पूर्ण	सं० १८२०	इति श्री कुडमार्तंड समाप्त ॥ संवत् १८२० शीघ्र मासि बकुल पक्षे शिव तिथी श्रीम सदा शिवन तिथि ॥
२५५×११ से० मी०	५४ (२-५५)	११ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मद्रकल मत्सकल विद्याविशारद श्री श्रीपति दीवदि द्विवेदी मुनू विश्वनाथ द्विवेदी कृपा स्वकृता कुड रत्नाकर टीका समाप्ता ॥ शुभभवतु ॥
२०६×८७ से० मी०	३ (१-३)	६ २८	पूर्ण	प्राचीन	इत्याश्वनायनानुसारी कुडलेटि होत्र प्रयोग ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	८७१	कुडविचार			दे० का०	दे०
१६५	१३७७	कुडविबुसुहोम विधि			दे० का०	दे०
१६६	६५६६	कुडसिद्धि व्याख्या	विद्वत्स दीक्षित		दे० का०	दे०
१६७	६५६५	कुडसिद्धि व्याख्या	विद्वत्स दीक्षित		दे० का०	दे०
१६८	६५६२	कुडसिद्धि व्याख्या	विद्वत्स दीक्षित		दे० का०	दे०
१६९	६४११	कुडाक टीका		रघुवीरदीक्षित	दे० का०	दे०
१७०	७२७०	कुडाक व्याख्या			दे० का०	दे०

प्रौ मा पृष्ठा वा भारत	पत्रमात्रा	प्रति पृष्ठ में वर्णित श्लोक प्रमाण मं प्रमाण	प्रमाण प्रमाण प्रमाण	प्रमाण प्रमाण प्रमाण	प्रमाण प्रमाण प्रमाण	प्रमाण प्रमाण प्रमाण
८	८	८	८	८	८	८
३५५×१५ सें. मी०	७ (१-७)	११	४०	५०	६०१७२०	इति कुडसिंहार समाप्त ॥ मने १६१५ पान्ना कुड १ २४० निधिनमिद पुस्तक भारतमाराग वर्णितविदिम ॥
२१×१० सें. मी०	२	१०	३१	५०	प्राचीन	"
२३६× १०८ सें. मी०	२२(१-२२)	११	३८	५०	स०१८०६	इति सगमनेरस्य विटठल दीक्षित विर- चिता स्वहृत कुडसिंहि व्याख्या समाप्ता सवत् १८०६ मीती भाष वदी सतीमी वार शुभ दी
२३७× १०२ सें. मी०	३८(१-८३)	६	३३	५०	प्राचीन	इति सगमनेरस्य विटठल दीक्षित विर- चिता स्वहृत कुडसिंहि व्याख्या समाप्ता ॥ + + + स०१८०४ मीती वैशाख शुद्ध ५ समाप्ता ॥
२३×६४ सें. मी०	२६(१-२६)	६	४४	५०	स०१८१६	इति सगमनेरस्य विटठल दीक्षित रचिता स्वहृत कुडसिंहि व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १८१६ ॥
२२×८४ सें. मी०	१७(१-१७)	६	३१	५०	प्राचीन स०१८७३	इति कुडार्क दीक्षा समाप्त ॥ समत् १८७३ या (के) १७३६ भाषिवन कृष्ण ६० शनिवार ॥ विटठल दीक्षित सूनना रघुनाथेन लिखित पुस्तक
२७२× ११५ सें. मी०	३ (१-३)	६	३२	५०	प्राचीन	इति कुडार्क समाप्त ॥

क्रमांक मोर विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७१	१००६	कुढोचोत			दे० का०	दे०
१७२	६४३०	कुंभ विवाह			दे० का०	दे०
१७३	६०२०	कुम्भकदिका			दे० का०	दे०
१७४	३९५२	कूपस्वापन विधि			दे० का०	दे०
१७५	६३७९	कूष्माढ होम			दे० का०	दे०
१७६	६५०१	कूष्माढ होम			दि० का०	दे०
१७७	१६०८	कूपारमादि प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का धारार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिन संख्या और प्रति पत्रिक में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	९	९	९	१०	११
२५५X १०२ सं० मी०	६ (१-६)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति कुडोकोत ॥
२२५X १०३ सं० मी०	१	६	३५	पू०	स० १८१३	इति कुम्भ विवाह ॥.....संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
१७१X १२६ सं० मी०	५ (१-५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति कुशकटिका संपूर्णम् ॥
२३७X १०६ सं० मी०	१०६० ४ (१-३)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति शरत्पत्रम् ॥
१६१X६१ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पू०	सं० १६४६	इति कृष्णाष्ट होम समाप्त ॥ श्री संवत् १६४६ श्री फागु० शु० व० ३
१६४X६१ सं० मी०	४ (१-४)	७	३२	पू०	प्राचीन	
३२८X १२५ सं० मी०	१३ (१-१३)	६	३८	पू०	सं० १६४०	इति दिव्यालोभ्योऽपवलिदत्ताततोदिक्या लेभ्यो नमस्कुर्व्या देवालयपूतदादि (तथागादि) भाराम प्रतिष्ठा पुस्तकं समाप्तम् ॥ संवत् १६४० ज्येष्ठ वदि एकदश्या ११ शुक्रवादिरे...शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहालय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१७८	४४४७	कूपारामोत्सर्ग विधि	.	.	२० का०	२०
१७९	७७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८०	१८२	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८१	२३५	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८२	४१७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८३	४७५३	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८४	३५२८	कृत्य रत्नावली			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पदसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिगण्यता और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
२७४× ११८ से० मी०	१० (१-४, ४, ५-७, ६- १०)	३३	अपू०	स० १६१८	इति कृष्णारामोत्सर्गः समाप्त ॥ सवत् १६१८ आश्विन शुक्ल पूर्णिमाती शुद्ध- वासर इदं पुस्तकं रावली मोये
३०४× १४१ से० मी०	६८ (१-६८)	१३ ४२	पू०	प्राचीन स० १८१७	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणभिज्ञतस्तु दुपाध्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिषेकवृक्षरक्षन् धर्मशास्त्र परावारीया श्रीमद्भामचन्द्रविरचिता कृत्यरत्नावली संपूर्ण ॥ श्रीरत्नकल्याणमस्तु ॥ श्री॥ सवत् १८१७ आश्विन शुक्ल ४ चतुर्थी श्रीमे लिखिता मिथ नौबतराय श्री रत्ना ।
(२५× १०६) से० मी०	८७(१- २४, २८- ६३, ६६- ६२)	१० ४१	अपू०	प्राचीन स० १७६७	इति श्री मत्स्य वाक्य***श्री ५ रामचंद्र भट्ट विरचिता कृत्य रत्नावली संपूर्ण ॥ स० १७६७ नातिक शुक्लकादश्या समाप्त ॥ लिखितमिदं पुस्तकम्*** गंगारामेण ॥
(३०३× ११) से० मी०	८(३४- ४१)	१३ ४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यविट्ठलभट्टाभिज्ञ रामचंद्र विरचिता कृत्यरत्नावली समाप्त ॥
३०७×१३ से० मी०	१२	१६ ५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यवाक्यप्रमाणाभिज्ञ तत्सदुपाध्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिषेक वृक्षवरसूनु धर्मशास्त्र या रावारीया श्रीमद्भामचन्द्र भट्टविरचिता कृत्य रत्नावली समाप्तिमगमत् । ६
२१६× १०२ से० मी०	१८ २,४-२१	६ ३२	अपू०	प्राचीन	इति नातिक कृत्य + + + ॥
२५१×६ से० मी०	६८ (१-६८)	६ ४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाध्य बालकृष्णभट्टागज विट्ठल भट्टाभिषेक वृक्षवरसूनुधर्म***श्रीमण श्रीमद्भामचन्द्रभट्ट विरचिताकृत्य रत्नावलीमगमति मगमत्॥
से० मी० २०					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	११६३	कृष्णरासभाट्ट.			दे० का०	दे०
१८६	७५६४	कृष्णविरचि अभिषेक	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०
१८७	७४०४	कृष्णवतोद्यापन			दे० का०	दे०
१८८	$\frac{३१२}{२}$	कृष्णाचंन पद्धति (ग्यास)	यो० निवाकंशरण देवाचार्य		दे० का०	दे०
१८९	५६०२	कोकिलावतोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१९०	६३७७	श्रमप्राप्तोविवाह			दे० का०	दे०
१९१	४७१६	क्रियापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
२१५ × १४ सें. मी०	५	११	२२	५०	सं० १६३८ इति श्रीकृष्णराघव आदि समाप्ता शुभ-मस्तु श्रीकृष्ण १ संवत् १६३८ मः राजनगर लिपत ५० श्री भवस्वी ज्ञान की प्रसाद ज्ञकी जाये ता' जै राघे कृष्ण पढुच्ये ॥
१७२ × ८६ सें. मी०	२ (१-२)	११	२२	५०	प्राचीन सं० १८६२ इति श्रीकृष्णविरचितमिथैको समाप्त सुभ भूयात् ॥.....
३४ × १३ सें. मी०	६ (६-१४)	६	४६	अपू०	प्राचीन इति भविष्योत्तरे श्रीकृष्णमुष्टिष्ठर सवादे श्रीकृष्ण ब्रह्मोपनिषद् ॥
२१५ × १५ सें. मी०	२८	७	१७	अपू०	प्राचीन
१३२ × ७७ सें. मी०	११ (१-६, ६-१०, १४-१६)	७	२८	अपू०	प्राचीन एतत्सर्वं प्रभोक्तव्यं बोधितान्नमान-रेत् ॥ ब्रह्मसाधनप्रभावेण वैद्यस्य नैव ज्ञायते ॥ इति उद्यान निधि ॥
१६८ × १०० सें. मी०	२४ (१-२४)	१०	२७	५०	शके १६५६ इति ध्यानदत्तम मन्त्रालये अश्विन शुद्ध सप्तम्या समाप्त ॥..... (मुख पृष्ठ)
२७६ × ११२ सें. मी०	२५ (१-३, ५-६, १२-२५, २६-३०, ३३-३५, ४१)	६	३२	अपू०	प्राचीन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या या संग्रहविषय की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकावार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	<u>१२५१</u> २	औरविधि			दे० का०	दे०
१६३	५७६४	गयापूजा			दे० का०	दे०
१६४	६००७	गयास्तानपूजनविधि			मि० वा०	दे०
१६५	३२४०	गणपतिपूजा			दे० वा०	दे०
१६६	३३८३	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८४	गणपतिपूजाविधि			दे० का०	दे०
१६७	५१६६	गणहोमविधि			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	नया अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	१०	१०	१०
१२३ × ७८ सें. मी०	७ (१-७)	७ ११	पू०	प्राचीन	इति क्षौर विधि ॥
१४६ × १०८ सें. मी०	२	१३ १७	अपू०	प्राचीन	
१५६ × १२१ सें. मी०	१४ (१-१४)	७ १६	पू०	प्राचीन (सं० १६४३)	इति यगापूजन विधि समाप्त ॥ राम वेदाक चद्राग्ने आस्विने × × × × शुभ भूमात् ॥ द्विजेति इति षाठ ॥
२११ × ८३ सें. मी०	६ (१-६)	६ ३५	पू०	प्राचीन	इति पूजनम् ॥
३१४ × १२३ सें. मी०	२ (१-२)	१२ ४४	पू०	प्राचीन	इति वल्लरिनि अना ब्राह्मणाय इमां दक्षिणा दास्ये इति सवत्स**** ॥
१५६ × १०२ सें. मी०	६ (१-६)	१० २१	पू०	प्राचीन	इति पूजा समाप्त ॥
२३८ × ८४ सें. मी०	६ (१३-१८)	१० ३६	अपू०	प्राचीन	इति दीघायन श्रोत्रो गणहोम-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथवार	टीकानार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	$\frac{२३६२}{२}$	गणेश चतुर्थीपूजाविधि			दे० का०	दे०
२००	$\frac{२४३४}{२}$	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०१	४११६	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०२	६३५०	गणेशपूजन विधि			दे० का०	दे०
२०३	७५३१	गणेशपूजा			मि० का०	दे०
२०४	३१४	गणेशपूजाविधान			मि० का०	दे०
२०५	३४२७	गणेशपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ की अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द अ	ब	स	द	६	१०	११
१२ × ६"७ से० मी०	१२	६	११	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश जी की पूजा विधि संपूर्ण शुभ भवति मंगल ददात् ॥
२५.८ × ११.२ से० मी०	१३	११	३४	पूर्ण	प्राचीन	इति गणेश पूजन समाप्तम् ।
१७.१ × ११.२ से० मी०	८	७	१७	अपूर्ण	प्राचीन	नया कृत पूजनेन ध्याजानाशनो- पपन्न भगवान्सर्वार्थमा श्रीसिद्धिवुद्धि सहित महागणपति प्रियतां ॥ (अंत)
१६ × १२ से० मी०	६ (१-६)	६	१२	०	प्राचीन	इति श्री गणेश जी की पूजन संपूर्ण शुभ भवतु मंगल ददात् ॥
२१.८ × ६"७ से० मी०	६ (१-६)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	
१६.५ × १०.५ से० मी०	६ (१-६)	८	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१८	श्री गणेश जी मुक्त मस्तु जयाप्रतय लिपिलेखनमदोषो न द्रियते । सं० १६१८ अस्वनिप्रतिष्ठा ३ शुक्ल चंद्रवार । श्रीरीधर.....
१६ × १० से० मी०	७ (१-७)	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	६६२१	गयाकार्यानुष्ठान पद्धति			दे० का०	दे०
२०७	७६६२	गयापद्धति			दे० का०	दे०
२०८	४७२१	गर्भाधान			दे० का०	दे०
२०९	३७७४	गर्भाधान आदि संस्कार- विधि			दे० का०	दे०
२१०	६४४०	गर्भाधान संस्कार	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	७६२०	गायत्री			दे० का०	दे०
२१२	२२४१	तुर्विभक्ति गायत्री जपम्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकित संख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	९	१०	
					११	
१७१×६६ सें० मी०	१८	११	२१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मद्भामेश्वर भट्टात्मज नारायण भट्ट विरचिते विष्णुस्तीवेलौ गद्या- प्रकरण गद्या कार्यानुष्ठान पद्धति ॥ सीष कर्तव्य सदेह + + + ॥
२०८×६७ सें० मी०	१८ (१-१८)	१०	३६	पूर्ण	प्राचीन स० १८७२	इति गद्या विधि अक्षीर्ण विस्तार अष्टाशुक्रमणिका ॥ ।सवत् १८७३ ।
२७७×११ सें० मी०	२ (१-२)	६	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
२२८×१२४ सें० मी०	१० (१६-२८)	८	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
२२×८७ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	४१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री विद्वत्सुतनाथिष्य श्री मद्भामे श्वर भट्ट सुत नारायण भट्ट विरचिते प्रयोग रत्नेस्तम्बेष्ट सुत रामकृष्णो • "दुष्ट रजो दशन भा ति ॥
१६८×११४ सें० मी०	१६ (१-२, ५, १८)	७	१४	अपूर्ण	प्राचीन	
३३२×६२ सें० मी०	१	३८	१२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री चतुर्विंशति गायत्रि समाप्तम् ॥

[सं० ग० २१]

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	४६३४	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१४	१७४३	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१५	३८१६	गायत्री जपविधि			मि० का०	दे०
२१६	$\frac{१५०२}{३}$	गायत्री तर्पण			दे० का०	दे०
२१७	७६४१	गायत्रीन्यास ध्यानपूजा			दे० का०	दे०
२१८	६२४	गायत्री पद्धति			दे० का०	दे०
२१९	१५५०	गायत्री पुरश्चरण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र संख्या और प्रति पत्र मे अक्षर संख्या	कथा अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	९	९	१०	११
१२२×१११ से० मी०	६ (२, ६-१३)	११	१२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३४ इति श्री ब्रह्म ऋषिः वसिष्ठ याज्ञवल्क्य प्रभे मायत्री नक्षत्र संपूर्ण ॥ सं० १८३४ वर्षे ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे ७ गुरुवासरे ॥
२७×१०० से० मी०	३ (३३-३५)	॥	३२	अपूर्ण	प्राचीन इति श्रीवायवी नक्षत्र संपूर्णम् ॥
१४२×११ से० मी०	४ (१-४)	६	१७	पूर्ण	आधुनिक
१४×१० से० मी०	॥	॥	१२	पूर्ण	प्राचीन इति संपूर्ण समाप्त ।
२३५×८७ से० मी०	१० १-१०	६	२६	पूर्ण	प्राचीन
१६×६५ से० मी०	७	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन
२०×८४ से० मी०	६	११	३३	पूर्ण	प्राचीन इति श्रीभट्ट शबरात्मजभट्ट शाब कृत गायत्री पुरास्वरणप्रयोगः ॥***

अमाक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस्त वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७०५८	गायत्री प्रयोग			२० का०	२०
२२१	२००६	गायत्री विधान			२० का०	२०
२२२	३५६४	गायत्री विषयविलक्षण			२० का०	२०
२२३	६८६५	गायस्तुत प्रयोग			२० का०	२०
२२४	२७०४	गुरु दीक्षा ?			२० का०	२०
२२५	३०६३	गुरुनात्मापुत्रा पद्धति			२० का०	२०
२२६	३६२३	गुरुदान प्रयोग			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सन्ख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान भाग का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	९	१० ११	१२	१३	१४
२५५ × १६२ सें. मी०	६	१४	३३	अपूर्ण	प्राचीन
१७६ × ११३ सें. मी०	१	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन
१७५ × ६४ सें. मी०	३	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन
२३५ × १०१ सें. मी०	५ (१-५)	११	३१	पूर्ण	प्राचीन इति ज्योतिष्योमेष्टावस्तुत् प्रयोग- समाप्त ॥
१६ × ७ सें. मी०	४ (१-४)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन इति सकल्प्य कृत मन्त्र चल मन्त्र धानु- संथाय सात्त्विक त्याग इत्यम् द्वयम्- स्वार्थे श्री मनारामण चरणारविन्दयो सर्वदेवा सर्व कालस ॥
२३१ × ८४ सें. मी०	५ (१-५)	६	४२	पूर्ण	प्राचीन इति श्री गृह्यकात्या पृजा पद्धति संपूर्ण ॥ नम श्रीगुरुभावाय ॥
२३५ × १० सें. मी०	२	३	३६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८१२ इति गृह्यान विधि संपूर्ण श्रीरंण- मस्तु ॥ सवत् १८१२ आषाढ शुद्ध ५ समाप्तम् ॥ पुस्तकमिमिद रामप्रहकर विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठमहो लिखापित स्वाय परार्थे च । श्री साव शिव प्रसन्नोस्तु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	प्रणकार	टीकाकार	प्रय वित्त वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२७	६३०	गृह दीपक			६० का०	६०
२२८	१६२५	गृहप्रतिष्ठा विधि			६० का०	६०
२२९	५२३२	गृह प्रतिष्ठा विधि			६० का०	६०
२३०	४५३८	गृहस्थ रत्नाकर			६० का०	६०
२३१	७२६९	गृहारम शिलान्मास विधि			६० का०	६०
२३२	१०३१	गृह्यसार	बोपल भट्ट		६० का०	६०
२३३	२४१३	गृह्यसूत्र			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	व	स द	६	१०	११
२७३ × ११५ सें० मी०	१० (१-१०)	१० ३५	पू०	प्राचीन स० १६२१	इति गृहदीपक समाप्तम् । स० १६२१ आके १७८६ धावन माते कृष्ण पक्षे अमावस्या शुभो वाशरे तिपित्वा दोउन्हारामशपट्टाऽर्पय तत्वे ।
३० × १३ सें० मी०	३ (१, २ अज्ञात)	६ ४०	अपू० -		
२६४ × १०३ सें० मी०	१३ (१-१३)	१० ४१	पू०	प्राचीन स० १६२३	इति गृहप्रतिष्ठा विधि ॥ सवस्तरे १६२३
२६५ × ११२ सें० मी०	१५० (१-४८, ४८, ४६-१४६)	८ ४४	अपू०	प्राचीन	इति गृहस्थस्नानाकरे दातृनिरूपण तरण ॥ पू० (३५)
२८१ × १०८ सें० मी०	४ (१-४)	६ ३१	पू०	प्राचीन स० १६१३	इति गृहारभ शिलायास्य विधि समाप्त थीरस्तु स० १६१३ चंत मुदि १५२वौ ॥
२३ × ८६ सें० मी०	४४ (२५-६८)	११ २८	अपू०	स० १७३५	इति श्रीमहोपाध्याय श्रीमद्रत्नाग्रबोधपण- मट्ट विदुषा विरचिता गृह्यसार समाप्त ॥ स० १७३५ आषाढ कृष्ण द्वादश्या दश- पुत्ररघूनाथेन स्वार्थं परोपकारार्थं च निधितोगृह्यसार समाप्त ॥
२४२ × १०५ सें० मी०	२८ १-२३, २३- २०	७ २८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीनावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३४	५८३३	गोकुलाष्टमी पूजा			दे० का०	दे०
२३५	६६३५	शतमस्तोमादि	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२३६	७२४८	गोसावली			दे० का०	दे०
२३७	४७३२	गोमोन्वार			दे० का०	दे०
२३८	६३४१	गोदान			दे० का०	दे०
२३९	७७०६	गोदान			दे० का०	दे०
२४०	४२३८	गोदान			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्षितसंख्या और प्रति पक्षि में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूरा है? अपूरा है तो वन मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द अ	ब	स	द	१०	११	
२४५ × १०७ सें० मी०	४ (१-४)	७	१८	पू०	प्राचीन	मोकुलाष्टमि पूजा समाप्त ॥
२३१ × ६४ सें० मी०	२४ (१-२४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १८०५	इति श्री मदयाचितोपनामकह्य भट्ट सुते नरघुनाथेन एषा पद्धतिविरचिता ॥ श्रुममस्तु ॥ सवत १८०५ मिति पौषवदि द्वितीया पुस्तकमिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य ॥
२३८ × ६५ सें० मी०	१० (१-१०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२३८ × १०४ सें० मी०	६ (२-७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति गोदावराक्षर समाप्तम् ॥
२३३ × ६८ सें० मी०	४ (१-४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति गोदान प्रशस्ता० ॥
२३३ × ६८ सें० मी०	७	११	३८	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१४ (२-१६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० २२)

प्रमाण और विषय	पुस्तकानाम की आगत मर्यादा वा सग्रहविषय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ विस- यस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३८६५	गोदानपद्धति			दे० का०	दे०
२४२	$\frac{३०४६}{६}$	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४३	२३५४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४४	२०००	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४५	२१५८	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४६	६०२१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४७	१३६०	गोदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ की अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
२०७× ६३ से० मी०	५ (१-५)	६ २८	पू०	प्राचीन	इति गोपदान पद्धति समाप्ता ॥
(१६७× १३१ से० मी०	३३	१६ १७	पू०	प्राचीन स० १८८५	इति गोदान पद्धति संपूर्ण ॥ स० १८८५ ॥
२५२× ११२ से० मी०	१० (१-१०)	७ २४	पू०	(कृमिचूँचि) स० १६१५	इति स० १६१५ तन्त्रमासे महामागल्यमासे वीपमासे शुक्लपक्षे द्वादश्या १२ आदित्य वासराश्विनाया लिप्यत मिथ प्रभूनाल पठनार्थं १ इति गोदान विधि समाप्तम् ॥ राम-राम
२८×१३३ से० मी०	७ (१-७)	१० ३१	पू०	प्राचीन (जीर्ण) स० १६४४	इति श्रीनारदपुराणे गोदान विधि समाप्त । स० १६४६ मासोत्तम मासे आश्विन मासे कृष्ण पक्ष शुभतिथौ द्वितीयायाम्
१६३× १२३ से० मी०	४ (७-१०)	११ १६	अपू०	प्राचीन	
२७८× ११६ से० मी०	४ (१-४)	८ ३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रयाग साहाय्ये गोदान विधि निरूपण पद् पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥
१२३× से० मी०	४	८ १५	पू०	प्राचीन	इति सधोषेण गोदानविधि

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकानगर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२४८	२८८४	गोदान विधि			दे० बा०	दे०
२४९	३८८१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२५०	७६२३	गोदान (सूक्त) विधि			दे० का०	दे०
२५१	$\frac{४३३७}{८}$	गोदार			दे० का०	दे०
२५२	७५८५	पूजाविधि गोपालकृष्ण			दे० का०	दे०
२५३	२५६७	गोपाल नायकी अथन्यास			दे० का०	दे०
२५४	६२६३	गोप्रसव शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
२३ × १० सें० मी०	६ (१-६)	१०	३४	अपू०	जीर्ण प्राचीन सं० १७८१ शाके १६४६	इति साधारण.....॥ सुभमस्तु ॥ संवत् १७८१ साके १६४६ माघवदि दसम्या
१५७ × १५ सें० मी०	=	११	१५	अपू०	प्राचीन	
३१५ × ११७ सें० मी०	४ (१-४)	७	४२	पू०	प्राचीन	इति सूक्ष्म विधि समाप्ता
१६ × १३ ३ सें० मी०	२ (३५-३६)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति गर्डत्यारली (?) गळत्यारलि ? समाप्ता ॥
१७ × १० सें० मी०	=	=	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री योषालकृष्ण पुत्रा समाप्त ॥
२० × १० ५ सें० मी०	३ (१-३)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री योषाल वापत्रो पंच भगव्यास. संपूर्ण
१६३ × ६ सें० मी०	१	७	४५	पू०	प्राचीन	इत्यद्भुत सागरे भारद्वाजा सीढाकं यो प्रसव भाति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या का संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	अध्याकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५५	७२७३	गोमुखप्रसव			दे० का०	दे०
२५६	४३३२	गोमुख प्रसव विधि			दे० का०	दे०
२५७	६४२३	गोमुख प्रसव शास्त्र			दे० का०	दे०
२५८	६४३४	गोमुख प्रसव शास्त्र प्रयोग			दे० का०	दे०
२५९	४७११	गोमुख शास्त्र			सि० का०	दे०
२६०	७१६४	गीतमी पद्धति			दे० का०	दे०
२६१	२७३	ग्रहसूच पद्धति			दे० का०	दे०

पद्यो मा पृष्ठो वा भावार्	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या भोर प्रति पक्ति मे भद्रसंख्या	कथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था भोर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ प्र	ब	स द	६	१०	११
२५ × ६३ सं० मी०	२ (१-२)	८ ३०	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव ॥ + + +
२१ × ८५ सं० मी०	२ (१-२)	६ ३१	पू०	सं० १७६७	इति गोमुख प्रसव विधि ॥ सं० १७७६ शार्वयर्दि चंद्र शु० १
२० × ७६ सं० मी०	४ (१-४)	७ २७	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव शांति समाप्तः ॥ श्री ॥
२२ × ६ सं० मी०	६ (१-६)	७ ३०	पू०	सं० १६१५	सबत् १६१५ भाद्रपदशुक्ल १२ रवि- वाररे इद पुस्तक वेतालपनामकस्य ॥ शुभ ॥
२४ × ११ सं० मी०	६ (१-६)	८ ३४	पू०	सं० १६६६	इति श्री म० गोमुखप्रसव शांति समाप्ता । सं० १६६६ वारिकरोपा- व्द काशिनाथ धमणा लिखितम् ॥
२७ × ११ २ सं० मी०	२८ (१-२८)	६ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	अथ गीतमी पदति लिप्यते (प्रारम्भ)
१७ ३ × १० ५ सं० मी०	७२	७ २२	पू०	सं० १६६६	इति ब्रह्मव पदति समाप्त आश्विने मासे कुल पक्षे तुमयाया गृहवाररे ७ तस्मिन् दिने तु लिखित श्री गुरोश्च प्रसादत ॥ श्री रस्तु ॥ सं० १६६६ दुमति नाम सवरतरे शुभ उभयो लेखक पाठकयो ॥ लिखित इद पुस्तक पुष्पो- त्तम मिश्र । शुभ भवतु स्वार्थ परमायं च ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५६३०	ब्रह्मास्तुपूजन			दे० का०	दे०
२६३	२२१६	ब्रह्म शास्त्रि	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६४	२६८०	ब्रह्मशास्त्रि			दे० का०	दे०
२६५	१८४१	ब्रह्म शास्त्रि			दे० का०	दे०
२६६	१६२४	ब्रह्म शास्त्रि			दे० का०	दे०
२६७	६७	ब्रह्म शास्त्रि	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६८	$\frac{४१७२}{२}$	ब्रह्मशास्त्रि विधान			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा या प्रानार	पत्रमहत्वा	प्रति पृष्ठ मे पक्ति महत्वा और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		कया श्रव पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	द	स	द	द	१०	११
२७ X X ११ X सं० मी०	४ (१-४)	६	४३	पू०	प्राचीन	
२५ X X ११ सं० मी०	८ (१-८)	=	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीकार्यायन ऋषि विरचिता ग्रह- शांति समाप्ता १
२२ X X ८ सं० मी०	३	१०	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ X १० X सं० मी०	२७	१२	२५	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति नवगृह मध्य यज्ञ समाप्त ॥ सं० १८६० भागतिर सूदि ११ गुरुवारैण विधित जोसिचनराम वृत पुत्र बालुराम पुस्कर मध्ये ॥ श्रीमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥
२५ X X १५ सं० मी०	१६ (१-२, ४-१७)	१२	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ X १३ २ सं० मी०	१०		१५	पू०		इति कार्यायन ऋषि विरचिता ग्रह शांति समाप्ता शुभेभूयाल्लेखक पाठ- कयोस्ताम्बकपात. ॥ कृत्नाय नम ॥ राम राम
१८ X X १३ X सं० मी०	२३ (१-४, ६-२७)	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति प्रवर्गभं समाप्त । (५० सं० २७)
सं० सं० २३						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	१०२४	ग्रहशास्त्रविधि			६० का०	६०
२७०	$\frac{२४३४}{२}$	ग्रह स्थापन विधि			६० का०	६०
२७१	६७५२	ग्राहस्तोत्रप्रयोग			६० का०	६०
२७२	५०१७	धृत तुलादान प्रयोग			मि० का०	६०
२७३	५६१७	चरिका विधान			६० वा०	६०
२७४	५२५१	चढी जप विधि			६० वा०	६०
२७५	६३०	पद्मीविधि			६० वा०	६०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
२४३×१५ से० मी०	६ (१-६)	११	२५	पूर्ण	प्राचीन (स० १८६०)	इति आ ग्रहणाति विधि समाप्तम् शुभ भूयात् ॥ स० १८६० चैत्रशुद्धि १५ बुधदिने श्री शो (सी) तारा नायनम् ॥
२५८×११२ से० मी०	(१३)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति कात्यायन ऋषि विरचिते ग्रहा-स्थापन विधान समाप्त ॥
२४×११ से० मी०	५ (१-५)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इति शिव स्तोत्र प्रयोग ॥
१६५×६३ से० मी०	१	१५	३७	अपूर्ण	आधुनिक	
२४४×१०५ से० मी०	११ (१-१०, १३)	॥	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति बह्विध विधान संपूर्ण ॥
२२×१०२ से० मी०	५ (१-५)	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन	ग्रन्थ चढी अपविष्टि ॥ (ग्रन्थम्) × × ×
२४४×७६ से० मी०	॥ (१-६)	८	३८	पूर्ण	प्राचीन	इति चढी विधि ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकानुसंध की आगत संख्या वा मद्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस वस्तु पर लिखा है	मूल्य
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२४३७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		२० का०	२०
२७७	२२५७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		२० का०	२०
२७८	६४४६	चतुर्थाक्षित चक्राभ्यां			२० का०	२०
२७९	१५०७	चतुष्टय संप्रदाय पूजा पद्धति			२० का०	२०
२८०	७२०१	चलाचलप्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०
२८१	७१८३	चवरी			२० का०	२०
२८२	६४९९	चार्तुमासा			२० का०	२०

पतो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	नया ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
२४५ × ११ सें० मी०	२५	६ ३८	५०	प्राचीन	इति श्री मद्रुवाध्यायोपनाम शिव भट्ट भुव सतीगभज नागाजी भट्ट कृते भारकण्डय पुराणातगत सप्तसत्वारण्य चंडीस्तोत्र माध्याने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥
१८८ × १६१ सें० मी०	५० म० ३३ (२-१६ १८-३५)	१३ ४०	अपूर्ण	प्राचीन स० १६३२	इति श्री मद्रुवाध्यायोपनाम शिवभट्ट भुव सतीगभज नागाजी भट्ट कृते भारकण्डय पुराणातगत सप्त स० १६३२
१३६ × ८२ सें० मी०	३ (१-३)	५ १३	पूर्ण	प्राचीन	इति चद्राण्य ४ वृत्त ॥
१८ × ६७ सें० मी०	७ (५-११)	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५८ × ११२ सें० मी०	१७ (१-१७)	६ २८	पूर्ण	स० १६१५	इति चलाचल प्रतिष्ठा विधि सप्त १६१५ तीपमात सितेपक्ष सयोंदस्या आद्रवेतया सोमारामेण लेखस्यात्
२६२ × १५८ सें० मी०	१४ (१-११, १३-१५)	१३ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाब्रह्मपुराण कर्नेकांडे- विवाह विधि चतुर्थाध्याय + + स० १६०३ अर्धेगठमध्ये + + ॥
२२५ × ६५ सें० मी०	५३ (१-१३, १५-५४)	१२ ४८	अपूर्ण	प्राचीन	इति होत्र पशुवधश्चातुर्मास्यानां । (पत्र सं० ५४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२८३	१२०६	चातुर्मास्यविधि			६० का०	६०
२८४	६७०६	चातुर्मास्यहीन			६० का०	६०
२८५	५१४२	चित्तगुप्त पूजा विधि			६० का०	६०
२८६	७०८८	चूडाकरण			६० का०	६०
२८७	६६७०	चौलप्रयोग			६० का०	६०
२८८	६१३३	जनसारी शांति			६० का०	६०
२८९	६२५४	जप			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	८	१०	११
२२ × १३ से० मी०	६ (१-६)	७	२३	पू०		इति चातुर्मास्य विधि- संपूर्ण सुप्त भूमात् ।
२२ × ६ ५ से० मी०	८ (१-८)	१०	३१	पू०	प्राचीन	
१६ ७ × ६ ८ से० मी०	११ (१३ १३-२२)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ १ × ११ ६ से० मी०	६ १-६	६	२२	पू०	प्राचीन	इति पञ्चदश्या पुस्तक समाप्तम् चंद्र मासे सिते ११ + + + + +
२२ ४ × ७ ७ से० मी०	७ (१-७)	६	३८	पू०	प्राचीन	
१७ २ × ७ ५ से० मी०	४	८	२१	पू०	प्राचीन	इति विद्यानमालायां वर्षे प्रोक्ता जन- मारी गाति समाप्त
२१ ८ × १० ६ से० मी०	२	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमानुसार विषय	पुस्तकालय की प्राप्ति संख्या वा संग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४८१६	जपविनियोग			६० का०	२०
२६१	१६१३	जल भाष्य			६० का०	२०
२६२	३७३१	जलाशयकूपोत्सर्ग			६० का०	२०
२६३	१३०६	जलाशय चत्वर प्रतिष्ठा			६० का०	२०
२६४	४६४५	जलाशयारामोत्सव मयूख	नीलकण्ठ भट्ट		६० का०	२०
२६५	२५१०	जनाश्रयोत्सव	नीलकण्ठ भट्ट		६० का०	२०
२६६	४४४६	जलाशयोत्सव विधि	नारायण भट्ट		६० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	८	८	८	१०	१०	
१७ × १० ७ सें० मी०	३	१०	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ × ११ सें० मी०	१	७	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
(२७ ६ × १५ १) सें० मी०	२५ (१-२५)	१२	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६६	इति जलशाय कूपोत्सर्ग समाप्त सवत् १८६६ मासानामुत्तमे फल्गुने मासि कृष्णपक्षे एकादश्या शनिवासरे लिखित मिद पुस्तक लक्ष्मी नारायणन ... ॥
१६ ३ × ६ २ सें० मी०	३७ (१-३७)	६	२०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०७	इत्यारामामोजलाशय चरवर प्रतिष्ठ- समाप्ता । श्री कृष्णायनम सं० १६०७ शाने १७७२ मासोत्तमाहमे ज्येष्ठ कृष्ण ३० चंद्रवासरे तिथि कृत मिथ्र ढान चद्र राग पुरन । श्री कृष्ण ।
२३ ४ × ११ सें० मी०	१३ (३-१५)	१४	३८	अपूर्ण	सं० १६०६	इति श्री मीमांसक भट्ट सकरात्मज भट्ट नीलवर्ण कृते भास्वरे जलशयारामोत्सर्ग मय्य समाप्त ॥ " १६०६ चैत्रे शुक्ले तरे शुभे " "
२६ ३ × १५ २ सें० मी०	२७ (१-२७)	१३	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१८	इति श्रीमीमांसक भट्ट साररात्मज भट्ट सौनवीनवट कृते भास्वरे जलशयारामो- त्सर्गमय्यग्रय शाध्या १०० शुभमस्तु मासिब मुदि १५ वरा सं० १६१८ व
२७ × १२ सें० मी०	८६ (१-८६)	३७	३७	पूर्ण	सं० १६१७	इति श्रीभट्ट रामशाय मुनिमुतागमय भट्ट कृते जलशयारामो विधोत्तमो गगं विधि चरनि ॥ सवत् १६१६ शीत वीर शुभन १० स्वार्थ परीतरायां व ॥
(सं० १० २४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६७	५०५३	जसोत्सर्ग			६० का०	६०
२६८	४६०२	जसोत्सर्ग			६० का०	६०
२६९	६४१७	जातकर्म पद्धति			६० का०	६०
३००	६४१८	जीर्णोद्धार			६० का०	६०
३०१	६३६८	जीर्णोद्धार प्रयोग			६० का०	६०
३०२	६३७१	जीर्णोद्धार विधि			६० का०	६०
३०३	६११८	जीवशास्त्र पद्धति	श्रीरी मट्ट		६० का०	६०

पदो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०
२४१ × ११ सें. मी०	३ १-३	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन
२८५ × १२२ सें. मी०	३ १-३	८	३८	अपूर्ण	प्राचीन
२२४ × ६ सें. मी०	६ (१-६)	७	३२	पूर्ण	प्राचीन इति आतर्कर्म पद्धति ॥
२१५ × ८४ सें. मी०	४ (१-४)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन इति जीर्णोद्धार निर्णयसिद्धीकृतेन विधि समाप्तिमगमत् ॥
१४ × ७६ सें. मी०	१ (१-२)	१०	२५	पूर्ण	प्राचीन इति जीर्णोद्धार प्रयोग समाप्त ॥
२१८ × १०१ सें. मी०	४ (१-४)	१०	४०	पूर्ण	प्राचीन इति रघुनाथ गूरि गूनु त्रिविक्रम रचितायाः प्रतिष्ठापद्वयो जीर्णोद्धार विधि ॥
२४३ × ११३ सें. मी०	१४ (१-४४)	७	३३	पूर्ण	सं० १६३८ इतिहसिग)
					सं० १६३८ माघ शुक्ल १० गोमे सिद्धि गणपति पुराहितन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविषय की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
३०४	५७२८	जेष्ठानक्षत्र जनन शांति			दे० का०	३०
३०५	$\frac{५०५४}{१५}$	ज्वरशांति प्रयोग			दे० का०	३०
३०६	६५८६	तडागादि प्रतिष्ठाप्रयोग		(-)	मि० का०	३०
३०७	५४५८	तर्पण			दे० का०	३०
३०८	६२१८	तर्पण			दे० का०	३०
३०९	७७८२	तर्पण			दे० का०	३०
३१०	४०७३	तर्पण			दे० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	१०	१०	१०
२४ X ८ ७ सें० मी०	३ (२-४)	८ २७	अपूर्ण	प्राचीन	इति ज्येष्ठा नक्षत्र जनन शांति ॥
१६ X ७ ८ सें० मी०	४	८ २५	पूर्ण	प्राचीन	इति ज्वर शांति ॥
२४ X १० ७ सें० मी०	८ (१-८)	१० ३६	पूर्ण	प्राचीन	बाज बाहादुर चन्द्रनिमित्त कौस्तुभेनुपति धर्मगोचरे शौनकोक्तविधितेयमीरिता सज्जालाशयतरुसृजे कृति ॥
२६ X ६ ५ सें० मी०	५	८ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	
६८ X १६ ५ सें० मी०	१ (खर्च)	६३ १४	अपूर्ण	प्राचीन	
११ X १० २ सें० मी०	८ (१-८)	११ १३	पूर्ण	प्राचीन	
१४ X ८ ७ सें० मी०	५० सं० ७ (२-८)	६ १६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६७	इति तपन सपूर्णं सवत् १८६७ सावि १७६२ आषाढ वदि ६ बुधवासर सादिन प्रति सपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्ति सख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३११	११६६	तर्पण			दे० का०	दे०
३१२	४५०४	तर्पण			दे० का०	दे०
३१३	२८७७	तर्पण			दे० का०	दे०
३१४	$\frac{७००४}{२}$	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१५	१३३३	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१६	५७१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३१७	६०७	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	६००६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३१९	५३२१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२०	५१२६	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२१	$\frac{५२२६}{४}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२२	$\frac{५२६६}{२}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२३	$\frac{७७६}{२}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२४	७५४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रमय्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	८	स	द	९	१०	
१३३×६४ सें० मी०	५ १-५	८	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण विधिसमाप्त ॥
३०×१३.६ सें० मी०	८ (१-८)	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
७५.५×११२ सें० मी०	१ (४२१)	७६	१७	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ***
१६.५×११२ सें० मी०	५ (१-५)	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥
१६×८ सें० मी०	२ (३-४)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१५.४×१०.६ सें० मी०	१६ (२-१७)	१०	६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६४०	इति तर्पण विधि सं० १६४० भाद्रपद ७ शनिवारे मध्याह्नात् घाटिका न्यून*** ***पठेत् ॥ अच्युतायनम् गोविदायनम्. शुभ भूवात् ।
२६×१०.५ सें० मी०	■	=	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री तर्पण विधि संपूर्ण शुभमस्तु शुभसंवत्सरा १६०६ भादे १७०१ इके शुक्ल प्रतिपदा भृगु वासरे नेष्टिराम- दिहल विप्रेश्वर परोपकारार्थं हेतवे ।

(सं० गु० २५)

श्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	अवधार	टीकाकार	प्रथ किस पस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३५८५	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२६	२२८६	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२७	३६६२	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२८	४०६५	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२९	४२२०	तर्पणविधि			३० का०	३०
३३०	१५७३	तर्पणविधि			३० का०	३०
३३१	<u>१६२६</u> ३	तीर्थमुख्याद			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आन्तर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र संख्या और प्रति पत्रि मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बत- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२३१ × १३७ सें० मी०	८ (१-८)	८ १८	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ... ॥
७५६ × १०८ सें० मी०	१	६३ १३	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति तर्पण विधि सप्तसं० स० १६०४॥ ब्रह्मादय ...
२३४ × ६५ सें० मी०	१	३३ १६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ॥
१५७ × ७६ सें० मी०	४ (१-४)	६ २३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि शुभमस्तु
२७ × ११२ सें० मी०	२ (१-२)	११ ४०	पू०	प्राचीन	इति नारद षडरात्रे तर्पण विधिः ॥
३१ × ११५ सें० मी०	११ (१-५, ५८-६३)	११ ४५	अपू०	प्राचीन	
२१४ × १३१ सें० मी०	८ (१-८)	६ १६	पू०	प्राचीन सं० १६००	इति तीर्थभूय धाद विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ पागुन शुक्ला वृद्धवासरे संवत् १६०० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	यद्यपि किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	२६७७	तीर्थचिन्धि			मि० का०	३०
३३३	१७७५	तीर्थशास्त्र			३० का०	३०
३३४	६०७४	तीर्थशास्त्र			३० का०	३०
३३५	३३००	तीर्थशास्त्र			३० का०	३०
३३६	७६८	तीर्थशास्त्र			३० का०	३०
३३७	१३६६	तीर्थशास्त्र निर्णय	नारायण भट्ट		३० का०	३०
३३८	१८४८	तीर्थशास्त्र विधि			३० का०	३०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष का संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२२३६	तीर्थश्राद्ध विधि			६० का०	६०
३४०	$\frac{२६०१}{२}$	तीर्थश्राद्ध विधि			६० का०	६०
३४१	२२४३	तीर्थश्राद्ध विधि			६० का०	६०
३४२	६७४	तिलकमुद्राधारण विधान			६० का०	६०
३४३	१५८१	तुलसीप्रतिष्ठा			६० का०	६०
३४४	$\frac{१६२६}{३}$	तुलसीविवाह			६० का०	६०
३४५	$\frac{७०४३}{३}$	तुलसीविवाह			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो या प्राकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिन संख्या और प्रतिपक्ति म अक्षर संख्या	क्या र्षं पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत- मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य मावश्यक विवरण
८८	८८	८८	८८	१०	११
२१४×१०७ से० मी०	८ (१-८)	८	२८	५०	प्राचीन इति तीर्थं आद्य विधिः ॥
२१×११.५ से० मी०	६	८	१६	५०	म०१६२६ इति श्री तीर्थं आद्य विधि समाप्तम् ॥ निपत ५० बद्धलगाहाम् ॥ १ ॥
१८×११ ८ से० मी०	४ (१-४)	१३	१६	५०	प्राचीन दक्षिणा चाम सत्य तीर्थं आद्यप्य विधि । अर्घ्यमा वाहन चैव द्विजामुष्ट- निवेदन ॥ विमर तृप्ति प्रश्न च तीर्थ- आदेयु दर्जयेत् ॥२॥
१५×१० से० मी०	५	६	१७	५०	प्राचीन इति श्री वाराह पुराणे चातुर्मास महा- त्म्ये धरणी वराह सवादे श्री भगवान- वराहोक्त तिलक मुद्रा धारण विधान नाम चचमोऽध्याय ॥ श्री कृष्णार्पण- मस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ धीरस्तु ॥ श्री कृष्ण ॥
२७.५×१२ ८ से० मी०	१३ (१-१३)	१०	२६	५०	म०१८८१ इति तुलसी प्रतिष्ठापनसंपूर्ण ॥ स० १८८१ ॥ तत्र प्रथमं मार्गशीर्षदिवाहस्यां बृहस्पतिवारदिने लिखितकितनवज ॥ इदं पुस्तक ॥ शुभमस्तु ॥
२११×१२ ६ से० मी०	४ (६-१२)	६	१८	५०	प्राचीन इति तुलसी विवाह समाप्त ॥
१४७×१३ ३ से० मी०	६	८	१४	५०	प्राचीन स०१८४२ इति श्री विष्णु जी भजे श्री तुलसी विवाह विधि संपूर्णम् ॥ स० १८४२ वर्षे कार्तिक वदिकादशी भृगुदिने लिखित स्वामि तन मुखराम वेणोराम का पुत्र शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत मध्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४६	७१३६	तुलसीविवाहपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
३४७	$\frac{४६७६}{२}$	तुलसीविवाह विधि			दे० का०	दे०
३४८	$\frac{५०५४}{१५}$	तुलादान प्रयोग			दे० का०	दे०
३४९	३८५४	तुलादान प्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
३५०	७७६३	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५१	३५०१	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५२	३७४६	तुलापुरुष पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों का पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रित संख्या और प्रति पत्रित में पत्रित संख्या	क्या श्रवण पूर्ण है? मपूर्ण है तो वर्तमान पत्र का विवरण	धवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	६	१०	११
२६ × १०.६ सें. मी०	१६ १-१६	८ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	मय तुलसी विवाह पूजा प्रारंभ × × × (प्रारंभ)
१५.८ × ६.५ सें. मी०	१४ १-१४	१० २३	पूर्ण	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे कान्तिकोद्यापन तुलसी विवाह शिधिः ॥
१६ × ७.८ सें. मी०	५	७ २०	अपूर्ण	प्राचीन	अथ तुलादान प्रयोगः ॥ (प्रारंभ)
२३.५ × ११ सें. मी०	३ (१-३)	६ २७	पूर्ण	प्राचीन	इति कमलाकर भट्ट कृत तुलादान प्रयोगः समाप्तिमगमत् ॥ श्री ॥ भा द्वाज वैजनायामज धुंडराजस्य
२६.६ × ११.५ सें. मी०	३ १-३	७ ३२	पूर्ण	प्राचीन	
२३.२ × १०.३ सें. मी०	७	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
१०.५ × ६.३ सें. मी०	८ (१-८)	६ २७	पूर्ण	प्राचीन सं० १७५६	इति तुलापुरुष पद्धति समाप्तः ॥ सं० १७५६ समये आवणकुन्यपोर- मास्याकाशीसेने लिखित तुलापुरुष दान प्रयोगः समाप्तः ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	३८६४	तुलाप्रयोग			दे० का०	दे०
३५४	३१७३	त्रिकटिका			दे० का०	दे०
३५५	७२५४	त्रिकालसंख्या			दे० का०	दे०
३५६	६०६७	त्रिकाल संख्या			दे० का०	दे०
३५७	६४२४	त्रिपाद पञ्चक शांति			दे० का०	दे०
३५८	७०३	त्रिपिंडी आद्य प्रयोग			दे० का०	दे०
३५९	३७०६	त्रिपिंडी आद्य प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे कविन सख्या और प्रति पक्ति में प्रक्षर सख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	५	स द	६	१०	११
२२१×६५ सं० मी०	५ (१-५)	१० ३३	पू०	प्राचीन स० १८१२	इति तुला प्रयोग समाप्त ॥ स० १८१२ आपाठ शुद्ध पौर्णमास्या समाप्तम् ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोपनामन विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठ भट्टेन लिखितम् स्वार्थ परार्थ च ॥
२३×१०५ सं० मी०	३ (१-३)	६ २७	पू०	प्राचीन स० १८६७	इति सिकाडिका सम्पत्तम् । इति श्री काश्यापन प्रणीत स्वान् शूद्र समाप्तम् ॥ लिखित वेणी राम लिखितम् ॥ स० १८६७ भाद्रपदवर्ष भागुवातरे ॥
१०६×११७ सं० मी०	१८ १-१८	७ १६	पू०	प्राचीन स० १६६१	इति वीकाल सध्या संपूर्णम् ॥ लिपित स० १६६१ ॥
१६७×८३ सं० मी०	७ (२-८)	७ १८	अपूर्ण	प्राचीन स० १६०४	इति श्री त्रिकाल सध्या समाप्त संपूर्णम् ॥ मिति कुटी खेष्ट मुदि ३ मीन सप्त १६०४ ।
१६८×८ सं० मी०	४ (१-४)	६ ३१	पू०	प्राचीन	त्रिपादपक्ष शान्तिः समाप्ता ॥
२२६×११७ सं० मी०	६ (१-६)	१० २६	पू०	प्राचीन	श्रेष्ठपक्ष च सुदामन कुपट्टिस्वदेवक समाप्त ॥
१८५×६४ सं० मी०	४ (१-४)	१४ ३२	पू०	प्राचीन स० १८०६	इति गरुडोक्त त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग । स० १८०६ मणशीर्षवदो १४ इदो लिखितमिदम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	चिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३७१०	त्रिपिढी श्राद्ध विधान			दे० का०	दे०
३६१	३८८०	त्रिवेणी स्नान विधि			दे० का०	दे०
३६२	४७६६	त्रिसुपर्ण			मि० का०	दे०
३६३	३३१७	दवक			दे० का०	दे०
३६४	७२८६	दक्षिण पुन ग्रहण विधि			दे० का०	दे०
३६५	६६६०	दर्श पद्धति			दे० का०	दे०
३६६	६५१०	दर्श पूर्णमास विहार- कारिका विवरण			दे० का०	दे०

पतो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	९ ८	९	१०	११
२० × ६ से० मी०	६ (१-६)	१२ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ८ × १५ ७ से० मी०	६	१५ १८	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ २ × १० ३ से० मी०	५ (१-५)	११ २१	पूर्ण	प्राधुनिक	त्रिमुपार्णमपाचित ब्राह्मणाय दद्यात् । ब्रह्महत्या वा एते ध्मति । ये ब्राह्मणा स्त्रिमुपार्णं पठति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति ॥ (पत्र संख्या-१, पंक्ति संख्या-४, ५)
२३ ८ × १० १ से० मी०	२८ (१-२८)	७ २५	पूर्ण	प्राचीन	इति देण्डक सम्पूर्णम् ॥
२८ ६ × १० ६ से० मी०	३ (१-३)	६ ३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१२	इति दत्तिमपुत्रविधिः समाप्ता सवद् १६१२ सं० वरी १२ ॥
२२ ८ × ३ ७ से० मी०	३४ (१-३४)	१० ३२	पूर्ण	प्राचीन	प्रागस्तबोक्त रीत्यंपाकारित्थं वर्त- पठति ॥ ...
२२ × ८ ६ से० मी०	७ (१-७)	११ ३२	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सूच्या वा सग्रहविशेष की सरया	सयनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६७	६५००	दर्श पौर्णमास होत्र ?			३० का०	३०
३६८	७७२३	दर्शपौर्णमासी व्याख्या			३० का०	३०
३६९	४१४५	दशगात्र			३० का०	३०
३७०	४९२१ ३	दशगात्र			३० का०	३०
३७१	४८८१	दशगात्रएकादशाह प्रादुपदति			३० का०	३०
३७२	२४०५	दशगात्र पिडदान विधि			३० का०	३०
३७३	२२९२	दशगात्र विधान			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अप्य आवश्यक विवरण	
८ अ	६	८	८	१०	११	
२३५×६२ से० मी०	३ (१-३)	८	३३	पूर्ण	प्राचीन	
२३१×१०४ से० मी०	१७ (१-१७)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
१६३×१०३ से० मी०	४ (१-४)	८	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति दशपात्र विधिः समाप्ता ॥
१६×१०७ से० मी०	७ (१-७)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन सं० १८२८	इति दशपात्र संपूर्ण त्रिपितृनरसिंघ दा मुकुत सवत् १८२८ मिति असाठ **
२८८×१०२ से० मी०	१५ (१-१५)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६४	म्योरो दशपात्र की सामग्री की ॥ (पत्र सं० १) इति प्रसिध सचपन आदि विधि गपुर्ण ॥ (पत्र सं० ४) इति एकादशमन विधि गपुर्ण ॥२॥ सवत् १८६४ जेष्ठ कृष्ण ६ वृषदिने दृष्ट निपत दाहाणमन्त्रुवरणमप्ये ॥ --- सवत् १८९३ माघ कृष्ण ७ वार मनिवार शुभमस्तु भूमात् " ॥
२६१×१३६ से० मी०	१४ (१-१४)	११	३३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८९३	
२३×१०७ से० मी०	१५ (१-१५)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
३७४	४२५	दशपिंडीवर्णपद्धति			२० का०	२०
३७५	३७२७	दानचद्रिका			२० का०	२०
३७६	७८०६	दानचद्रिका			२० का०	२०
३७७	४९८६	दानप्रार्थनावली			२० का०	२०
३७८	१६३२	दानसूत्र			२० का०	२०
३७९	६२४९	दानविधि			२० का०	२०
३८०	६२४९	दानविधि			२० का०	२०

पदो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या यय पूर्ण है? अपूर्ण है तो कर्न मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२०८×६ से० मी०	६ (१-६)	१३	४०	पू०	प्राचीन स० १८१२	इति सपिंडीकरण पद्धति समाप्त निघण्टु मिश्र नीलराय स० १८१२ ।
२४५×१०५ से० मी०	१४६ (१-१४६) ४ (सूचीपत्र)	७	३६	पू०	स० १८५८	इति शान चन्द्रिका समाप्ता ॥ यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित- मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धवा भ्रमदीपोन सिष्यते ॥ स० १८५८ ॥ अतएव सन्तान संवत्सर भाषा शुद्ध सात दिने समाप्ते ॥
१५७×८६ से० मी०	६ (६-१०, १२-१५)	६	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६५×१३५ से० मी०	५ (१-५)	१०	५०	पू०	प्राचीन (छादित)	श्रीछादामुक् बभूँर बस्तूरी कुटुमान्वित विनेपन प्रवण्डामि सौख्यमस्तु सदा मम ॥
(२६६×१३६) से० मी०	११ (२-१२)	१४	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७×८ से० मी०	१० (१-१०)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति दशदान श्लोक ॥
२२×६४ से० मी०	७	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन	

(१००

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	$\frac{५०५४}{१५}$	दानविधि			दे० का०	दे०
३८२	$\frac{५०५४}{१५}$	दानविधि			दे० का०	दे०
३८३	८७५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८४	८२२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८५	७८७२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८६	२२८७	दान सिद्धांत मणि	चंडेश्वर		दे० का०	दे०
३८७	१५३५	दालम्बीतर पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिगणना और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३	१४
१६ × ७ ८ सं० मी०	६	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ × ७ ८ सं० मी०	१० १/२	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × १२ ३ सं० मी०	२२६ (१३२-२३०, २३५-२६४, २६८-३६६ ३७०)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१८ × १२ सं० मी०	८ (५-१३)	१०	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
१४ × ७ ८ सं० मी०	२	३	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
१४ × १३ ७ सं० मी०	१८ (३-२०)	१२	४१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२ × १२ ६ सं० मी०	५ (७-११)	१४	५२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री दातम्योत्तर पद्धति संपूर्ण सवत् १६१७ चाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	७०६	दाह पद्धति			दे० का०	१०
३८९	३६६७	दाहप्रयोग			१० का०	१०
३९०	३११	दाहविधि	विश्वनाथ		१० का०	१०
३९१	६६३२	दिन ग्रहण			१० का०	१०
३९२	३५७४	दीक्षाविधान			१० का०	१०
३९३	१४१५	दीपमालाकृत्य			मि० का०	१०
३९४	४२३७	दीप श्राद्ध			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	नया ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कते मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
२४५×८ सें० मी०	२०	६ २२	पू०	प्राचीन	
२१×६४ सें० मी०	२ (१-२)	१७ ४७	पू०	प्राचीन सं० १७५७	इति अहिताग्नेराश्वलायनोक्तमार्गेण वाह प्रयोग ॥सं० १७५७ दीप शुद्ध ७ रवी
३३×१२५ सें० मी०	१७ (१-१७)	११ ४५	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथ कृति संपूर्ण शुभमस्तु ॥
२३६×११२ सें० मी०	४ (१-४)	६ २४	पू०	प्राचीन	इति दिव श्येनय समाप्ता ॥
१७१×६ सें० मी०	१० (१-१०)	७ २६	पू०	प्राचीन	इति दीक्षाविधान संपूर्ण शुभमवति ॥
२६६×१२१ सें० मी०	२	६ ३६	पू०	प्राचीन	शुभ इति
२०३×१०८ सें० मी०	२ (१-२)	१२ २७	पू०	प्राचीन सं० १८२४	इति दीप आद्य प्रयोग ॥ सं० १८२४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
३६५	४०७६	दीपभास्व विधि			दे० का०	दे०
३६६	२६६८	दुर्गा चंद्र विधि			दे० का०	दे०
३६७	१३६१	दुर्गापाठ विधि			दे० का०	दे०
३६८	६५६	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
३६९	२८७०	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
४००	१२००	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०
४०१	२०१०	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो या भाषार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है ता यत्न- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अक्षर आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग द	६	१०	११
१५१×६६ से० मी०	२	१० २४	अपूर्ण	प्राचीन	इति दुर्गापाठ विधि समाप्तिमयात् ॥
१३३×६२ से० मी०	२ (१-२)	७ २२	अपूर्ण	प्राचीन	
१८८×६५ से० मी०	४	७ २५	पूर्ण	प्राचीन	
१५×८ से० मी०	३६ (१-३६)	५ २१	अपूर्ण	प्राचीन (जोएँ)	
२२८×८६ से० मी०	१	७ ४०	अपूर्ण	प्राचीन	
२१८×८५ से० मी०	६	६ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१×१५ से० मी०	२३	१३ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
४०२	१६४२	दुर्गाप्रतिष्ठाान विधि			२० का०	२०
४०३	५६६८	दुर्गाहवन पद्धति			२० का०	२०
४०४	१६११	दुर्गाचर्चन विधि			२० का०	२०
४०५	३७७०	दुर्गास्त्र पूजा			२० का०	२०
४०६	३२६१	दुर्गास्त्र पूजा पद्धति			२० का०	२०
४०७	६३६३	दुष्ट रजोदर्शन शांति			२० का०	२०
४०८	५१५२	दुष्ट रजोदर्शन शांति			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में प्रक्षर सख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अर्ध-मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ का धोर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द प	व	स द	६	१०	११
२६२×१२६ सं० मी०	॥	११ ३१	५०	प्राचीन	इति दुर्गा भाष्ये ॥ भवपूजाखेहकोशेषु ॐ भवपूजाय नमः ॥
११६×११६ सं० मी०	११ (४-७, १०, २६-३१)	६ १६	अपूर्०	सं० १६२४	इति दुर्गा हवन पद्धति समाप्तम् शुभ- मस्तु सं० १६२४ मास कालगुण कृष्ण ६ वासर शुक्र ' ' ।
१६×१५८ सं० मी०	५ (१-५)	११ २०	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री सूरि श्री पति जे कृष्ण विर- चिता भगवति पद्य पुष्पांजलि स्तव समाप्तम् । सं० ३६ सु० ११ भौ० ॥
२३८×११२ सं० मी०	१० (१-१०)	१० ४३	अपूर्०	प्राचीन	
२७६×११६ सं० मी०	४३ (८-५०)	६ ३६	अपूर्०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री शारदीय वनरात्रि प्रतिपदारण्य विजय दशमी पर्यंत श्री दुर्गास्तोत्रादि चंडी पूजन पद्धति विधि संपूर्ण समाप्त शुभ भवतु भगवत ददातु श्री सं० १८७६ शके १७४४ आश्वी मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ४ चंद्रवासरे ।
१६२×८२ सं० मी०	६	१० ३३	५०	प्राचीन	इति दुष्ट रजोदशन शांति समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
२४४×१०४ सं० मी०	८	११ ३७	अपूर्०	प्राचीन सं० १८०६	इदं दुष्टरजोदशन शांति समाप्ता ॥ इदं पुस्तक चंद्रमष्टम्य ॥ सं० १८०६ शके १६७० कार्तिक ४ ८ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की मसूदा	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	७४१०	देव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
४१०	१६४५	देवप्रतिष्ठा देवमूर्ति देवालय निर्माण विधि			दे० का०	दे०
४११	१४६२	देवप्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
४१२	६२०६	देवयाज्ञिक क्रिया निवध			दे० का०	दे०
४१३	१२५०	देवपूजा			दे० का०	दे०
४१४	४६४६	देवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	६४१६	द्वादशाब्दाध्वं मिलन शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और श्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द द	द	स द	६	१०	११
१५'८ × १२'१ से० मी०	५ २-६	६ १६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६'५ × १३ से० मी०	२ १-३	८ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
१७'५ × १०'५ से० मी०	२४	८ १७	अपूर्ण	प्राचीन स० १८८६	इति देवप्रतिष्ठा प्रयोगमल संपूर्ण नाममात्र १८८६ ।
३४'७ × १३'५ से० मी०	१३० १-१३०	६ ४७	पूर्ण	प्राचीन स० १६२३	इति दाहादिकर्मकर्तुं निर्णय मर्तु- थाय एचमेह्लि कुर्या रजस्वला पुत्र विशोः प्रकुर्वीत मृताह्नि शुचेयंत ॥ देववास्तिक भिया निषध समाप्त् ॥ स० १६२३वै० शुक्ल १५ रवीवासरे ।
२४'७ × १६'५ से० मी०	३	१२ २२	पूर्ण	प्राचीन	
२२'२ × ११ से० मी०	१६ (५०-६८)	१० ३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१६'५ × ८ से० मी०	१	८ ३०	पूर्ण	प्राचीन	इति द्वादशाध्यायश्रुतिमल विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१६	३५०२	ह्यादशाह			दे० का०	दे०
४१७	$\frac{२८२७}{५}$	घनदापद्धति-			दे० का०	दे०
४१८	१४७८	घनेश्वरी पूजाविधि			दे० का०	दे०
४१९	६४६२	नक्षत्रेष्टिप्रयोग			दे० का०	दे०
४२०	१९३९	नवग्रह पूजा			दे० का०	दे०
४२१	६६०७	नवग्रह मंत्र			दे० का०	दे०
४२२	४४३७	नवग्रहसूत्रप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पृक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अथ पूर्ण है अपूर्ण है तो वत्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स	द	१०	११
२२८×११ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १७६२ इति द्वादशाह समाप्त ॥ शिव शिवञ्चरी वर्तु ॥*** सवत् १७६२ शाके १६२७ फाल्गुन कृष्ण अमा- वस्याया भीष्मदेवेन लिखित श्री ॥
१५८×११२ सें० मी०	६३	७	१६	पू०	प्राचीन इति पद्धतिघनदावि सपूर्णम् ॥
१८×११८ सें० मी०	४ (१-४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १६०६ इति श्री तत्रसारे धनेश्वरी पूजाविधि समाप्त । शुभ सम्बत्सरा १६०६ शाके १७७४*****
२५×११७ सें० मी०	१६ (१-१६)	१२	४६	पू०	प्राचीन (कृमि-कृन्तिव) इद पुस्तक गायत्र्युपनामदाद भट स्वामिक नक्षत्रेष्टि प्रयोगस्य । पत्र १६ अथ संख्या ६८४ *****
२४८×११२ सें० मी०	८ (१-८)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १६२० इति नवग्रह समाप्त शुभमस्तु ***** सवत् १६२० मिति वातिक बदि १ गुरो वाणि या पुस्तक राम वनग्रह ॥
२४७×१०५ सें० मी०	१	८	४६	पू०	प्राचीन इति नवग्र भत्र सपूर्ण ॥
२४१×११३ सें० मी०	३६ (१-३६)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८४० इति श्री कृष्णारामनरिधि नवग्रह मय प्रयाग समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥***** सवत् १८४० क मासगमय नामनीय मुक्त पत्रे १२ रविवासर विरसिधपुर ग्राम पुस्तक निगिन मीथीया ॥ पद निबारा धातु पठनाथ ॥ रामचन्द्रम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४२३	२१४०	नवग्रहमखप्रयोग			३० का०	३०
४२४	४७७२	नवग्रहहोमविधि			३० का०	३०
४२५	४६१६	नवग्रहहोमविधि			३० का०	३०
४२६	६४१०	नव षडो होम			३० का०	३०
४२७	३६४६	नवरत्नविधि			३० का०	३०
४२८	२७४३	नवान्येष्टि			३० का०	३०
४२९	३२३६	नवार्णविधि			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में प्रसरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२०५ × १०५ सें० मी०	३६	६	२१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७८०	
३०३ × १२४ सें० मी०	१५ १-१५	१०	४२	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७७	इति श्री नवग्रह होम सर्वस विधि समाप्तम् शुभ सम्पत्सरा १८७७ साके १७४२ समयभाद्र शुक्ल २ मनिवासरे रघुवर रामेण खेदि ॥
२१२ × ८८ सें० मी०	७ (१-४)	७	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति ग्रह होम विधि ग्रहा + + + सं० १८६० ॥
२१४ × ७८ सें० मी०	१८ (१-१८)	८	४२	पूर्ण	प्राचीन	
२३६ × १०८ सें० मी०	२५ (१-२५)	६	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति शारद नवरात्र विधि संपूर्णा × × × × ॥
१६६ × १३२ सें० मी०	३ (१-३)	११	२०	पूर्ण	प्राचीन	इति नवान्येष्टि ॥
१७२ × ८६ सें० मी०	३ (१-३)	७	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति नवान्येष्टि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	प्रकाशक	प्रकाशक	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३०३५	नादीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३१	२२२१	नादीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३२	३६२	नादीमुखश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४३३	३०३७	नादीश्राद्ध-मातृकापूजन			मि० का०	दे०
४३४	२७५५	नागबलि विधि			दे० का०	दे०
४३५	२७६४	नारायण बलि			दे० का०	दे०
४३६	२५३७	नारायण बलि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे प्रसर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष वा विवरण	धवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
घ अ	ब	स द	ह	१०	१०
२७७×१०३ से० मी०	१०	७ ३३	अपूर्ण	(खंडित)	
३२×१३१ से० मी०	७ (१-७)	१० ४६	पूर्ण	प्राचीन स० १८१८	श्री कृष्णायनमोनम सबत्तराष्टादश शतेषु १८ दिनवर्तीवर्तमानेऽस्मिन् कार्तिक कृष्णतयोदश्या श्रीमद्भागते इह लिपिकृत हर्षिसिंहारमज्जेन हृदयालु नाबडोतमघोस्वत्यपठनकर्मानुसारेणशुभ- मयलादि भूयात्तुः ॥
१६३×११५ से० मी०	३६ (१-३६)	१० १८	पूर्ण	प्राचीन स० १६१६	इति नादी मुख धादपदति समाप्तम् ॥
१८×१० से० मी०	२५ (१-२५)	८ २१	पूर्ण	प्राचीन	इति सपूर्ण । उमाकात दीक्षित***
२३×१०५ से० मी०	११	७ २२	पूर्ण	प्राचीन स० १६२८	इति शौनक प्रोक्त नागवलि विधान पूर्ण ॥ सवत १६२८ माघवद्य ११ चंद्रवासरे । लि० लालजी दुवे अल स्वायं परमार्य ॥
२३२×१०५ से० मी०	६	७ २४	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण वलि समाप्त ॥
२५३×१५७ से० मी०	८२ (१-८२)	२० १८	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण वलि कर्म समान्तम् श्री शुभमस्तु ॥
(सं०सू० २६)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की मख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	४४०४	नारायणवलि			६० का०	६०
४३८	११०४	नारायणवलि			६० का०	६०
४३९	१८०५	नारायणवलि पद्धति			६० का०	६०
४४०	२५९	नारायणवलि पद्धति			६० का०	६०
४४१	१७९	नारायणवलि प्रयोग				
४४२	१२६६	नारायणविधि			६० का०	६०
४४३	$\frac{३१५}{२}$	नारायणवलि विधान			६० का०	६०

पत्रो या पुष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पुष्ठ मे पत्रिनसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		कथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	६	स	द	६	१०	११
१६४ × ११४ से० मी०	६	१०	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६ × १३ से० मी०	७६ (१-७६)	८	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६ × १२४ से० मी०	५ (१-३, ७-८)	१८	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति नारायणीवल (नारायणवलि) संपूर्ण शुभ ॥
२६ × १७५ से० मी०	२४	२४	१८	पूर्ण	सं० १६४५	इति नारायणीवलि पद्धति समान्ता ॥ थी ॥ सं० १६४५ भाद्रपद शुक्ल द्वितीयाया बहुलो नगरे धामध्ये विश्वामे तिलक रामेण लेखित शुभ भूयात् ॥ रामकृष्ण ॥
१३५ × ८२ से० मी०	१३ (१-१३)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण वलि प्रयोग ॥ एताव दिस्वरचेत्तो प्रयोगशक्ती बोधायनी ॥
२२६ × १५ से० मी०	१४ (१-१४)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२६	इति * - नारायणविधि समाप्तम् सवत् १६२६ ज्येष्ठ शुक्ला ८ ॥
१७७ × ११८ से० मी०	१८ (१-१८)	१५	१२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	* - नारायण वलि नाथो इति मत्स्येण पूजन विधि समाप्तिम् यात् निषित पत्नीलिमहत्ताव सं० १६२१ ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	१६०८	नित्यकर्म			दे० का०	दे०
४४५	१६१२	नित्यकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
४४६	३२२२	नित्यपूजा-जप विधान			दे० का०	दे०
४४७	४१५७	नित्यपूजा विधि			दे० का०	दे०
४४८	३३९६	नित्यप्राद पद्धति			दे० का०	दे०
४४९	१४८८	नित्य स्नान विधि			दे० का०	दे०
४५०	५८१४	नित्य चिताभरण	विष्णुशर्म		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिकाख्या और प्रति पत्रिका में पत्रसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान प्रश्न का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
१३५ × ८५ से० मी०	२	१०	१६	अपूर्ण	प्राचीन
२६५ × १२७ से० मी०	४	८	३३	अपूर्ण	प्राचीन
१३ × ६२ से० मी०	४ (२-५)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन इति निरव पूजादिग्रन्थविधान समाप्त उच्चारणकरहस्फपदान्ता जनादिते- ननिधित ॥
३४ × १३३ से० मी०	३	१४	६०	अपूर्ण	प्राचीन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४५१	५६६५	निरुपसारा	राघवभट्ट		१० का०	१०
४५२	६६०	नीलोदाह विधि			१० का०	१०
४५३	६८६४	नैष्ठिक प्रयोग			१० का०	१०
४५४	७३४२	नैष्ठिक प्रयोग			१० का०	१०
४५५	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासतिलक	वेदाशान्कार्य		१० का०	१०
४५६	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासदशम			१० का०	१०
४५७	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासविनिर्णय			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आरार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
नम	व	स द	६	१०	११
२५ × ११ से० मी०	६ (१-६)	११ ४८	५०	प्राचीन म० १८६५	इति राघव भट्ट विरचिते निर्णयसारः समाप्त ॥ सं० १८५६ शका १७२३ लिखित ॥
२३ × १०.२ से० मी०	१८ (१-१८)	१२ ३४	५०	प्राचीन	इति भगवत्स्य पुराणे शीतकोशनीलो-धर्मविधि (१) समाप्तः ॥ शुभभवतु ॥
२३ × १०.१ से० मी०	६ (१-६)	११ ३५	५०	प्राचीन	इति नेष्ट्व प्रयोग समाप्त ॥
१५.८ × ७.६ से० मी०	१३ (१, ३-१०, १३-१६)	७ २१	अपूर्ण	प्राचीन	अथ साध्यायनगूत्रिय नेष्ट्व प्रयोगः ॥
१३.१ × ८ से० मी०	१३ (१-१३)	७ १३	५०	प्राचीन	इति श्री वेदावापायं शिरीतायां ग्याम-ति का संपूर्ण श्री मनेरामानुजायनम ॥
१३.१ × ८ से० मी०	३ (१-३)	७ १२	५०	प्राचीन	इति श्री ग्यामविमति उपर्युक्त ॥
१३.१ × ८ से० मी०	१४ (४-१०)	६ १२	५०	प्राचीन	इति ग्याम शिरीता संतुर्ग ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५८	४७६५	न्यूनपादजनन शान्ति			दे० का०	दे०
४५९	६५७	पंचक मरण विधि			दे० का०	दे०
४६०	१८६५	पंचकविद्या			दे० का०	दे०
४६१	१७३५	पंचकविद्या			दे० का०	दे०
४६२	$\frac{३०४६}{६}$	पंचकविद्या			दे० का०	दे०
४६३	२३४५	पंचकविद्या			दे० का०	दे०
४६४	८००	पंचकविद्या			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	६	स	द	१०	११	
१३४ × १० ३ से० मी०	२ (१-२)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारदोक्त न्युब्जपादप्रभृति जनन शाति ॥ हे पुस्तक सदासीव भट दुधोडकरेण लिखित वाचितायं विजई भव ॥ अक्ष भवतु ॥
३११ × १५ १ से० मी०	२३ (१-२३)	१३	३६	पू०	प्राचीन	इति पञ्चकर्मण विधि समाप्त ॥ लिप्यत देविसाहाय विद्यार्थी... नक्षत्रे योगे च शुभगामवेत् ॥
३०८ × १३ ४ से० मी०	४ (१-४)	१२	३४	पू०	प्राचीन स० १६०२	इति पञ्चविधान समाप्त ॥ सवत् १६०२ मासोत्तम मासे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथी दशम्या दुधवासरे ॥
१४७ × १० ३ से० मी०	८	१०	२०	पू०	स० १६०१	इति पञ्च विधान समाप्त सवत् १६०१ कार्तिक
१६७ × ११ १ से० मी०	१	१६	१६	अपू०	प्राचीन	
१७२ × १२ ३ से० मी०	७	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२७६ × १२ ५ से० मी० (स० मू० ३०)	३	१२	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४४६	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६६	३५११	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६७	४१८६	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६८	६४३५	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६९	७६१	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४७०	६०२	पंचकशान्ति विधि			दे० का०	दे०
४७१	६६७५	पंचगव्य विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	८	स द	६	१०	११
२१×६२ सं० मी०	४ (१-४)	१४ ४६	पू०	प्राचीन स० १८१२	(कृमिकृतित) इति ब्रह्मपुराणोक्तमस्ति इच्छाचे- त्कृतव्य । अकृतेन दोष । इति पचक विधि ।
१६१×६५ सं० मी०	६ (१-६)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन	इति पचक विधान समाप्त ॥ (पृ० ५)
२७८×१० सं० मी०	३ (१-३)	८ ३८	पू०	प्राचीन	इति सामग्री समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१५×६३ सं० मी०	२ (१-२)	१० ४०	पू०	स० १८०१	इति ब्रह्माडपुराणोक्त पचक शांति समाप्त ॥ " ॥ सवत् १८०१ मासे जेष्ठशुक्ल पक्षे द्वादशी मङ्गलासरे ॥ " " ॥
२६५×११ सं० मी०	५ (१-५)	६ २७	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३×६६ सं० मी०	४ (१,३-५)	८ ४३	अपूर्ण	प्राचीन	क्षेप पचकशांतिवत् ॥
२२१×१३५ सं० मी०	२ (१-२)	७ २३	पू०	प्राचीन	इति पचगव्य विधि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा राग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४७२	५१८८	पचगव्य विधि			दे० का०	दे०
४७३	१७६७	पचपातकनाशन विधि			दे० का०	दे०
४७४	$\frac{७८६६}{४}$	पचसंस्कार			दे० का०	दे०
४७५	२६१२	पचायतन पूजा			दे० का०	दे०
४७६	४२४१	पचीकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	७२३८	यतिदेह संस्कार			दे० का०	दे०
४७८	६७६३	परमहंस दीक्षाग्रहण विधि	विश्वेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रो भा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	कथा ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	८	स द	६	१०	११
१८'६×१३'२ सें० मी०	१	१२ २४	पू०	प्राचीन	इति पञ्चमग्न्य विधि समाप्तम् ॥
१५'५×८ सें० मी०	४	= २३	अपूर्ण	प्राचीन	
१०'५×७'७ सें० मी०	२ (६६-१००)	७ ११	अपूर्ण	प्राचीन	इति पञ्चसंस्कार संपूर्ण ॥
(१५'१×१०'८) सें० मी०	१२ (१-१२)	८ १८	पू०	प्राचीन	श्रीवासुदेवाय नम इति पुस्तक समाप्त ॥
२६'२×१२'८ सें० मी०	३ (१-३)	१० ३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्सरमहस्य परिव्राजकाचार्य्यं श्रीमद्भूषवद्गोविंदपादभूषयगिर्य्य श्री- मच्छंकराचार्य्यं विरचित पञ्चीकरण संपूर्णं शुभमस्तु :
१७'६×१०'४ सें० मी०	४	११ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
३४'५×१३'६ सें० मी०	७६ (१-७६)	१३ ४४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वरविरचित परमहंस दीक्षा ग्रहण विधि समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत मख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	३२१६	परायणक्रम विवि मूल वाक्य			६० का०	६०
४८०	६४२१	पर्यंकजट्टवागादि भग (भद्रभुतसंगवार) शाति			६० का०	६०
४८१	६००४	पत्नीशरट शाति विद्यान			६० का०	६०
४८२	६५०७	पवित्रेष्टि			६० का०	६०
४८३	६४७०	पवित्रेष्टि हीन			६० का०	६०
४८४	६७०६	पशुवध प्रयोग			६० का०	६०
४८५	३११२	पात्रनोष्ठन			६० का०	६०

पत्रों या पृष्ठों का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो कर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ भावार्थ का विवरण
८ अ	९	१० ११	१२	१३	१४
१८५८६ सं० सी०	२६ (१-२६)	६ ३१	पूर्ण	प्राचीन	इति पराशरसंहिता विप्रि मूलवाक्यानि ॥ समाप्ताश्वाय प्रप ।
१६७५७४ सं० सी०	४ (१-४)	७ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति मनुस्मृतिसंग्रहे पर्यं ब्रह्मद्वयवादि-भग शांति समाप्ता ॥.....
२७१५११५ सं० सी०	२ (१-२)	१० ४२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री बसवराजे गणोक्त पत्नी-शरदयो शांति विधान संपूर्णम् ॥
२२५५६२ सं० सी०	२ (१-२)	१० ४०	पूर्ण	प्राचीन	सविच्छेदे पवित्रेष्टिः ॥
२२५१०२ सं० सी०	४ (१-४)	१० २६	पूर्ण	प्राचीन	
२३५६५ सं० सी०	२२ (१-२२)	८ ४१	पूर्ण	प्राचीन	
२२५११-१ सं० सी०	७ (१-७)	७ २४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपात्रे शोधन संपूर्णं शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४७१७	पाथिव गणेश पूजन पद्धति			६० का०	६०
४८७	४३८५	पाथिवपूजन			६० का०	६०
४८८	३०५०	पाथिव (लिंग) पूजन			६० का०	
४८९	५५००	पाथिव पूजनविधि			६० का०	
४९०	७३८७	पाथिव पूजा			६० का०	
४९१	७८२८	पाथिवपूजा			६० का०	
४९२	२१८४	पाथिवपूजा			६० का०	१

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पक्षित संख्या और प्रतिपक्षित में अक्षर संख्या	नया अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है वा वर्तमान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
१८७ × ११७ सें० मी०	३ (१-३)	१० ६०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखंडे पायिबगणेशपूजन पद्धति समाप्ता ॥
१७७ × १७७ सें० मी०	१२ (१-१२)	१४ २०	अपूर्ण	प्राचीन	अथ पायिबपूजन निरूपणे ॥ *** (प्रारम्भ) × × ×
१५३ × ७५ सें० मी०	४ (६, ११-१३)	७ १६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७२ × ७६ सें० मी०	४	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
१४४ × १०४ सें० मी०	७ १-७ (शेष फुटकलपत्र)	७ १५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२६	पायिबपूजा अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थागतो × × सप्तता १६२६ ×
२३१ × ११५ सें० मी०	१० १-१०	३ २३	अपूर्ण	प्राचीन	
२०५ × ११ सें० मी०	६	६ २५	अपूर्ण	प्राचीन	इति पायिबपूजा समाप्त ॥
(सं० मू० ३१)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६३	६०२६	पारिवपूजा			२० पा०	३०
४६४	५४७३	पारिवपूजाप्रकार			२० पा०	३०
४६५	१२५४	पारिवपूजाविधान			२० का०	२०
४६६	४६५६	पारिवपूजाविधि			२० पा०	२०
४६७	३४५०	पारिवपूजाविधि			२० पा०	२०
४६८	२०३६	पारिवपूजाविधि			२० पा०	२०
४६९	४८४४	पारिवपूजाविधि			२० पा०	२०

पत्रा या पृष्ठी का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिपंक्त्या ओर प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूरा है ? अपूर्ण है तो वन मान अक्षर का विवरण	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
२१६×११ सें० मी०	५ (१-५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति पूजा कुमति ॥
३१२×१२ सें० मी०	८ (१-८)	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति लिंगपुराणे पाथिबलिंगोद्यापन संपूर्णम् ॥
२२×११ सें० मी०	८ (६-१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८५७	इति पाथिबपूजाविधान समाप्तम् सं० १८५७ सत्रवर्षे चैत्रमासे शुक्ले पक्ष विषी तृतीया ३ भूगु० दिने लिपत पाडपु स्थालमे तैलिरत्नाबद्ध मध्ये ॥ शुभमस्तु मंगल ददात ॥ श्री०
२१७×८८ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति शिवपाथिब पुजन समाप्तम् शुभस्तु ॥ इति शिवायनम् ॥ सम्बत १८६० भाके १७२५ समये ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्ष द्वि ॥
१३८×७२ सें० मी०	७ (१-७)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पाथिबपूजा विधि
१६६×६७ सें० मी०	७ (१-७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पाथिब विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३६×६४ सें० मी०	६ (२-१०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री सकल सारोद्धार पाथिब पूजा- विधि समाप्तम् शुभ सम्बत्सरा १८७० साके सतिवाहृतस्य गत्समा १७३५ समय आदये + + + +

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५००	६९८	पार्थिव महापूजा			३० का०	३०
५०१	२६००	पार्थिव सिंग पूजन			३० का०	३०
५०२	५४४८	पार्थिवसिंग पूजा उत्थापन विधि			३० का०	३०
५०३	३३०७	पार्थिवसिंगपूजा विधि			३० का०	३०
५०४	५६७३	पार्थिव विद्यान			३० का०	३०
५०५	७५८७	पार्थिवार्चन विधि			३० का०	३०
५०६	७६३	पार्थिवेश्वर चिन्तामणि			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	व	स द	६	१०	११
२२ × १४ ५ सें. मी०	८	१४ ३४	पू०	सं० १६११	इति सं० १८११ निमित्त मुरलीधर श्रीतत्तत श्री ॥
१० × ६ सें. मी०	१६	६ १३	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ २ × १० ५ सें. मी०	१५ (१-१५)	६ ३२	पू०	सं० १८२७	इति लिङ्गपूजा उद्यापण विधि समाप्त सिद्धापण सवत १८२७ साके शौरास १६६२ विष्णु विरातिनाया ...
२२ ६ × १० सें. मी०	१३ (१-२ ४-१४)	६ २७	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८२८	इति लिङ्गपूजा उद्यापण विधि समाप्त सिद्धापण सवत १८२८-१९६३ वैशाख यदि ३ यत्नेस लिपत गाविद पारम दुव ॥
१५ ८ × ६ ६ सें. मी०	८ (१-८)	८ १६	पू०	प्राचीन सं० १७८६	इति पायिब विधान समाप्तम् ॥ सवत् १६२१ साके १७८६ मिति माघ यदि ४ भोमवासरे × × × × ॥
२६ ३ × ११ ३ सें. मी०	३ (१-३)	१७ ४८	पू०	प्राचीन	इति पायिवाचन विधि ॥
२० ६ × १० ७ सें. मी०	४ (१-४)	७ १६	पू०	प्राचीन	इति तर्पणम् ॥ ४७ नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा सशुद्धविशेष की संख्या	अथनाम	अथकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
५०७	७०६२	पाणिनेश्वरमत्त विधि			६० का०	६०
५०८	३३६	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०
५०९	५५५०	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०
५१०	५३२६	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०
५११	३३१६	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०
५१२	२४८६	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०
५१३	४०६१	पार्वणश्राद्ध			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग द	६	१०	११
१७ ८ × १० सं० मी०	२ (१-२)	७ २१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२ १ × ११ ४ सं० मी०	६ (१-६)	७ २६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६५५	इति पार्वण आद्य संपूर्ण शुभ सवत् सो प्रशिवनमासे कृष्ण पक्षे पूर्णिमाया १५ रविवासरौ सवत् १६५५ इदं पुस्तक बहुमूल्य शुभमस्तु ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१॥
२२ ८ × १० ४ सं० मी०	२१ (१-२१)	६ २८	पूर्ण	प्राचीन	इति पार्वण आद्य संपूर्ण + + + + + + + अस्तु परिपूर्णमस्तु मार्ग शीर्षे शुक्लपक्षे तु पचम्या रवि- वासरौ लिपत प्रयाग मध्ये तु ० ग० पाठ द्विजोत्तमः ॥ स्वार्थ परार्थ शुभमस्तु ॥ सवत् १६०७ ॥
२४ ८ × १० ६ सं० मी०	४ (१-४)	११ ४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ × १४ ३ सं० मी०	१३ (१-१३)	८ १६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्येका पार्वण आद्य समाप्तः ।
२० २ × ६ २ सं० मी०	७ (२-८)	७ २४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति पार्वण आद्य संपूर्ण शुभ सवत्सरे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे ... सवत् १६२२ इदं पुस्तक लिप्यते गोरीदत्त शुभमस्तु ओ नमः शिवाय ॥
१७ × १० ३ सं० मी०	२१ (३-२३)	१० २३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६६७	इति पार्वण आद्य संपूर्ण सवत् १६६७ आद्य शुक्ले १० बुधे ... ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिया है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
५१४	१८४४	पार्वणश्राद्ध पद्धति			२० का०	२०
४१५	५५०६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१६	६३८०	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१७	३८६६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१८	६११७	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०
५१९	६६७६	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०
५२०	५७७६	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में श्लोकसंख्या	क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो वन मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	९	११	
१४६×१०३ से० मी०	२० (१-२०)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति पार्वण आद्य पद्धति समाप्तम् ॥ " " आसाढ मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ ४ रविवासरे सवत् १८८६ ॥ साके १७२४ ॥ लिखत कन्हैया लाल ॥
२४५×१०७ से० मी०	१० (१-१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति पार्वण आद्य सपूर्ण ।
२०८×६७ से० मी०	२ (१-२)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२१५×७६ से० मी०	१० (१-१२)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२०२×६ से० मी०	३२ (१-३२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वण आद्यविधि सपूर्ण ॥
२५×६५ से० मी०	६ (१-६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति पार्वण आद्य विधि समाप्तम् ॥ × × ■ × ।
१६५×१६ से० मी०	८ (१-८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
(सं० सू० ३२)						

ग्रन्थक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३४२०	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५२२	$\frac{५०५४}{१५}$	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२३	४६२४	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२४	१३३२	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२५	७४८	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२६	५६६९	पिठदानम्			दे० का०	दे०
५२७	१५०८	पिठदानम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या शेष पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बताना शेष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
प म	व	स द	१०	१०	१०
२३-२४ × १० से० मी०	१२ (१-१२)	८ २५	५०	प्राचीन सं० १८१५	यथा श्राद्ध फलमस्तु ॥ सम्यन् १८१५ ॥ भाद्र बहुलोप पक्षतिथेयु नवमी तथा ॥ रविवारः शुद्धर्तमा तिथिर्न हुनामिस्तथा ॥
१६ × ७ स से० मी०	१४ ३	६ २४	५०	प्राचीन सं० १८६६ शारे १७६१	इति पार्वणि श्राद्धपद्धतिः समाप्त शारे १७६१ माघ सुदि ६मीमेक ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५२८	१२८२	पिडदानम्			२० का०	२०
५२९	७५५५	पिडदान विधि			२० का०	२०
५३०	७०२८	पिडदान विधि			२० का०	२०
५३१	६५२८	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३२	६५३२	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३३	६५३३	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३४	६५२९	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	धनसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कतें मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१७ × १३ सें. मी०	२५ (१-२५)	१४	१२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ × १४ सें. मी०	१८	२०	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६२ × १३ = सें. मी०	१५ (४-१८)	१४	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२०४ × ८६ सें. मी०	६ (१-६)	८	२४	पूर्ण	प्राचीन	
१५३ × ८ सें. मी०	४ (१-४)	१०	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति पिठपितृयज्ञः ॥
१६५ × ७३ सें. मी०	२ (१-२)	८	४५	पूर्ण	सं० १८३४	इति पिठपितृयज्ञः समाप्तः ॥ सवत् १८३४ आ० कृ० ३२० ॥
२१३ × ८ सें. मी०	३ (१-३)	८	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति पिठपितृयज्ञः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रथवार	टीकावार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३५	३७५७	पितृकर्म			दे० का०	दे०
५३६	६४४१	विधीमिका शांति			दे० का०	दे०
५३७	७३११	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३८	४२५४	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३९	४९६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४०	९६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४१	७७०४	नांदीथाद प्रयोग पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का भावार्	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे प्रचारसंख्या	कया प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान प्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ प्र	९	१०	११	१०	११	
२७६×११८ से० मी०	६ (१-६)	४	३३	पूर्०	प्राचीन	इति श्री सहितायाम्पाठे पितृवर्म्म संपूर्णम् ॥
२२४×१६ से० मी०	२ (१-२)	१०	१०	पूर्०	सं० १६६६	॥ एक खड्गम् ॥ पौर्विद ज्योतिर्विमुक्त मायवेन निश्चितेय भाति ॥ सवत् १६६६ ज्येष्ठ शुद्ध १५ बुध ॥
२४१×१०६ से० मी०	२४ (१-२४)	६	२२	पूर्०	प्राचीन	
२१×११ से० मी०	५ (१-५)	७	२६	पूर्०	प्राचीन	
१२७×८३ से० मी०	१७ (२-१०, १२-१६)	८	१८	अपूर्०	प्राचीन	इति पुण्याहवाचन संपूर्ण ॥.....
१६७×८७ से० मी०	१२ (१, ३-५, १२, १५-१७ १६-२२)	७	२२	अपूर्०	प्राचीन	
१६६×८ से० मी०	१८ (१-१८)	७	३०	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	यथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस दस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४२	१५३६९	पुस्तलविधान			दे० का०	दे०
५४३	४३८८	पुस्तलविधान			दे० का०	दे०
५४४	७५२०	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४५	७०७७	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४६	६४९६	पुनर्लिङ्गप्रतिष्ठापन-विधि			दे० का०	दे०
५४७	४३२७	पुरस्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
५४८	५३६	पुरस्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्ति मागा धोर प्रति पत्ति मे आकार मद्यया	तथा अथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अथ वा विवरण	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	म	८	१०	११
२६५×११ सें० मी०	६ (१-६)	१०	३०	पूर्ण	सं० १६१२ इति पुस्तकविधान समाप्त लिपित दत्तचामेग पठनार्थ सवत् १६१२
३२×१२४ सें० मी०	७ (१-७)	१०	४२	पूर्ण	सं० १६०६ इति पुस्तकविधानसमाप्त स० १६०६ लिखित पचौली महतावसिह स्वात्म- पठनार्थ ॥
२३×१०६ सें० मी०	५ (१-५)	१२	५०	पूर्ण	प्राचीन इत्यनवरदेव कृत्पुनराद्ये समाप्तमगमत् ॥
२२८×१०६ सें० मी०	२ (१-४)	१०	५०	अपूर्ण	प्राचीन
२११×६५ सें० मी०	१	१०	३८	पूर्ण	प्राचीन इति बौधायन सूत्रोक्त पुनर्लिखित प्रतिष्ठा- पन विधि समाप्ता ॥ सदाशिवभट्ट बबोरदरेण लिखित पुस्तक ॥ "
२६१×१०५ सें० मी०	२७ (१-२७)	१०	४१	अपूर्ण	प्राचीन प्रणम्य ज्ञानकोनाय देवेन्द्राश्रमधीमता क्रियतेमत्तचद्राणापुराचरणचक्रिका ॥ (प्रारम्भ) × × × ×
२३८×१० सें० मी०	४८ (२-४६)	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री देवेन्द्राश्रमकृतावै पुराचरण चक्रिकाममाप्त शुभमस्तु धोरस्तु विद्यास्तु श्रीगणेशदेव

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	४३८३	पुण्य स्नान विधि			मि० का०	३०
५५०	२६०८	पूजनप्रम			३० का०	३०
५५१	५३८४	पूजनविधि			३० का०	३०
५५२	४०६३	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५३	२८३	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५४	२६६२	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५५	४६६०	पूजाप्रकार			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिकासंख्या और प्रति पत्रिका पत्रिकासंख्या	कथा ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कत भाग अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	३	स द	६	१०	११
२५३ × ११३ सें. मी०	७ (१-७)	७ ३२	पू०	सं० १६६६	इति पुण्य स्नान ॥ सं० १६६६ पीन वृ० रवि वासरे वाशिवरो पाह्व वाणि- नाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२०६ × १४१ सें. मी०	४ (१-४)	१० २५	पू०	प्राचीन सं० १२१७	इति पूजनप्रम ममाप्तिमगात् श्री विश्वम गताध्यान् १६१७ मिथुनाक ति १५ रविवारम् ।
२६८ × १३३ सें. मी०	११ (१-११)	१२ ३२	अपू०	प्राचीन	
१३९ × ११३ सें. मी०	१२	८ १५	अपू०	प्राचीन	
१८५ × १३५ सें. मी०	१० (२-११)	६ १७	अपू०	प्राचीन	
१३५ × १०७ सें. मी०	१३ (४-१६)	६ २३	अपू०	प्राचीन	इति पूजापद्धति पटल समान् ॥
२०६ × ११५ सें. मी०	२ (१-२)	६ ३५	पू०	प्राचीन	इति धीमदध्यात्मसामान्ते पूजा- प्रकार ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविषय की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५६	५३५६	पूजाविधि			१० वा०	१०
५५७	५४०५	पूजाविधि			१० वा०	१०
५५८	५२१	पूजाविधि			१० का०	१०
५५९	२१४८	पूजाविधि			१० वा०	१०
५६०	१७०५	पूतनाविधान			१० वा०	१०
५६१	६८२८	पुरुषोत्तमप्रायश्चित्त	महादेव		१० वा०	१०
५६२	६४२६	पुरुषोत्तमप्रायश्चित्त	ब्रह्मसंहिता		१० वा०	१०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	म द	६	१०	११
१६'४" × १०'२" से० मी०	६ (१-६)	= २४	पू०	प्राचीन	इति पूजाविधि समाप्तोऽयम् ॥
१६'६" × १३'७" से० मी०	१० (१-१०)	१० २१	पू०	प्राचीन	कल्पसुत्रोक्त प्रकारेण पूजा विधिः समाप्त ॥
३०' × १४" से० मी०	३० (१-२१, २३-३२)	१२ ३६	अपू०	प्राचीन	
२४'७" × १०'३" से० मी०	३ (१-३)	८ ३१	अपू०	प्राचीन	
१६'५" × ११" से० मी०	१०	१२ २५	पू०	प्राचीन	इति पूतनाविधान मालाया स्कन्द पुराणोक्त भामिनीपीडा शमन विधान संपूर्ण ॥ श्री... ..
२२'१" × ८'६" से० मी०	२८ (१-२)	१३ ४३	पू०	प्राचीन	इति महादेव सोमयाजि विरचिते सत्यापाढीपहिराभ्यंकेत्रिसूत्र प्रयोग-रत्ने दशपूर्वमास प्रायश्चित्तानि समाप्तानि ॥
२२'३" × १०'३" से० मी०	४८ (१-४८)	= २५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमोमासकरामहृत्पुत्रात्मज महाप्रहोपाध्याय कमलाकर भट्टकृत ऐंकीमहाशक्ति सहित. पूतकमलाकरः समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	७४	पूत कमलाकर (जलज्ञानोपाय)	कमलाकरभट्ट		१० का०	दे०
५६४	२५४	पूत कमलाकर	कमलाकरभट्ट		१० का०	१०
५६५	६५३०	पोतुत्व प्रयोग			१० का०	१०
५६६	६५२७	पोतु प्रयोग			१० का०	१०
५६७	६४६३	पौडरीक हीन			१० का०	१०
५६८	६४६६	प्रज्ञानामनयेष्टि			१० का०	१०
५६९	२६२३	प्रणिष्ठा चर्म			१० का०	१०

पत्रो गा पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिमन्त्र्या और प्रति पत्ति मे पक्षरमन्त्र्या	नया अथ पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्त मान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ म	व	स	द	९	१०	
					११	
२५२ × ११ से० मी०	१२१ १-१२१	११	४०	पूर्ण	प्राचीन	इति भट्टवर्मलाकर कृतो जलज्ञानोपाय ॥
२६२ × ११ २ से० मी०	१३८	११	४२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मीमांसक रामकृष्ण भट्टारमज महामहोपाध्याय वर्मलाकरभट्ट कृत ऐद्री महाशास्त्रि सहितो राज्याभिषेक प्रबोधश्च पुर्ण वर्मलाकर समाप्तः सं० १८६४ मिति आरम्भ सुदि १० शुक्लेका का राम राम राम
२०४ × ८४ से० मी०	८ (१-८)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमस्य पोतुत्त प्रयोग समाप्त ॥
२१३ × ७८ से० मी०	४ (१-४)	११	४२	पूर्ण	प्राचीन (सं० १६४३)	इति संस्थानप । वतीर्थेन निष्कम्भ ॥ सतिष्ठते ज्योतिष्टोमो ज्योतिष्टोम ॥ सवत् १६४३ आरम्भ यदि
२२५ × १०४ से० मी०	२६ (१-२६)	१०	३१	पूर्ण	प्राचीन (सं० १७६५)	समाप्त पौडरीक होतम् ॥ सवत् १७६५ वीर कृष्ण १ गनी लिखित ॥
२०७ × १०३ से० मी०	२ (१-२)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन (सं० १७६०)	लिखितमिद रामहृदस्य नीलकण्ठेन सवत् १७६०
२६७ × १५५ से० मी०	५ (१-५)	१०	३६	पूर्ण	प्राचीन (सं० १६२५)	इति प्रतिष्ठानुक्रम ॥ लिख्यते गणेश शुक्लेन मार्ग वदी ११ सवत् १६२५

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	गद्य-पद्य	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५७०	२६८७	प्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०
५७१	३३२८	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७२	४४०२	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७३	१६२१	प्रतिष्ठामयूख			दे० का०	दे०
५७४	७३	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७५	६२६	प्रतिष्ठामयूख	भट्टनीलकण्ठ		दे० का०	दे०
५७६	$\frac{६१५}{३}$	प्रथम स्नानविधि राजसनेयिनाम्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आन्तर	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षर संख्या	कपा ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आशयक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०
२४१×६२ सं० मी०	११	१०	४६	अपूर्ण	प्राचीन
२६×६६ सं० मी०	४६ (१-४६)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन म० १६२७
१८४×१२३ सं० मी०	२७ (३-२६)	१२	४४	अपूर्ण	प्राचीन
२८६×१४३ सं० मी०	३८	१२	३८	अपूर्ण	प्राचीन
२७५×१३ सं० मी०	३१ (१-३१)	१२	४१	पूर्ण	प्राचीन म० १८३७
२३८×११४ सं० मी०	३७	१२	७३	पूर्ण	प्राचीन
१६३×११३ सं० मी०	२ (१-२)	१६	३०	अपूर्ण	प्राचीन

इति श्री श्रीमान्कभट्ट नीलकण्ठे
भास्करे प्रतिष्ठापयुष्माप्टम संपूर्ण-
मिति जेष्ठशही १३ बृहस्पतिवार
संवत् १६१४ ॥

इति श्री शंकरात्मज भट्ट नीलकण्ठे
इति भास्करे प्रतिष्ठापयुष्माप्टम ॥

बुद्धि वृत्तिः । इति श्री तेजस्व-
वन्त श्री महाराजधिराज भगवत्
देवाधिपति श्रीमान्कभट्ट शंकरात्मज
नीलकण्ठे इति प्रतिष्ठापयुष्माप्टम
॥ ६॥ *** संवत् १८३७ शरदः ***
आमात्मने वात्सल्य मागे वृत्त्यनभि-
मम *** मरे विधित हरमपराय
मरुट नयरे ॥ शुभ ॥ नोवनाय
पाठार्थ ॥ शुभ ॥

इति श्रीमद्विष्णुसामिन् शंकरात्मज श्री
महाराजधिराज श्रीमान्कभट्ट शंकरा-
त्मज भट्टनीलकण्ठे इति संवत्
भास्करे प्रतिष्ठापयुष्माप्टम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सहा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	३८२१	प्रदोष पद्धति			१० का०	१०
५७८	४१५४	प्रधानपुरुष घटस्थापन पूजा			१० का०	१०
५७९	८६	प्रपन्नकटाभरण	श्रीरामप्रसाद मिश्र		१० का०	१०
५८०	४५९३	प्रपन्नकटाभरण	रामप्रसाद मिश्र		१० का०	१०
५८१	६७८४	प्रयोगचिन्तामणि	अनन्त भट्ट		१० पा०	१०
५८२	६६६७	प्रयोगपरिज्ञात (पोड्य वर्मबाह समावर्तन- प्रयोग)			१० का०	१०
५८३	३६३	प्रयोग रत्न (पोड्य कर्मपद्धति)			१० का०	१०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		कथा अथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	१०
२५.५ × ६'८ से० मी०	१३ (२-१४)	१०	४८	अपूर्ण०	प्राचीन	
२४'४ × १५'२ से० मी०	४ (१-४)	१०	३६	अपूर्ण०	प्राचीन	इति प्रधानपुरुष पूजा समाप्ता ॥
२१'५ × १० से० मी०	२१० (७-२१०)	८	२७	पूर्ण०	प्राचीन सं० १८६६	महापौर्यमानुषममलिका ॥ सवत् १८६६ शार १७३१ उदये मासि मोमवासरे नयन्या विधौ समाप्तोदयः प्रथमः ॥
३६'२ × ११'५ से० मी०	१०२ (१,१,१,१- १३,१३,३०- ६८,६८,६६- ३१,७१,७२- ७५,७७-७६, १०१-१०२, १३१, १३४, १३६, १३७, १३७, १३८- १५७, १५७, १५८-१८६, १८८-१८६)	१४	५४	अपूर्ण०	प्राचीन	श्री मदानप्रसाद मिश्र विरचिते प्रसन्न- वटाभरणे सत्येवरेवराश्रयणान्वयो- स्वर्ध्वनाम दृष्ट विवरण ॥
२८'५ × ११'६ से० मी०	१६१ (१-१६१)	११	४२	अपूर्ण०	प्राचीन	इत्यनं मृदु विरचितं श्री रामचन्द्र- दुर्गादेव सगरादेव प्रयागविशा- मगो वृद्धि प्राप्त ॥*** ** ** ** (११मस्त-१०)
२७'७ × १० से० मी०	७ (१-६)	११	३२	पूर्ण०	सं० १७६६	सवत् १७६६ मिति माघशुक्ल ६ मयमा वृहस्पतिवार ॥ + + +
२३'७ × १०'१ से० मी०	४७ (२-४८)	६	३३	अपूर्ण०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८४	२२५	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८५	६३७६	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
५८६	६६६	प्रयोगरत्न	नारायण शर्मा		दे० का०	दे०
५८७	४७२१	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८८	$\frac{७००३}{२}$	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५८९	३६६१	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५९०	४६५	प्राणप्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०

क्रमारंभ और विषय	पुस्तकालय की प्रागत महत्वा वा सग्रहविशेष की सध्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	२१४५	प्राणप्रतिष्ठासूत्र			दे० वा०	०
५६२	४६७८	प्रातः कालपूजाविधि			दे० का०	दे०
५६३	७७४८	प्रातः सध्या			दे० का०	दे०
५६४	७७५३	प्रातः सध्या			नि० का०	दे०
५६५	५८३६	प्रातः सध्या			दे० का०	दे०
५६६	५७७६	प्रातः सध्या			दे० वा०	दे०
५६७	६१२	प्रायश्चित्तमुक्तावली	दिवकरभट्ट		दे० वा०	दे०

पदों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स द	६	१०	११
१६५ × १२८ सें० मी०	११ २	११ २३	पू०	प्राचीन	इति प्राणप्रतिपत्ता समाप्तम् ।
२४८ × १०५ सें० मी०	६ (१-६)	१३ ५५	पू०	प्राचीन	इति प्रातः काल पूजाविधिः ॥ शुभमस्तु ॥
१४५ × ८४ सें० मी०	२० (१-२०)	६ १४	पू०	शके १६५३	इति प्रातः संध्या समाप्त । शके १६५३..... ॥
१६ × १० सें० मी०	१६ (१-१६)	७ २०	पू०	आधुनिक	
१६३ × १० सें० मी०	४ (१-४)	११ ३५	पू०	प्राचीन	***संवत् १८७४ (शके १७३८)। प्रथम आवृत्ति मुद्रित चित्रे समाप्तोय***
१६५ × ८४ सें० मी०	६	७ १६	अपू०	प्राचीन	
२५३ × ११४ सें० मी०	६	६ ३६	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज दिव्यकर विरचितायां प्रायश्चित्त भूता- वल्या सर्व साधारण प्रायश्चित्त प्रयोग ॥६॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर लिया है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६८	२३७२	प्रायश्चित्तविधि			दे० का०	दे०
५६९	७७०८	प्रासादमूर्तिप्रतिष्ठा- न्वाधान (प्रासाद नव कुडी प्रयोग)			दे० का०	दे०
६००	२८५४	प्रेतदीपिका			दे० का०	दे०
६०१	४६८६	प्रेतप्रकाशिका	सद्योतमणिमिश्र		दे० का०	दे०
६०२	३८२८	प्रेतमञ्जरी			दे० का०	दे०
६०३	६	प्रेतमञ्जरी			दे० का०	दे०
६०४	७०८	प्रेतमञ्जरी			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथ का और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	ह	१०	
२८१ × १०७ सें. मी.	१६ (२६, ८६ १३, १६, १६-२५)	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३२ × ६४ सें. मी.	५ (१-५)	१०	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२६२ × ११८ सें. मी.	४० (१-११, १३ १३-३१, ३३-४१)	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६३ × १०८ सें. मी.	१६ (२४, ६- २२)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१४	इति श्री मत्स्यविरचितमणि मिश्र कृताया प्रेत प्रकाशिताया निरगुण संवत् १६१४ वैशाख सुदि ६ बुध निधित पृथी नायक रामगोपाल ॥
२८ × १८ सें. मी.	३१ (१-३१)	२१	१८	पूर्ण	सं० १६३६	इति सवित्री आदि संपूर्णम् । इति श्री प्रेत मन्त्री संपूर्णम् " " "संवत् १६३६ मिति जेष्ठ सुदी २ वार गुप्तवार शुक्ल पूर्णिमा ।
२६५ × १४ सें. मी.	२३	२३	३३	पूर्ण	प्राचीन	
२३३ × १०८ सें. मी.	११	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८८८	इति प्रेत मन्त्री समाप्ता ॥ संवत् १८८८ अश्वि वैशाख शुद्ध २ गुरो लिखित स्वार्थ परास्वार्थ ॥ शुभ

(सं० सं० ३५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ विस- यस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०५	३७४०	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०६	२१७६	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०७	४१०६	प्रेतमुक्तिदा पद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०
६०८	$\frac{४०००}{३}$	अलवेवाहिक			दे० का०	दे०
६०९	$\frac{२८०१}{४}$	बलिबैरवदेवविधि			दे० का०	दे०
६१०	६५०४	बृहस्पतिसंव हीन			दे० का०	दे०
६११	४८७०	बीषायन्तेक्तविनायक- शाति				दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में उक्तिमयता और प्रतिरक्ति में प्रत्ययसंख्या	क्या प्रथमपूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो चतुर्थांश का विवरण	अवस्था और प्राज्ञता	अन्य आवश्यक विवरण
क घ	ख	ग द	६	१०	११
१८ × १३२ से० मी०	३८ (६-४१)	१२ २२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ ८ × १४१ से० मी०	३६ (१-१६ २१-३२ ३२-३६)	८ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ ५ × १०७ से० मी०	१५ (१-१५, १५-१५)	१२ ४७	अपूर्ण	प्राचीन	श्री सेमरामेणहृतेय प्रेममयिनीदा समाप्ता शुभ भूयात् ॥ सवत् १८३३ शाके १६६८ मलिमासे कृष्णपक्षे रविवसरे ॥
१८ ७ × १५४ से० मी०	६ (४-६)	१३ २२	अपूर्ण	सवत् १६१८	इति श्री हरिवंश बलदेवान्दिक नारा- यण समष्टि रूपस्नवन आत्मरक्षा- करण ११४ के तत्सत् सवत् १६१८ मागंशीर्ष शुक्ला १२ तिथितमिह पुस्तक मुरलिधर आत्मपठनार्थ ॥
१७ ५ × १३५ से० मी०	२	११ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ ३ × ८५ से० मी०	८ (१-८)	८ ३३	अपूर्ण	स० १७८२	इति बृहस्पति सव समाप्त ॥ सवत् १७८२ मागंशीर्ष शुद्ध ८ बुधे तिथित जय राम खेडा कामेश्वरस्य ॥
२५ ५ × १०८ से० मी०	४ (१-४)	६ ३५	पूर्ण	प्राचीन	इति प्रतापनारसिंहाय्ये तस्कार प्रकाशे बीधायनानुसारीविनायक शांति प्रयोग समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविषय की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६९२	१४३३	प्रतयंघ			२० का०	२०
६९३	१४३६	ब्रह्मचर्यव्रतम् पद्धति			२० का०	२०
६९४	६५२४	ब्रह्मसूत्रप्रयोग			२० का०	२०
६९५	७५५०	ब्रह्मसूत्रम्			२० का०	२०
६९६	६३६४	ब्रह्मसूत्रम्			२० का०	२०
६९७	६३६६	ब्रह्मसूत्रम्			२० का०	२०
६९८	६३७०	ब्रह्मसूत्रम्			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रतिपत्र मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
१८ X ११ ५ सें. मी०	१४ (१-१२, १६-१७)	८	१४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ ५ X १० ३ सें. मी०	२४ (२-२५)	६	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ ३ X ८ ८ सें. मी०	६ (१-६)	१०	४७	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मसूत्र ॥ अथ गणेशोपासना पद्यमान ॥
११ ५ X ६ ६ सें. मी०	५ (१-५, ६)	११	१४	अपूर्ण	प्राचीन	अत्मना समस्त पापसंसारं देवरादि- मुप ॥ विदुः प्रीत्यर्थ ॥ ब्रह्मपञ्चमह करिष्ये ॥ (१३-तद्व्या—१, प्रारम्भ)
१६ ५ X १० ३ सें. मी०	१४ (१-१४)	८	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मपञ्चमहेश्वरविमनुष्यपितृ- तर्पण समाप्त ॥ शुभं भूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥
१७ ७ X ६ सें. मी०	५ (१-५)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ५ X ६ ८ सें. मी०	७ (१-७)	७	१८	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की संख्या या सत्र विमोचन का संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	दीक्षाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६१६	४४७४	भागवतपुराण विघ्नान			दे० का०	दे०
६२०	४४६०	भुवनज्वरी आतिः			दे० का०	दे०
६२१	४०४६	भूतभूति			दे० का०	दे०
६२२	$\frac{७००३}{२}$	भूतभूति			दे० का०	दे०
६२३	१२१०	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
६२४	७००५	भैरवपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६२५	२८७१	भौमपूजा			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्ष पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द अ	ब	स	द	१०	११	
२७६×११७ सें० मी०	३ (१-३)	६	५०	अपूर्ण	प्राचीन	विनामलि फलप्रदा श्री भागवताभिधा सप्ताह यज्ञ नियमेन श्रवणमह करिष्ये ॥ इति सकल्प ॥*** (पत्र संख्या २)
२४५×१०५ सें० मी०	८	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इति भुवनेश्वरी शान्ति
२१५×६५ सें० मी०	२ (१-२)	८	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति भूवशुद्धि ॥
१२३×८ सें० मी०	५ (१-५)	६	२३	पूर्ण	आधुनिक	इति भूतशुद्धि संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥ ब्रह्मापणं भस्तु ॥
२०×११५ सें० मी०	६ (५-६, ११)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	•
२०×२×१० सें० मी०	१०	१०	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति भैरवपूजा पद्धति ।
१६×२×८४ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२२	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संज्ञा विषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विषय वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९६	४४६१	भौमपूजा			दे० का०	दे०
६२७	५३८५	भौमपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३८	१३०६	भगवत्पूजा विधान			दे० का०	दे०
६३६	७४००	भगवत्पूजा विधान			दे० का०	दे०
६३०	६०३७	महोपपूजा			दे० का०	दे०
६३१	१३५४	महोपपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३२	६८१	महोपपूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का माप	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्षिसंख्या और प्रति।क्ति में प्रक्षरसंख्या	क्या श्रृंखला है ? अपूर्ण है तो कत मान भग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२०.५ × ८.८ सें० मी०	३ (१,४,५)	६	२४	अपूर्ण	प्रागैतिहासिक इति भोगपूर्वा ।
१६.६ × ८.५ सें० मी०	१२ (१-१२)	५	२०	अपूर्ण	प्राचीन
३० × १३.५ सें० मी०	२	१०	३५	पूर्ण	प्राचीन
१६.१ × ११.२ सें० मी०	२	२१	२०	अपूर्ण	प्राचीन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	ग्रन्थ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	७१३५	महलदेवतापूजन (सर्वतोभद्र-सिगतोभद्र- देव स्थापन-पूजन)			दे० का०	दे०
६३४	३१०६	मत्तदीक्षा			दे० का०	दे०
६३५	७१४०	मत्तदीक्षासिद्धि विधि			दे० का०	दे०
६३६	२६६३	भक्तपूजा होमविधि (नारद पञ्चरात्र)			दे० का०	दे०
६३७	३८४६	भक्तमुक्तावली			दे० का०	दे०
६३८	७१५६	भक्तमालावलीयत्रपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३९	५८५१	मत्तना			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रपङ्क्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२७ X ११ ३ सें. मी०	६ (१-६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति मङ्गलदेवताः पूजनसंपूर्ण ॥
२१ ६ X १० ८ सें. मी०	१४ (१-१४)	८	२७	पू०	प्राचीन	
१५ ६ X १० ६ सें. मी०	१० (१-१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ X ११ ३ सें. मी०	४ (१-४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पञ्चरात्रे मन्त्रपूजा होम-विधि ॥
२३ ४ X ११ ४ सें. मी०	७ (१, ३-८)	६	३१	अपू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री मन्त्रमुक्तावल्या कृष्ण नारद संवादे दीक्षाविध्याय पञ्चमोऽध्याय संपूर्ण शुभमस्तु मङ्गलदत्तात् सवतु १६०६ साके १७७३ *** ॥ शेष प्रचक्रातिवत् ॥
११ ४ X ७ २ सें. मी०	३ (१-३, ११)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्तत्त्वार्थसूत्रपूजनविधान- मेकत्रिंशोऽध्याय + + + + +
२३ ३ X १० ६ सें. मी०	४	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत क्रमांक वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	प्रथम किस्त वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४०	२६१६	मन्त्रविधि			६० का०	६०
६४१	७८६०	मठमठपोत्सर्ग			६० का०	६०
६४२	१७५१	महादाननिर्णय	दामोदर		६० का०	६०
६४३	६३६०	महान्यास	माधव भट्ट		६० का०	६०
६४४	३६६६	महाभूतजय जप पद्धति			मि० का०	६०
६४५	१५३८	महाभूतजय मन्त्र			६० का०	६०
६४६	७७३३	महाभूतजय जपविधि			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पतिसंख्या और प्रति पत्ति मे अक्षरसंख्या		क्या शेष पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स	द	६	१०	११
१३५×१० सें० मी०	४ (२-५)	८	२५	अपूर्ण		इति मन्त्र विधि समाप्त ॥
२४५×१०१ सें० मी०	६५ (१-६५)	=	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२७७×१०५ सें० मी०	४८	=	४४	अपूर्ण	प्राचीन	
१४७×७१ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२६	पूर्ण	शके १६७४	इति न्यास संपूर्ण । श्री कृष्णार्पण- मस्तु शके १६७४ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदभृगुवासरे । कवीश्वरोपनामक मुकुट भट्टस्य सूनुना माघदेन लिखित ॥
१६८×१०३ सें० मी०	५ (१-५)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महामृत्युंजय पद्धतिस्तमाप्ता मन्त्रोपया.....
१७२×८६ सें० मी०	३ (१-३)	५	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१५×१०७ सें० मी०	६ (१-६)	=	१८	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३०	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४७	४६६४	महालक्ष्मी पूजन			दे० का०	दे०
६४८	३९३५	महालक्ष्मीव्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
६४९	३०३४	महालक्ष्मीव्रत-पूजन विधि			दे० का०	दे०
६५०	६८६३	महाव्रत होत प्रयोग			दे० का०	दे०
६५१	७६९	महापष्टी पूजा			दे० का०	दे०
६५२	३२४६	महापष्टमी दुर्गास्तव व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६५३	६३६९	महिम्नोक्त लिय-प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अवस्था अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का प्राचीनता विवरण		अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
३०५ × १७५ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	२५	पू०	स० १६७६	इति श्री लक्ष्मी जी की भारती समाप्तम् ॥ १० लालमन दास लिपि कृत स० १६७६ मिति वै० शु० ५ श्रीमदासरे बाँदपुर दिवसि ॥
२३८ × १०३ सें० मी०	७ (१-७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापन समाप्त ॥
२४ × १०४ सें० मी०	७ (१-७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३४ × ६८ सें० मी०	१४ (१-१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन स० १७६१	इति आश्वलायनोक्त महाव्रत ॥ सप्त १७६१ आरण्य कृष्ण ३ चद्रे लिखित ॥
२४५ × १० सें० मी०	७ (२-८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२४५ × ७७ सें० मी०	१० (२-११)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महाष्टमी दुर्गासप्त व्रत पूजा समाप्त ॥
२५ × ११४ सें० मी०	२५ (१-२५)	७	३३	पू०	स० १६३६	इति महिम्नात्मक लिगप्रतिष्ठा स्थापन विधि समाप्त ॥ सप्त १६३६ मि०***

प्रमाणिक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५४	३८६६	महीदानविधि			६० का०	६०
६५५	२३२६	माघउत्थापन विधि			६० का०	६०
६५६	३०१६	मातृका न्यास			६० का०	६०
६५७	५४०६	मातृप्रादप्रयोग			६० का०	६०
६५८	६३६६	(जगदवाया) मानस पूजा	लकराचार्य		६० का०	६०
६५९	५६४६	मानसपूजा			६० का०	६०
६६०	$\frac{३३४८}{४६}$	(श्रीराम) मानसीपूजाविधि			६० का०	६०

पद्यो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रमस्या और प्रति पक्ति मे आधारसंख्या	क्या शेष पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वत- मान घण का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	५	६ द	६	१०	११
२०'४ × १'७ से० मी०	२ (१-२)	३१	५०	प्राचीन	इतिमहीदानं ॥
६३'५ × १'५ से० मी०	१ (खर्चा)	६४ २३	५०	प्राचीन सं० १८२०	इति श्री नारद ब्रह्म सवादे माधनुष्यापन विधि सपूर्ण समाप्त ॥ सवत् १८२० माघमासे त्रयोदशी १३ बुधदिने शुभमस्तु ॥ मयल ददातु ॥
२३'५ × ८'८ से० मी०	६ (१-६)	७ २८	५०	प्राचीन सं० १८२८	इति केशवादि मातृकाग्यासः । स्वामि- चरणारविन्दयोस्तु ॥ सवत् १८२८ शके १६६३ ज्येष्ठ ११ भृगुवासरे ॥
२४'८ × १०'३ से० मी०	५ (१-५)	१० ३०	५०	सं० १६१३	इति मातृकाद ममाप्तम् ॥ ११ ॥ सवत् १६१३ भाद्रपद शुक्ल पक्षे च प्रतिपद्या बुधवामरे लिपित दत्त रामेण षोडशी पुर मध्ये ॥ स्वहेतवे ॥ शुभभूयात् रामायानम् ।
२४'५ × १०'२ से० मी०	६ (१-६)	३०	५०	प्राचीन	इति श्री मच्छ(क)राचार्य विरचिता जगदवाया भानसपूजा समाप्ता ॥
२४ × ११'८ से० मी०	५ (१-५)	६ ३३	५०	प्राचीन	इत्यगस्त्य सहिताया परमरहस्ये मानसी- पूजा कथन नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्याय ३३ ॥
१२'५ × ८'२ से० मी० (सं० ३७)	१३ (१-१३)	६ १६	५०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य सहिताया परमरहस्ये श्रीराम मानसीपूजाविधिपञ्चत्रिंशो- ऽध्यायः श्रीराम*** ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
६६१	१६१२	मानसोपचार पूजा	शकराचार्य		मि० का०	२०
६६२	६३४६	मालासंस्कार	चिरजीव भट्टाचार्य		दे० का०	२०
६६३	<u>७७६६</u> २	मालासंस्कार			मि० का०	२०
६६४	२८६३	मालासंस्कार			दे० का०	२०
६६५	३३०६	मालासंस्कार			दे० का०	२०
६६६	६७४७	मालासंस्कार विधि			दे० का०	२०
६६७	५७५२	मालासंस्कार विधि			दे० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	९	१० ११	१२	१३	१४
२८२ × १५५ सें० मी०	४ (१-४)	१५ ४२	५०	प्राचीन	इति श्रीमच्छ्री शकटाचार्य कृतमानसो पचार पूजा समाप्तम् ॥ शुभममस्तु ॥
२४ × १०५ सें० मी०	२ (१-२)	१० ३४	५०	प्राचीन	इति विरजी भट्टाचार्य कृते सर्वाण्ये माता सत्कार ॥
२० × ११ सें० मी०	३ (१-३)	६ २३	५०	प्राचीन	इति माता सत्कार ॥
१६७ × ७७ सें० मी०	५ (१-५)	८ १६	५०	प्राचीन सं० १८३६	इति रुद्र यामले तत्रे माता सत्कार संपूर्णं शुभ मस्तु ॥ सर्वेषु १८३६ ॥ मुद्रामुद्रपुत्र लिपितं लल्लू भट्टस्यो ॥
२०३ × ११४ सें० मी०	३ (१-३)	७ १७	५०	प्राचीन	इति माता सत्कार संपूर्ण ॥
२४६ × १०६ सें० मी०	२ (१-२)	१० ३३	५०	प्राचीन	इति माता विधि समाप्ता*** **
१८५ × ८२ सें० मी०	१	८ ३५	५०	प्राचीन	इत्य मातामाता सत्कार्यं यथाशक्ति मूलमन्त्र जपेदिनि ॥ मातामाता सत्कार- विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्यत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किंसा वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६६८	३०२६	मुडनसत्कार विधि			२० का०	२०
६६९	६४२६	मूर्तिदान विधि			२० का०	२०
६७०	६४१५	मूर्तिप्रतिष्ठा	सदाशिव भट्ट		२० का०	२०
६७१	४८८३	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			मि० का०	१०
६७२	२५०५	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०
६७३	४७७८	मूलशांति			२० का०	२०
६७४	३१०७	मूलशांति			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पदसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्र संख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
१६७×६५ से० मी०	३	१२ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
१२६×१०३ से० मी०	१	८ ३६	पूर्ण	सं० १८१३	इति भूतिदान विधि ॥.....संवत् १८१३ बैशाख शुद्ध ८ ॥
२२२×६२ से० मी०	७ (१-७)	१० ३७	पूर्ण	प्राचीन	इत्यादिमोक्षना भूतिप्रतिष्ठा ॥..... चलाचल प्रतिष्ठाया पुस्तकं लिखित सदा शिव भट्ट कविवर्येण ॥.....
२८८×१४१ से० मी०	१० (१-१०)	१३ ३२	पूर्ण	सं० १६५७	इति चलाचल भूति प्रतिष्ठा विधि समाप्त संवत् १६५७ माघ मासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ एकादश्या बुधवारान्वि- ताया लिखित.....॥
२०६×१० से० मी०	३ (१६-२०)	१२ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
३२७×१३४ से० मी०	७ (१-७)	११ ४६	पूर्ण	सं० १६०६	इति श्री मूलशान्ति समाप्तः संवत् १६०६ ॥
२२.१×८.८ से० मी०	२	१० ३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री सर्व सास्त्रोद्गारे भूत शान्तिक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत भूरया वा सग्रहविशेष की सरया	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६७५	३७३५	मूलशास्ति			१० का०	१०
६७६	३७१४	मूलशास्ति			१० का०	१०
६७७	४५५	मूलशास्ति			१० का०	१०
६७८	८२१	मूलशास्ति			१० का०	१०
६७९	२४२६	मूलशास्ति			१० का०	१०
६८०	७३२	मूलशास्ति काटिका	नामदेव दीक्षित		२० का०	१०
६८१	२८४२	मूलशास्तिविधि			२० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे यक्ति संख्या योग प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान अक्षर का विवरण	संस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
३०५×११४ से० मी०	८	११ ४४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मूलाद्यक्ष स्नान कर्म विधि लिखत मुरनिघर + + + + + ॥
२३५×१२ से० मी०	८ (१-८)	८ २६	पूर्ण	प्राचीन स० १६५०	इति श्री मूल सात विधायसपुनः ॥ शुभ । मिती द्वितीय भाषाङ्गुल १४ गुरुवास्तरे सब्द १६५० ॥ ... = ...
२४४×११ से० मी०	६	११ ३२	पूर्ण	प्राचीन स० १६६६	इति मूलशांति कर्त्तव्यता ॥ १६६६ वरये माधवदिदशमी बुधवासरात्मिता या तत्र बदरी मिश्रण आलेखि ॥ १॥ शुभमस्तु ॥ १॥
१६७×१५ से० मी०	६ (१-६)	६ २४	पूर्ण	प्राचीन	इति विश्वप्रकाशे मूलजनन शांत समाप्त
२०१×१११ से० मी०	२१ (१-२१)	८ २१	पूर्ण	प्राचीन स० १८६२	पुतय लिख्यत जमनादास स० १८६२ शके १७२७ ॥
२३१×११ से० मी०	६ (१-६)	१० ३६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री दीक्षित विश्वामित्रात्मज दीक्षित रामदेव कृता मूल शांति काडिकाया पठति समाप्ता ॥
२०६×१००६ से० मी०	५ (१-५)	१० २५	पूर्ण	प्राचीन	इति मूल शांति विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	अयकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
६८२	२०६०	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८३	२३१०	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८४	२६८६	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८५	६७१४	मृगारेष्टि प्रयोग			२० का०	२०
६८६	६२१२	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०
६८७	६५२२	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०
६८८	६४६६	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंकित संख्या और प्रति पंकित मे प्रक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द प्र	ब	स	द	६	१०	
११४×८८ सें० मी०	६ (१-६)	७	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१७५×८६ सें० मी०	१२ (३-१४)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मूलशास्त्रि विधि समाप्त श्री शिवायनम श्रीकृष्णायनम सवत् १६३५ राम.....
२६५×१२५ सें० मी०	६	८	२५	पूर्ण	सं० १६१५	सवत् १६१५ मासोत्तमे मासे कातिक मासे कृष्ण पक्षे पुन्यतिथी मावस्यायां शुक्रवासरान्विताया शुक्रवास्तरे लिखित चदन मिश्र सुनु हरिद्वीपाल मिश्रका ॥
२३४×१० सें० मी०	६	१०	४२	पूर्ण	सं० १७६१	इति मृगारेष्टि प्रयोग ॥ श्री लक्ष्मी- नृसिंहायनमस्तु ॥ सवत् १७६१ आषाढ शुद्ध १२ लिखितमिद पुस्तक रामहोहकरोपनामक विरचनाय भट्टेन ॥
२१६×८२ सें० मी०	५ (१-५)	८	२६	पूर्ण	प्राचीन	॥ सतिष्ठते मृगारेष्टि ॥
२१५×८६ सें० मी०	३ (१-३)	११	३३	पूर्ण	प्राचीन	इति मृगारेष्टि होत्र समाप्त ॥
२१६×१०४ सें० मी०	७ (१-७)	६	२३	पूर्ण	प्राचीन सं० १७८७	इति मृगारेष्टि होत्र संपूर्ण ॥ श्री ॥ सवत् १७८७ मासे १६१२ पश्विन शुक्ल पक्षे

(सं० मु० ३८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रकाशक	टीकाकार	प्रथम किस्त वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	३६६८	मृतदाहविधि	नारायणभट्ट		२० का०	२०
६८७	६२८	मृत्युञ्जयपूजा			२० का०	२०
६८९	६३६६	मृत्युञ्जय विद्या			२० का०	२०
६९२	३३०८	मृत्युञ्जयविद्या			२० का०	२०
६९३	७३४७	मैत्रावरुण धर्मिण्टोम			२० का०	२०
६९४	६२०५	मैत्रावरुण प्रयोग			२० का०	२०
६९५	६६६९	मैत्रावरुण प्रयोग			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तियंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	द	स द	१०	१०	१०
२२५ × ६३ सें० मी०	११ (१-११)	६ ३५	पू०	प्राचीन सं० १८१४	इति श्री भट्टारामेश्वर मुत्तनरायण भट्ट विरचितः साम्निक्ताश्वलायन मृत- दाह विधि ॥ (पत्रसंख्या १) + + + पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठभट्टेन लिखापित स्वार्थ परार्थ च सवत् १८१४ समये प्राश्विन कृष्ण ७ रवौ समाप्तम् ॥***
२४१ × १०६ सें० मी०	७ (१-७)	६ ३४	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति मयूरमयपूजा संपूर्णमिति श्रीमदः शिवाय सवत् १८८८ तत्रमासे ॥*** मम दोषा नदीयते मगल ददातु ॥
२२८ × ६७ सें० मी०	४ (१-४)	६ २८	पू०	प्राचीन	इति श्री मृत्युञ्जय विद्यान समाप्तः ॥ सदाशिव देवताऽऽर्चनमस्तु ॥ सवत् १६१० के साव समये नाम मिता माघ सुदि ७ कः बुधवासरे कः समाप्तः ॥ + + +
२०६ × १०६ सें० मी०	१० (१-१०)	६ २६	पू०	प्राचीन सं० १८७६	इति मृत्युञ्जयविद्यान वमिष्ट मत्वे ॥ आचार्य सदा रत्नमित्रेनानेन भववित् ॥ राजाहि सर्वलोचस्य पिता भवति धार्मिक ॥ तस्मात्तत्पर्ययत्नेन कर्म कुर्यात् शान्तये ॥ श्री महादेवाय नमः ॥ सवत् १८७६ ॥ मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे
२२२ × ६६ सें० मी०	३५ (१-३५)	११ ३५	अपू०	प्राचीन	
२२६ × ८५ सें० मी०	१५ (१-१५)	१४ ३६	पू०	प्राचीन	अथानिष्टो मोमेकाक्षरप्रयोगो निरूप्यते (प्रारम्भ)
२६६ × ६८ सें० मी०	३	७ १६	अपू०	प्राचीन (सं० १७८८)	- मैत्रावरुण समाप्त ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठमय सवत् १७८८ उपेष्ट शुक्ल ५***

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्ति सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वर्षु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	१८६६	यज्ञपद्धति			१० का०	१०
६६७	४७७६	यज्ञपद्धति	रामप्रसाद प्रसाद		१० का०	१०
६६८	४५४६	यज्ञपद्धति			१० का०	१०
६६९	५८६३	यज्ञोपवीत			१० का०	१०
७००	६३२४	यज्ञोपवीत			१० का०	१०
७०१	$\frac{३६२६}{२}$	यज्ञोपवीतकरण विधि			१० का०	१०
७०२	२४३६	यज्ञोपवीत पद्धति			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिनध्या घोर प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	नया प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान प्रथम का विवरण	अवस्था घोर प्राचीनता	अथ आक्षेपों विवरण
अ. घ.	व.	स. द.	६	१०	११
१८५×६५ सें. मी०	३८ (२-३७, ४३-४४)	१० २०	अपूर्ण०	प्राचीन	जीए
३६६×१२२ सें. मी०	६० (२-६०) पत्र ४२-६०	११ ४०	अपूर्ण०	प्राचीन सं० १८७२	सम्बन्धे घग्ग सप्तार्च्य शशि परिमित शशि माघे च शुक्ले पक्षे चापुष्य योगे शुभमशर तिथी पुष्यशुक्ल चारुते ॥ श्रीमद्भागवतमाद प्रणत विरचितता श्री वशिष्ठ प्रणोतैरुन्मोदो मन्त्रैर्विशिष्टा- धरवर परमा पदतिः गूतिमाप्ता ॥ समाप्तोय यम पदतिः समस्त ॥
२५४×१२८ सें. मी०	२७ (२-४) १४-२६)	६ ३३	अपूर्ण०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री यम पदति सपूर्णम् शुभ मस्तु सवत १६१७ भाषाद शुक्ल ६ बुधवासरे ॥
२५२×१०३ सें. मी०	६ (१-६)	६ ४६	अपूर्ण०	प्राचीन	
१६६×१०३ सें. मी०	१५ (१-१५)	८ २१	अपूर्ण०	प्राचीन	
१३४×१५६ सें. मी०	३	६ १४	पूर्ण०	प्राचीन	इति यज्ञोपवीत करण विधि ॥
२२२×१२१ सें. मी०	११ (३-४ ८, २० २४-२५ २० ३०-३३)		अपूर्ण०	सं० १८४६	इति यज्ञोपवीत पदति समाप्तः ॥ शुभमस्तु । सवत् १८४६ आषाढ कृष्ण पक्ष्या सोमवासरे ॥

क्रमानुसार प्रीति विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	संस्कार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७०३	१२०६ २	यज्ञोपवीत प्रकार			१० का०	१०
७०४	४१२८	यज्ञोपवीत संस्कार पद्धति			१० का०	१०
७०५	३०३८	यज्ञोपवीत संस्कार विधि			१० का०	१०
७०६	१००७	यज्ञोपवीत संस्कार विधि			१० का०	१०
७०७	७६६२	यज्ञोपवीत संस्कार प्रयोग			१० का०	१०
७०८	६६२३	योगपट्ट विधि			१० का०	१०
७०९	२६६६	यज्ञोपवीत शास्त्र			१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्रासंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रासंख्या और प्रति पत्र में पत्रासंख्या		पत्रासंख्या पूर्ण है या अपूर्ण है तो बताना	पत्रासंख्या की प्राचीनता	पत्रासंख्या का विवरण
		म	द			
१६×११.५ सं० मी०	४ (१-४)	१२	१२	पूर्ण	प्राचीन	इन्द्रायणीय प्रकार ॥
२२.२×१२.१ सं० मी०	१५ (५, ७-८, १०-१६, २५-२६)	१४	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१.५×१०.७ सं० मी०	१२ (१-१२)	६	१०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.१×१०.६ सं० मी०	११ (१-११)	११	३५	पूर्ण	सं० १८१७	इति पत्रासंख्या विधि निर्णयग्रह ॥ श्रीराष्ट्रपतिपत्र ॥ श्रीराष्ट्रपतिपत्र सन् १८३७ मी० आ०
२५.८×१०.७ सं० मी०	५ (१-५)	६	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति पत्रासंख्या विधि निर्णयग्रह ॥
१८.६×८.६ सं० मी०	५ (१-५)	७	२०	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६३	इति योगपत्र विधि निर्णयग्रह ॥ सन् १८८३ मी० १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे तिथी ५ शुक्लामरे ॥ त्रिपिशाङ्ग किरानगर ॥ पद्मा ऊद्वजीये ॥ त्रिपिशाङ्ग किरानगर ॥
१६.६×७.७ सं० मी०	१० (१-१०)	७	२०	पूर्ण	सं० १८२७	इति पत्रासंख्या विधि निर्णयग्रह ॥ सन् १८२७ मी० १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे तिथी ५ शुक्लामरे ॥ त्रिपिशाङ्ग किरानगर ॥ पद्मा ऊद्वजीये ॥ त्रिपिशाङ्ग किरानगर ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१०	३४५६	राधाकृष्णमानसीपूजा			दे० का०	दे०
७११	३६६४	रामचद्राह्निक (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
७१२	५७८८	रामपद्धति	रामानुज		दे० का०	दे०
७१३	५८१८	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१४	३२०४	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६०६७	रामपद्धति			दे० का०	दे०
७१६	$\frac{२१४२}{६}$	रामपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का मानक	पत्रांक	प्रति पृष्ठ में पवित्रमन्त्रों और प्रति पत्र में मन्त्राङ्क	क्या पत्र पूर्ण है? संपूर्ण है तो वर्ष-मान मन्त्र का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य मानक के विवरण	
सं. क्र.	सं.	सं.	सं.	सं.	सं.	
१६३५८५ सं० मी०	८ (१-८)	६	२३	पू०	प्राचीन	श्रीराधाकृष्ण मानमोहना सम्पूर्णम् ॥
३२०५१३२ सं० मी०	३० (४-६, ८-११ १४-१६ २१,२४ ३२-३४ ३८,४१ ४४-४६)	११	२४	अपू०	प्राचीन	
२२४५१०५ सं० मी०	११ (१-११)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री रामानुजहृता रामपद्धति वेदोक्त- समाप्ता । शुभमस्तु भव्यन गुदि ७ संवत् १८८३ ॥
२७२५११६ सं० मी०	१२ (१-१२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुजाचार्य विरचित श्री रामपद्धति वेदोक्त सम्पूर्णम् लिखित सन्मोनाथ भट्ट तैत्तिरीय पञ्चश्रावण ॥ शुभभूयात् ॥ " भारोग्ये भवतु ॥
२१८५१०३ सं० मी०	३१ (१-२ ४-२२)	६	२७	अपू०	सं० १८२३	इति श्री रामानुजाचार्य हृता वेदोक्तो पद्धति सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तु संवत् १८२३ मास ॥ सावण शुक्ल पक्ष ॥ १०॥ वार ॥ रवि ॥ लिखित बरेली मध्ये ॥ अपतराय का ॥ दान मे ॥ दामानु- दास । वन्देवदास ॥
१४७५६२ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री रामानुजीय श्री रामपद्धति सम्पूर्णम् ॥
१८५५१६ सं० मी०	४ (६-१२)	६	१६	पू०	सं० १६२३	संवत् १६२३ आश्विन कृष्ण पक्षे तु तृतीये सोम्य वासरे लिखित जय रामेण याद दास्ती शुभ भवेत् ॥ श्री
(सं० सू० ३६)						

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सूचना या राश्ट्रविशेष की सूचना	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७५७	३०६६	रामपूजा विधि			१० का०	१०
७५८	२८३२	रामसेवा विचार			१० का०	१०
७५९	५३३८	रामयणपरायण विधि			१० का०	१०
७६०	७८६१	रामायणपूजन			१० का०	१०
७६१	७५६९	रामायणविधि			१० का०	१०
७६२	१५०३	रामार्चन			१० का०	१०
७६३	७५०७	रामार्चनचक्रिका			१० का०	१०

पत्रो गा पुष्ठी का माहार	पत्रमाहारा	प्रति पृष्ठ मे वर्तमान श्लोकप्रतिपत्ति मे पक्षरमर्यादा	यथा प्रथम पत्र प्रमाण है सो वर्त मान पत्र का विषय	धरण्या श्लोक प्राचीनता	सम्य सादरयक विवरण
पृष्ठ	प	म	ह	१०	११
२४ × ६७ सं० मी०	२	म	३२	पू०	प्राचीन इति रामायण तस्यैवतो पूजा विधिः ॥
२६ × ११२ सं० मी०	४५ (१-४५)	११	३७	पू०	प्राचीन इति श्रीगम सेवाविषारे एकोन- विंशतिध्याय ॥
२७७ × १११ सं० मी०	११ (१-११)	७	२७	पू०	प्राचीन इति रामायण पुरुषपरण विधि ॥
२३३ × ११ सं० मी०	५ (१-५)	११	२४	पू०	प्राचीन
३१५ × १२२ सं० मी०	४ (१-४)	६	४०	पू०	प्राचीन इति श्री महाभारत विधिः.....
२०२ × १०३ सं० मी०	६ (१५-२०)	६	२८	प्रपू०	प्राचीन
२२७ × १२५ सं० मी०	६२ (१-६२)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं० १६०४ इति रामायण चंद्रिकाया पंचम पटलः समाप्तः ॥.....संवत् १६०४

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सूचना वा संग्रहविशेष की सूचना	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम लिखित वस्तु पर लिखा है	निर्दि
१	२	३	४	५	६	७
७२४	६१२४	रामार्चन पद्धति			१० का०	१०
७२५	१००३	रामार्चन विदोपिका	रामकृष्ण भट्ट		१० का०	१०
७२६	६२१७	रामार्चन विधि			१० का०	१०
७२७	३५३६	रामार्चा पद्धति			१० का०	१०
७२८	६२८६	रामार्चा विधि			१० का०	१०
७२९	७६११	रामार्चा विधि (द्वितीय अध्याय)			१० का०	१०
७३०	६४८३	रामार्चा विधि			१० का०	१०

पतो या पुष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पविनमख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या	कथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
२४ x ६७ सें० मी०	५ (६-१३)	६	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ x ५८ सें० मी०	३४ (१-३४)	५	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाराष्ट्र रामकृष्ण भट्ट विरचिता श्री रामचर्न विवोपिका समाप्ता ॥
१८ x ७५ सें० मी०	५ (१-५)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ x १० x ५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३८	पूर्ण	प्राचीन	
३१ x १६ x २ सें० मी०	॥ (१-७)	१२	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२३	इति श्री शिव सहिताया अविष्णोत्तर खडेशिव पार्वती सदादे रामाचर्चा विधि संपूर्ण सं० १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ८ भागे ॥
२७ x ११ x ३ सें० मी०	१० (१-१०)	८	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री शिव सहिताया अविष्णोत्तरपदे रामाचर्चा विधि कथेन शिव सदादे द्वितीयोद्घाट ॥ + + +
१४ x ६२ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	१२	अपूर्ण	प्राचीन	

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविषय की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीनाकार	सब किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७३१	१२५५	रुद्रजाप (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)			१० का०	१०
७३२	७१५८	रुद्रजाप			१० का०	१०
७३३	५७१३	रुद्रपद्धति	रघुनाथ		१० का०	१०
७३४	१४०५	रुद्रपाठ (अष्टम अध्याय)			१० का०	१०
७३५	४४२६	रुद्रपूजन विधि			१० का०	१०
७२६	२१३५	रुद्रप्रश्न			१० का०	१०
७३७	३००३	रुद्रप्रश्न			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पणित संख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
१२'५"×६ से० मी०	१४ (१-१४)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति रुद्र जाये द्वितियोध्याय ॥२॥
६५"×५'७ से० मी०	७	६	१०	अपूर्ण	प्राचीन	इति रुद्रजाये पचमोध्यायः ॥
२७"×१० स से० मी०	१५ ३-१७	१०	३८	अपूर्ण	प्राचीन	इति रचनाय दृते रुद्रपदवी ॥
२० स"×१०'५ से० मी०	२१ (१-२,६-१३, १७-१८, २०-२७,२९)	३	२४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१५	इति रुद्रपाटोऽप्रष्टमोध्याय सं० १६१५ आयण हृत्पण दशम्या निधित भवानी दत्तेन मुभ भूयात् ॥
२४'२"×११ स से० मी०	८ (७३-५०)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन	इति बौधायनोक्त रुद्र स्नान विधान समाप्त ॥.... (पत्रसंख्या ५०)
२४'३"×६ स से० मी०	१५	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
६ स"×५ स से० मी०	१०	५	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	गद्यनाम	टीकाकार	ग्रन्थ वित्त वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३८	७१०	हृदयवत्पुंलापनविधि			दे० का०	दे०
७३९	२३५५	रुद्राक्षधारण विधि	वृषसिंहदेव		दे० का०	दे०
७४०	५५५६	रुद्राक्षमाला संस्कार			दे० का०	दे०
७४१	६६३०	रुद्रानुष्ठान पद्धति	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
७४२	५००८	रुद्राभिषेक कल्प			दे० का०	दे०
७४३	२६६७	रुद्राभिषेक विधि			दे० का०	दे०
७४४	४७४२	रुद्राभाष			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६५ × ६५ सें० मी०	३	१२	६४	पू०	प्राचीन	इति काशी खंडे छद्रवात्स्य धापन विद्यान संपूर्ण ॥
२६ × १५ सें० मी०	५ (१-५)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१८५ × ८ सें० मी०	४ (१-४)	६	३३	पू०	प्राचीन	रक्षाशमाला सत्कारे***मन्त्रसिद्धि कामो- ऽमुक देवता माला सत्कारमह करिष्ये ... (प्रथम पत्र)
२३७ × १०३ सें० मी०	५६ (१-५६)	६	३२	पू०	सं० १८०३	संवत् १८०३ मासे आश्विन कृष्ण पक्षे तिथि ३० वार गुरौ तद्दिने अव- सरवी माहेश्वरेण लिखित ॥
१६३ × १२५ सें० मी०	४५	७	२२	अपू०	प्राधुनिक	
१६३ × ६६ सें० मी०	४ (१-२७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१७४ × ६७ सें० मी०	२२ (१-२२)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १७८१	इति छद्रविद्यान समाप्त ॥ संवत् १७८१ ... ॥
(सं० सू० ४०)						

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा मसहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४६७७	लक्ष्मीपूजन विधि			दे० का०	दे०
७४६	१२५१ २	लक्ष्मी आतुरसंन्यास विधि			दे० का०	दे०
७४७	६४७२	लक्ष्मीपद्धति			दे० का०	दे०
७४८	१८४६	लक्ष्मीसमीहवन विधि			दे० का०	दे०
७४९	६३१२ ७	लक्ष्मीशांति			दे० का०	दे०
७५०	४४७७	लिंगतोम्रमण्डल देवता			दे० का०	दे०
७५१	६७३	लिंगतोम्र होम			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो चर्च मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
२०५ × ८ सें. मी०	३ (१-३)	७ २६	पू०	प्राचीन	
१२३ × ७ ८ सें. मी०	४ (१-४)	१० १३	पू०	प्राचीन	इति सयास ।
२३३ × ७ २ सें. मी०	७६ (७ ७७, ७६-८६)	५ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१४६ × १० सें. मी०	६ (१-६)	१० २०	पू०	प्राचीन	इति सचु लक्ष्मी हवन समाप्त इति श्री लिखित पुस्तक कहैया साल स्वात्म पठनाय शुभमस्तु ॥
२०८ × १४ २ सें. मी०	२ (५-६)	१५ २१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री लघुशान्ति समाप्त ॥
२५५ × १० ६ सें. मी०	१० (१-१०)	६ २८	पू०	प्राचीन	इति देवता होमे समाप्त ॥
२०२ × ८ सें. मी०	६	७ २२	पू०	सं० १६३६	इति लिखितोद्भूत देवता प्रधान होम समाप्त ॥ इदं होपुरोपाय बटव- नार्थन स्वपठनार्थ लिखित ॥ स्वार्थ पराय च ॥ माघे शुद्ध ८ म्या लिखित ॥ सं० १६३६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७५२	७८०५	(शिव) निवप्रतिष्ठा पद्धति	अनंतभट्ट		दे० का०	दे०
७५३	३३२५	निवप्रतिष्ठा पद्धति			दे० का०	दे०
७५४	१००६	निवप्रतिष्ठापन विधि			दे० का०	दे०
७५५	१०६०	निवप्रतिष्ठा विधि			दे० वा०	दे०
७५६	३७२७	निवत्त्वापन विधि	कमलाकर		दे० का०	दे०
७५७	६५६७	निगार्वाप्रतिष्ठा विधि			दे० वा०	दे०
७५८	१२०६	वहगोपासमग्रानुष्ठान			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रतिपत्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अग्रणी है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क प्र	ख	ग द	६	१०	११
२६५ × ११४ सें० मी०	१३ (१-१३)	८ ३२	पू०	प्राचीन	इति बीषायनोक्त लिगप्रतिष्ठा पद्धति समाप्ता ॥
२६३ × १० सें० मी०	२० (१-२०)	६ ३६	अपू०	प्राचीन सं० १६२३	इति श्रीमद्विद्वद्बृहस्पतिमुनिः श्री- मन्नागदेवात्मज श्रीमदनत मनु विर- चिता लिगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता “ इति लिपि हत स्वामलालचरणे य प्रथ सं० १६२३ भास माघ. शुक्ल. ११ ॥
२४ × १०.३ सें० मी०	१४ (१-१४)	८ ३१	पू०	प्राचीन	श्रीराम श्री कासी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ श्री अन्नपूर्णा देविभ्यो नमः श्री भैरव- नाथ समर्थ श्री मण्डमातृका देवता नवम्रा देवतापणमस्तु । श्री राम ॥
२३६ × ११७ सें० मी०	६	१० ३४	पू०	प्राचीन	इति वास्तुदेवता ॥ शुभभवतु ॥
२०.२ × २.३ सें० मी०	११ (१-११)	८ २३	पू०	प्राचीन	इति बीषायनसूत्रोक्त लिगस्थापन विधि ॥
२४ × ६.५ सें० मी०	७	६ ५०	पू०	प्राचीन	इति मद कमलाकर कृते लिगाचा- प्रतिष्ठा विधिः ॥
३२ × ११ सें० मी०	१	७ २८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
७५६	५७७४	बटुकदीपदान विधि			१० का०	१०
७६०	५२८१	बटुकवर्णन विधि	-		१० का०	१०
७६१	४८३०	वनप्रतिष्ठा विधि			१० का०	१०
७६२	४८४६	वनप्रतिष्ठा विधि			१० का०	१०
७६३	७७४०	वलिदान विधि			१० का०	१०
७६४	२८३१	वलिदान विधि			१० का०	१०
७६५	४८३१	वलिदान विधि			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूरा ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ प्र	८	९ ८	९	१०	१०
२३८ × ८५ सं० मी०	१	३३ १७	पू०	प्राचीन	इति बटुकदिपदान विधि ॥ शुभ०
२६२ × ११ सं० मी०	३ (१-२)	१२ ३७	अपू०	प्राचीन	इति बटुक बलि विधि ॥
३०३ × १२५ सं० मी०	११ (१-११)	१० ४०	पू०	सं० १८७४	इति श्रीवनोत्तराम जलौतसजी विधि संपूर्णम् । सम्बत्तरा १८७४ साके १७३६ समय फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे पचम्या बुध दासरे वेलेपिरधुवगमन पुस्तकिक समाप्तम् ॥
२४६ × १० सं० मी०	१७ १-१७	८ २६	अपू०	प्राचीन सं० १७८१	× सम्बत्तरे १७८१ समय भाद्र शुक्ल स्यकादश्या बुधवासर ॥
१३७ × ६२ सं० मी०	४ (१-४)	६ १५	पू०	प्राचीन	इति बलिदान विधि ॥
३५६ × ६२ सं० मी०	२	७ ४६	पू०	प्राचीन	इति बलिदान प्रकरण समाप्त ॥
२७५ × ११५ सं० मी०	४ (१-४)	६ ४१	पू०	सं० १६४०	इति बलिदान विधि समाप्तम् ॥ सं० १६४० या १८०५ गोरि द्विज ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७६६	५२२८	वलिवंशवदेव	।		दे० का०	दे०
७६७	५८४६	वसिष्ठवदेव	।		दे० का०	दे०
७६८	७५८०	वलिवंशवदेव विधि			दे० का०	दे०
७६९	६८६२	वाल्मेयहीनप्रयोग			दे० का०	दे०
७७०	२३५८	वापीकृतकागादि- प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७७१	६६५०	वाल्मीकि रामायण पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७२	६६४९	वाल्मीकि रामायण- पाठ प्रमाण			दि० का०	दे०

पत्री या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में प्रसार संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	ग	द	६	१०	
२८ × १२५ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति बल वैश्वदेव क्रिया समाप्तम् ॥
२१ ८ × ६२ सें० मी०	२ (१-२)	११	४५	पू०	प्राचीन	
२६ ३ × ११ सें० मी०	३ (१-३)	६	४५	पू०	प्राचीन	अथ वैश्वदेव लिप्यते (प्रारम्भ)
२३ ६ × १० सें० मी०	२५ (१-२५)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति वाजपेय होत समाप्त ॥
२७ ५ × १३ सें० मी०	११	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
२२ ३ × १० ५ सें० मी०	८ (१-८)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति सम्पित श्री वाल्मीकि रामायण- पाठप्रयोग ॥ अर्थ विधि. श्री काशीस्थ ठाकुरद्वारा समोपस्थ श्री विश्वनाथजी अग्निहोत्रीति प्रतिद्व सोमयाजिना परम काशीकेन संगृहीत ॥ तथा श्री सवत् १६५० + + + + ॥
१६ २ × ६ ६ सें० मी०	५ (१-५)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाहंस प्रयाणे उमामहेश्वर- संवादेशचम पत्रम् ॥५॥ श्री सवत् १६५० यावत् कृष्ण १२ द्वादश्या + + + रामदास भट्टात्मजराय कृष्णो- नैतत् विद्वान् सोतला घट्ट समीपस्थ- ठाकुर द्वारा समीप वासि श्रीविश्वनाथ अग्निहोत्री + + + + +

(सं० सू० ४१)

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
—१	२	३	४	५	६	७
७७३	६६४८	वाल्मीकि रामायणपाठ विघ्नान			दे० का०	दे०
७७४	६६६६	वाल्मीकीय रामायण संक्षेप पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७५	५३०१	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७६	५८४७	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७७	१४	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७८	२२५१	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७९	३	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्र संख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ४	४	८ ४	६	१०	११
१६६ × १०४ सें. मी०	६	१२ २४	५०	प्राचीन सं० १६४६	श्री वाल्मीकि रामायण पाठ विद्यान श्री रामभक्तार्थ महता परिश्रमेण संगृह्य लिखित श्रीराम भट्टात्मज राम कृष्ण वैलङ्कण । श्रीकाशीविश्वनाथ पुरी सवत् १६४६ × × ×
२८६ × ११६ सें. मी०	१२ (१-१२)	६ ३६	५०	सं० १६५०	इति श्री महात्मनी रामायण पारा-यणो सक्षेप प्रयोग ॥ श्री सवत् १६५० शके १८१५ विश्वावसुनाम सवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया
२१४ × ११४ सें. मी०	२६ (४-३२)	११ २४	अपूर्ण	सं० १६३२	इति वासिष्ठी समाप्त... सवदि १६३२ शके १७६७ बारानाम ग्रामे लिप्यत पपरे पाठक ॥
२३६ × ११ सें. मी०	५ (१०-१४)	६ २६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री वासिष्ठीकीरिचा समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ मिति कार्तिक वदी ७ सवत् १८६६ ' ' ' ॥
१५ × १० ५ सें. मी०	११ (१-११)	७ १३	पूर्ण	प्राचीन	
१५ ५ × १० सें. मी०	२६ (१-२६)	६ १८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७८६	इति वासिष्ठी समाप्त ॥ शुभ मंगल ददातु ॥ कार्तिक वदि ४ वासरे सवत् १८७६ लिखत प० श्री पाठक जवाहिर सोप ग्रामे विहारी ग्राममे ॥ स्वस्ति । दीर्घायु भूयात ॥ ४ ॥
१७ × १२ ५ सें. मी०	१४	८ १६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७८०	३५६८	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८१	३५९५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८२	२०४६	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८३	८१८	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८४	६६७	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८५	५००५	वाशिष्ठी होम विधि			दे० का०	दे०
७८६	६८२	शस्तुपूजा			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमंख्या और प्रति पत्रि म आकार संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
२२४११५ सं० मी०	१४ (६-१२, १७-२२)	१०	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२५४१५१ सं० मी०	१६	१४	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४२४११५ सं० मी०	४० (१-३०, ३३-४२)	७	२८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०७	इति श्री ब्रम्हप्रोक्त संहिताया वाशिष्ठी दुर्वात्सव होम पद्धति समाप्तम् ॥ ✕ ✕ सवत् १६०७ वैसाखकृष्ण ॥ रबी ॥
२३७११२ सं० मी०	७ (४६-५५)	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२३	इति श्री होम पद्धति वाशिष्ठी संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगल भूयात् सवत् १६२३... लिखत भया यदि शुद्धममुद्ध वाम मम दोगो न दीयते ॥
२०५१०२ सं० मी०	२५ (२-२६)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५७१११ सं० मी०	४० (१-४०)	६	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मोक्त वसिष्ठोक्त होम विधि समाप्त ॥
२०८१११ सं० मी०	६	७	३०	पूर्ण	सवत् १६३६	गौरी शंकर जर्मा लिपित्वा ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार १	टीकाकर	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७८७	२६७६	वास्तुपूजा			१० का०	१०
७८८	७४७३	वास्तुपूजादि			१० का०	१०
७८९	२२७	वास्तुपूजा विधि			१० पा०	१०
७९०	६०३६	वास्तुपूजा विधि			१० पा०	१०
७९१	२१३८	वास्तुपूजा विधि			१० पा०	१०
७९२	६४१३	वास्तुप्रतिष्ठा			१० पा०	१०
७९३	३७७३	वास्तुप्रतिष्ठा पूजा- विधि			१० पा०	१०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ. म.	ब.	स. द.	६	१०	११
२५१ × १५५ सें. मी.	३ (१-३)	१० ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२४६ × ११ सें. मी.	१३ (२-१४)	८ २८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४८ × १०२ सें. मी.	५ (१-५)	८ ३७	पूर्ण	सं० १६४६	इति वास्तुपूजा विधि समाप्तम् सबत् १६४६ शाके १८११ माघ शुक्ल १ भीम त्रिपिस्ता गोरी शर्मण्डे ॥
२४१ × ६२ सें. मी.	६ (१-६)	६ ३५	पूर्ण	प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि ।
२०५ × १० सें. मी.	१७	८ २१	अपूर्ण	प्राचीन	
२१४ × ६६ सें. मी.	१० (१-१०)	१० ३८	अपूर्ण	प्राचीन	अथ प्रतिष्ठावास्तुतिथ्यते तद्व प्रकार । (शारभ)
२६२ × १४२ सें. मी.	२	१४ ५०	पूर्ण (जीर्ण शीर्ष)	प्राचीन सं० १६०६	इति वास्तु पूजा विधि सप्तुर्न सुभमास्तु-मन्त्र दत्तत सबत् १६०६ कार्तिक कृष्ण १ बु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रह विशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	रचकार	टीकाकार	प्रत्येक किस्त वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७६४	४८६६	वास्तुर्गति (वास्तु पूजन पद्धति)			दे० का०	२०
७६५	१००४	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	२०
७६६	६४२७	वास्तुशांति प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	२०
७६७	५१३३	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	२०
७६८	२०१२	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	२०
७६९	२८४	विजया दशमी पूजा विधि			दे० का०	२०
८००	६१४८	विष्णुपराय पायगिरस- विधि			दे० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रतिपत्ति म अक्षर संख्या	क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स द	६	१०	११
२१.८ × ११.४ सें. मी०	११ (१-११)	८ २६	पू०	स० १६०६	इति वास्तु पूजन पद्धति समाप्ता ॥ संवत् १६०६ ॥
२४ × १०.३ सें. मी०	११ (१-११)	११ ३७	पू०	प्राचीन	अग्निरित्यादिप्रजापत्यत ॥ एकैक्याग्ना- दुत्थायक्षे ॥
२२.२ × १४.५ सें. मी०	१० (१-१०)	१० ४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामकृष्ण विरचिते आश्वलायन गृह्योक्त वास्तु शांति प्रयोग ॥
२१.४ × १०.५ सें. मी०	३ (१-३)	१४ ४५	पू०	प्राचीन	इति गृहवास्तु शांति प्रयोग ।
२७.७ × १३.१ सें. मी०	४ (१-४)	१३ ३७	पू०	प्राचीन स० १८२३	इति श्री विजयादशमी पूजा समाप्त ॥ **संवत् १८२३ तत्र वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदाया १ गुरुदिन लिखित **॥
१६ × ११.५ सें. मी०	८ (१-८)	१६ १०	पू०	प्राचीन स० १८३६	इति विजयदशमी कर्तव्यता संपूर्ण स० १८३६ ॥
२३.५ × १०.५ सें. मी०	११ (१-११)	१२ ४४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	७८१५	विनायक शांति			दे० का०	दे०
८०२	५४८१	विवाह			दे० का०	दे०
८०३	$\frac{६११६}{७}$	विवाह कर्म	रूपनाथ भुसाई		दे० का०	दे०
८०४	$\frac{४३३७}{८}$	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०५	$\frac{३२८३}{२}$	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०६	५४२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०७	१२४३	विवाह कर्म			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कितने मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	६	१०	११
२६८×१११ से० मी०	३ (१-३)	११ ३०	पू०	प्राचीन	इति विनायक शांति ॥ शुभमस्तु
१८.६×१० से० मी०	२० (२४-४३)	७ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
१४७×६६ से० मी०	४० (१-४०)	॥ १८	पू०	प्राचीन	इति आषाढार रूपालाल गूमाई कृत सपूर्ण॥ + + इति ग्रहघ्नोक्त विवाह कर्म सपूर्णम् ॥ १॥
१६×१३३ से० मी०	२७ (७-३०)	१३ २५	अपूर्ण	प्राचीन	इति ग्रहघ्नोक्त बीजा कर्म सपूर्ण ॥
१८×१२८ से० मी०	१६ (१-१६)	१२ २३	पू०	प्राचीन स० १८६५	इति विवाह कर्म समाप्त ॥ इति ॥ संवत् १८६५ मिति वैशाख शुद्ध शुक्र वासरे नम । लिपित सौतेराम बाह्याणे वहाबदि मध्ये ॥
१६×१२२ से० मी०	१६ (१-१६)	१० १८	पू०	प्राचीन स० १६०८	इति श्री विवाह कर्म समाप्तम् । संवत् १६०८ आषाढ कृष्ण ४ गुरुवासरे लिपित सौतेराम । पठनार्थ बगैराम- राम । शुभमस्तु श्रीः ॥ श्रीरामचन्द्र
२७×११६ से० मी०	२२ (१-२, ४- ८, १०, १२- २५)	६ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	इति विवाहकर्म समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमस्या वा सग्रहविशेष की सूचा	ग्रयनाम	ग्रयवार	टीकाकार	ग्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८०८	५११६	विवाहकर्म			१० का०	१०
८०९	१००२	विवाहकर्म			१० का०	१०
८१०	३५९६	विवाहकर्म (टीका सहित)	हलामुद्र		१० का०	१०
८११	४२८७	विवाहकर्म			१० का०	
८१२	६०८९	विवाह टीका			वि० का०	
८१३	४०६३	विवाह दर्पण			१० का०	
८१४	४६४	विवाह पद्धति	रामदास		१० का०	

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षिसंख्या और प्रति पक्षि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो चर्त मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द घ	ब	स द	६	१०	११
१८७×१४७ सें० मा०	१५	११ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
२५५×११ सें० मी०	१० (१-६, ११)	१० ४१	अपूर्ण	सं० १८१३	इति विवाह क्रम ॥ संपूर्ण ॥ सवत् १८१३ मति वैसाख शुक्ल १० रवि वासरे ॥ याज्ञसि पुस्तक द्रष्टवा ॥ तादस लिखित मयापजदि शुद्ध विगुद्ध बा सम शेषो न दियेते ॥ श्रीराम
३०८×१४७ सें० मी०	१५ (४-१८)	१४ ५२	अपूर्ण	सं० १८८३	इति श्री विवाह क्रम मन्त्र व्याख्या हलामुधन कृत विवाह संपूर्णम् * ** सम्बत १८८३ श १७५८ कार्तिक कृष्ण ६ सोम्य दिने लिपि कृत भिद ।
२५३×११२ सें० मी०	१७ (२-१८)	११ ३१	अपूर्ण	सं० १८४६	इति विवाहक्रम समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८४६ समय पात्र कृष्ण एका दश्या लिखित रामहित शुक्ल आदारे वैसे ॥ राम कृष्णायनम् ॥
१६६×८ सें० मी०	१२ (१-१२)	५ १५	पूर्ण	सं० १६०५	इति श्री विवाह टिका संपूर्ण सवत् १६०५ मति आषाढवदि ११ वार मंगलवार * ***
२३५×८८ सें० मी०	२३ (२५-४७)	७ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५५×११३ सें० मी०	३४ (१-३४)	१० ३५	पूर्ण	सं० १६३२	इति वाक्काय इति चतुर्थो मन्त्र व्याख्या विवाहक्रम समाप्तम् हलामुधन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१५	२४४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त		दे० का०	दे०
८१६	११८६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८१७	११९४ २	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त आचार्य		दे० का०	दे०
८१८	४६२	विवाह पद्धति (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
८१९	४६०६	विवाह पद्धति (कर्मकीमुद्रातर्पित)	कृष्णदत्त श्रवस्त्री		दे० का०	दे०
८२०	५२२१	विवाह पद्धति (सटीक)	रामदत्त		दे० का०	दे०
८२१	४०१०	विवाह पद्धति (सटीक)	प० गंगासहाय		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वन- मान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ स	४	स द	६	१०	११
१६३×१२६ से० मी०	२२ (१-२२)	१२ १६	पू०	प्राचीन स० १०६७	इति चतुर्थी कम समाप्तम् स० १०६७ तिथि ६ बुधवासर मार्गशीर्ष ।
२२५×१५ से० मी०	२२ (१-२२)	७ ३२	पू०	स० १७२७	अनेखिन पिरोघर त्रिपाठी मिद पुस्तक संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ सवत् १७२७ ॥ शाके ॥ १५६२ आश्वी मासि कृष्ण पक्षे तिथी चतुर्दश्या ॥ १४ ॥ भौमवासरे
१५२×१२७ से० मी०	३६ (३-४२)	१० १७	अ० पू०	स० १६१०	इति श्री रामदत्त आचार्य कृते विवाह पद्धति संपूर्णम् शुभ भूयात् लिख्यनार्थ यग्न आवाध १६१० पीप शुक्ला ८ मृगश्रु०.....
३३×१४ से० मी०	१६ (१-१६)	१४ ५१	पू०	स० १८६७	इति चतुर्थी कम प्रकारः समाप्तमिति श्रीरस्तु ॥
२३१×११८ से० मी०	२६ (१-२६)	१० २६	पू०	स० १६०६	इत्यावस्थिक कृष्णवत् विरचिताया कम्म कौमुद्या विवाह पद्धति प्रकृतं समाप्त शुभमस्तु सवत् ॥ १६०६ जेष्ठ शुक्ल ॥ १३ ॥ सोमकौ लिख्यत १० श्री अउजरिया विहारो स्वार्थम् ॥
३३४×१२६ से० मी०	२२ (१-२२)	१० ५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामछनि विरचिताया विवाह पद्धति ॥
३२५×१८४ से० मी०	४२ (१-४२)	६ २७	पू०	स० १६५७	इति विवाह प्रकरणम् ॥ + + + + + सवत् १६५७ पद्धति यगा गहाय कृत ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिंग
१	२	३	४	५	६	७
८२२	१७७३	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२३	५२०३	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२४	२०२६	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२५	२२६२	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२६	३२४४	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२७	६४५५	विवाह पद्धति			१० का०	१०
८२८	१८६७	विवाह पद्धति			१० का०	१०

पत्नी या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति रक्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या शंभ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२४२ × १०३ सं० मी०	२२	१० ३५	पू०	प्राचीन	
१४६ × ६२ सं० मी०	२०	१० १७	अपूर्ण	प्राचीन	अथ वर धर्मशकामाय गौरी विवाहः यिष्ये वर इति सकल्पा पचम् सस्कारा न्मुत्वा लौकिकाग्नि स्थापन (पत्र-संख्या ३)
३०२ × १४५ सं० मी०	६ (१-६)	१६ ५२	पू०	सं० १८३८	इति विवाह कर्म समाप्तम् सवत् १८५८ फाल्गुन शुक्ला प्रतपदा भृगुवासरे विवाह पद्धति लिपितम्
१८३ × १०७ सं० मी०	२५ (१-६, ११-२६)	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४५ × १५२ सं० मी०	४ (६, ८-९, ११)	१६ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४६ × १०८ सं० मी०	४ (४-७)	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति विवाह विधि ॥
१७३ × १३३ सं० मी०	३१	१० १५	अपूर्ण	सं० १६४३ कृमिकृत	इति विह कर्म समाप्त ॥ अथ चतुर्थी कर्म लिप्यतम् ॥ सं० १६४३ मासाना मासोत्तरमासे चैत्रमासे कृष्णपक्ष शुभतिथी १३ सुषोदश्या भोमवासरे लिप्यत भोय बाहालराम ॥
(सं० सू० ४३)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८२६	१५४०	विवाहपद्धति			६० का०	६०
८३०	४५०५	विवाहपद्धति			६० का०	६०
८३१	$\frac{४६२१}{३}$	विवाहपद्धति			६० का०	६०
८३२	४२०४	विवाहपद्धति			मि० का०	६०
८३३	४२०२	विवाहपद्धति			६० का०	६०
८३४	४१६०	विवाहपद्धति			६० वा०	६०
८३५	२७०६	विवाहपद्धति			६० वा०	६०

पत्तो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द द	व	स	द	६	१०	११
१७ × १०.२ सें. मी०	१८ (१-७, ६-१६ १८-२३)	७	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.२ × ११.५ सें. मी०	२५ (१-२५)	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	ग्रन्थ कर्मप्राप्तो विवाह विधिमुच्यते (प्रारम्भ) × × ×
१६ × १०.७ सें. मी०	१३	९	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२.३ × १७.९ सें. मी०	१९	११	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × ११.८ सें. मी०	१२ (१-१२)	११	३०	अपूर्ण	प्राचीन	ग्रन्थ विवाहपद्धति लिखते (ग्रन्थमपन्न)
२१.१ × १०.३ सें. मी०	६ (१०-२०)	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ × १०.४ सें. मी०	११	९	१७	अपूर्ण	से. १८४६	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रवक्ता	टीकाकार	प्रत्य किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३६	३५०४	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३७	१२२५	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३८	४०३६	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३९	६२६	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८४०	६२७	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८४१	१८०८	विवाहपद्धति (टीकासहित)			२० का०	२०
८४२	१६०४	विवाहपद्धति (संस्कृतटीका)			२० का०	२०

पत्नी या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०	११
१८५ × १३ से० मी०	२७ (१-२७)	११	२६	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति विवाहपद्धति कर्म समाप्तम् ॥संवत् १८७१ आषाढ शुक्ल प्रतिपदसन्निवासरे लिपिपूर्ति..... ॥
२३७ × १०२ से० मी०	१७ (१-१७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति विवाह समाप्त ॥ मी पीपशुदी ८ शुभ
१६ × १०२ से० मी०	३० (१-३०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१६५ × १२५ से० मी०	२७	६	२२	अपू० कृमिकृतित	सं० १६२१	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् ॥ शुभमस्तु- भगल ददातु ॥ श्री ॥ संवत् १६२१ मिति पौर वदि १३ चद्वार लिपित मिश्र हरण (गुन)लाल ॥ पठनार्थ मिश्र लाल ॥ शुभ ॥
२३ × १६ से० मी०	६ (१-२,७-१३)	२२	२०	अपू०	प्राचीन	
३२७ × १२५ से० मी०	३८ (२-७, ६-३८, ४३-४४)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२६५ × १३७ से० मी०	११ (१-४, ६-१२)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगततारखा या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४३	३५१४	विवाहपद्धति (मटोक)			२० का०	२०
८४४	६६६८	विवाहप्रयोग	कमलाकर भट्ट		२० का०	२०
८४५	१६७४	विवाहमन्त्र व्याख्या			१२० का०	२०
८४६	४०४०	विवाहविधि			२० का०	२०
८४७	४७१०	विवाहविधि			मि० का०	२०
८४८	$\frac{७५७१}{२}$	विवाहविधि			२० का०	२०
८४९	४६२६	विवाहग्रन्थ			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
घ अ	ब	स द	१०	१०	१०
३१६×१२५ सें. मी०	१० (१-१०)	१० ३७	अपू०	प्राचीन	
२२३×१०३ सें. मी०	११ (१-११)	१० ३४	पू०	सं० १७८८	इति श्री राम कृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृत विवाह प्रयोग ॥ सवत् १७८८ माघ कृष्ण ११ बुधे लिखित मिद रामहृदापनामक विरचनाय भट्टात्मज बीसकठेन ॥
२२५×१४५ सें. मी०	६ (१-६, ११-१३)	२० ३०	अपू०	प्राचीन	
२४×१०५ सें. मी०	४३ (१-४३)	६ २६	पू०	सं० १६१७	इति विवाह विधि समाप्त ॥ सवत् १६१७ ॥ फाल्गुण मासे शुभे कृष्ण पक्षे ॥ तिथी पंचमीया ॥ शुक्रवासर ॥
२०७×१७३ सें. मी०	११ (१-११)	८ २३	अपू०	आधुनिक	
१२१×१६५ सें. मी०	३३ (१-३३)	१८ २१	अपू०	प्राचीन	
१५२×१०२ सें. मी०	५ (१-५)	८ १८	पू०	सं० १८५०	इति विवाह शूद्र विधि पठित राम हित ॥ सवत् १८५० भादरे वंशे मिति जेष्ठ शुक्ल पंचमी गुरु वासर के पुस्तक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	३७६१	विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
८५१	६५७०	विष्णुवनि प्रयोग			दे० का०	दे०
८५२	६६४०	विष्णुवनिप्रयोग			दे० का०	दे०
८५३	१४८४	विष्णुशयनी स्थापन विधि			दे० का०	दे०
८५४	२७६०	विष्णु पोटम नाम			दे० का०	दे०
८५५	२७८३	विष्णु पोटमोपचार पूजा			दे० का०	दे०
८५६	५७५०	विष्णु सहस्रनाम पदति			दे० का०	दे०

पत्तो का पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पलित संख्या और प्रति पलित मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२६१×१०७ सें० मी०	४२ (२-४३)	६ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्रकृत्ये बानप्रस्थ- गृहस्थाश्रम धर्मपंचमहायज्ञविधि समाप्त ॥ (पत्रसंख्या-३७) + + +
२४४×१११ सें० मी०	४ (१-४)	१० ३८	पूर्ण	सं० १८१६	इति विष्णुवर्णि प्रयोग ॥ पुस्तकमिश्र रामछोहकर विश्वनाथ भार्गव भट्टाचार्य नील कठभट्टेन लिखित स्वार्थ परार्थ च संवत् १८१६ कार्तिक शुद्ध १०
२२६×१०१ सें० मी०	४ (१-४)	६ ४१	पूर्ण	प्राचीन	इति विष्णुवर्णि प्रयोग ॥
१८८×१० सें० मी०	५ (१,४-७)	६ २४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णु- जयन्ताद्युद्घाटन विधि भपाठी मुक्ता संपूर्ण शुभ भूयान् श्री कृष्णापन्न
१२८×६६ सें० मी०	२ (१-२)	८ १२	पूर्ण	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे दोहस नाम समाप्त ॥
१४×८४ सें० मी०	३ (१,३४)	७ १६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७३×६७ सें० मी०	३	४ १६	अपूर्ण	प्राचीन	
(म० न० ४४)					

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
८५७	<u>६३१२</u> ७	बुद्धि साति			दे० का०	२०
८५८	६६५	वृषाक पद्धति			२० का०	२०
८५९	४१६०	बुधोत्सर्ग			२० का०	२०
८६०	११३०	बुधोत्सर्ग			२० का०	२०
८६१	५५०२	बुधोत्सर्ग			२० का०	२०
८६२	५२७७	बृहस्पतिधन न्यास			२० का०	२०
८६३	<u>३७५८</u> २	वेणीमाधव पूजन			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	द	स द	द	१०	११
२०८×१४२ सें. मी०	३ (६-८)	१४ ३२	पू०	प्राचीन	इति वृद्धि पाति संपूर्ण ॥
३२५×१७६ सें. मी०	३	१० ३०	अपू०	प्राचीन	
२२७×६ सें. मी०	७ (१-७)	१२ ४४	पू०	स० १८४५	श्री रस्तु ॥ सवत् १८४५ मिति आचण वद्य पंचमी लिखित नारायणस्य हस्ता- क्षर पुस्तक समाप्त ॥ इदं पुस्तक बुधोत्सवस्येद ॥
३१×१३१ सें. मी०	१३ (१-१३)	१२ ४०	पू०	स० १८४२	इति बुधोत्सव गोदान सवत् १८४२ आश्विने कृष्णपक्षे च द्वादश्या चतुर्दशी लिखित फकीरचरण पुस्तक शुभदायक ॥ श्रीरोहिणीपदम शुभभूयात् ॥
२७४×१७५ सें. मी०	१ खर्चा (१-४)	३६ ३०	अपू०	जीर्ण प्राचीन	
१५६×११५ सें. मी०	१	१२ २०	पू०	प्राचीन	बृहस्पते गृहसमदो बृहस्पतिस्त्रिपु- छन्द न्यासे विनि... (प्रारम्भ)
१५७×८५ सें. मी०	८ (२-१०)	११ २३	अपू०	प्राचीन स० १८०४	इति श्री पदमपुराणे पानान यमोश्च श्री वेणोमाधव पूजन समान् ॥०॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्ततास्थान या संग्रहविभाग की सूचना	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८६४	६३७२	वेदपारायण विधि			२० का०	२०
८६५	$\frac{५०५४}{१५}$	वेदपारायण विधि			२० का०	२०
८६६	१२१६	वेदोक्तसिवाचन पद्धति			२० का०	२०
८६७	६६३१	वैदिकमन्त्र संग्रह			२० का०	२०
८६८	६६२६	वैदिकमन्त्र संग्रह			२० का०	२०
८६९	६४३३	वैद्वत्तिज्ञाति प्रयोग			२० का०	२०
८७०	$\frac{५०५४}{१५}$	पैशाखस्वान विधि			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो वा भावार्थ	पत्रमस्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कत- मान अक्ष वा विवरण	भावस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स	द	६	१०	११
२२४×६१ सें. मी०	५ (१-५)	१०	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति ऋग्विद्यानाद्युक्तो वेदपरायण विधिः ॥
१६×७८ सें. मी०	१३३	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
२३१×१२३ सें. मी०	४४ (१-४४)	४	१३	पूर्ण	प्राचीन	इति वेदोक्तगणितार्चन पद्धति । शुभम् ।
२४५×१११ सें. मी०	४ (१-४)	॥	२६	पूर्ण	प्राचीन	
२४३×१११ सें. मी०	३ (१-३)	१०	३५	पूर्ण	प्राचीन	
२२३×८८ सें. मी०	३ (१-३)	७	२७	पूर्ण	प्राचीन	
१६×७८ सें. मी०	४३	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	इतिस्तोत्रम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७१	७६४७	वैशाखाष्टापन			१० का०	१०
८७२	४४८५	वैश्य सध्या			१० का०	१०
८७३	११२०	वैश्व (वलिवैश्व)			१० का०	१०
८७४	६३६१	वैश्वदेव			१० का०	१०
८७५	५७५८	वैश्वदेव विधि			१० का०	१०
८७६	५८१६	वैश्व विधि			१० का०	१०
८७७	१४२	व्यास पूजा	शकराचार्य		१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति सख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर सख्या	क्या शेष पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत मान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	ब	स द	६	१०	११
२७३ × ११४ सें० मी०	२	६ ३५	अपूर्ण०	प्राचीन	इति वंशाधोद्यापनविधि ॥
२५ × १०४ सें० मी०	२ (१-२)	८ ४२	पूर्ण०	सं० १६२३	इति वैश्य सध्या समाप्तिमगात् स० १६२३ वैशाख शुक्ला ८ रा० वा० ॥
२५५ × १०७ सें० मी०	५ (१ ३-६)	१० ३५	पूर्ण०	प्राचीन सं० १८७३	इति वैश्वम समाप्तम पौषमासे अस्तिते पक्षे दशम्या सतिशामरे ॥ नमन मिथ द्विजे नेद लिपित पुस्तक मित ॥ सवत् १८७३ अकेष १७३८ शुभमस्तु ॥
१४७ × ८३ सें० मी०	६ (१-६)	६ २४	अपूर्ण०	सं० १६३५	इति वैश्वदेव समाप्त ॥ स्वार्थ परोप काराय ॥ शिमाय गुरवे नम ॥ सवत् १६३५ अके १८०० ॥
२६४ × २१३ सें० मी०	१ (बर्षा)	२० ३३	पूर्ण०	सं० १८८६	इति श्री वैश्वदेव पद्धति संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ सं० १८८६ के उपरात चै० व० ७ सु० बेरेठी लिप्यत प० विदुवा सुपनाल ॥
२७३ × ११४ सें० मी०	२ (१-२)	११ ३२	पूर्ण०	प्राचीन	इति वैश्व विधि ॥ सं० १६३२ मा० मा० व० ४ लि० ॥
१३ × १०५ सें० मी०	६ [(३-८)]	१२ १५	अपूर्ण०	प्राचीन	इति छत्राचार्य विरचित व्यास पूजा समाप्ता ॥ श्री हरहराय नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की मागतसूच्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८७८	१८४२	ग्रथवध			दे० का०	दे०
८७९	४८१३	ग्रनाकं			दे० का०	दे०
८८०	५९२६	वतार्क			दे० का०	दे०
८८१	६९४१	ब्रह्मचारीवतलोप- प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
८८२	१२४४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८३	५२६६	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
	२					
८८४	७०५२	ब्रह्मयज्ञ तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो या आवार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितरसंख्या और प्रति पत्रि मे घटारसंख्या	क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	९	ग	द	१०	११	
१४४१२३ सं० मी०	२	१०	१८	अपूर्ण	प्राचीन (पंडित) जीर्ण	इति वसवध अतादेश व्रतविगं तृतीय कर्म समाप्तम् सवत् १६१५ ? मिति भाद्रपद वदि १ शुक्लवाशरे ॥ लिपित मिथ नयन ॥ पठनार्थं नानक पचोनि ॥
२६३४१०३ सं० मी०	१६ (१५-३०)	८	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३५४१०६ सं० मी०	१७ (१-१७)	१३	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२७४१०२ सं० मी०	० (१-२)	१०	३६	पूर्ण	सं० १७१८	लिखितमिद रामहृदस्य दिक्वनाथ भट्ट सुत नील कठ भट्टेन वैशाख शु० ११ सवत् १७१८ ००
२०८४१२ सं० मी०	५ (१-५)	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	अथ ब्रह्मयज्ञ समाप्त ॥ मिथ्य युधिष्ठिर सवादे सहस्त्रशत रामायण समाप्त । श्री कृष्णार्पणमस्तु॥
१९४८ सं० मी०	२ (१-२)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन	ब्रह्मयज्ञ समाप्त । शुभमस्तु
२७२४१०६ सं० मी०	११ (१-११)	६	३४	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६२	इति श्री ब्रह्मयज्ञतर्पण समाप्तम् शुभमस्तु मि० वै० सु० १२ मंगलवार समाप्तम् सं० १८६२ लिखित पुराणीतम रत्नरत्न रोवा बंठे ।

-- (सं० सु० ४५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
न० ५	४८६६	ब्रह्मशापविमोचन			मि० का०	२०
न० ६	६८२८	ब्राह्मणाष्टमी प्रयोग			६० का०	२०
न० ७	६९९६	ब्राह्मविवाहगमूत- वाग्दान विधि			१ मि० का०	२०
न० ८	२२६६	लकारार्चन दीपिका पद्धति	श्रीपति		२० का०	२०
न० ९	४७२६	शमीपूजन			२० का०	२०
न० १०	५०२२	शय्यादान			२० भा०	२०
न० ११	४२२७	शय्यादान प्रयोग			१२० भा०	२०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षिसंख्या और प्रति पक्षि मे प्रसारसंख्या	नया ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कन- मान अथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क अ	ब	स द	६	१०	११
१६५ × ८२ सें० मी०	३ (१-३)	६ २२	पू०	प्राचीन स० १६१८	इति श्री रुद्रया जामने षडिका ब्रह्म- शाप विमोचन संपूर्णम् ॥... .. स० १६१८ ॥
२३४ × १० सें० मी०	७ (१-७)	११ ३०	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणाष्टमी प्रयोग समाप्त ॥
२२३ × १०.३ सें० मी०	३ (१-३)	६ ३५	पू०	प्राचीन	
२५३ × ६.५ सें० मी०	७१ (६-७६)	८ २६	अपू०	प्राचीन	
२०६ × १०.१ सें० मी०	४ (२-५)	१० २८	अपू०	प्राचीन	इति शमीपूजन समाप्त शुभ भूयात् ॥ राम.....
२१२ × ६.७ सें० मी०	१	८ ४०	अपू०	प्राचीन	
२१६ × ८.८ सें० मी०	३ (१-३)	६ ३४	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम ॥ अथ शय्यादान ॥ (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
८६२	३००३	शांतिकर्म			३० का०	३०
८६३	६४३२	शांतिरत्न (ज्वरशांति प्रयोग)			३० का०	३०
८६४	२१	शांतिविधान			३० का०	३०
८६५	६३५१	शांतिविधि			मि० का०	३०
८६६	६४२५	शांतिसार			३० का०	३०
८६७	२१२	शास्त्रद्वयसूत्र			३० का०	३०
८६८	६३८१	शास्त्रग्राम पंचायतन दान विधि			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या प्रो. प्रति पक्ति म. अक्षरसंख्या	कथा अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान कथा का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द. घ.	व.	स. द.	ह.	१०.	११.
३०.६ x १५.१ सें. मी०	१३ (१-१३)	१२ ३८	अपूर्ण०	प्राचीन	
११.७ x १०. सें. मी०	२ (१-२)	१० ४२	पूर्ण०	प्राचीन	इति शांतिस्थले उवरासाति प्रयोग ॥
२६.५ x ११.२ सें. मी०	८	११ ३०	अपूर्ण०	प्राचीन	
२४.२ x १५.३ सें. मी०	८ (१-८)	१४ २६	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२.७ x १०.३ सें. मी०	१० (१-११) (पत्र १ पर दा नवर)	१२ ५०	पूर्ण०	प्राचीन	इति वैधृतिव्यतीपातसत्रातिजनन शांति ॥
२४.२ x ११ सें. मी०	१४	११ ३७	अपूर्ण०	प्राचीन	
२०.५ x ६ सें. मी०	१	१३ ३३	अपूर्ण०	प्राचीन	इति पचासतन दान विधि

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८६६	६३६२	मिलान्यास विधि			दे० का०	३०
६००	४२८२	शिव पार्थिव पूजा			दे० का०	३०
६०१	४०५१	शिवपूजन			दे० का०	३०
६०२	२८३८	शिवपूजन			दे० का०	३०
६०३	८१२	शिवपूजनन्यास			दे० का०	३०
६०४	८११	शिवपूजनन्यास			दे० का०	३०
६०५	४०३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	३०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
८ घ	द	म द	६	१०	११
१५×७२ से० मी०	६ (१-६)	६ २५	पू०	स० १८५४ शके १७१६	इति शिलान्यास विधि ॥ श्री सवत् १८२४ विभवनाम सवत्सर फाल्गुन कृत्ख ७ शके १७१६ ॥
१५×१११ से० मी०	१४ (१-१० १३-१८)	८ १६	अपू०	प्राचीन	इति शिव पार्ष्व पूजन संपूर्ण समापत शुभ भवत मस्तु ।
२१×१०७ से० मी०	५ (१२-१३ १५-१७)	७ २६	अपू०	स० १६१२	इति शिवपूजन संपूर्णम् शुभ सवत् १६१२ ॥
१४×८८ से० मी०	६ (१-६)	८ १७	अपू०	प्राचीन	
२२×१०६ से० मी०	६ (१,३,५- ६,१०- ११)	१२ २७	अपू०	प्राचीन स० १८७२	इति श्री इतिहास्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ सवत् १८७२ ॥
२२×१०६ से० मी०	६	१२ २८	अपू०	स० १८७२	इति श्री इति हा स्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ सवत् १८७२ ॥
१५×८८ से० मी०	१५ (१-१५)	७ २२	पू०	स० १६०८	इति शिवपूजन संपूर्णम् शोपशुक्ल १० भूगो सवत् १६०८ ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	१३३८	शिवपूजनपद्धति			६० का०	६०
६०७	$\frac{३०४६}{६}$	शिवपूजन विधि			६० का०	६०
६०८	१३१०	शिवपूजन विधि			६० का०	६०
६०९	$\frac{४३३७}{८}$	शिवपूजा			६० का०	६०
६१०	२६८७	शिवपूजा			६० का०	६०
६११	$\frac{१६०४}{४}$	शिवपूजा			६० का०	६०
६१२	१४८३	शिवपूजा			६० का०	६०

पदा या पृष्ठ- मा भावार	पतास्थान	प्रति पृष्ठ मे पश्चिमका और प्रति पत्ति मे पश्चिमका	क्या पद्य पूर्ण है ? प्रमाण है या नहीं मान्य भाग का विवरण	ध्वज्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	५	६ ८	८	१०	११
२१७×६५ सं० मी०	१५ (१-१५)	७ ३२	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री शिवपूजनपद्धतिपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७१ गममात्रपद्धतिपूर्णं पद्धति रविवासरे ॥
१६७×१३१ सं० मी०	३	७१ १५	पू०	प्राचीन	इति विमर्जन ॥
१६×८५ सं० मी०	८ (२-४, ७-११)	७ १८	पू०	प्राचीन	
१६×१३३ सं० मी०	१४ (४२-५५)	१७ २५	पू०	प्राचीन	इति द्वादशत शिवपूजा संपूर्ण ॥
१६५×११५ सं० मी०	६	८ २१	पू०	प्राचीन सं० १६१८	इति शिवपूजा संपूर्ण संवत् १६१८ ॥
१३६×७६ सं० मी०	२ (५-६)	८ १३	अपू०	प्राचीन	इति आनन्दयम् ॥
१८८×११२ सं० मी० (सं० मू० ४६)	६ (५-१०)	७ १८	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति शिवपूजा समाप्ति सं० १८८८ ॥ आवृत्ति वदी तयोदशी १३ ॥ अति- वासरे ॥ शुभ मंगल ददात्

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१९१३	७००५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
१९४	३६२३	शिवपूजा			दे० का०	दे०
१९५	७८७७	(विश्वनाथ) शिवपूजा- तरंगिणी			दे० का०	दे०
१९६	४०७१	शिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
१९७	६६२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
१९८	२४७१	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
१९९	४५३३	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पवितसङ्ख्या और प्रति पत्रि म प्रसारसङ्ख्या	नया प्रश्न पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्त मान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
२१ ५/१० ३ सं० मी०	= (६-१३)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति रुद्रयामले शिवपूजावेदोक्त संपूर्ण । इद प्रति लिपित वातिक कृष्णा १० । चन्द्रवासरे इद प्रति लिपित रामायन मित्र २ अहिरवा मध्ये भ्रातृ पठनार्थ ॥ + + + +
१५ ८/७ ८ सं० मी०	६ (२-१०)	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५४	इति शिवपूजा समाप्त ॥ मन्त्र होन० बल जातिदेव गणा सर्व पूजा + + + + + सं० १८५४
२१ ५/६ ५ सं० मी०	१० (१-६, ६-१२)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ ४/८ ८ सं० मी०	६ (१-६)	१०	२०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०२	इति श्री वेदोक्त शिव पूजा विधान संपूर्ण समाप्त ज्येष्ठ सुदि २ सप्त १६०२
३३ ४/१३ सं० मी०	२	४८	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति पूजा विधि समाप्ता ॥
२३ ४/१० ७ सं० मी०	३ (१, ४ ५)	६	३७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री शिवपद्धतौ शिवपूजा विधि ॥ संपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
२४ ३/१० १ सं० मी०	६ (४-६)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति शिवपूजाविधि समाप्त शुभमस्तु ज्येष्ठ मासे वस्त्र पसे तिथौ १३ भृगु वासरे सकत १६१७ लिपित प श्री पिछारिया हर परसाद ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	१२५८	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२१	$\frac{४६१७}{२}$	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२२	४८८५	शिवपूजाविधि प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६२३	$\frac{४६७६}{२}$	शिवप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६२४	$\frac{१३७५}{२}$	शिव मानसपूजा			दे० का०	दे०
६२५	४२३	शिव रहस्यमहाविचारार्चन			दे० का०	दे०
६२६	१४८२	शिवलिंग (पञ्चा- तर्पणम्)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
म म	व	स द	६	१०	११
२६ × १४ सें० मी०	७	१३ ३५	पू०	स० १८३४ शके १७३६	इति हाम्पेन पूजा विधि समाप्ति मगमत ॥ सवत् १८१४ शके १७३६ ईशाख शुद्ध चतुर्दशी बुधवार पुस्तक लिखि है ।
१५१ × ६६ सें० मी०	३	८ १५	अपूर्ण	प्राचीन	इति शिवपूजा विधि. सपूर्ण ॥
२२५ × १०६ सें० मी०	१३ (१-१३)	१० २८	पू०	स० १८७२	इति श्री इतिहासेन शिव पूजा विधि प्रतिष्ठा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८७२ । पीप शुद्ध त्रितीया २ अक्षर वामरे लिखितमिद पुस्तक लक्ष्मणा- भिधानेन चंडिपुरमध्ये शुभ ॥
१५ × ६५ सें० मी०	१४ (२-१४)	१० २४	पू०	प्राचीन स० १८८४	इति शिव प्रतिष्ठा समाप्तम् शुभ भूयात् यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिपित मया यदि शुद्ध वा मन दोषो न दिपते १ सवत् १८८४ तत्रवर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ॥ ॥
१५ × ६५ सें० मी०	२	८ १६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेद वेदात् परिवर्णं शिव मानवपूजा समाप्त ॥
११३ × ११ सें० मी०	१४ (१-१४)	८ १७	पू०	प्राचीन	इति श्री जीव पुराणे शिव रहस्ये महा- विद्याचंन विवरणं नानाप्रद्विशीध्यायः । यान्त्र पुस्तक दृष्टा तान्त्र निमित्तमया यदि शुद्धम् शुद्धवामन दोषो नहीयते लेखक पाठकयामयल शुभमस्तु ।
२०६ × ११२ सें० मी०	३ (१-३)	६ २६	पू०	प्राचीन स १६०६	इति श्री पाण्डित्येश्वर विना मनि शिव विष्णु पूजा तर्पण तपकरणम् ॥ स० १६०६ शके १७७४ अधिक

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविषय की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस्त वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६२७	६८२	शिवलिंगप्रतिष्ठा- प्रयोग			३० का०	३०
६२८	४०५२	शिवस्थापन पूजन विधि			३० का०	३०
६२९	६२१५	शिवार्चन पद्धति			३० का०	३०
६३०	४७६५	शिवार्चन विधि			३० का०	३०
६३१	३०२१	शिविकादान			३० का०	३०
६३२	६६३७	शुक्लमूल परिशिष्ट			३० का०	३०
६३३	११७७	शुद्ध एकादशाह			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	क्या यथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
द घ	ख	स द	५	१०	१०
४२२×६'२ सं० मी०	२ (१-२)	८ ६६	अपू०	प्राचीन	
२२×१० सं० मी०	४ (१-४)	१० ३२	पू०	सं० १६०८	इति शिवस्थापन पूजन विधि समाप्तम् ॥ था० सं० १४ रवीश्वर १६०८ अतिथित "
१६'५×११ सं० मी०	२ (२-३)	१० १८	अपू०	प्राचीन	इति शिवार्चन पद्धति ॥
३०×१४ सं० मी०	१ (खरा)	३८ १६	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति शोधपन सुवोक्त शिवार्चन विधि ॥ सं० ॥ १८६७ वैशाख शु० ३ पराज्य इत्युनाम्ना अष्टा मठेन लिखित ॥
२१२×६७ सं० मी०	२ (१-२)	८ ३६	अपू०	प्राचीन	
१७१×७'५ सं० मी०	६ (१-६)	८ ३०	पू०	प्राचीन	इति नाट्यापनोक्तं शुद्ध गूर परिशिष्ट समाप्त ॥ श्री रामचन्द्रायनमः । नीलकण्ठ ज्योतिर्वित्तुदोग गोविन्देन शुद्ध गूर पुस्तक लिखित + + + + ॥
२२१×१३७ सं० मी०	६ (१-६)	१६ २८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत सन्ख्या वा भण्डविशेष की सरया	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ वित्त वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
६३४	८२८	शुद्धिविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६३५	५२६२	शौनवकारिका			दे० का०	दे०
६३६	५२००	आद्यकर्म			दे० का०	दे०
६३७	१३२४	आद्यकर्म			दे० वा०	दे०
६३८	१६४६	आद्यकर्म पद्धति			दे० वा०	दे०
६३९	१६७	आद्य वाद	भट्टोजी दीक्षित		दे० वा०	दे०
६४०	१४९३	आद्य परिभा	दिवाकर		दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आवार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ से पच्छिमस्य और प्रति पत्ति में अक्षरसंख्या	नया अक्षर पुस्तक है? अपूरण है तो वत भान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८४	८	८	८	१०	११
२८४ × ६५ सं० मी०	१०० (१-१००)	४०	अपू०	प्राचीन	
२३४ × ६६ सं० मी०	१	२० ३५	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम शौनक कारिका ॥ (प्रारम्भ)
२२८ × ६६ सं० मी०	३ (१-३)	७ २६	पू०	प्राचीन सं० १८०२	आद्याह्नितु सप्तान्ते भवेत्तिरसनोपि वेति ।***लिखितमिद पुस्तक राम- हृदोपनामक नीलकण्ठेन पीप यदि १ संवत् १८०२.....
२१ × ११५ सं० मी०	१३ (२-१४)	११ २८	अपू०	प्राचीन	
३० × १३ सं० मी०	८ (६५-६६, ७४-७६)	१२ ४५	अपू०	प्राचीन	
२११ × ६ सं० मी०	२४ (१-२४)	१४ ४३	पू०	प्राचीन सं० १६६७ सं० १५६२	इति षट्पादस्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूर सूनुना भट्टोजिदीक्षितेनरचिताया श्री चतुरविंशति मुनिमन व्याख्या आद्य वाक्य । सं० १६६७ शके १५६२ विरो- धिनि सविता माधसित द्वादस्या प्रयागे- याज्ञवल्क्यो षेड्भट्टोपाध्याय सूनुना भट्टोपाध्यायान देना लेखीदम् ।
२०५ × ११ सं० मी०	२६	१० २५	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टारमज सन्त विद्या निधान श्री दिवाकर विर- चिताया आद्य चद्रिवाया महासप्त आद्यानि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	६८४१	आद्यचंद्रिका प्रकाशानु- क्रमणिका	वैजनाय		दे० का०	दे०
६४२	३८३८	आद्यदीपिका			दे० का०	दे०
६४३	३४७४	आद्यनिर्णय			दे० का०	दे०
६४४	६५५७	आद्यपद्धति			दे० का०	दे०
६४५	६६८८	आद्यपद्धति			दे० का०	दे०
६४६	३४७१	आद्यपद्धति			दे० का०	दे०
६४७	३६७२	आद्यपद्धति	लक्ष्मण		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या अधपूर्ण है ? अधपूर्ण है तो वर्तमान अध बा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द अ	ब	ग द	६	५०	५५	
२७६×११४ सें० मी०	८१ (१-८१)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं० १७८२	इति श्री दिवाकरात्मज वंशनाथ विर- चिता आद्यवद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता ॥ सवत् १७८२ आश्विन सुदि १२ × × × म० १७८६ ज्येष्ठवदि १ शोधितमदोभारद्वाज काशीनाथेन + ॥
२४५×१२२ सें० मी०	१६ (१२-२७)	६	२४	अपू०	सं० १८१७	सपिंडी धाद वृत्तं ॥ शुभमस्तु सवत् १८१७ ॥
२२८×११ सें० मी०	३ (२०, २८, २९)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२२४×८८ सें० मी०	८ (१-८)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति बोकिल अधिमत्त सद्योपत ॥ सवत् १६६६ वर्षे पोष मासे शुक्लपक्षे + + + + + ॥
२१७×१६८ सें० मी०	१२ (१-१२)	१४	२३	पू०	प्राचीन	
२१४×१२ सें० मी०	७ (१-७)	१४	३६	पू०	सं० १८३६	इति श्री रूपरति समाप्त शुभमस्तु सवत् १८३६ अश्विनवदि १० सतीधर लिपतपुमानसुक्ल श्री जमुना दैनम ...
२३३×८ सें० मी०	६३ (१-६३)	७	३८	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री क्षेमराज कृता आद्यपद्यति समाप्ता शुभमस्तु शुभभूयात् सवत् १८७१ शके १७३६ अधिक मासे मासि शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोश्या रविवासरे लिखित मिद पुस्तक वेणीप्रसाद त्रिपाठिना

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४८	१४६२	आदिपद्धति			दे० का०	दे०
६४९	६७८७	आदिपद्धति			दे० का०	दे०
६५०	७२९७	आदिपद्धति			दे० का०	दे०
६५१	३४९०	आदिपद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६५२	४११५	आदिपद्धति			दे० का०	दे०
६५३	३९६६	आदिपद्धति			दे० का०	दे०
६५४	५१७६	आदिपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षिमध्या ओर प्रति पक्षि म अक्षरसंख्या	तथा अथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वत मान अथ वा विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	९	१०	
					११	
२०१×१०६ सें० मी०	११ (१-११)	११	२२	पूर्ण	जीण सं० १८८८	इति श्री आद्यपद्धति समाप्त ॥ सवत १८८६ (८) मिति आश्विनवदी २ गुरु वार लिपत गंगाधर पाठ ***
२५७×१०५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति आद्यपद्धति समाप्त ॥ माघकृष्ण ११ भौमव सवत् १६०४ वं शके १७६६॥
२२२×६२ सें० मी०	४० (१-३०, ३३-४२)	८	३१	अपूर्ण	सं० १६२१	इति द पुस्तक आद्यपद्धति समाप्त सवत १६२१ वि० पी० शु १ गुरुवार
१६७×१० सें० मी०	६६ (२-७०)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ सूत्रि वरविधरनासीरसरापाध्य भट्ट मरा- धवात्मज भट्ट रघुनाथ विरचिता आद्यपद्धति संपूर्ण ॥ * * *
२४४×१०६ सें० मी०	२२ (२-२१ ३८-३६)	६	२१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३८	इति आद्य समाप्त ॥ समत १८३८ प्रमादनाम सवत्सरे वैशाख वदश पक्ष- मित दिन समाप्त ॥ (पत्र सं० ३६)
२३३×१०२ सें० मी०	१६ (२२-३७)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५२×६५ सें० मी०	१०	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहाविशेष की मख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रन्थ किन्तु वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६५५	३८२६	श्राद्धपद्धति			१० का०	१०
६५६	$\frac{५७४१}{२}$	श्राद्धपद्धति			१० का०	१०
६५७	१६६६	श्राद्धपद्धति			१० का०	१०
६५८	५१३१	श्राद्धप्रकार			१० का०	१०
६५९	४११८	श्राद्धप्रकाश	हन्द्रदत्तोपाध्याय		१० का०	१०
६६०	३४८७	श्राद्धप्रयोग			१० का०	१०
६६१	४६७४	श्राद्धप्रयोग			१० का०	१०

पत्रा या पत्रा वा प्रकार	पत्रमन्त्र	प्रतिपत्र म पत्रमन्त्र धोर प्रतिपत्र म प्रमन्त्र	पत्रमन्त्र म पत्रमन्त्र म मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	पत्रमन्त्र म पत्रमन्त्र म मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	पत्रमन्त्र म पत्रमन्त्र म मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	पत्रमन्त्र म पत्रमन्त्र म मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८
१६३×६९ सं० मी०	८ (१.५-१०, १०)	४	२८	८८०	प्राचीन	
१८९×१३६ सं० मी०	२	१६	२१	८८०	प्राचीन	
२१७×११२ सं० मी०	५ (१.३-६)	१०	३०	८८०	प्राचीन	
१५८×६३ सं० मी०	३ (१-३)	८	२२	८८०	प्राचीन	
३४४×१३६ सं० मी०	२६ (१-२६)	१०	३१	८८०	प्राचीन	इति श्री आद्यप्रमाणे इन्द्रतोषाभ्या कृते अष्टना भद्राभ्यां सविष्णवे विधि- तृतीय प्रमाणे ३। श्री सत्त्वं १६२७। जप्ट मन्त्रे शुचं पक्षे प्रतिपदा मन्त्र वाचरे विद्वान् रामभरोशन आद्यप्रमाण निरुद्धे ॥
२१७×१०५ सं० मी०	२३ (१-२३)	११	२४	८८०	प्राचीन	श्री नवत १६५० श्रावे १-१५ विष्णु- वगु नाम मन्त्रसरे प्रमातमानेन शापाड वृष्ण ६ पत्र्यां गुरुवासरे श्री धेन वाचरा रामदागराम भट्टा लज्ज रामवृष्ण तैल्लनेन धार्मिक जनमोतल्हादनाया प्रसाप्रदायिकोप आद्यप्रयोगो विधित
२४१×१०१ सं० मी०	४ (१-४)	६	३८	८८०	प्राचीन	आद्य संपूर्णता यावत् प्रसादादभव + + + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमनमत्तया वा सग्रहविज्ञाप की सध्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
६६२	५५७६	आद्यप्रयोग			दे० का०	दे०
६६३	७०१३	आद्यप्रयोग			दे० का०	दे०
६६४	१७१३	आद्यप्रयोग			दे० का०	दे०
६६५	६६१	आद्यप्रयोग			दे० का०	दे०
६६६	५६५८	आद्यविधि			दे० का०	दे०
६६७	१६२२	आद्यविधि			दे० का०	दे०
६६८	५६३६	आद्यविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रमख्या	प्रतिपृष्ठ म रतिमहता और प्रतिपत्ति म अक्षरलक्ष्य	नया प्रथ पृष्ठ है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष या विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अक्ष	व	स	द	६	१०	
२७ ६ X ११ २ सं० मी०	२६ (३-५, ७-१०, १२-१६, २१- ३४, ३६-३७, ३९-६५, ६७)	१०	४०	अपूर्ण०	प्राचीन	*****बर्फ पुराणादौ आढ प्रयोग लिप्यते (पत्र सं० ३)
१७ ८ X ६५ सं० मी०	११ (१-११)	६	२४	अपूर्ण०	प्राचीन	
१७ ४ X ६४ सं० मी०	१० (१-१०)	७	२४	अपूर्ण०	प्राचीन	
१६ ५ X ६६ सं० मी०	१० (१-३, ५-११)	६	२५	अपूर्ण०	प्राचीन	इति आढ मपूर्ण शुभम श्री गणेशा- यनम सीताराम ॥
२१ ८ X ८७ सं० मी०	१० (१-१०)	७	२६	पूर्ण०	सं० १७४५	इति आढ विधि समाप्त शुभमस्तु सदत १७४५ आश्विन वदि १० मंगल वातरे कस्य लिपितमिद***** ॥
२३ ७ X ७ ८ सं० मी०	१	१६	११	पूर्ण०	प्राचीन	
२८ X ११ ८ सं० मी०	१३	१०	३६	अपूर्ण०	प्राचीन	

(सं० ४८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	१४१८	आदिविधि ।			दे० का०	दे०
६७०	२२६	आदिविधि			दे० का०	दे०
६७१	२२३३	आदिविवेक	।		दे० का०	दे०
६७२	४८५१	आदिविवेक	भगवत		दे० का०	दे०
६७३	४४२३	आदिविवेक (प्रतिनिधा)	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
६७४	२१८२	आदिविवेक			दे० का०	दे०
६७५	३४८३	आदिविवेक			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे पत्रसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत- प्रमाण ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	ब	स	द	६	१०
					११
३०६×१३ से० मी०	२४	१२	४२	अपूर्ण	प्राचीन
२७×११७ से० मी०	१० (१-१०)	११	४३	अपूर्ण	प्राचीन
२७५×१०३ से० मी०	३ (१-३)	११	३२	पूर्ण	प्राचीन स० १६३५
२६४×१०६ से० मी०	२० १-३०	८	२६	पूर्ण	प्राचीन इति श्री भट्टोपाध्याय श्री छद्मर कृते श्राद्ध विवेक श्रीनारायणयनम + + + + + + ॥
२५६×१०७ से० मी०	१५ (२६-४३)	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन स० १६१५
२७५×१४२ से० मी०	६७ (१-५१, ५३-६८)	१३	३०	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री कृष्णदत्त प्रकाशिकाया पितृभक्ति- नवापा श्रीद्वंद्वेहीकेति कर्तव्या संपूर्णम् ॥ चैतमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या अतिवासर लिखित दत्तारामेण पठनार्थस्वमात्मने ॥ कृष्णमूलात् मूल ददातु ॥ संवत् १६१५ ॥
२०२×६५ से० मी०	१४ (१-१४)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे पुस्तक श्राद्ध सकल्य समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७६	३४८६	आदिसंस्कृत्य			दे० का०	दे०
६७७	३४८८	आदिसंस्कृत्य			दे० का०	दे०
६७८	३४८८	आदिसूत्र	वात्स्यायन		दे० का०	दे०
६७९	३४९६	आदिसूत्र			दे० वा०	दे०
६८०	४११३	धी वेदावसीर्त्यादि न्यास			दे० का०	दे०
६८१	४३३६	धीनायादिभूतों उद्धार			दे० का०	दे०
६८२	१३९५	धीरापपट्ट पोद्गोप चार घृता विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे परिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रसारसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्ण- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	अ	म द	६	१०	११
२१०×६०२ सें० मी०	१० (१-१०)	३ २६	५०	प्राचीन सं० १८६७	यस्य स्म० आद्य सप्तहस्त समाप्त ॥ सं० १८६७ चैत्र शुक्ल पञ्चम्या समा- पित गदाधर बेतालेन लिखित ॥
२३×६ सें० मी०	१६ (१-११)	११ ४३	५०	प्राचीन	श्री काशी विश्वेश्वरारण्यमस्तु ॥
२१×१० सें० मी०	३ (१-३)	६ ४१	५०	सं० १६३६	इति श्री कात्यायनकृत आद्य सूत्र सप्- तमं ॥ सं० १६३६ चैत्रसिते ३ बुधे बटुकनाथेनास्ति ॥
२४६×११ सें० मी०	४ (१-४)	११ ४३	५०	सं० १६०६	इति कात्यायनमुन्युक्त आद्य सूत्र ॥ सं० १६०६ आबखुददि ७ गुरी मिरजा- पुरे लिखित ॥
२२१×६७ सें० मी०	२ (१-२)	८ ३१	५०	प्राचीन	इति श्री केशव कीर्त्यादि न्यास ॥
२२×१०७ सें० मी०	१ (१-४)	८ ३६	५०	प्राचीन	इति श्रीनाथादिस्लोक उद्धार संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
१४५×८५ सें० मी०	५	६ १८	५०	प्राचीन	इति श्री रामचन्द्र षोडशोपचार पूजा- विधि वसिष्ठ हितायाम् संपूर्ण ॥ श्री रामचन्द्र ॥ सीताराम ॥ सीताराम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमूल्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८३	२३०६	श्रीराम नित्यपूजा पद्धति			३० का०	३०
६८४	७८१७	श्रीराम पद्धति	रामानुजाचार्य		३० का०	३०
६८५	<u>१२८५</u> म	श्रीराम पद्धति	श्री रामानुज		३० का०	३०
६८६	२०२०	श्रीराम मानसपूजा			३० का०	३०
६८७	७२३४	श्रीसूक्त जपविधि			३० का०	३०
६८८	११५६	श्रीसूक्त विधान			३० का०	३०
६८९	६५०२	श्रुतिलक्षण प्रायश्चित्त			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण ता वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
२७६×११३ से० मा०	७२ (१-७२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तत्रे हरगोरी सवादे श्रीराम नित्यपूजा पद्धतिः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१६६×१०२ से० मी०	२१ (१-२१)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १६०७	इति श्रीमद्भामानुजाचार्य कृत श्री राम पद्धति वेदोक्त संपूर्ण ॥ शुभमस्तु माघे मासे कृष्ण पक्षे १२ दशी सं० १६०७ ॥
१७५×६५ से० मी०	२१ (१-२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुजा कृता वेदोक्त श्री राम पद्धति संपूर्ण ॥ श्रीरक्तुक्त्याण- मस्तु ॥
१३४×८४ से० मी०	१४	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहिताया परमहंस्ये श्री अगस्त्य सुतीक्ष्ण सबदे श्रीराम- मानसीपूजा संपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभ ॥ राम...
१४२×८७ से० मी०	११ (१-११)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८३२	इति श्रीसूक्त विधि संपूर्ण ॥ श्री महालक्ष्मी देवतापंथमस्तु ॥ सवत् १८३२ माघ शुद्ध १५ रवौ १६ पुस्तक समाप्तिमस्तु ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं च ॥
१३६×८७ से० मी०	२४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूक्तविधान समाप्त... श्री परमेश्वरपंथमस्तु ॥
२२६×६१ से० मी०	२० (१-२०)	६	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६०	८२६	स्तेपानाति विधि ,			२० का०	२०
६६१	४३३७ ८	पडंग रुद्रजाप्य			२० का०	२०
६६२	७३४६	पडंग " "			२० का०	२०
६६३	३७४५	पडंग " "			२० का०	२०
६६४	१३७६	पञ्चवतीश्राद्ध निर्णय			२० का०	२०
६६५	२०५४	पट्टीका पूजाविधि			२० का०	२०
६६६	६५८८	पट्टीपूजा			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रतिपत्ति में अक्षर-संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आदश्यक विवरण
८ अ		स द	६	१०	११
१६'६ × ६'२ से० मी०	३ (१-३)	७ २३	पू०	प्राचीन	इति श्लेषाशांति विधि ॥
१६ × १३ ३ से० मी०	२१ (५६-७७)	१२ २५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्येपठनं समाप्ता शुभमस्तु ॥
२१'२ × १२ से० मी०	१५	६ २२	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ से० मी०	१६ (१-११, २२-२६)	६ २४	अपू०	प्राचीन स० १८३३सबत् १८३३
२१ × १० से० मी०	८	१० ३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छानुधर गोविंद सूरिस्सन्नो शिवस्य कृतो पद्यावली आद्य निशंयः समाप्त ॥
२०'५ × १० से० मी०	१० (१-१०)	७ २०	पू०	प्राचीन स० १८४१	इति पट्टिमा पुजा समाप्ता शुभमस्तु सबत् १८ से ४१ वेशला चैत्रादि अमावस्य रविवासरे कः लिपत सिद्ध- पारमद पदेके पुस्तक सापुराण शुभमस्तु ॥
२४'६ × १०'५ से० मी०	६ (१-६)	६ ३४	पू०	प्राचीन	इति पट्टी पुजा समाप्ता ॥.....

क्रमानुसार विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रचलित	टीकाकार	प्रथम वस्तु पर लिखा है	निमित्त
१	२	३	४	५	६	७
६६७	५३६२	पट्टी पूजा			दे० का०	दे०
६६८	६६७१	पट्टि पूजा			दे० का०	दे०
६६९	५५८७	पट्टी पूजा विधि			दे० का०	दे०
१०००	६०१	पोडश कर्म			दे० का०	दे०
१००१	२७१	पोडशकर्म विधि			दे० का०	दे०
१००२	५०४७	पोडश पूजा			दे० का०	दे०
१००३	४४४० १०	पोडश पूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रमस्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	८	१०	११
२४१×१० से० मी०	३ (५-७)	६	३१	अपूर्ण	स० १८५७ इति पण्टी पुजन समाप्त शुभमस्तु संवत् १८५७ भाव १७२२ फाल्गुन भासि कृष्ण पक्षे.....
२०५×१०५ से० मी०	३ (१-३)	१२	३४	पूर्ण	स० १८८७ इति श्री पण्टि पूजा समाप्ता ॥ संवत् १८८७ मिति अश्विन शुद्ध ३ सोम- वासरे समाप्त ॥
२५×१२५ से० मी०	६	११	२८	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)
२३×६ से० मी०	२३ (१-२, ४-२४)	१४	४३	अपूर्ण	प्राचीन इति पादक कर्माणि समाप्तानि ॥
२६×१४ से० मी०	६	१२	३१	अपूर्ण	प्राचीन
२५१×१२६ से० मी०	३ (१-३)	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन
१२४×६१ से० मी०	५	६	१६	पूर्ण	प्राचीन इति घोहन पूजा विधि संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संप्रतिविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००४	७७२	षोडशमस्वार पद्धति			३० का०	दे०
१००५	६१७	षोडशसस्वार विधि			३० का०	दे०
१००६	४३१०	षोडशापचार			३० का०	दे०
१००७	५६०६	षोडशापचार			३० का०	दे०
१००८	६३६४	षोडशीप्रकार ध्वजाविधि			नि० का०	दे०
१००९	४५८७	संस्कृत चतुर्थी पूजा			३० का०	दे०
१०१०	६४१४	संलिप्त चवार्चा- प्रतिष्ठाविधि			३० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षिसंख्या और प्रति पक्षि मे अक्षरसंख्या	नया ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स द	१०	१०	१०
२१२×६५ सें. मी०	२२ (२१-४२)	६ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४७×१०४ सें. मी०	३५	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१४×११५ सें. मी०	३ (१-३)	■ १८	पूर्ण	प्राचीन	
१७३×६५ सें. मी०	५ (१-५)	६ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३×१०२ सें. मी०	३ (१-३)	७ ३०	पूर्ण	प्राचीन	इति पांडशोभकारपूजा विधि सहस्र- श्लोका समाप्तम् ॥
१६३×१२५ सें. मी०	६ (१-६)	१० १२	पूर्ण	प्राचीन	सकष्ट चतुर्थि पूजा समाप्त ॥
२१३×६२ सें. मी०	६ (१-६)	१६ ३७	पूर्ण	प्राचीन स० १७५३	इति सक्षिप्त चत्वार्षा प्रतिष्ठाविधिः ॥ "सकट १७५३ समये मार्गशीर्ष शुद्ध ३ शोम तिथिनिमित्त पुस्तक बाध्या विश्वनाथभट्ट सदाहरण ॥"

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविधियों की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकानकार	प्रत्येक वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०११	६६६३	सक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग			३० का०	३०
१०१२	$\frac{७०५५}{४}$	सक्षिप्त सध्या प्रयोग			३० का०	३०
१०१३	५७३१	सक्षिप्त पारिवर्तन विधि			३० का०	३०
१०१४	४२६८	सतानगोपाल विधि	सत्यापाठ		३० का०	३०
१०१५	३३०१	सध्या			३० का०	३०
१०१६	३१०८	सध्या			३० का०	३०
१०१७	$\frac{५३३०}{३}$	सध्या			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रपट्ट्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमण्या ओर प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या	नया अक्षर पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्त मान अक्षर का विवरण	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
३० × ११ ६ सें० मी०	१	१४	३५	पू०	प्राचीन	ततो मूल ज्ञत्वा शिवाय जप समपदे दिति संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग ॥
१३ ५ × १३ सें० मी०	४ (१-४)	१६	१७	पू०	प्राचीन	
१५ ६ × १० ६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपत पार्ष्णिन विधि ॥
२५ ७ × ११ ५ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्यापाठ कृते अनपत्यरक्ष- हर सत्तान गोपाल विधि ॥
२२ ६ × १५ सें० मी०	३ (१-३)	१७	३१	पू०	प्राचीन	इति साय सध्या समाप्ता ॥ × × ×
२६ ४ × ११ ३ सें० मी०	४ (१-४)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति सध्या संपूर्ण ॥
२६ × १४ ७ सें० मी०	७ (१-७)	८	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	१५६१	सध्या			दे० का०	दे०
१०१९	$\frac{६११३}{१०}$	सध्या			दे० का०	दे०
१०२०	१७१६	सध्या			दे० का०	दे०
१०२१	२३६७	सध्या			दे० का०	दे०
१०२२	२२६६	सध्या			दे० का०	दे०
१०२३	६४०१	सध्या			दे० का०	दे०
१०२४	६४४४	सध्या			दे० का०	दे०

पत्रो या पुस्तो या मातार	पत्रमर्या	प्रतिपुष्ट मे नविमर्या पौरप्रतिपति म मर्यामर्या	पत्र संय पुर्ण १० पुर्ण १० मा मात मर्या विमर्या	पत्रमर्या मौर मर्यामर्या	अन्य मातार विमर्या
८८	८	८ ८	८	१०	११
२५.४.११८ सं० मी०	८ (१-८)	७ ३५	५०	प्राचीन सं० १६४९	इति मातमर्या मर्या मर्यामर्या ॥ मर्या मर्यामर्या १६४९ मर्या मर्यामर्या पुर ।
१६.५.११९ सं० मी०	१० (२३-२६)	८ १८	५०	प्राचीन	इति विमर्या मर्या मर्यामर्या ॥
१६.३.१२० सं० मी०	८ (१-८)	१४ १४	५०	प्राचीन	इति मातमर्या मर्या मर्यामर्या मर्यामर्या मर्यामर्या ॥
२२.४.१२१ सं० मी०	८	७ ३०	५०	प्राचीन सं० १६५५	इति श्री यदुवंश मर्या मर्यामर्या मर्यामर्या १६५५ ॥
२७.८.१२२ सं० मी०	६ (१-६)	८ २५	५०	प्राचीन सं० १६९९	इति मर्या विमर्यामर्या : : : : : : : : : : मर्या १६९९ मर्या मर्यामर्या मर्या मर्यामर्या : : : : : ॥
२९.५.१२३ सं० मी०	७ (१-२, ४-८)	६ २२	मर्यामर्या	प्राचीन	इति विमर्या मर्या विमर्या + + + ॥
१५.६.१२४ सं० मी०	४ (४-६)	७ २३	मर्यामर्या	प्राचीन	इति मातमर्या विमर्या मर्या मर्यामर्या मर्यामर्या मर्यामर्या १६६६ के साल मातमर्या मुदि १२ क. विमर्या मातमर्या मर्यामर्या मर्यामर्या श्री विमर्या मर्यामर्या राम मर्यामर्या ॥
(सं० मी० ५०)					

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२५	५२१२	सध्या			३० का०	३०
१०२६	$\frac{७३७७}{३}$	सध्या			३० का०	३०
१०२७	७७६८	सध्या			मि० का०	३०
१०२८	७६७४	सध्या			३० का०	३०
१०२९	६२१६	सध्या			३० का०	३०
१०३०	$\frac{७७४}{४}$	सध्या			३० का०	३०
१०३१	७०२०	सध्या			३० का०	३०

पत्रों का पृष्ठों का माप	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रथम पृष्ठ है? अपूर्ण है तो यहाँ मान प्रथम का विवरण	धवस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८५	९	म द	६	१०	११
१८४ X ८६ से० मी०	१५ (१-१५)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन
६६ X ४१ से० मी०	१२	४	१२	अपूर्ण	प्राचीन
१६१ X ६६ से० मी०	५	७	१६	अपूर्ण	सर्वांशीन
१७५ X ८६ से० मी०	३ (४, ५, १०)	५	१८	अपूर्ण	प्राचीन
१७२ X ८६ से० मी०	३	८	२०	अपूर्ण	प्राचीन
१४६ X ६३ से० मी०	६ (१५-२०)	८	१३	अपूर्ण	प्राचीन
१२३ X ६६ से० मी०	६ (१-६)	८	१२	पूर्ण	प्राचीन

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसख्या वा संग्रहविषय की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	ग्रन्थ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	३८३७	सध्या जप			मि० वा०	३०
१०३३	५०५१	सध्यानर्पणविधि			३० वा०	३१
१०३४	७०७६	सध्या पद्धति			३० वा०	३०
१०३५	६४६	सध्याप्रयोग			३० का०	३०
१०३६	७७११	सध्याप्रयोग			३० का०	३१
१०३७	७०२५ ३	सध्याप्रयोग			३० का०	३०
१०३८	२०५१	सध्याप्रयोग			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमख्या	क्या अक्ष पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.३ × १०.४ सें० मी०	४ (१-४)	३३	२७	पू०	आधुनिक	इति सस्छोत्रप । तीर्थेन निष्क्रम्य ॥
२४.६ × ११.५ सें० मी०	१८ (१-१७, १८)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४.१ × ६.६ सें० मी०	४२ (४६-६१, ६३-१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × ११ सें० मी०	४ (१-४)	६	३८	पू०	१०१८७३	इति श्री मध्याह्नमात्रम् ॥ शुभमस्तु स० १८७३ तत्र वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या चद्रवसरे लिपितम् रामदियाल बम्हणे स्वपठनाय हेतवे
२५.६ × ११.३ सें० मी०	५ (१-५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसपूर्णांम् सीपिहृत मिथ दिवान आवण मासे कृष्णपक्षे तृतीयाया भोमवासर शुभमस्तु श्रीराम चन्द्राय नमः + + ॥
१०.८ × १०.६ सें० मी०	६ (१-६)	७	१७	अपू०	प्राचीन (जोर्ण)	
१४.१ × ६.५ सें० मी०	१० (१-१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसम्पदा वा सप्रतिविशेष की सख्या	अध्याय	प्रथमार	टीकाकार	प्रथम किस्त वस्तु पर लिया है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
१०३६	२११७	सध्याप्रयोग			२० पा०	३०
१०४०	३२६६	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४१	३६६५	सध्याविधि			२० का०	३०
१०४२	२६५६	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४३	$\frac{३६२६}{२}$	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४४	४३३५	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४५	१६१५	सध्याप्रयोग			२० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रमध्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरमध्या		कथाग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	३	स	द	६	१०	११
२०६×११५ से० मी०	६ (१-६)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
१३५×८६ से० मी०	४	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
१५३×१०३ से० मी०	६ (१-६)	१०	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति त्रिकात सध्या समाप्ता ॥ × × × × × × ×
१६५×१०५ से० मी०	६	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
१३४×१५६ से० मी०	११ (२-१२)	६	१३	अपूर्ण	प्राचीन	इति यजुर्वेदी सध्या प्रयोग ॥
१५७×८८ से० मी०	११ (२-६, ११-१३)	१०	१६	अपूर्ण	प्राचीन स० १६२०	लिखित ५ श्री पुजारी कनइया साल मवत १६२० वात्तिवपदि ॥
३१×६४ से० मी०	४ (१-४)	७	४७	पूर्ण	प्राचीन स० १६११	इति सध्या प्रयोग समाप्त सवत् १६११ चैत्र कृष्ण १५ भौमवासरे शु० कपु गणतरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकान्तर्गत की घातसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४६	२००१ ४	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०
१०४७	५६७६	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०
१०४८	७००४ २	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०
१०४९	५०२९ ४	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०
१०५०	७५५६	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०
१०५१	४४३०	सध्याप्रयोग	दिनराजशर्मा		६० का०	दे०
१०५२	५२०८	सध्याप्रयोग			६० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितसंख्या और प्रति पत्रित में अक्षरसंख्या	नया अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
१७५ × १३५ सें० मी०	७ (३-६)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	इति सध्याप्रयोग ॥
१४ × १०८ सें० मी०	८ (१-८)	६	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्याप्रयोग ॥
१२२ × ८२ सें० मी०	११ (१५-२५)	५	१४	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्या सपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
१६५ × ११२ सें० मी०	५ (५-६)	११	२०	पूर्ण	प्राचीन	सध्या समाप्त ॥
२१६ × १२७ सें० मी०	७ (१-७)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	* इति सै कालिक सध्यापमन समाप्तम् ॥ राम सम्बद् १६२१ गायत्री लिपित ** ॥
३३२ × १३४ सें० मी०	२१ (१-२१)	१२	५७	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्याविधानम् ॥
२२४ × ११६ सें० मी०	३ (१६-१८)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
(सं० सं० ४१)						

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५३	६१७१	संख्यामत्त व्याख्या	सद्गोत्री दीक्षित		दे० का०	दे०
१०५४	२७४६	संख्या महाभाष्य पञ्चीकरण			दे० का०	दे०
१०५५	१५४५	संख्याविधि			दे० का०	दे०
१०५६	३८८४	संख्याविधि			दे० का०	दे०
१०५७	४६२८	संख्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५८	४६६५	संख्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५९	<u>७१२७</u> ३	संख्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है ? अवस्था प्रमाण है तो वर्त- मान प्रश्न का प्राचीनता विवरण	अन्य आवश्यक विवरण	
८ ५	८	५ ६	६ १०	११	
२२५×६६ सं० मी०	७ (१-७)	१२ ३२	पू०	प्राचीन	भट्टो जी दीक्षित विरचित सध्या भंज व्याख्यान संपूर्ण ॥
१७×८५ सं० मी०	१२ (१-१२)	६ १६	पू०	प्राचीन	इति परिवाराङ्गना सध्या पक्षीकरण महावाक्यादिक समाप्त ।
११५×६७ सं० मी०	१७ (१-१७)	६ १२	पू०	प्राचीन सं० १७६६	इति त्रिनाल सध्या विधि । सं० १७६६ वर्षे कार्तिक शु ७ शनी लिपित सदा खिब देवेन वदन दुये निमित्त ॥
१६१×१११ सं० मी०	८ (१-८)	१० १४	पू०	प्राचीन	इति जप विधि: सध्याविधि: समाप्त ॥
१४७×१११ सं० मी०	१३ (१-१३)	७ १५	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसमाप्त शुभ राम "
२७६×१२१ सं० मी०	६ (१-६)	७ २४	पू०	प्राचीन	इति श्री सध्याप्रयोग समाप्त ॥
१७×१०६ सं० मी०	७ (१-७)	१६ १२	पू०	प्राचीन सं० १७७६	इति सध्या प्रयोग ॥ शुभभवतु ॥ संवत् १७७६ चैतमुदी २ ॥

क्रमांक और दिवस	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६०	५२६८	सध्या विधि प्रयोग			१० का०	१०
१०६१	३०८०	सध्या विधि प्रयोग			१० का०	१०
१०६२	६६४	सध्या विधि प्रयोग			१० वा०	१०
१०६३	४६८८	सध्या विधि प्रयोग			१० का०	१०
१०६४	५५४३	सध्या विधि प्रयोग			मि० वा०	१०
१०६५	१२४३	सध्या विधि प्रयोग			१० वा०	१०
१०६६	२२८८	सध्या विधि प्रयोग			१० वा०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति म अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूरा? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	॥	१०	१०
२४ × १०.२ सें. मी०	८ (१-८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोग सम्पूर्णम् ॥
१५.७ × १०.३ सें. मी०	८	८	१८	पू०	प्राचीन	इति सध्या विधि प्रयोग समाप्त ॥ शुभ भूयात् । श्रीरामायनम् ॥
२२.८ × ११ सें. मी०	४	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १३.४ सें. मी०	११ (१-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सध्या समाप्त ॥
२० × ८.२ सें. मी०	६ (१-६)	७	२५	अपू०	प्राचीन	*** अक्षर सध्या प्रयोग***** (आदि)
२१.१ × ६.४ सें. मी०	४ (१-४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२१.८ × ६.५ सें. मी०	६ (१-६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६७	६७७३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६८	४६६४	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६९	४५१७	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७०	<u>१२८३</u> ८	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७१	४६६१	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७२	३३०३	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७३	१२१३	संध्योपासन			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पविनसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो अक्षर मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	१०	११	
१७२४८६ से० मी०	६ (१-६)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन स० १६०६	इति विसर्जनम् इति + + + + + सध्याविधि प्र० समाप्ता शुभमस्तु सवत् १६०६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्षा + + + ॥
१४६४७६ से० मी०	२५ (१-२५)	५	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति सन्यासस्य सध्याविधि समाप्त ॥
२५२४१०४ से० मी०	१४ (२,२-१४)	७	३३	अपूर्ण	प्राचीन	इति सायशध्या अपूर्ण ॥
१७५४६५ से० मी०	६ (१-६)	७	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति सामगात्रिवेदिकाल सध्यापासन समाप्त ॥ १७॥ ६॥ ॥ ॐ ॥
२२६४८५ से० मी०	८ (१-८)	७	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति त्रिकाल गायत्री विधि समाप्त ॥ + + + + + ॥
२१७४१० से० मी०	५ (२-६)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति सामधाना सध्यापासनम् ॥
१४८४८५ से० मी०	१० (२-११)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	१८५१	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७५	२६२०	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७६	२४६६	संन्यास पद्धति			दे० का०	दे०
१०७७	३७०१	(आतुर) संन्यासविधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७८	७२३६	संस्कार पद्धति			मि० का०	दे०
१०७९	२३६८	संस्कार विधि			दे० पा०	दे०
१०८०	६२४१	संस्कार विधि (वर्षाधान से अन्नप्राशन तक)			दे० पा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिगणना और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	८	८	८	१०	११	
११'५'८ से० मी०	१४	८	११	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति संख्या संपूर्ण समाप्त ॥ संवत् १८५३ भाद्र पद यदि प्रादित वार ॥ १० ॥
१५'७'५ से० मी०	६ (१-६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२३'४'५ से० मी०	३६ (१-३६)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२३'७'५ से० मी०	४ (१-४)	८	२८	पू०	प्राचीन	अथ मातुर सन्यास विधि समाप्तः ॥
२२'५'५ से० मी०	४७ (१-८, १५-५३)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८६४	सरस्वतीं बुध चैव कुर्वे सस्वार पठति ॥ (प्रारम्भ) + + + इत्यर्कविवाह ॥ संवत् १८६४ सके १६५(?) भाद्रपद १० शुभवासरे दोषतोषनामक बाला श्री नामकेन लीखित स्वार्थ परार्थ च इय देव नाशि.....
२३'२'५ से० मी०	३४	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
१६'५'३ से० मी०	२५	६	२१	पू०	प्राचीन	
(सं०सू०५२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१०८१	६३५८	सत्स्कारविधि (चोलकर्म, नायकरण, निष्क्रमण, भद्रप्राशन आदि)			६० का०	६०
१०८२	२४१८	सत्स्कारविधि			६० का०	६०
१०८३	२१८५	सत्यनारायण पूजाविधि			६० का०	६०
१०८४	१८७८	सत्यनारायण पूजाविधि			६० का०	६०
१०८५	६२१	सपिंडकर्म			६० का०	६०
१०८६	३८६१	सपिंडी			६० का०	६०
१०८७	४७४१	सपिंडीकरण			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का आन्तर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६४×८४ से० मी०	१४		३२	पू०	प्राचीन	
३२६×१३३ से० मी०	III (१३४- १३६, १४१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
१७५×१०३ से० मी०	५,	८	२५	पू०	प्राचीन	
२२६×१३२ से० मी०	३ (१-३)	१०	२४	अपू०, कमिकृतित	प्राचीन	इति प्रार्थना ॥०॥
१६×१३ से० मी०	३६ (१-६, १२-४१)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	इतिसपिदि कमं समान्म ।
१११×८३ से० मी०	२ (१-२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति वाराहेपिडकल्पे भगवच्छास्त्रे ॥
१६१×६८ से० मी०	४१ (१-४१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति सपिदि करणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	३६०७	सपिंडीकरण विधि	गोपमणि मिश्र		गि० का०	१०
१०८९	३४७९	सपिंडीकरण आद्य			१० का०	१०
१०९०	१०९२	सपिंडीकरण आद्य पद्धति			१० का०	१०
१०९१	४९९४	सपिंडीकरण आद्य पद्धति			१० का०	१०
१०९२	५२२९ ४	सप्तशतिका पूजा पद्धति			१० का०	१०
१०९३	५८०५	सप्तशती पाठविद्या			१० का०	१०
१०९४	८९६	सरोजमलिता			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या शेष पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
घ अ	ब	स द	६	१०	११
२२५×११४ से० मी०	१८ (१-६, ८-६, १२-१४, १६-२२)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री मत्स्यहित घोषमणि मिश्र कृताया श्रेष्ठप्रकाशिकाया निरग्निको... हिक क्रिया संपिडीकरण विधि समाप्त शुभभवतु सवत् १६२२ चैत्र मासे शुनल पक्षे तिथौ त्रयोदश्या ॥
२१७×१०६ से० मी०	१८ (५-१७, १६-२०, २२-२४, २६-२८)	१० ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति संपिडीकरण आद्य सपूर्ण ॥ सवत् १६० चैत्र शुक्ला चतुर्थी शनि- वासरे तिजत पंचौली महताव सिंह स्वात्म्य पठनार्थ शुभ भूयात् ॥
३२५×१२७ से० मी०	४७ (१-४७)	१० २६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६३७	इति संपिडीकरण आद्य पद्यति समा- प्तम् ॥ सवत् १६३७ ॥ शके १८०२ ॥ मिति... सखित फिकिरवद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ रामायणम् ॥ लक्ष्मणाव- नम् ॥
२५४×१०७ से० मी०	२२ (१-३, ३-४ ४-५, ५७, ६, ११-२१)	६ ३०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति संपिडीकरण आद्य पद्यति ॥ श्री- रस्तु ॥ सं० १६०४ कार्तिक वदि ६ ॥
१६५×११२ से० मी०	२	७ १४	पूर्ण	प्राचीन	सप्त सतका पूजा पद्यत समाप्ता ॥ १॥
१५६×६८ से० मी०	३ (१-३)	१० १७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३१×१३१ से० मी०	१४ (१-१४)	११ २६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८२८	इति मंथिल निबन्धे सरोज कलिका समाप्ता ॥ सवत् १८५८ ॥ पोष कृष्ण पक्षी शनौ यात-प्राप्ते ॥ शुभम् ॥

क्रमिक क्रोर विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सद्रुचिबोध की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०६५	४००१	सर्वसंस्कार विधान			दे० का०	३०
१०६६	३८२७	सर्वकर्मसाधारणपद्धति	देवभद्रपाठक		३० का०	३०
१०६७	४४३४	सर्वकर्मस्वनिर्णय	कमलाकर भट्ट		३० का०	३०
१०६८	४१६८	सर्वतोभद्रदेव स्थापन			मि० का०	३०
१०६९	७६३२	सर्वतोभद्रपूजन			३० का०	३०
११००	३३०७	सर्वतोभद्रपूजनम्			३० का०	३०
११०१	२२४२	सर्वतोभद्रपूजनम्			३० का०	३०

पत्रो वा पृष्ठो वा आधार	पत्रमन्त्रा	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमन्त्रा कोऽन्ये पत्रि मे प्रप्रसक्तम्	क्या संव पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कत- मान घन वा विवरण	धवरणा ओर प्राचीनता	अन्य धावश्यक विवरण
८ अ	६	म द	६	१०	११
२१×६ सं० मी०	२ (१-२)	१० ४३	पू०	प्राचीन	सर्व संस्कार विधान ॥
२३×१००४ सं० मी०	२५ (१-२५)	६ ३६	पू०	प्राचीन सं० १६१२	इति श्री मगधायज्ञिक नागर शास्त्रीय पाठन श्री रामचन्द्र मूनु गगाधर पाठक वना समूत पाठक श्रीवसुधामज देवभद्रवृत्त सर्वकर्मसंधारणाग पद्ध- तिर समान्ता । सवत् १६१२ मिति ज्यैष्ठ्य वदी ५ रविवार लिखत ॥
१८०×१००० सं० मी०	६ (१-६)	६ २०	अपूर्ण	प्राचीन	इति रामचन्द्र मगधायज्ञिक कमलाकर भट्टे कृतो सर्वकर्मसंस्वर्गनिर्णयः ॥ शुभ- मस्तु ॥
३२×१००० सं० मी०	१ (घर्षा)	३३ १८	पू०	आधुनिक	
२२×१० सं० मी०	४ (१-४)	१० ३३	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभदेवता ॥
३१×१३ सं० मी०	१० (१-१०)	१० ४०	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति सर्वतोभद्र पूजनम् श्री तत्सत् सवत् १६०४ मार्गशुक्ला ५ रवो लिखत ६
३१×१६१ सं० मी०	१२ (१-१२)	६ २६	पू०	प्राचीन सं० १६१३	इति सर्वतो भद्रपूजनम् श्रीम् तत्सत् सवत् १६१३ आषाढ कृष्णः.....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११०२	५३६४	सर्वतोभद्रपूजन विधि			१० का०	१०
११०३	२८२६	सर्वतोभद्रमठल पूजाविधि			१० का०	१०
११०४	७५८८	सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र			१० का०	१०
११०५	६७४१	सर्वदेवता प्रतिष्ठा विधि			१० का०	१०
११०६	$\frac{३१५}{२}$	सर्वदेवपूजन प्रकार			१० का०	१०
११०७	८२५	सर्वदेव प्रतिष्ठा			१० का०	१०
११०८	६७५४	सर्वपूष्ठाप्तोपमिस्यप्रयोग			१० का०	१०

पत्नी या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या शय पूरा है? अपूर्ण है तो वन मान ग्रस का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
प.स.	व.	स	द	ह.	१०	११
२८५X१२४ सं० मी०	४ (१-४)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति सर्वतोभद्रपूजनविधि समाप्त शुभ- मस्तु सवत् १६२६ साल ॥ मोती मार्ग शिर्ष शुक्ल ६ ॥ रविवासरे ॥
२४७X१५६ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं० १६१५	इति सर्वतोभद्रमङ्गल पूजा विधि समाप्ता ॥ आवृत्ते अक्षिते पञ्चम्या भृगुवासरे ॥ शुक्लपक्षे दुर्गमा १६२५ लिख्यते पूजनमया ।...
२३७X१०६ सं० मी०	६ (१-६)	११	३७	पू०	प्राचीन सं० १६७४	इति सर्वतोभद्र लिङ्गतोभद्र समाप्त ॥ सवत् १८७४ शके १७३६ सर्व धारिणा सवत्सरे भाद्र पद मासे शुक्लपक्षे + +
२१४X१० सं० मी०	७ (१-२)	११	४०	पू०	प्राचीन	लिङ्गतोभद्र देवता समाप्ता ॥
१७७X११८ सं० मी०	४ (१-४)	१५	१२	पू०	प्राचीन	इति सर्व देव पू०
२६७X११३ सं० मी०	७० (१-५१ ५१-६६)	६	४४	अपू०	प्राचीन	
२४१X६ सं० मी०	७ (१-७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	यज्ञ पूछादि सब मति रात्रवत अन्तोर्मा मेव यस्मिन् शब्दवाग्निमवति एषा तृप्ति सर्वस्तोमस्य त्वं पूछास्तोमीमस्य समाप्ता ॥

(सं० पू० ५३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०६	६७६०	सर्वपुष्ठाप्तोर्ध्वमस्यो क्षयत एषाम्			दे० वा०	दे०
१११०	६५१५	सर्वपुष्ठांष्टि होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
११११	६५०६	सर्वपुष्ठांष्टि आध्वर्यव प्रयोग			दे० का०	दे०
१११२	४७३७	सर्षपाश्वरिचत प्रयोग			दे० का०	दे०
१११३	६२३८	सर्वस्तोम सर्वपुष्ठाप्तो र्ध्वमस्य ब्राह्मणाञ्छमी प्रयोग			दे० का०	दे०
१११४	६१३ ३	सर्वेषा वरुणानीं शुद्धा- मृदि			दे० वा०	दे०
१११५	३६८४	सहस्रचर्या (होम) विधान			दे० वा०	दे०

पत्रो मा पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे पत्रसंख्या	क्या ग्रन्थपूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ८	८	८ ८	८	१०	११
२०८५८८ सं० मा०	१७ (१-१६)	७ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति सर्वपृष्ठाप्तोर्ग्रन्थस्योक्त्यतः प्रयोगः ॥
२२३५८९ सं० मा०	४ (१-४)	८ ३४	पूर्ण	प्राचीन	इत्यादिबलादुक्त सर्वपृष्ठोद्दिष्ट प्रयोगः समाप्तः ॥ ...
२३५८९ सं० मा०	५ (१-५)	१० ३८	पूर्ण	प्राचीन	इति सर्व पृष्ठोद्दिष्टाद्यर्थे प्रयोगः ॥
२०३५७५ सं० मा०	६ (१-६)	७ ३६	अपूर्ण	प्राचीनग्रन्थ सर्व प्राप्यमित प्रयोगः ॥ (प्राप्त) X X X
२३९५८७ सं० मा०	११ (१-११)	८ ३३	पूर्ण	प्राचीन	सरोयवमात्रिण्यः ॥ सर्वस्तोम सर्व- पृष्ठाप्तोर्ग्रन्थस्य आहो ॥
१६३५९३ सं० मा०	२ (१-२)	१४ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२५६५८८ सं० मा०	१	७ ३६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११६	२६६०	सहस्रशीर्षा			३० बा०	३०
१११७	६३७३	सागमडलपद्मान अनु- ष्ठान पद्धति प्रयोग			३० का०	३०
१११८	५४४०	सावत्सरिक श्राद्ध			३० का०	३०
१११९	५८१३	सार्पिण्ड्य प्रदीप	नाथोजीभट्ट		३० का०	३०
११२०	४७२०	साम सप्त्या			३० का०	३०
११२१	५४८५	सासाकर्म			३० का०	३०
११२२	७२०	सावित्रीव्रतकप्रोद्योषन			३० बा०	३०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे प्रतिसंख्या और प्रति पंक्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या गुण पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वह मान प्रक्ष का विवरण	ग्रन्थनाम और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
सं. अ.	व.	सं. द.	६	१०	११
२२४×८६ पं० मी०	८ (२-३, ७, ८ १२-१४)	६ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री सहस्रगोर्पा सपूर्णम् ॥ सुम- मस्तु राम ॥
२०८×२८ सं० मी०	७ (१-७)	१० ३८	पूर्ण	सं० १८२६	इति श्री महद्गुणध्यान गीतवानुसारी साध मडल पवमानानुष्ठान पद्धति प्रयोग समाप्त । इदं पुस्तक सदा सदाशिवकवीश्वरेणा पीप शुद्ध पीण- मास्या लिखित ॥ सवत् १८२६ मिति ॥
२१×७८ सं० मी०	६ (१३-१८)	७ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	इति सावस्तरीक धाद प्रयोग ॥
२८७×१२१ सं० मी०	१६ (१-१६)	११ ४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८१०	इति श्री मत्कालोपनाम शिव भट्ट सुत सतीशभज नागोजी भट्ट कृत सापिंड्य प्रदीप समाप्त शुभमस्तु । सवत् १८१० मूर्ति सावनवदि भगवत्स्य १५
१७७×११ सं० मी०	३ (१८-२०)	७ १८	पूर्ण	प्राचीन	
२२८×२४ सं० मी०	३ (१-३)	७ ४०	पूर्ण	प्राचीन	इति सात्ता समाप्तम् ।
३४४×७७ सं० मी०	१४ (१-१४)	८ ३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७८	इति श्री भविष्योत्तर पुराण कृष्ण युधिष्ठिर सवादे बट सावित्री वत कपो- दापन समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आयतनसंख्या या सप्तहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११२३	६११२	सिद्धिविनायक- पूजाविधि			दे० का०	दे०
११२४	५३३६	(श्री) सूक्तविद्यान			दे० का०	दे०
११२५	१२२६	(श्री) सूक्तविद्यान पुरावरण			दे० का०	दे०
११२६	$\frac{४७२०}{३}$	सूक्तोक्त प्रातः सध्या	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
११२७	$\frac{४७२०}{३}$	सूक्तोक्त मध्याह्नसध्या			दे० का०	दे०
११२८	४७४४	सूक्तोक्त आद प्रयोग			दे० का०	दे०
११२९	४१६५	सूक्तोक्त आद सकल्प			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिमस्या और प्रति पङ्क्ति म प्रक्षरसंख्या	क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वत- मान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ प्र	८	स द	६	१०	११
२४१ × १० ६ सें० मी०	७ (१-७)	७ २४	५०	प्राचीन	इति वरद चर्मी सिद्धि विनायक पूजा विधि समाप्त ॥
२२२ × ७४ सें० मी०	४ (१-४)	८ ४८	५०	प्राचीन	इति श्री सूक्त विधान सपूर्ण ॥
२१५ × ८६ सें० मी०	५ (१-५)	१० ३०	५०	प्राचीन	इति श्री सुक्तस्य विधान पुरश्चरण प्रकार शुभमवदु ॥
१७७ × ११ सें० मी०	११ (१-११)	७ १८	५०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त प्रात सध्या समाप्त ॥
१७७ × ११ सें० मी०	६ (१२-१७)	७ १८	५०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त मध्याह्न सध्या ॥
२४८ × ११ २ सें० मी०	३ (१-३)	१२ ३६	५०	प्राचीन	समाप्तोय सूत्रानुसारी दश श्राद्धप्रयोग ॥ श्री सीनाराम चद्र ॥
२१५ × ६ सें० मी०	३ (१-३)	१२ ३६	५०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त याद सकल्प ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आयतनसंख्या वा समग्रविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
११३६	६३२६	सौमभस्यविवेक			दे० का०	दे०
११३१	६३११	सौमभस्यविवेक			दे० का०	दे०
११३२	६७००	सीतामणि प्रयोग			दे० का०	दे०
११३३	६७३३	सीतामणी होम			दे० का०	दे०
११३४	६२७६	स्नान			दे० का०	दे०
११३५	२६६१	स्नान मंत्र			दे० का०	दे०
११३६	२०६	स्मातनमनुष्ठान	मधदेव भट्ट		दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति में अक्षरसंख्या	क्या श्रय पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	व	स द	ह	१०	११
२०८×८६ से० मी०	११ (१-११)	६ ३२	पू०	प्राचीन स० १८८८	संवत् १८८८ शुभ कृत् नाम संवत्सरे मिति वैशाख व १० गुरुवार ॥
१८६×८४ से० मी०	३ (१-२)	६ २८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमे आश्वलायनाना सोम शक्त विवेक ॥ + + +
२१६×६ से० मी०	३ (१-३)	८ २७	पू०	प्राचीन	इति सौतामसि प्रयोग ॥
२४×१०३ से० मी०	३ (१-३)	६ ३५	पू०	प्राचीन	
२१६×१०८ से० मी०	६ (३-५, ८-१०)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७५×११२ से० मी०	२ (१-२)	७ २८	पू०	प्राचीन	इति स्नान मंत्र ।
१६×८७ से० मी०	१८ (१-१८)	८ १६	पू०	प्राचीन	इति पिठ पितृ यज्ञ ॥ समाप्त ॥
(सं० सू० ५४)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आयनसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११३७	६७६	ॐ स्मार्तपदार्थ संग्रह (गङ्गाधरी)	गङ्गाधर भट्ट	-	दे० का०	दे०
११३८	६६१२	स्मार्तपाकसंग्रहयोग	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
११३९	६३७४	स्मार्त प्रायश्चित्त	दिवाकर		दे० का०	दे०
११४०	४६९९	स्मार्तसंग्रह कारिका (प्राधान्य पद्धति)	गङ्गाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११४०	७६४५	स्मार्तान्धनुषमन प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
११४१	४१०९	स्वप्नि वाचन			दे० का०	दे०
११४०	४३०८	स्वप्नि वाचन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षिमध्या और प्रति पक्षि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२५.५ × ११.५ सें० मी०	५०	१०	३६	पू०	प्राचीन स० १६८४	इति मयाधरी पुस्तक मिद सपूर्ण ॥ संवत् १६८४ वर्षे आण्डे बदि ५ रबी लेख ॥
२३.२ × १०.२ सें० मी०	२४ (१-२४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री महागोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनना द्योतिमाननेन सर्वो- पकाराय वशिष्टासमक्षश्रवणामर्मा खापाक सप्रयोग समाप्त ॥ ***
२१ × ६.४ सें० मी०	६७ (१-६७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्नालोपनामक भट्टरामेश्वरा स्मय भट्ट महादेव द्विज वयं सनु भट्ट दिवाकर विरचित स्मातं प्रापश्चितानि प्रयोग रूपेण नित्यनैमित्तिक प्रापश्चित- निकारिवाद्युक्तानि निरूपितानि ॥ इतिस्मात् प्रापश्चित समाप्त ॥
२७.४ × ११.१ सें० मी०	५४ (१-५४)	६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मयाधरीभट्टविरचितेस्मात्- पदार्थ सग्रहेमणिवाक्यानसमाप्त ॥*** (पत्रसंख्या ६) प्राधान्यपद्धतिकुर्वे स्मात् सग्रह कारिका ॥१॥ (प्रारम्भ)
२७.२ × ११.४ सें० मी०	४ (१-४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति स्मातान्यनुगमन प्रापश्चित समाप्त ॥
१६ × ६.१२ सें० मी०	१० (२-११)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०.१ सें० मी०	७ (१-२, ४-८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमहत्वा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११४४	७०३६	स्वस्त्ययन			दे० का०	२०
११४५	५६३६	स्वाहाप्राण			दे० का०	२०
११४६	५४३	हसविधानार्थम्			दे० का०	२०
११४७	७१७०	हनुमत्प्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	२०
११४८	६६४७	हरिवंशप्रकरणविधि			दे० का०	२०
११४९	५०८२	हरिसमाराधनासार सग्रह	रामप्रसाद		२० का०	२०
११५०	४६१२	हरिसमाराधनसार सग्रह	रामप्रसादविषय		२० का०	२०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत मध्या या संश्लेषण की मर्यादा	संयोजनाम	प्रकाशक	टीकाकार	प्रथम निबन्ध बन्धु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११५१	८६६६	हरिगमाराधनसारसंग्रह	रामप्रसादमिश्र		२० का०	२०
११५२	१४०१	हरिस्मृति			२० का०	२०
११५३	३५२४	हवनपद्धति			२० का०	२०
११५४	४७४६	हिरण्यभाद्र प्रयोग			२० का०	२०
११५५	४६३७	होम			२० का०	२०
११५६	६७५६	होमचिन्तामणि			२० का०	२०
११५७	५३०	होमपद्धति	शीलबोदर		२० का०	२०

प्रमाण और विषय	पुस्तकानाम की प्रायतमग्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५८	२७४४	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११५९	४३२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६०	६७७	होमपद्धति	सम्बोद्ध		दे० का०	दे०
११६१	५०२६	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६२	७८६८	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६३	३०२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६४	४६८४	होमपद्धति			दे० का०	दे०

पद्यो या पृष्ठो का आवार	पत्रसंख्या	प्रतिपद्य म पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति म आक्षरतकना	क्या ग्रंथ पूरा है? अपूरण है तो वर्तमान अंग का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण	
क	ख	ग	द	६	१०	
२१७×१२६ सं० मी०	२८ (१-२८)	६	२३	पू०	प्राचीन नं० १८६५	इति रूपनारायण होमपद्धति समाप्त शम भूयात् ॥ मदन १८६५ शके १७३० वीप शुक्ल नवम्या सोमवासरे पुस्तक लिखित मिश्र पुमान राम श्री श्रीराम चंद्राय नमः ॥
३०५×१२६ सं० मी०	५ (१-५)	१४	४६	पू०	नं० १६१३	सं० १६१३ आषाढ कृष्ण १३ तिथि मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनाय श्री सत्सत् ॥
२६६×११५ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	३६	पू०	प्राचीन नं० १६३५	इति श्री लम्बोदर विरचित होम पद्धति समाप्तम् सवत् १६३५ चैत्र कृष्ण ६ रविवारसरे लिखित गया सहायेन अहीनना मध्ये इदं पुस्तक संपूर्णोक्त शरद्वयतु शुभा ददातु ॥
२४×१०३ सं० मी०	२ (६-१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
१७८×१३५ सं० मी०	२०	१२	१६	अपू०	प्राचीन नं० १८६५	इति श्रीवृत्तांतृति होमग्रन्थ पद्धति समाप्ता ॥ मोता ज्येष्ठ शुदि २ तबत् १८६५
२४१×१०२ सं० मी०	१५	३०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×१२ सं० मी०	१६ (६५-११३)	६	३१	अपू०	प्राचीन (जीम)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६५	५२९७	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६६	२४२८	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६७	७५९६	होम विधि			दे० का०	दे०
११६८	५२४९	होम विधि (कुशकटिका)			दे० का०	दे०
११६९	७३११	होम विधि			दे० का०	दे०
११७०	७७४५	होम विधि			दे० का०	दे०
११७१	६४६५	होम प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्ती या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में प्रक्षरसंख्या	क्या श्रवण पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान श्रवण का विवरण	श्रवण और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द श	घ	स द	ह	१०	११
२१'५ × १२'४ सें. मी०	५ (१-३, ५-६)	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ × १०'३ सें. मी०	८ (१-६, २७, २८)	१२ ३५	पूर्ण	प्राचीन	
३०'६ × १४'७ सें. मी०	४५ (१-४५)	११ ३१	पूर्ण	सं० १६३६	इति श्री होम समाप्त सवत् १६३६ के शाल.....
२३'२ × १८ सें. मी०	४ (१-४)	६ ४०	पूर्ण	प्राचीन	इति होम समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १२ सें. मी०	१० (१-१०)	१० ३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२६'१ × १०'३ सें. मी०	१० (१-१०)	४२ ३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२'६ × १०'४ सें. मी०	८	■ ३२	पूर्ण	प्राचीन	अथ पशुवध होत्र प्रयोग ॥ (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
कोश १	१७६८	अनेकाक्ष ध्वनि मञ्जरी	दासगुप्त		दे० का०	दे०
२	४५२८	अनेकाक्ष ध्वनि मञ्जरी	क्षपणव		दे० का०	दे०
३	५५६६	अनेकाक्ष ध्वनि मञ्जरी			नि० का०	दे०
४	४४८७	अनेकाक्ष मञ्जरी (१-४ अध्याय)			दे० का०	दे०
५	६०६६	अनेकाक्ष मञ्जरी			दे० का०	दे०
६	३४७६	अभिधान चिन्तामणि	हेमचन्द्र		दे० का०	दे०
७	११७६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२३५×१०५ सें० मी०	६ (४-६)	१३	४०	अपूर्ण	सं० १८७४	इति श्री काशमीरणांमयेमहाक्षपणक विरचिते अनेकायध्वनिमज्ज्या पदाधिकार काड शुभमस्तु ॥ सवत् १८०७४ ॥
२३२×११६ सें० मी०	॥ (१-६, ८)	११	४८	अपूर्ण	सं० १८६६	इति श्री काशमीरणांमयेमहाक्षपणक विरचिते अनेकायध्वनिमज्ज्या तृतीयाधिकार प्रथमकाड । (पत्रसंख्या-४) × × × इति अनेकार्थे ध्वनिमज्ज्या तृतीयाध्याय ३ सवत् १८६४ वैशाख मास कृष्णपक्षे सप्तम्या बुधवासरांन्विताया लिखित मिश्रमहतावसिह स्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु ॥
२१×१११ सें० मी०	६ (१-६)	११	४०	पूर्ण	प्राथमिक	इत्यनेकाध्वनि मज्ज्या द्वितीय काडो ध्वनि काधिकार साग एव संपित ॥ अनेकाय काय समाप्त " " " "
२७'८×११४ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	३२	पूर्ण	सं० १६१४	इत्यनेकाध्वनिमज्ज्या एकाक्षराधिकार श्वतुर्थोऽध्याय ॥ ४ माघमास शिवेपक्षे श्वतुर्थीसामवासरेस्वलिपिस्वामपाठार्थ बडवलोनगरस्थित १ सवत् १६१४ मंगल सखकानाच पाठकानाचमंगल
२२२×६७ सें० मी०	१५ (१, ३-१६)	८	३४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री लिप्यशासन समाप्त ॥ महाशब्दापनामन गदाधर भट्टन माघे सति शुक्ल पक्षे चम्या लिखित ॥
३०×१०६ सें० मी०	२५	१४	५४	अपूर्ण	खंडित सं० १७६६	इत्यनेकाय श्री हेमचंद्र विरचितायामभिधान त्रितामणो नाममात्राया सामान्य काड पट्ट समाप्त ॥ सं० १७६६ वर्ष
२५७×११६ सें० मी०	(४६, ६४-६६, १०६)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	अथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
८	३०६४	अमरकोश (नामलिगानुशासन- भूमिकाद)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
९	७४९	अमरकोश			दे० का०	दे०
१०	७७५	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
११	८५१	अमरकोश (स्वरादिकाद) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	श्रीर स्वामी भट्ट	दे० का०	दे०
१२	८६६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१३	४३०७	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह	मानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
१४	४३८२	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति म अक्षरसंख्या	क्या अक्ष पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	६	स द	१०	१०	१०
२२८×१०५ से० मी०	२१ (२२-४२)	११ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिङ्गानुशासने ॥ भूमिकाण्डो द्वितीयाऽथ साङ्गएव समयित ॥ तपसि शुक्लदले चतुर्दश्या कुजे दिने समाप्तोय द्वितीय कण्ड लिखितमिद शुद्धपालेनेति शिवम् ॥
२१६×१०३ से० मी०	६०	६ २८	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिङ्गानुशासने*** ***एव समयितः ? ॥
२२२×१०४ से० मी०	२१	६ ३०	पूर्ण	सं० १६३७	इत्यमरसिंह कृती नाम लिङ्गानुशासने- स्वरादि कांड प्रथम १ सागएव समयित आषाढमासे कृष्ण पक्ष द्वितीया गुरुवासरे लिखित रामप्रसादेन पुस्तक बुद्धि दायक सबत् १६३७, राम राम
२७५×११३ से० मी०	५२ १,१-५३	११ ४०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भट्ट क्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमर- कोशीदघाटने स्वर्गादि कांड प्रथम समाप्त ॥***
२६७×१०१ से० मी०	६० (२-८०, ८४-६४)	७ ३७	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७०२	इत्यमरसिंह कृती नाम लिङ्गानुशासने कांड तृतीय सामान्य सागएव सम- यित शुभमस्तु शुभदिने ॥ सबत् १७०२ समये आषाढ सुदि प्रतिपदा गुरुवासरे ॥
२६६×१०८ से० मी०	१०२ (१-८६, १-१६)	११ ४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री वधेल वशोदयव श्री मैहर विषयाधिप श्री कीर्ति सिंह देवातया श्री भट्टो जी दोक्षितात्मज श्री भानु जी दोक्षित विरचितायाममर टीकायां व्याख्या सुधाख्याया पानातमोगिर्य विवरण समाप्त ॥ (पृ० ७१)
२४५×६६ से० मी०	८३ (२६-३८, ४०-४४, ४६-४६, ५६, ६६- ७८, ८०- १०७, १०६ -१२३)	६ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिङ्गानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीय सागएव समयित शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसध्या या सप्रविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	७५७०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१६	४३८४	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१७	१३०२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१८	१६०२	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	मानु दीक्षित	दे० का०	दे०
१९	१८०७	अमरकोश (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२०	४२२६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२१	४१३०	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	नया ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२५.५ x ६.६ सें. मी०	६१ (१-६, १२-६३)	८ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६.८ x १३.६ सें. मी०	३३ (१, ६-३५, ३७-३८)	६ १५	अपूर्ण	प्राचीन	
१५.६ x १२ सें. मी०	४५	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
३३.७ x १५.४ सें. मी०	४१ (१-४१)	११ ५७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कपिलवंशोद्भवश्रीमहीधर विद्य- याधिय श्री सिंहदेवशाया श्रीमहोदय- विरचितमज श्री भानुदीक्षित विरचिताया- ममरटीकायाव्याख्या मुख्याध्याप्रथमः कांड संपूर्णतामगमत्***
२८.६ x १२.१ सें. मी०	१३ (१-१३)	११ ३८	पूर्ण	प्राचीन स० १८८६	इति श्री रामरावायं कृतौ प्रथमकांड समाप्त ॥ सवत् १८८६ मिति माघ कृष्ण सप्तम्या तिथी कृत स्थानेश्वर नगरमध्ये ॥
२५.१ x ११ सें. मी०	५	१० ३२	अपूर्ण	प्राचीन (वर्द्धित)	
२५.८ x ११.१ सें. मी०	११ (८५-६५)	८ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	
(सं०सू०५६)					

अभाव और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	अवधार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२२	४२२८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२३	२७४६	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२४	३५२३	अमरकोश			दे० का०	दे०
२५	३५३०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२६	३६४७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२७	४०२१	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२८	२५४६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द घ	ब	स द	६	१०	११	
२३७ X ६ सें० मी०	४४ (११३, १६-१८, १८-२३, २३, २४, २४-३२, ३४-३५, ३७, ३८-४३, ४५-४३, ४६-५६३-६५)	३	२८	अपूर्ण०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण) (खदित)	समाहृतान्यतत्राणि सक्षिप्तं प्रति संस्कृतं ॥ सपूर्णं मुख्यते वर्गनामलिगा-नुशासनम् ॥ २ ॥ (प्रारम्भ)
२५२ X ११ सें० मी०	३४	८	३७	अपूर्ण०	प्राचीन	
२४६ X १० ६ सें० मी०	२६ (१२-४३, ४४-६१, ६५-६६, ६७-६८)	७	३२	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२१ X ८ ३ सें० मी०	५५ (१-५५)	७	३६	अपूर्ण०	प्राचीन म० १६०८	इत्यमरमिह कृतौ नाम लिखानुशासने भूमिकादो द्वितीयोय सागएव सम-यित ॥ २॥ समाप्तीयो द्वितीय वाड ॥ संवत् १६०८ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ ॥
२२६ X ११ १ सें० मी०	२८ (१-१०, १२-२४, २६-३२)	८	३०	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२५ X १० ७ सें० मी०	२८ (१-६)	८	२४	अपूर्ण०	प्राचीन	अथ अमर लिप्यते ॥ (प्रारम्भ)
२७ X १० ६ सें० मी०	३ (१-३)	७	३५	अपूर्ण०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३०	३७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३१	४२	अमरकाश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३२	१३२	अमरकोश (प्रथम काण्ड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३३	१३३	अमरकोश (तृतीय काण्ड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३४	४७१	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३५	४०२	अमरकोश (त्रिवानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

त्रो गा पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अक्ष	य	स	द	६	१०	११
२८६ × १४२ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२८.५ × ११ सं० मी०	८६ (१-७, १२-६१)	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७६ × १०.६ सं० मी०	६६ ६२-१६०	१०	२७	अपूर्ण	प्राचीन स० १८५४	शुभश्रुत्याल्लेखक वाठक्योः ॥ स० १८५४ ज्येष्ठ मासे शुक्ल ११ चन्द्र० रत्नाख्यन लिखितम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीस्तु ॥ श्री ॥
२५ × १२.५ सं० मी०	१८ (१-१८)	६	३०	पूर्ण	प्राचीन स० १७१८	इत्यमर सिंह कुतू नाम लिगानुशासने ॥ स्वरादिकाद प्रथम साग एव समाप्त ॥२॥ इति प्रथमकाद समाप्त ॥ शके १७१८ * भाद्रपदशुक्ल तृतीया इद पुस्तक समाप्त ॥ गंगाधर महादेव कावेरया इद ॥ स्वार्थपरार्थ च ॥६॥
२३.३ × १०.७ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यमर सिंह कुतू नाम लिगानुशासने सामान्य काडतृतीय साग एव समाप्त ।
२५ × १०.३ सं० मी०	६४ (१-६४)	६	३४	पूर्ण	प्राचीन कृमिकृ तित स० १६८०	इति लिगादि सप्रह्वर्ग ॥ इत्यमरसिंह कुतूनामलिगानुशासने ॥ सामान्य काण्डतृतीय सागएवसमाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री विश्वेश्वरायनम ॥ श्री रामायनम ॥ सबत् १६८० ॥ *****
३३.५ × १३ सं० मी०	१५१	३	३२	पूर्ण	प्राचीन स० १६०२	इत्यमरसिंह कुतूनाम लिगानुशासने काडस्तृतीय सामान्य । सग राव सम- पित ॥३॥ सबत् १६०२ शके १७६७ ॥ अश्विनमासे शुक्लपक्षे शुभ तिथी ॥७॥ श्रीमवासरे ॥ लिपत विहारिलाल ॥ शुभमस्तु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या वा साग्रहविषय की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रय वित्त वस्तु पर लिया है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२४५	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		६० वा०	३०
३७	२४५	अमरकोष (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		६० का०	३०
३८	२८१	अमरकोश (लिंगानुशासन) (तृतीय कांड)	अमरसिंह		६० का०	३०
३९	३६१६	अमरकोश	अमरसिंह		६० का०	३०
४०	३७६५	अमरकोश	अमरसिंह		६० का०	३०
४१	३८११	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		६० का०	३०
४२	३०३२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन) (भूमिकांड)	अमरसिंह		६० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितसंख्या और प्रति पत्रित में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कत- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८५	३	सं द	६	१०	११
२७५ × ११ से० मी०	१०	११ ३६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इत्यमरसिंह कृतो नामलिङ्गानुशासने स्वरणदेकाण्ड, प्रथम साङ्गएव समाधित ॥
२७५ × ११ से० मी०	३४ (१-३४)	१० ३६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामलिङ्गानुशासने भूमिहाण्डो द्वितीयोऽपसाङ्गएव समाधितः ॥
२७६ × ११ २ से० मी०	२६ (१-२६)	१० ३६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यमरसिंह कृतो नामलिङ्गानुशासने काण्डस्तुतीयः सामान्य साङ्गएव सम- पित ३ शुभमस्तु लेखक पाठकयो श्री रस्तु सिद्धि श्री महाराजाधिराजे श्री महाराजा श्री राजा जै सिंहदेव राज्ये- शुभस्थाने रीवाणगरपुस्तकालित श्री चतुर्वेदयो घाली रामेण सं० १८८१ के प्रथिम शुक्ल ५ ताने प्राप्तमर्थवा शुभभवतु ॥
२६७ × १५ २ से० मी०	२६ (१-४, ६-४४, ४६-४७)	१२ ३५	अपू०	प्राचीन	
२४७ × ११ ३ से० मी०	४१ (४-४, ११-४६)	८ २४	अपू०	प्राचीन	
२६५ × १५ से० मी०	३३ (१-१२, १-२१)	६ २६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामलिङ्गानुशासने- स्वरादिकाड प्रथम साङ्गएव समाधित ॥
२७१ × ११ ८ से० मी०	६७ (१-६७)	७ ३१	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामलिङ्गानुशासने भूमिकाडो द्वितीयोऽपसाङ्गएव सम- पित ॥ शुभभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसम्पत्ति वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४३	३०४८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४४	४८५०	अमरकोश (लियानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४५	४८५६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४६	४६४०	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन- १-२ काण्ड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४७	५३३४	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४८	४४३०	अमरकोश (अथमसगी) (अमरविशेष सस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	महेश्वर	दे० का०	दे०
४९	६३३५	अमरकोश (तृतीयकाण्ड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा पाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति म अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	स	द	६	१०	११
२४८ × १०७ सं० मी०	११ (७३-८३)	८	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ × ११३ सं० मी०	५२ (१-५२)	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम लिङ्गानुशासने भूतकाण्डो द्वितीय साग एव समाप्त × × × × × × × × ॥
३०३ × १२८ सं० मी०	२७ (१-२७)	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२५७ × १०५ सं० मी०	३८ (३-२७, २६-४१)	७	४२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री इत्यमरासत्कृतौ नामलिङ्गानुशा सने द्वितीयो भूमि कांडोपसाग एव समाप्त ॥ अगस्त्युदि दुइज सवत १८६४ श्रीकृष्ण प्रसाद ब्राह्मणेन लिखित समाप्त शुभमस्तु ॥
२७३ × १०४ सं० मी०	१३० (१-१३०)	६	४५	पूर्ण	प्राचीन	श्रीमत्यमरविवेके महेश्वरेण विरचित- एवाय ॥ भूम्यादि द्वितीयकांड समाप्त गमच्छुभभवतु इति द्वितीय कांड समाप्त ॥
२७२ × ११६ सं० मी०	४६ (१-४६)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिङ्गानुशासने ॥ स्वरादिकाण्ड प्रथम साग एव समाप्त
२२ × १२५ सं० मी०	१६ (११२१- २७, २६ ३६ ५२- ५५ ५७, ५६, ६२- ६३ ८७)	८	२३	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसङ्ख्या वा संग्रहविषय की सङ्ख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	५०८५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५१	४८६६	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५२	५००३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५३	५१८३	अमरकोश (नामलिखानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५४	७२००	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५५	$\frac{६६८६}{३}$	अमरकोश (नामलिखानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५६	७०२६	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिकाख्या और प्रतिपत्रिका मे अक्षरसंख्या	इया अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क घ	ख	स द	६	१०	११
२४५ × १२१ से० मी०	२३ (२-११, १३-२४)	८ २७	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतो नाम लिगानुशासने स्वरादि काड प्रथम समाप्तः ॥
२२'८ × ८८ से० मी०	३६ (१-३६)	६ ३८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम लिगानुशासने ... ॥ इति श्री अमरकोश तृतीय काडः समाप्त ।
२३५ × ११ से० मी०	३७ (४-२२, ३०,४७,४८)	७ २७	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ ८ × ११ ६ से० मी०	३ (१-३)	६ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	*****समाहृत्यान्व तत्राणि सञ्चितौ प्रति सस्कृते ॥ सपूर्णमुच्यते अर्ग- नामलिगानुशासनम् ॥ २ ॥ ***** (शारद)
२४ ३ × १० ८ से० मी०	८ (१-८)	६ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ × १५ ७ से० मी०	२२ (१-२२)	१२ १६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अमरसिंह विरचिते नाम लिगानुशासने स्वरादिकाड प्रथम. समाप्तम् ॥
२१ १ × १२ ३ से० मी०	१	६ २७	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२३४६	अमरकोश (नाम लिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५८	२३०२	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५९	२३००	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६०	५६७७	अमरकोश (सटीक) (प्रथम कांड)	अमरसिंह	नरहरि भट्ट	दे० का०	दे०
६१	५६२५	अमरकोश (सटीक) (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६२	५५७५	अमरकोश			दे० का०	दे०
६३	५५२४	अमरकोश-टीका	अमरसिंह	भानुदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है ? प्रपूरण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	प्रश्नसंख्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८ ८	८	१०	११
२६ × ११ सें० मी०	५	८ ३०	अपूर्०	प्राचीन	
२६६ × ११६ सें० मी०	११० (१-२३, २५-१११)	१३ ४६	अपूर्०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम तिगामुशासने ॥
२८५ × ११२ सें० मी०	१५४ (१-१५४)	१० ४६	पूर्०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम तिगामुशासने । सामं व्य काण्डस्तृतीयं साम एव समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
२२५ × ६ सें० मी०	४३ (१-४३)	७ २५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री नरहरि ऋद्धि विरचिते अमर ने प्रथम काण्ड. ॥
२२५ × ६ सें० मी०	३६ (१-२८, २८ २९, २९-३४)	७ २०	अपूर्०	प्राचीन	
२७५ × ११-४ सें० मी०	४२ (२-४२)	८ ३४	पूर्०	प्राचीन सें० १६४६	इत्यमरसिंह कृतौ नाम तिगामुशासने ॥ सामाय काण्डस्तृतीयं साम एव समा- प्तं ॥४७॥ सवत् १६४६ माघ शुक्ले षष्ठ्या रवौ समाप्तोऽयमस्मिन्
२१८ × १२४ सें० मी०	८१ १-४, ४-५, ५-७८, १०७)	१३ ३५	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री बघेलवशोद्भव श्री महोदर विष्- याधिय श्री कीर्तिसिंह देवाज्ञया श्री भट्टोजि दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायामारटीकया व्याख्या सुधाया प्रथम काण्ड संपूर्णतामगमत् ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की प्रागतसख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१६८०	अमरकोश (टीका)			दे० का०	दे०
६५	१६३६	अमरकोश (सटीक)			दे० का०	दे०
६६	२१२६	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	मानुषीदीक्षित	दे० का०	दे०
६७	२०६९	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६८	२०२५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६९	५७९३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७०	५७६७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो मा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	१०	
२२५×१२'३ सें० मी०	३६ (१-३८,४६)	१३	५४	अपूर्ण	प्राचीन	
२२५×१२ सें० मी०	४६	१३	५०	अपूर्ण	प्राचीन	
२८×११'५ सें० मी०	२७१ (१८-२८८)	११	४४	अपूर्ण	सं० १७४७	इति श्रीवसंतदशोद्भव श्रीमहीश्वर विषयाधिप श्रीमहाराजकुमार श्री- कीर्ति सिंह देवनाथ । श्रीमद्गोबी दीक्षितारम्भ श्रीमानुजी दीक्षित विरचितायाममरटीकाया व्याख्या- मुधा द्वितीय काण्ड. संपूर्णतामगात् ॥ शुभसंवत् १७४७ समये.....
२१४×८'२ सें० मी०	८६ (१४,१४-१८, ३५-६६, १०१-११६)	६	३५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७३७	इति विंग सत्तवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ तृतीय कांड समाप्त शुभमस्तु सं० १७३७ समये पीप सुदि एका- दश्या पुस्तक लेखित गयाराम बदी जनेन सद्यमित श्री महाराज कुमार भगवतराय धर्मार्थ ॥
२६×११'५ सें० मी०	१७ (७-२३)	=	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति अमरसिंह कृते.....
२७.५×११'४ सें० मी०	१५ (१-१५)	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.१×११ सें० मी०	२८ (४-६ १०-३४)	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
७१	५७३५	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७२	५६६६	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७३	६११५	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
७४	६०४७	अमरकोश-सटीक (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
७५	६३१६	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७६	६३१८	अमरकोश (नामलिङ्गा- नुशासन, तृतीयखण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
७७	७६१६	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठों का आधार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
नं०	व	स	द	१०	११
२७३ × ११५ से० मी०	५७ (१-५७)	७	३१	५०	प्राचीन इति शूद्रवर्ग इत्यमर सिंह कृतो नाम- लिगानुशासने ॥ द्वितीय कांडो भूम्यादि सागएव समर्थित ॥
२३ × ८४ से० मी०	६०	४	२७	अ५०	प्राचीन इत्यमरसिंह कृतो नाम लिगानुशासने स्वरादि कांड ॥ (५० ४७)
२८ × ११५ से० मी०	२६ (१-२६)	५	२६	५०	प्राचीन इत्यमरसिंह कृतो नामलिगानुशासने स्वरादि कांड प्रथम साग एव समर्थित ॥
२७१ × ११३ से० मी०	३६ (१-३६)	८	३५	५०	प्राचीन इत्यमर सिंह कृतो नामलिगानुशासने ॥ स्वरादि कांडः प्रथम सागएव समर्थित ॥ १॥
२२८ × ९८ से० मी०	६ (१, ६, १५-२१)	१२	२४	अ५०	प्राचीन
२२८ × १०४ से० मी०	३८ (१-३८)	१०	२४	५०	प्राचीन इत्यमर सिंह कृतो नामलिगानुशा- सने ॥ काण्डस्तृतीय सामान्य सागएव समर्थित ॥
२६७ × १०३ से० मी०	६	३	३८	अ५०	प्राचीन महाराज कुमार श्री बाबू फतेसिंह देव राज्ये तस्मिन्काले वर्तमाने ॥ पुस्तक लिखित पण्डित भोपति × × ॥

क्रमानुसारी विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रय विम वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७९	७७१०	अमरकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		३० का०	३०
८०	७६६०	अमरकोश नामालिखानु- शासन			३० का०	३०
८१	७४७४	अमरकोश			३० का०	३०
८२	७३९८	अमरकोश (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		३० का०	३०
८३	११७३	एकाक्षरकोश	क्षपणक		३० का०	३०
८४	४७४६	एकाक्षरकोश			३० का०	३०
८५	५२६५	एकाक्षर कोश			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रमहत्वा	प्रति पृष्ठ म परिचय और प्रति पक्ति म अक्षरमन्त्रा	यया अथ पूर्ण है ? संपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ अ	८	स ८	६	१०	११
२३३ × १३२ से० मी०	२६ (१-२६)	११ २८	अपूर्०	प्राचीन	
२१७ × १०७ से० मी०	३८ (१-३८)	७ ३५	पूर्०	प्राचीन	इति मिगादिशेषवण इत्यमरमिहृ कृती नाम निशानुगामन काण्डस्तोत्रं × × × × ॥
२३२ × १०६ से० मी०	६ (५६-६६)	७ ३०	अपूर्०	प्राचीन	
२६५ × १४४ से० मी०	३४ (१-३, १५-३५)	१२ २६	अपूर्०	प्राचीन	
२६१ × १४८ से० मी०	२ (१-२)	१३ ३०	अपूर्०	प्राचीन सं० १६१८	इतीरवे काक्षर कोश कथित मुनिना पुरा इति श्री महा क्षपणक षड्वि विरचितमेकाक्षर नाम कोश ॥
२५१ × ११२ से० मी०	३ (१-३)	११ २२	पूर्०	प्राचीन	इत्येकाक्षरि नाम समाप्ता ॥
२२७ × १०२ से० मी०	३ (१-३)	६ ३५	पूर्०	प्राचीन सं० १८६०	इत्येकाक्षर कोश समाप्त सवत १८६० शके १७२५ आश्विन सुदि १४ श्रीमे क पुस्तक लिखित सीतारामे- णात्थकपठनाथम्पराधम्बा श्री गणेश- कायनम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसारख्या वा संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रत्येक किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	६५३८	एकाक्षर कोश			दे० का०	३०
८७	३८६६	एकाक्षर कोश			दे० का०	३०
८८	७२७२	एकाक्षर कोश			दे० का०	३०
८९	३०७८	एकाक्षर कोश			दे० का०	३०
९०	$\frac{१०११}{२}$	एकाक्षरी कोश			दे० का०	३०
९१	१६२६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	३०
९२	१७६६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	३०

ता या पृष्ठो वा आवार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षितमध्या प्रो० प्रति पक्षि मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष वा विवरण	ग्रन्थस्या भोर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
७० × १११ सैं० मी०	२ (१-२)	६	३८	पू०	प्राचीन स० १६४३	इत्येकाक्षर कोश समाप्त सवत् १६०३ पीठवदि X X X X ।
२४६ × ११२ सैं० मी०	३ (१-३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री महा शरक तद्विराज विरचित एकाक्षरकोश ।
२३८ × १३४ सैं० मी०	६ (१-६)	१४	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३४ × ११ सैं० मी०	६	६	२१	पू०	स० १६३६	इति एकाक्षरकोश समाप्त ॥ लिखित नवदाप्रसाद तिवारी स० १६३६ के मिति माघ सुदि १४ ॥
२६ × १८२ सैं० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरकोश समाप्तम् ॥
२४२ × ८३ सैं० मी०	३ (१-३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति एकाक्षरकोश परिपूर्ण ॥ राम राम ॥
२४१ × ११ सैं० मी०	२ (१-२)	११	३६	पू०	प्राचीन स० १८७५	इत्येकाक्षरकोश ॥ सवत् १८७५ ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४०१८	शोश			दे० का०	२०
६४	१३४६	जगद्विजयो छन्दटीका	बर्वाडाचार्य सरस्वती		२० का०	२०
६५	२३३	लिकाटकोश	श्री पुरुषोत्तमदेव		२० का०	२०
६६	६०१६	दीपिकाश मुक्तमली	नरेंद्र		२० का०	२०
६७	२३५३	नाम माता	बल्लभ		२० का०	२०
६८	७५३६	नाममालानिषट्ट	धनजय		२० का०	२०
	२					
६९	१७१६	नामलिखानुशासन	धर्मरसिंह		२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो या प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिनख्या और प्रति पत्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
२६३×६५ सं० मी०	१३ (२-११, १३-१४)	८	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२६×१२५ सं० मी०	३२ (३-३८)	८	४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमद्विद्यानिष्ठान कवीदाचार्य सरस्वती विरचिताया बृहद्भगवद्भिज- छटीया समाप्ते ॥
३०७×१०३ सं० मी०	२५	६	४३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पुरुषात्तम देव विरचित शेषा- मर समाप्त ॥ इदं पुस्तक..... स्वस्ति श्री नृपशालि बह नराकके १७७३ विरोधकृतनाम सवत्सरे श्रवणे शुक्ल द्वादश्या भृगुवसरमृतायातद्दिन समाप्त ॥
२७४×११२ सं० मी०	३ (१-३)	१८	५५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२४	तस्यातिशायिनिर्गवे पयिनागरक श्रीलो- चनस्य गृह शासन लोचनस्य नानाकवीद्र रचितानभिधानकोषानाहृष्य लोचनमिवो- द्यमदीपिकोप ॥३॥ * नागेन्द्र स प्रयित कोप समुद्रमध्ये नानाकवीद्र मुखमुक्ति समुद्रवेय । विद्वद्गुहादमरनिमित पट्ट- मूत । मुक्तावली विरचिता हृदि सनि- धातु ॥ इति ग्रन्थस्यादि समाप्ता ॥ सवत् १६२४ जेष्ठे ॥
२४६×११४ सं० मी०	२ (१-२)	१०	३७	पूर्ण	प्राचीन	इति बलभ कृत माला समाप्ता श्लोक नख्या धाठ ॥
२७×११५ सं० मी०	१८ (१-१८)	■	२८	पूर्ण	सं० १६३६	इति श्रीग्रन्थजयकृत नाममालानिषट् समाप्तम ज्ञानम शुभमस्तुनिर्दिष्टरस्तु श्री सवत् १६३६ मागशीर्षे कृष्णे ५ पंचम्य- मगुरी लिखित रामप्रसाद रिच्छित ॥
१६५×६७ सं० मी०	१४ (११२-११३ १३५, १४२, १४२ १४५- १५१, १५२- १५४)	■	२३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८१८	इत्यऽमरगतिहृत्ती नाम लिगानुशासने सामाय काण्ड तृतीय सागएव समर्थित ज्ञानमस्तु लेखक पाठकयो सं० १८१२ ज्येष्ठमुदि ४ गुरुक श्री कृष्णार्जुनमस्तु ॥ श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१००	३६६६	निघट्ट			२० का०	२०
१०१	२५७४	निघट्टनाममाला			२० का०	२०
१०२	२६४३	निघट्टमाला	घनश्याम		२० का०	२०
१०३	१११२	ॐ पारसीप्रकाश	कृष्णदास		२० का०	२०
१०४	६६८	पारसीप्रकाश	कृष्णदास		२० का०	२०
१०५	३२३६	मातृकाकोश			२० का०	२०
१०६	५१७०	मातृकाकोश			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितमस्या घोर प्रति पक्ति मे प्रसरसंख्या	तथा अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष वा प्राचीनता विवरण	प्रवस्था घोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
१६ X ७७ सं० मी०	१६ (१-१६)	६	२३	पू०	सं० १८५८ प्राचीन	इतिनिषट्ठी पञ्चमोऽध्याय समाप्त ॥ सं० १८५८ ॥ शके १७२३ मिति माघकृष्ण अमाया समाप्त ॥
२३ X १० ३ सं० मी०	६	१०	४१	पू०	सं० १८७०	इति श्री धनजय महाकाव्ये निषट्ठनाम थाना समाप्ता, शुभमस्तु श्रीस्तु ॥ सं० १८७० पोष कृष्ण पञ्चमी रवि वासरं इदं पुस्तक लिप्यते ॥ रामाय नम्
२२ X ६ सं० मी०	२० (१-२०)	७	३६	पू०	सं० १७८७	इति श्री धनजय विरचिताया निषट्ठ नामा ॥ समाप्ता शुभमस्तु ॥ सवत् १७८७ शाल कार्तिक
२८ = X ११ सं० मी०	११ (१-१६)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं० १८३३	इति श्री महाभूतेश्वर श्रीमदक्षर शाहकारिते विहारि कृष्ण दश मिश्र कृते पारसी प्रकाश कृतप्रकरण समाप्त ॥ अग्नि राम वसु भूमि सप्तमे फाल्गुणे शिवशिवो सितेतरं ॥ सूर्य नन्ददिने हरिवंशो वंशरूप कृतये विलिखे ॥
२८ X ११ ३ सं० मी०	१० (१-१०)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री महाभूतेश्वर श्री नवधरसाह कारिते कृष्णदास पारसी प्रकाश संवादार्थ कोश प्रकरणम् ॥ सं० १८३४ के साल चैत्र वदी ११ गरीक लिखि महापाल वंशरूप वेशा ।
२३ X १० ३ सं० मी०	३ (१-३)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति यातुका कोशः सपूर्ण ।
१६ ७ X ८ ५ सं० मी०	६	६	२१	पू०	सं० १८१७	इति यातुका कोश समाप्त सं० १८१७ आश्विन कृष्ण १३ गुरो ॥
(सं०सू०५६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्ति संख्या या मध्यविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रन्थ विम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०३	६२० २	मातृकाकोश			१० का०	१०
१०५	६२० २	मातृका निघण्टु			१० का०	१०
१०६	७५५६	मेदिनीकोश			१० का०	१०
११०	२६६०	मेदिनीकोश			१० का०	१०
१११	१३८३	मेदिनीकोश	मेदिनीकर		१० का०	१०
११२	१०४०	व्यज्रनैकांतरेकोश			१० का०	१०
११३	२४३५	शुद्ध प्रदीप	सुरेश्वर		१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो वा भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिमे संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो यत्- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	त	द	९	१०	
१६६ × ६८ से० मी०	५	८	२३	अपूर्ण०	प्राचीन	इति श्री मातृकाकोशसमाप्त ॥
१६३ × १० से० मी०	८	१०	२७	अपूर्ण०	प्राचीन	
३१२ × १३५ से० मी०	७४ (१-७४)	१०	२६	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२४ × १०६ से० मी०	४	१३	३१	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२४ × १०८ से० मी०	१०२	११	३४	अपूर्ण०	प्राचीन	
३१ × ११८ से० मी०	६	॥	३१	पूर्ण०	सं० १८८२	इति धर्मजनेकातरे कोष समाप्त । श्रीकृष्ण गोकुल वासी सवत् १८८२ समय नाम कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्या सोमवासरे बुध्वावन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तक ॥
२४३ × ८५ से० मी०	४३	६	४६	अपूर्ण०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सप्तहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
गीता						
१	६००२	भर्जुन गीता			दे० वा०	दे०
२	१७०७	भर्जुन गीता			दे० का०	दे०
३	२८१३	भर्जुन गीता			दे० का०	दे०
४	३४४८	भर्जुन गीता			दे० का०	दे०
५	३५७५	भर्जुन गीता			दे० का०	दे०
६	२५१२	भर्जुन गीता			दे० का०	दे०
७	२७३	भवभूत गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो या पादार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे पत्रसंख्या	यथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान धर्म का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ सादृश्य विवरण
८ ८	८	८ ८	८	१०	११
१६३ × १० ५ सें० मी०	१६ (१-१६)	१६	१६	५०	१०१६०६ इति श्री अर्जुन गीता श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सरव जनदीपो संवत् १६०६ ॥ ॥
२२५ × ६ ८ सें० मी०	६ (६-१७)	६	२५	अपूर्०	प्राचीन इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त । श्री शुभमस्तु । श्रीरामायनम
१२ × ८ सें० मी०	(४३ पृ० संस्कृत, १६ पृ० हिंदी) कुल ५९ पृ०	४	१२	५०	१०१८६३ इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता संपूर्ण, भाद्र शुक्ल पक्ष तिथी ४ बुधवासरे संवत् ॥१८६३॥
१८४ × ६ १ सें० मी०	११ (१-११)	६	२१	अपूर्०	प्राचीन इति श्री अर्जुन गीता संपूर्ण संवत् १८४७ कबार यदि द्वितीया ॥
२३३ × ११ सें० मी०	६ (१, ५-८ १०, १२-१३, १७, १८)	६	२०	अपूर्०	प्राचीन इति श्रीकृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त ॥
२१'३ × १४ १ सें० मी०	७ (१-७)	१२	२८	५०	प्राचीन इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त शुभमस्तु सं० १८८६ प्र अवण यदि नवमी रविवासे प्रति विषित राघकृष्ण ब्रह्मन उपाध्या श्री कृष्णायनम राघकुजबिहारी की जैराम ॥
१६ × १२ सें० मी०	८ (१०-१३, २०-२३)	१२	२२	अपूर्०	प्राचीन

क्रमों और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ विस- यस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	६७३१	अवधूत गीता	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
९	७८४५	अष्टादशश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१०	३६६४	उत्तरगीता	गोडपादाचार्य		दे० का०	दे०
११	१९२६	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१२	२०२२	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१३	७७०२	उत्तरगीताभाषा (द्वितीय अध्याय)		गोडपादाचार्य	दे० का०	दे०
१४	४१५८	वसिलगीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रति पत्र में पत्रसंख्या	नया प्रथमपत्र है ? संपूर्ण है तो चर्तमान अथ वा विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ घ	ब	ग द	६	१०	११
२४६ × १३१ से० मी०	१८ (१-१८)	१२ २७	५०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रय विरचिताया प्रवृत्त गीताया ॥ स्वात्म मवित्पुपदेशे चतुर्थे प्रकरणे । (पत्र संख्या १३)
१६१ × ६ से० मी०	२	७ १८	प्र५०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादश श्लोकी गीता संपूर्णम् श्री कृष्णार्जुनस्तु श्री गुरुदत्तात्रयाचार्यसंस्तु शुभं भवतु ॥
२०४ × ६३ से० मी०	२५ (१-२५)	१२ ३३	प्र५०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचिताया उत्तर गीताया द्वितीयो० ॥ (पत्रसंख्या-२२)
१५५ × ६४ से० मी०	१३ (१-१३)	५ १५	प्र५०	प्राचीन	
१५५ × ६६ से० मी०	१२ (१-१२)	५ १७	प्र५०	प्राचीन	
२६६ × १४३ से० मी०	२१ (१-२१)	१२ ३०	५०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचिताया उत्तरगीता व्याख्या द्वितीयोध्यायः ॥ श्रीमदुत्तर गीताया द्वितीयोध्याय ॥
१५३ × ६ से० मी०	२७	६ १६	प्र५०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे सिद्धांत सारे कपिल ऋषि सिद्ध संवादे राजराजेश्वरयोग कथन नाम अष्टमोध्याय ।

क्रम क्र. और विषय	पुस्तकानाम की प्रागल्भ्यता या संपादित की मर्यादा	संयोजक	संयोजक	टीकाकार	ग्रंथ किम वस्तु पर निष्ठा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३२८१	गणेशगीता			दे० का०	दे०
१६	३७१५	गर्भगीता			दे० का०	दे०
१७	१०६ (अ)	गीता	भ्यास		दे० का०	दे०
१८	२०५५	गीता (तृतीय अध्याय)			दे० का०	दे०
१९	३८८	गीता (संस्कृत टीका सहित)	भ्यास		दे० का०	दे०
२०	३१७४	गीता			दे० का०	दे०
२१	$\frac{३२३३}{२१}$	गीता (दशम और एकादश स्कंध)			दे० का०	दे०

पत्री या पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या	क्या पथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	९ ८	८	१०	११
१७×८८ सं० मी०	५० (१-५०)	७ २५	५०	सं० १८२०	इति श्री गणेशगीता संपूर्ण । सवत् १८२० शके १६८२ विजयनामसंवत्से अधिक ज्येष्ठवद्यतता देवीतदिन पुस्तक समाप्त ॥ श्री गणानां पंथमस्तु ॥
१६६×६२ सं० मी०	५ (१-५)	६ १६	५०	सं० १६३६	इति श्री गणेशगीता संपूर्णपत्रसु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गर्भ गीता समाप्तम् ॥ शुभ- मस्तु ॥ सवत् १६३६ के आषाढ सुदि १२ कालिपित श्री बाबा भगवदाश ॥
१२५×७५ सं० मी०	१३० (११३०)	६ १६	५०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र सहिताया भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता संपूर्णपत्रसु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष स याव योगो नामाष्टादशोऽध्याय ॥१८॥ समाप्ता श्री भगवद्गीता ॥
१५५×६६ सं० मी०	८ (१-८)	५ १८	५०	प्राचीन	श्रीमदुत्तर गीता संपूर्णपत्रसु ० यायोग शास्त्रं ० संवादे महाभारते अष्टमोऽध्याय शत सहस्रं ० ज्ञान विवरणनाम तृतीयोऽध्याय ३ ॥
३४७×१३१ सं० मी०	१० (५, ६ १२-१६)	६ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	
१५×७५ सं० मी०	३६ (४८ ६६ ७१-८५)	८ २०	अपूर्ण	प्राचीन	श्रीमद्भागवतगीता संपूर्णपत्रसु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष स याव योगोनाम अष्टा- दशोऽध्याय ॥१८॥ × × ×
१५५×१०३ सं० मी०	११	६ २३	५०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासंपूर्णपत्रसु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शन नाम एकादशो ऽध्याय ॥
(सं० सू० ६०)					

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमस्या वा सप्तविशेष की संख्या	प्रयनाम	प्रयवार	टीकावार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	२८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदनदास सरस्वती	३० का०	३०
२३	२१०२	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२४	२१०३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२५	२१०४	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२६	२३०८	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			३० का०	३०
२७	२३०७	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			३० का०	३०
२८	२११३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०

११

पद्यो वा पृष्ठो वा भावार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ मे पतिसख्या और प्रति पति मे अक्षरगणना	क्या पद्य पूर्ण है? अथ पूर्ण है तो कर्त- मान पद्य का प्राचीनता विवरण	प्रवस्था और	अन्य भाषाओं में विवरण	
८ ८	८	स ८	६	१०	११	
२८८ × १३३ सं० मी०	२८	१३	४६	पू०	प्राचीन	
२८३ × १२ सं० मी०	१२	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां प्रोक्तगोप्याय ॥१६॥
२८ × १२ सं० मी०	१०	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता मूल नियम ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण माजुन सवादे गूढार्थ दीपिकायां चतु- दशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गविदाय नमोनमः ॥५॥
२८३ × १२ सं० मी०	८	११	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपरिपारमु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण माजुन सवादे दीपिकायां द्वादशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गविदाय नमस्तुते ॥ श्री भगवन्मै नमः ॥
१८ × ११ ७ सं० मी०	१२ (१-१२)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया प्रोक्तगोप्याय ॥
२८४ × १२ १ सं० मी०	३१ (१-३१)	११	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपि- काया पद्योप्याय समाप्त प्रथमकांड समाप्त ॥
२८२ × ११ ६ सं० मी०	१६ (१-१६)	११	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तृतीयोप्याय ॥सुभमस्तु॥

क्रमिक क्रोर विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२६	२११२	गीतागोदायं दीपिका (चतुर्थ अध्याय)			६० का०	६०
३०	२१११	गीतागोदायं दीपिका (पंचम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	६० का०	६०
३१	२११०	गीतागोदायं दीपिका (सप्तम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	६० का०	६०
३२	२१०८	गीतागोदायं दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	६० का०	६०
३३	२१०६	गीतागोदायं दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	६० का०	६०
३४	८३६	गीता शंकर भाष्य	शंकराचार्य		६० का०	६०
३५	१६६५	गीता (संस्कृत टीका सहित)			६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो या पाकार	पत्रांशया	प्रति पृष्ठ में पत्रिगण्या घोर प्रति पत्रि य घतरवकता	क्या कय गुणं है? अपूर्व है तं वरं मान भग वा विवरण	यवस्था घोर प्राचीनता	संख्य पावकगत विवरण	
८५	५	६ ६	६	१०	११	
२८२×११८ सं० मी०	२६ (१-२४)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थदीपिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥
२८२×११८ सं० मी०	११ (१-११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गुणनिस्तुतह ... गीता गूढार्थ दीपिकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥
२८४×११२ सं० मी०	१४ (१-१५)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गुणनिस्तुत ... गूढार्थ दीपिकायां सप्तमाध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
२८५×११२ सं० मी०	४६	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां सर्वं गीतायं सूत्रण नाम द्वितीयो ध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥ शुभं रस्तु ॥
२८५×११२ सं० मी०	१३	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां गीता गूढार्थ दीपिकायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपाताय नमः ॥
२८३×११२ सं० मी०	१२३ (१-४४, ४६-१२४)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य शकरभगवत कृतो श्रीगीताभाष्ये पुनर्निर्दिष्टा दशोऽध्यायः समाप्ताः ॥
२४२×१२८ सं० मी०	५ (२-४, ४, २०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा समूहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२६३५ ७	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३७	७५३२	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३८	१७०१	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३९	१७०८	गुरुगीता			दे० का०	दे०
४०	१११६ ४	जन्मविपाकगीता			दे० का०	दे०
४१	७६०८	उत्पत्त्यागरगीता			दे० का०	दे०
४२	२४८४	भारुगीता			दे० का०	दे०

पद्या या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या शेष पंक्तियाँ हैं ? अपूर्ण तो वर्त मान ग्रन्थ का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग द	६	१०	११
२४५ × १४४ से० मी०	२	२६ १७	अपूर्ण	प्राचीन	
१८२ × ६५ से० मी०	११ (१-११)	६ ३२	पूर्ण	प्राचीन	श्री स्कन्द पुगणो बहोत्तर खंडे हरवर पार्वती सवादे श्री गुरुगीतास्तोत्र मन्त्र संपूर्ण ॥ × × × × × ×
२२ × १० ५ से० मी०	१० (३, ७-१६)	७ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ ५ × ११ ३ से० मी०	७ (३-६)	११ ३१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री स्कन्दपुराणे उमा महेश्वर सवादे गुरु गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ ... सं० १८३४ मासानाकांतिक मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्या १७ बुधवासरे लित मुमार्दे ॥
२६ × १४ १ से० मी०	२ (३-४)	१५ ४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवान् भर्जुन सवादे जनम विपाक योग समाप्त ॥
१३ १ × ८ ४ से० मी०	१३ (१-१३)	७ १४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ ५ × ६ ३ से० मी०	६ (१-६)	११ २०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद सवादे नारद गीता संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१६८३	नारदगीता			दे० का०	दे०
४४	३३४८ ४६	नारदगीता			दे० का०	दे०
४५	१४००	नारदगीता			दे० का०	दे०
४६	७१७८	नारदगीता			दे० का०	दे०
४७	२६३३ १२	पादवगीता			दे० का०	दे०
४८	७७४६	पादवगीता			दे० का०	दे०
४९	७२८८	पादवगीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिकाख्या और प्रति पत्रिका में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	११ ८	६	१०	११
२६६×११५ से० मी०	२ (२-३)	७ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद सवादे नारद गीता सपूर्णम् ॥
१२५×८२ से० मी०	६ (१-६)	६ १५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्णनारद सवादे नारद गीता सपूर्णम् शुभमस्तु श्री राम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६०००	पादवगीता			दे० का०	दे०
५१	५६०६	पादवगीता			दे० का०	दे०
५२	२३८६	पादवगीता			दे० का०	दे०
५३	३२१२	पादवगीता			दे० का०	दे०
५४	$\frac{६५२०}{१६}$	पादवगीता			दे० का०	दे०
५५	$\frac{३३४८}{४६}$	पादवगीता			दे० का०	दे०
५६	३२०७	पादवगीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि वतमान अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अक्षर संख्या विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६		१०
२३४×११७ सं० मी०	७ (१-७)	१२	३३	५०	प्राचीन	इति श्री पाण्डव गिता शुभ अमुन समाप्त ॥
२०७×१०९ सं० मी०	१४ (१-१४)	७	२०	५०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री सकल महावैष्णव विरचनाया पाण्डवगीता स्तोत्र समप्त शुभ भवत भगवत् ददात् ॥ फगुन सुद १० ॥ सवत् १८७१ ॥ मृ का ॥ वाद ॥ **
२२×१० सं० मी०	१० (१-४, ६-११)	८	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८१७	इति श्री महाभारते शांति पर्वणि भीष्म नारद सवादे पाण्डवगीता नाम विष्णु प्रस्तुति समाप्ता । शुभमस्तु ॥ सवत् १८१७ ॥ तत्र वर्षे आबण मासे शुक्ला सप्तम्या पक्षे मीमंसासरे ॥ मिद पुस्तक समाप्त ॥
१४३×१०१ सं० मी०	७६	८	२०	अपू०	प्राचीन	
६६×६४ सं० मी०	१६ (१-१६)	१०	१२	५०	प्राचीन	इति श्री पाण्डवगीता समाप्त शुभमस्तु + + + ॥
१२५×८२ सं० मी०	२१ (१-२१)	६	१५	५०	प्राचीन	इति श्री पाण्डवगीता स्तोत्र संग्रहम् शुभमस्तु श्रीराम ॥
१६५×८३ सं० मी०	११ (१-११)	७	२८	५०	प्राचीन	इति पाण्डवगीता समाप्त श्री लक्ष्मी नारायणावणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ यादुगा पुस्तक दयातादुशी लिखित भया । यदि मूढमूढ वा मम दोषो न विद्यत ॥ १ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	११२३	पाटवगीता			दे० का०	दे०
५८	३५६२	पाटवगीता			दे० का०	दे०
५९	४१३७	पाटवगीता			मि० का०	दे०
६०	२८३७	पाटवगीता			दे० का०	दे०
६१	२८६८	पाटवगीता			दे० का०	दे०
६२	४५१४	पाटवगीता			दे० का०	दे०
६३	१८११	पाटवगीता			दे० का०	दे०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द म	ब	स	द	१०	११	
२६×१२६ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारते.....राजसूय प्रकरणे गिष्पुपालवधे पांडवगीता समाप्ता ॥
१६×८४ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता समाप्ता ।
१७२×१०३ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता संपूर्णम् सुम भूयात् मिती आषाढ सुदि ७ सवत् १६०७ रामायनम्॥
१६'६×८७ सें० मी०	१३ (१-१३)	"	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति पांडवगीता संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ सं० १६२२ ॥ श्री श्री स्वामी जी वैत.....॥
१२'३×७३ सें० मी०	१८ (१-१८)	७	१५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री पांडवगीता समाप्ता सं० १६१७ के मार्ग सुदी १० शुक्ला पुस्तक लिखित १० अमोरासिखीन राम चतुर्वेदी उबहरा बंद ॥
२३३×१०७ सें० मी०	७ (१-७)	६	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पांडव गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२८४×१४ सें० मी०	३ (१-३)	१५	४४	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१३६८	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६५	४२७६	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६६	६८६६	ब्रह्मगीता-सटीक			दे० का०	दे०
६७	६१	भगवद्गीता	लासताप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
६८	३६४	भगवद्गीता	व्यास		दे० का०	दे०
६९	७२७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७०	७४५२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द घ	व	स द	१०	१०	१०
१८×६ से० मी०	६	८ ३३	अपूर्ण	स० १८५४	इति पांडवगीता संपूर्णम् शुभमस्तु स० १८५४ व० शु० ५ भृगु० लि० उदेरामेण शुभम् ।
२१५×१०.५ से० मी०	१४ (१-३,१५)	७ २५	३५०	स० १९१८	इति श्री पांडवगीता समाप्ताः ॥*** ***॥ सवत् १९१८ माघ कृष्ण ६ शनी तिष्यत प० श्री दुदेराधे पठनार्थं ॥
२७५×१२ से० मी०	१५० (१-३२, ३२-१४६)	११ ३८	५०	प्राचीन	इति श्री स्कंदेपुराणे सूत संहिताया यज्ञ- वेभव खड्गोपरिभागे प्रह्लादीतामूर- निपत्सूदादकीध्याय ॥
२१×११.७ से० मी०	६६ (१-६६)	६ १६	५०	प्राचीन	भाद्र कृष्ण १० गुरु वारे तिष्यत मिथं पुस्तक समाप्ता तिष्यत सान्ताप्रसाद मिशिर पलटन गोपन वपनी ८ रजमत
२८.३×१४.४ से० मी०	२८ (२-२४, २६-२६, ३१)	१४ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	६६ वनाजमालपुनदि कृष्ण पुन के निवट ॥ जद अक्षर पुस्तक द्रष्टातादय विष्यत यथा । यदि शुद्धम शुद्धवा मन दोमोन दीयने ।
२०.२×१०.४ से० मी०	१३ (१-६३)	६ २६	५०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीता संपूर्णं शुभमस्तु सवत् १८८१ के शुभल चैत्र सुदि नीमि गुरो व :-
२०.६×६.१ से० मी०	७१ (१-७१)	७ २८	५०	प्राचीन स० १८८१	इति श्री भगवद्गीता नृपनिषत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगो नामाष्टादशोऽध्यायः । शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसक्या या सग्रहियोग्य की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	मूल्य
१	२	३	४	५	६	७
७१	७४५०	भगवद्गीता			दे० का०	२०
७२	७२६८ २	भगवद्गीता			दे० का०	२०
७३	७६१५	भगवद्गीता			दे० का०	२०
७४	७६०१	भगवद्गीता टीका			दे० का०	२०
७५	७६६६	भगवद्गीता			दे० का०	२०
७६	७८८६	भगवद्गीता-सटीक (मुबोयिनी टीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	२०
७७	७८६३	भगवद्गीता टीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवितसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६४ × १२४ सें० मी०	७८ (२-७६)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे भूयस्त्रयविभागयोगोनाम सप्त- दशोऽध्यायः ॥ (१० ७५)
१६४ × १२५ सें० मी०	३६ (१-३६)	१८	१३	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशो- ऽध्यायः १८ ॥ भगवद्गीता संपूर्णा ॥
२५७ × १३४ सें० मी०	४० (२-४१)	११	३०	अपूर्ण	प्राचीन स० १८६६	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे सन्यासयोगोनामा द्वादशो- ऽध्यायः ॥ × × सवत् १८६६ वर्ष ॥ सके १७६४ ॥ वर्षे काल्पुन मासे सुदि***
२३५ × १२४ सें० मी०	१६	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)	
६४ × ८६ सें० मी०	४६	६	१३	अपूर्ण	प्राचीन	
३३८ × १५७ सें० मी०	८१ (१-८१)	१३	५०	पूर्ण	प्राचीन स० १८८३	इति श्रीभगवद्गीता टीकायां सुबो- धिन्याधीश्वरस्वामि विरचितायां पर- मार्थे निर्णयोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ रामेभक्तसुभक्तस्य १८८३ वर्षे पोषेक्षिते शुभे ॥ पक्षेऽष्टम्या चरेत्तया मल्लिनाथोऽध्यलीलिखत ॥ ११ ॥ समा- प्तोऽयं सुप्रसस्तु श्रीराम ॥
३११ × १३३ सें० मी०	११५ (१-११५)	११	४०	पूर्ण	प्राचीन स० १८५३	इति श्रीभगवद्गीता टीकायां सुबो- धिन्याधीश्वरस्वामि कृतायां मोक्ष योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ समे मासे चैत्र शुक्ल पक्षे पंचम्या भीमवासरे पुस्तकं गीता टीका रामे लिपावा वाल कृष्ण रामभक्त समत १८५३ श्री पदुमपुर ॥

(स० स० ६०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७८	५८११	भगवद्गीता (द्वादश अध्याय)			३० का०	३०
७९	५८२९	भगवद्गीता			३० का०	३०
८०	५८२५	भगवद्गीता (भाषा टीका)			३० का०	३०
८१	५९९४	भगवद्गीता			३० का०	३०
८२	५९९१	भगवद्गीता			३० का०	३०
८३	५९८२	भगवद्गीता			३० का०	३०
७४	५९७१	भगवद्गीता			३० का०	३०
	६					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रसरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आदश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२२"८×११ से० मी०	२ (१-२)	८ २६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्या योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भक्तियोगो नाम द्वादशाऽ- ध्याय १२॥
२०×१४ से० मी०	६० (३३-६२)	६ १७	अपू०	प्राचीन स० १६२२ (कृमि-कृति)	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्या योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे सन्यास मोक्षयोगो नाम अष्टा- दशोऽध्याय स० १६२२॥
२२३×१३४ से० मी०	६६	८ २३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मनमहाभास्ते सतमहस्र सहितायार्चवासिषया भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन- संवादे ज्ञान-विज्ञान योगो नाम सप्तमोऽध्याय
१६५×६५ से० मी०	३० (१-२, ४- ६, ११-१६, २५, २८- ३३, ६६, ६६-७३)	७ २२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुणकर्म दर्शन नाम सप्तदशोऽध्याय ॥
१३×६१ से० मी०	२२	५ १६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे विभूति योगो नाम दशमोऽ- ध्याय ॥१०॥
१६६×६५ से० मी०	१०३ (१-१०३)	६ २१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंयोगो नाम अष्टा- दशोऽध्याय ॥
१०८×६७ से० मी०	१३५ (१-१३५)	६ १५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेषात् महस्य- सहितायार्चवासिषया भीष्म पर्वणि भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया- योग शास्त्रे श्री कृष्णसंवादे सन्यास योगो नामाष्टादशोऽध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५	६१२५	भगवद्गीता (दशम और एकादश अध्याय)			दे० का०	दे०
८६	$\frac{६०७६}{५}$	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८७	६२०८	भगवद्गीता (चतुर्थ, पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
८८	२२८१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८९	$\frac{५५२०}{५}$	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९०	२१६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९१	२१६३	भगवद्गीता (गूढार्थटीपिका)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ स	८	स द	६	१०	११	
१३३×८५ से० मी०	१५ (१-१५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे विरच्यते दर्शनोनामैका- दशोऽध्याय ॥११॥
१५.४×६४ से० मी०	१३५	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेऽर्जुन सहस्रसंहिताया वैद्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीभगवद्- गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग- शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्धास योगोनाम अष्टादशोऽध्याय सम्पूर्णम् ॥श्रुमम्॥
१७×७.६ से० मी०	५ (३३-३७)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे सन्धास योगो नाम चतुर्थोऽध्याय ।*** (पत्रसंख्या-३६)
१६८×११४ से० मी०	२८ (१-२८)	५	१४	अपू०	प्राचीन स० १८४४	
१३६×७.६ से० मी०	१४३ (१-१४४)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोऽध्याय ॥
१७७×७.८ से० मी०	१६ (८, ११- १२, २५, २६-३६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२८×१२ से० मी०	११ (१-११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मृदायंदीपिकाया सप्तदशोऽध्याय ॥ श्रीकृष्णाय प्रणम्य नमोऽस्तुते ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सहाय वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	संयोजक	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६४६१	भगवद्गीता (हिन्दी- मराठी-टीका)		पार्थ सारणी	६० का०	६०
६३	७१५७	भगवद्गीता			६० का०	६०
६४	१३६	भगवद्गीता	व्यासजी		६० का०	६०
६५	३८५	भगवद्गीता (सटीक)	व्यास	रामानुजमुनि	६० का०	६०
६६	६६७	भगवद्गीता			६० का०	६०
६७	३३७	भगवद्गीता			६० का०	६०
६८	३८७५	भगवद्गीता			६० का०	६०

पदों या पृष्ठों का प्रकार	पदसंख्या	प्रति पृष्ठ में पदितसंख्या और प्रति पदित में अक्षरसंख्या	अक्षरसंख्या पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	पदसंख्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३
२४३ × १५२ सं० मी०	६०	१०	१५	अपूर्०	प्राचीन इति टीका समस्तोक्तो अध्याय पंच मावरी श्री पार्षसारथी कर्ता जीवा मन मनोरथी ५ (पत्र सं० २८) (पत्रांक ३४)
१२५ × ८२ सं० मी०	१२६ (१-११५, १४१-१५१)	६	१३	अपूर्०	प्राचीन सं० १६१७ इति श्री महाभारते वात साहस्य' संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसंन्यास योगोनामष्टादशोऽध्यायः ॥१॥ संवत् ॥ १६१७ ॥॥॥॥
१६ × १० सं० मी०	७१ (१-७१)	७	२७	पूर्०	प्राचीन शके १७१३ ध्रुम कुन्तामसंवत्सरे भाषांडशुक्त षतुदश्यां मंद वासरे भाषां यतां तर्गत ब्रह्मावर्तकृद्देशे उत्पसारण्येवाकली क्षेत्रे एतत्पुस्तक समाप्तिर्न भवत् ॥
३३६ × १६२ सं० मी०	१६ (३५-५०)	१३	५५	अपूर्०	प्राचीन सं० १८३७ इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु मुनिविरचिते अष्टादशोऽध्यायः ॥१॥ भाद्रमास शुक्ल पक्षे तिथी १५ ॥ बुद्धवासरे तद्दिनशंभुर्न भवन्ति ॥ संवत् ॥ १८३७ ॥
२७३ × ११६ सं० मी०	१२७ (१,३-१२८)	७	२६	अपूर्०	प्राचीन सं० १८६३ इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भीष्मपर्वणि परममोच संन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१॥ सं० १८६३ ॥
२४१ × १२६ सं० मी०	२७ (१-२७)	१३	३८	पूर्०	प्राचीन इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१६॥ सं० ११६॥
२५६ × १५६ सं० मी०	११ (६-१६)	१४	३१	अपूर्०	प्राचीन इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म सन्यास योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ + + + + (५० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसूच्या वा सग्रहविशेष की राख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३६१८	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	३६४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०१	३६८६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०२	३६८८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०३	३८६०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०४	३००६	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१०५	३०७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	कया अक्ष पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	स	द	९	१०	
					११	
२६७ × १५५ सें० मी०	१३१ (१-१३१)	१२	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री पञ्चोत्तरीभगवद्गीतासूपनिषत्- सुब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णा- जुनसवादेमग्यास योगोनामाष्टादशो- ध्याय १८ समाप्तिमंगमत् ॥ विक्रमा- दित्यराजस्यनागाभ्रनवमस्मृत प्राणदेऽ सितपत्रेदु तृतीया चद्रवासे लिखित शिवरात्रि सुन्दरनालस्यभारमज ।
११५ × ७६ सें० मी०	११८ (१-११८)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन	*** श्री भद्रगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णा- जुन सवादे मोदय सन्यास योगो- नाम अष्टमदशोऽध्याय ।
१८८ × ६६ सें० मी०	५० (१-५०)	१०	३२	पूर्ण	प्राचीन	*** श्री भद्रगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णा- जुन सवादे मोदयस्यनाम योगोनाम अष्टादशोऽध्याय समाप्त शुभ भूयात् ***** ।
३११ × १५२ सें० मी०	३६ (१-३६)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म- योगशास्त्रे श्रीकृष्णाजुन सवादे क्षेत्र सत्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥ समाप्त शुभमस्तु ॥
२३५ × १०३ सें० मी०	१३ (६-२१)	७	२८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्या ।
३१३ × १६३ सें० मी०	१६	१५	५२	अपूर्ण	प्राचीन (जोख)	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णाजुन सवादे योग शास्त्रे निरूप्य सत्यासयोगो नामऽष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥
२५८ × ८७ सें० मी०	७१ (१-७१)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
(१०१०१३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आवृत्त संख्या या मसहृविषय की संख्या	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रय किम दस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
१०६	८६६	भगवद्गीता (१ स १० अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०७	६१५	भगवद्गीता (१ स १० मे दाखल है)			दे० का०	दे०
१०८	६४४	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०९	६७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११०	४८३८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१११	४६२३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११२	४६१४	भगवद्गीता (अष्टादश अध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ म पक्षितसंख्या और प्रति पक्षि म अक्षरसंख्या	क्या शेष पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्त मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
२२८ × १३३ से० मी०	४४ (१-४४)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन स० १६३	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे रत्न लातेनयमलक्षि मीता मर कोट नमर ॥ नमः श्री कृष्णाय ॥ स० १६३२ यंज्ञाद्य
१६४ × ६२ से० मी०	१२७ (१-७८, ७८-१२६)	५	२१	पूर्ण	प्राचीन स० १८२	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सत्यास योगो नामाष्टा- दशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ स० १-६२ मुका मडोरुमपडमये ॥ पटनार्य श्री महतरं गोरजी ॥ निम्नतः प० श्री चौबेकलुराम इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे माक्ष सत्यास नामाष्टादशोऽध्यायः ॥
१६७ × ७७ से० मी०	६ (१, ८, ३७, ८३, ८६- ९०, ११८)	६	१८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे प माक्ष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त ... ॥ ... शुभमस्तु भूयात् सवत् १६४४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२२४ × १० से० मी०	२५	६	३७	अपूर्ण	प्राचीन स० १७६१	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे प माक्ष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त ... ॥ ... शुभमस्तु भूयात् सवत् १६४४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
१८८ × ६४ से० मी०	८७ (१-८६, ८८)	८	२०	अपूर्ण	स० १६४४	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे प माक्ष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त ... ॥ ... शुभमस्तु भूयात् सवत् १६४४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२३७ × ११३ से० मी०	२१ (१३-६, १४ १६, २३, २७ ३३, ३४, ३६- ४३, ४६-४८, ५०, ५१, ५४- ५७, ५८-६१, ६३)	८	२८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे प माक्ष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त ... ॥ ... शुभमस्तु भूयात् सवत् १६४४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२२६ × १२ से० मी०	४६ १-४६	८	३४	पूर्ण	प्राचीन	इति भगवद्गीता सूक्तियुक्तं ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे न बाणय श्री नाम अष्टादशाध्याय मपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकावार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६१०	भगवद्गीता			मि० का०	दे०
११४	४४२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११५	५०६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११६	४६१८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
	२					
११७	५१३२	भगवद्गीता (१०-११ अ०).			दे० का०	दे०
११८	६८७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११९	६५२०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
	१६					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स ८	६	१०	१०
२१६ × ११८ से० मी०	४७ (१-८, १२-१६ १८-४१)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६ × १०२ से० मी०	६४ (१-६४)	८ २३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म विभागदर्शनोनाम मत्तदशोऽध्याय + + + ॥ (पृ० ४५)
२२६ × १०५ से० मी०	२६	७ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म विभागदर्शनोनाम मत्तदशोऽध्याय + + + ॥ (पृ० ४५)
८१ × ६७ से० मी०	६५ (१-६५ ६६)	५ ६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म योगोनाम तृतीयोऽध्याय ॥ + + + ॥ (पृ० ८१)
२३४ × ६४ से० मी०	१२ (१-१२)	६ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूपदर्शनोनाम एकादशो ऽध्याय ॥ १॥ लिखित नारायण भट्ट ब्राह्मण ॥
२५५ × १५४ से० मी०	३० (१६-४५)	१४ २३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गुरुत्रय विभागोनाम चतुदशो ऽध्याय ॥ (पृ० ४१)
६६ × ६५ से० मी०	२० (१-२०)	१० ११	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्ण- ार्जुन संवादे विश्वरूपदर्शनोनाम मोषो नामकादसोऽध्याय ॥

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	१७१७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२१	४४८८	भगवद्गीता (१-१८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१२२	४४६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२३	१०४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२४	४२६२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२५	४३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	<u>४४४०</u> १०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्र मा पृष्ठा का धारा	पत्रमाहा	प्रतिपत्र से प्रतिपत्र पत्र प्रतिपत्र प्रतिपत्र	प्रतिपत्र से प्रतिपत्र प्रतिपत्र	प्रतिपत्र से प्रतिपत्र प्रतिपत्र	प्रतिपत्र से प्रतिपत्र प्रतिपत्र	प्रतिपत्र से प्रतिपत्र प्रतिपत्र
८८	८	८	८	८	८	८
१६८×६९ सें.मी०	७ (४४-९९)	८	२०	८००	प्राचीन	
२१७×११ सें.मी०	७६ (१-७६)	७	२४	७०	१०१६१७	प्रति श्री मन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः ॥ सप्तमः १६१७ मार्गमागं मुने कविरूपे विष्णो मन्मथगोताम्य- नरे विद्यते श्रीशङ्कराचार्य...
१६३×६८ सें.मी०	११८ (२-४८, १०- ४०, ४६, ४८- ६२, ६४-६५, ६८-१३२)	६	१६	८००	(कवि कवि) १०१६१९	प्रति श्री मन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः ॥ ११८॥ पञ्चमः सप्तमः पञ्चमः सप्तमः ॥ सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः ॥ सप्तमः १६०१९ श्रीशङ्कराचार्यनमः ...
१५३×१० सें.मी०	५७ (१-४४, ४७-४८, ४५- ५७, ६१-६२, ६५-६६)	१०	१८	८००	प्राचीन	प्रति श्री मन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः ॥ १८॥
२३७×१३१ सें.मी०	४३	७	२२	८००	प्राचीन	अं नमः प्रति श्रीमन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः ॥
३१६×१३८ सें.मी०	३० (१-३०)	१२	३८	८००	प्राचीन	(पत्रमंथा ७६) + + + प्रति श्री मन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः ॥ १८ श्री सप्तमः १८७१ योग शुक्ल योगमार्गमागं जगत् ।
१२४×६९ सें.मी०	६६	६	१५	८००	प्राचीन	प्रति श्री मन्मथगोताम्यपुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीशङ्कराचार्यनमः मोक्षमार्गं योगो नामाष्टादशो- ध्यायः + + सप्तमः १८६८ सप्तमः नाम सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः नाम सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागनमस्त्रा वा संग्रहविषय की मस्त्रा	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ वित्त वस्तु पर लिया ३	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
१२७	१३६८ ५	भगवद्गीता			१० का०	१०
१२८	१०६७	भगवद्गीता			१० का०	१०
१२९	१६१०	भगवद्गीता			१० का०	१०
१३०	१८७०	भगवद्गीता (सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित)			१० का०	१०
१३१	१८२६	भगवद्गीता (वस्तुव टीका सहित)			१० का०	१०
१३२	१५३२	भगवद्गीता (सटीक)			१० का०	१०
१३३	१८६६	भगवद्गीता			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पृष्ठ मे प्रसारकता	क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान प्रथम का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	८	८	८	१०	११	
१५७×७८ से० मी०	१२६ (८-१३३)	६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सत्यासयोगो नामाष्टा- दशोऽध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्णम् शुभम् ॥
१४×८५ से० मी०	१४४ (१-१४४)	६	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र सभातायां वैसम्पिका भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत् ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षे " अष्टा- दशोऽध्याय ॥ १८ ॥
२६५×१५८ से० मी०	१२२ (१-१२२)	४	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रसहितायां वैसम्पिकया भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसत्यास योगो नाम अष्टादशोऽध्याय समाप्ता ॥ शुभ- मस्तु ॥
२६३×१४७ से० मी०	४२ (५८-७८, ८१-८६, ८८- १०८, ११२)	१५	४०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे.....
२७७×१४५ से० मी०	१३६ (१-१३६)	१४	४१	पूर्ण	प्राचीन	संवत् १८५८ भाद्रपदे मासे शुक्ले पक्षे त्रिंशो सप्तमी ॥ चंद्रबास रे तिथित मिद पुस्तक पीतारपर नक्षत्रेण आरभ्यते ॥
३०×११ से० मी०	३२	११	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६३×१०४ से० मी०	६	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
(सं. सं० ६४)						

रमाव और विगय	पुस्तकालय की प्रागतमल्या वा सप्रहविशेष की सख्या	सयनाम	सयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	मिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	२८८३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३५	२८४८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३६	२८३५ २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३७	२८१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३८	३४४१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३९	१२५६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४०	१२१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? प्रपूर्ण तो वर्तमान ग्रन्थ वा विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
१५३X८ सं० मी०	८१ (१-८१)	७ २५	५०	प्राचीन स० १८७४	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे भोक्ष सत्यास मायो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ भगवत्गीता संपूर्णं शुभं भूयात् ॥ सवत १८७४ क साल चतुर्मुदिन श्रीमेक तिथा श्री वैष्णवसन दास ॥ सीताराम ॥ आराम चत्वारयनम ॥
२२६X११ सं० मी०	१२१	६ २७	अपूर्०	प्राचीन	
१४२X८७ सं० मी०	१४१ (१३-१४३)	६ ४२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शन सहस्र मंदिताया वैवासिकयो भोष्म पर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे " " ॥
१०X७ सं० मी०	२२ (१०७ १२८)	६ १०	अपूर्०	प्राचीन	
२१७X१०३ सं० मी०	४० (१-४०)	५ २४	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादेकमयोपोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ (१० ३४)
१७X६३ सं० मी०	११६ (५-१२३)	६ १५	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे परमाथ विनिराज योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ वर्ष वैशाख वदि ३ अनिवाशरान्विताया लिखित प० नारायण दास मिहृनगुरिया ॥ पोषी श्री महाराज कुमार अनंद सिंहाज की ॥ श्री गोपाल नू ॥
१८५X६ सं० मी०	१०७ (२-१०८)	६ २१	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसहाय्य वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	११६३	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४२	३११३	भगवद्गीता (१-८ अध्याय)			३० का०	३०
१४३	३१७५	भगवद्गीता (सटीक)			३० का०	३०
१४४	३१७८	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४५	३१८०	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४६	३२८७	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४७	२६३३	भगवद्गीता			३० का०	३०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे पत्रसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	६	१०	११
२१ × ११ ५ सें० मी०	४०	८ २२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियस्तु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे परमार्थ निरायोनामाष्टादशो- ऽध्यायः ॥१८॥ समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२७ × १३ ३ सें० मी०	२५ (१-२५)	१८ ३८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियस्तु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादशोऽध्यायः ।
३० × १३ सें० मी०	११३ (४-११६)	१३ ४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियस्तु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशो ध्याय १८ नारायणाय × × ×
२० ६ × ८ ६ सें० मी०	६६	५ २८	पूर्ण	प्राचीन	श्री भगवद्गीता सूफनियस्तु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥
२१ ६ × ६ १ सें० मी०	७३ (२-७५)	८ २२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियस्तु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥
१२ २ × ६ २ सें० मी०	१२५	७ १२	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ७ × १० ६ सें० मी०	६७	७ २५	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३६७०	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४९	२२१२ ५	भगवद्गीता			३० का०	३०
१५०	४४१७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		३० का०	३०
१५१	२१०७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		३० का०	३०
१५२	२१०६	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		३० का०	३०
१५३	२१०५	भगवद्गीता दीपिका गूढार्थ	मधुसूदन सरस्वती		३० का०	३०
१५४	८३०	याज्ञवल्क्य गीता (१-१२ अध्याय)			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिनसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८ स ८ द	८	१०	११
२१२ × ४८ सें. मी०	१०३ (३-१०७)	५ २४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टा- दशोऽध्याय ॥ सवत् १८६६ इव पुस्तक वैभवस्य हस्ताक्षर खड्ग अस्ति शुभ भूयात् ॥... ..
१६१ × ११ सें. मी०	४ (१८-२१)	१० १८ ।	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विभूति योगोनाम दशमोऽध्याय ॥
३१५ × १५ = सें. मी०	२४३ (१-२४३)	१४ ४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री परमहंस परित्वाजवाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचिताया श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायाम- ष्टादशोऽध्याय १८ ममाप्त सवत् १८५५ मिति ज्येष्ठ मासे कृष्णपक्षे ११ एकादश्या शुक्रवासरे × × ॥
२८३ × १२ सें. मी०	१२	१० ४४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया दशमोऽध्याय ॥
२८३ × १२ सें. मी०	११	१० ५०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायामेकादशो- ऽध्याय ११॥
२८३ × १२ सें. मी०	१३	११ ५३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तयोदशोऽध्याय ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री गोपात्माय नमः ॥
२७७ × १२ सें. मी०	१८ (१-१८)	११ ४३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भाजवत्सवगीतापनिपदस्य द्वादशोऽध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णा- यनमः ॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतमख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	३६७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	३६७५	रामगीता			दे० का०	दे०
१५७	$\frac{७०१४}{६}$	रामगीता	रामानुज		दे० का०	दे०
१५८	३६८७	रामगीता			दे० का०	दे०
१५९	३७८३	रामगीता			दे० का०	दे०
१६०	$\frac{३३४८}{४६}$	रामगीता			दे० का०	दे०
१६१	$\frac{१४४४}{५}$	रामगीता (पंचम मार्ग)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पमितसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या घण पूर्ण है? अपूर्ण है तो वन मात्र अक्ष का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	६	१०	११
१६३×८३ सं० मी०	१२ (१-१२)	६ २६	पू०	सं० १८८२	इति श्री मद्भ्यात्मरामायणे उत्तर कांडे रामगीता नाम पचमोऽध्याय ॥५॥ प्रथम सवन सुदि ॥२४॥ सवतु १८८२ ॥ मुका वदेउमह ॥
१३८×६६ सं० मी०	१६ (१-१६)	७ १२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भ्यात्म रामायणे उत्तरकांडे रामगीता नाम पचमोऽध्याय ॥५॥
१८१×१६१ सं० मी०	३	१५ ८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामनुज विरचित पट्टलोकी रामगीता संपूर्ण समाप्त ॥
१६३×७५ सं० मी०	५ (१-५)	१० ३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्भ्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तर कांडे रामगीता नाम पचम सर्ग ॥
१५८×१०५ सं० मी०	८ (१-८)	११ २४	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्भ्यात्मरामायणे उत्तरकांडे उमा महेश्वर सवादे रामगीता समाप्ता ॥
१२५×८२ सं० मी०	१६ (१-१६)	६ १७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भ्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता नाम पचम सर्ग ५ ॥
१८७×१२७ सं० मी०	७ (१-१७)	१५ १५	पू०	प्राचीन (सं० १६१०)	इति श्री मद्भ्यात्म रामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता पचमसर्ग ५ बिहारि लालेन लिखत सं० १६१७ श्री० गुरु० गुरु० ॥

क्रमिक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मध्यविशेष की मध्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	६८६०	रामगीता (सटीक)			६० का०	६०
१६३	७५१३	रामगीता			६० का०	६०
१६४	६६७६	रामगीता			६० का०	६०
१६५	२२५६	रामगीता			६० का०	६०
१६६	७३७२	रामगीता			६० का०	६०
१६७	७३४५	रामगीता सटीक			६० का०	६०
१६८	७५५२	रामगीता सटीक (रामगीता व्याख्या)			६० का०	६०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
					११	
२५४×११५ सं० मी०	१६ (१-१६)	१३	४१	पू०	प्राचीन (वृद्धि कृतित)	इति श्री मत्स्यवत राज विपद्दर ॥ रामगीता टिप्पण समाप्ता ।
१६१×१६६ सं० मी०	२२ (१-२२)	१५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यवत रामायण उत्तरकांडे श्री रामगीता समाप्ता श्री रामायण संतु ॥
१८२×११७ सं० मी०	१४ (१-१४)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१४४×७३ सं० मी०	१८ १३, ४-१६	१५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायण उमा महेश्वर सवादे श्री रामगीता संपूर्णम् ॥
३२×६८ सं० मी०	६ (१-६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री मदध्यात्म रामायण उत्तर कांडे उमा महेश्वर सवादे श्री राम गीता समाप्तम् सम्वत् १६ गत २२ के शास्त्र पुस्तक लिखितम् × × ×
२६६×११३ सं० मी०	३१ (१-३१)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामह ेश्वर सवादे उत्तरकांडे रामगीता कथन नाम पंचम सर्ग ॥ × × × इति टीकाया पंचम सर्ग ॥५॥
२४६×११२ सं० मी०	१४ (१, ४-१६)	६	४६	अपू०	प्राचीन	**करिष्ये रामगीता व्याख्यान वालबुद्धये ॥१॥ (पत्रसंख्या १)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२	श्रीभगवद्गीता			वि० का०	दे०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	नया ग्रन्थपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ घ	ब	म र	६	१०	११
१७२×६६ से० मी०	६	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७१*	इति श्री वैष्णव गीताया श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशायामो नाम चतुर्थाध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७१६ ॥
११२×७६ से० मी०	११२ (१-११२)	७ २५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री परमपुरुषो उत्तर छंदे श्यामदत्तव गीता सूरनिपत्यु ब्रह्म- विद्याया श्री महादेव रामव संवादे माक्षमन्यागोनाम पांड्वोऽध्याय ॥
२३×१५ से० मी०	६	१६ १४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोऽध्याय. × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३६×६७ से० मी०	६ (१-६)	१२ ४५	अपूर्ण	प्राचीन	
२८३×१२ से० मी०	११	११ ५८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोऽध्याय ॥
१६५×११५ से० मी०	१०२	८ १८	पूर्ण	सं० १६१५	इति श्रीमगवद्गीता सूरनिपत्यु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगनामष्टोदशोऽध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १६१५ के साल.....
१६६×६१ से० मी०	१२६ (१-१२६)	१ २०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमगवद्गीतासूरनिपत्यु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे माक्षमन्यागोनामपांडवोऽध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीमद्भगवद्गीता मूढार्थ दोषिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२	श्रीमद्भगवद्गीता			मि० का०	दे०
	५					

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में पत्रसंख्या	क्या ग्रन्थपूर्ण है ? ग्रन्थपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग द	६	७०	७१
१७२ × ६६ से० मी०	६	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७५	इति श्री वैष्णव गीताया श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दाक्षा निर्देशभागो नाम चतुर्थोऽध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५५ ॥
१४२ × ७६ से० मी०	११२ (१-११२)	७ २५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर छंदे श्रीमद् शिव गीता सूरनिपात्य ब्रह्म- विद्याया श्री महादेव रामक संवादे मात्स्ययोगो नाम द्वादशोऽध्याय ॥
२३ × १५ से० मी०	६	१६ ३४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोऽध्याय × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३६ × ६७ से० मी०	६ (१-६)	१२ ४५	अपूर्ण	प्राचीन	
२८३ × १२ से० मी०	११	११ ५८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता शूद्रार्थ दीपिकायां नवमोऽध्याय ॥
१६५ × ११२ से० मी०	१०२	८ १८	पूर्ण	सं० १६१५	इति श्रीभगवद्गीता सूरनिपात्य ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे योगनामष्टोदशोऽध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १६१४ के साल.....
१६६ × ६३ से० मी०	१२६ (१-१२६)	६ २०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूरनिपात्य ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मात्स्ययोगो नामाष्टादशोऽध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसरूपा वा सग्रहविशेष की सरूपा	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१७६	५७	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७७	<u>१२८५</u> ८	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७८	१६१३	श्रीमद्भागवतगीता (संस्कृत सटीक)			दे० का०	दे०
१७९	४२८०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८०	<u>३३४८</u> ४६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८१	६३९	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८२	११०	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति म प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
अ	ब	स द	६	१०	११
२१८ × ११६ सें० मी०	१० (६-१५)	१३ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१७५ × ११५ सें० मी०	६६ (१-६५)	७ १६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सुप्रसिद्धसु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगो नामष्टादशोऽध्याय ॥६॥ ॥सप्त॥
३३ × १५ सें० मी०	२६	१२ ७५	अपूर्ण	प्राचीन	
२० × १०.५ सें० मी०	४५ (३-२१, २५-३६, ४६-४८, ५६-५७, ५९-६५)	६ २७	अपूर्ण	सें० १८४७	जून संवादे मोक्ष संन्यास योगो नामष्टादशोऽध्याय ॥१८॥ शुभं भूयात् ॥ श्रीमद्भगवद्गीता संपूर्णा ॥ श्रीरामचन्द्रायनमः सवत् ॥ १८६५ ॥ मिति माघाद्वदि ॥ लिखिते पन्नालाल भट्ट मथुरास्थेन ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी०	१३८ (१-३९ (३४-३६)-१३५)	६ १७	पूर्ण	सें० १८६६	ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्य संहिताया वैप्रामिस्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सुप्रसिद्धसु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यास योगो नामष्टादशोऽध्याय १८ सवत् १८६६ के मिति चैत्र सुदि ४ लिप्यते श्री गोमार्त दलई राम पठनाय वैष्णव श्रीनंदराम श्रीरामजी
२०.६ × १०.६ सें० मी०	७०	८ २२	पूर्ण	प्राचीन	श्री सवत् ॥ १९१ ॥ ॥६३॥ पोसवदि द्वित्रिंशो सानो वामर समाप्त.....
१७ × १०.५ सें० मी०	१२६	७ १७	पूर्ण	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता सुप्रसिद्धसु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगो नामष्टादशोऽध्याय ॥ श्री कृष्णार्जुनसु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की भागतसंख्या वा राष्ट्रविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रणकार	टीकाकार	प्रथ विम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८३	$\frac{६६१}{५}$	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८४	१७३२	श्रीमद्भगवद्गीता (सुबोधनी संस्कृतटीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१८५	६८२०	श्रीमद्भगवद्गीता (मराठी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१८६	७०२४	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८७	७१७६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८८	$\frac{५४१२}{५}$	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८९	६०६६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितमख्या और प्रति पत्रितमख्ये प्रथमसंख्या	क्या प्रथम पूर्ण है ? अर्थात् प्रथम पूर्ण है तो वर्तमान प्रथम का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	१०	११	
१२६×७१ सं० मी०	८१ (१२-१७, ३२-१०४, १०७-१०६)	६	१६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता ॥
२८५×१२६ सं० मी०	११२ (१ ११२)	१४	३८	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीताटीकाया सुबो- धिन्या श्रीधरस्वामिहृताया मोक्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥''''''
२४४×१४८ सं० मी०	६६ (२-७०)	१४	३२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहिताया वैय्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगव- द्गीता सुनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योग- शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यास योगो नाम अष्टादशोऽध्याय १८ सवत् १८४० फाल्गुन कृष्ण १४ शुभमस्तु ॥
१५१×११२ सं० मी०	११	१७	१६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री तत्त्वति श्री महाभारत शत- सहस्रसंहिताया वैय्यासिक्या शान्ति भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सुनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशो ॥ १८ ॥ सवत् १८४३ जेष्ठकृष्ण १५''''
२५५×१२५ सं० मी०	५२ (१-५२)	६	३२	पूर्०	प्राचीन सं० १६३५	इति श्री भगवद्गीता सुनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टा- दशोऽध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १८३५ जेष्ठकृष्ण १५''''
१४१×७६ सं० मी०	१३५ (३-१३७)	६	१६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥ शुभमस्तु लेखक पात्रकया ॥
२१×१०७ सं० मी०	७८ (१-७८)	७	२६	पूर्०	सं० १८८६	हरि ॐ तत्त्वति श्री महाभारते शतसहस्रसंहिताया वैय्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्री मद्भगवद्गीता सुनिपत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशो- ऽध्याय ॥ १८ ॥''''सं० १८८६''''
(४०००९६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मप्रहरीजोष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रबन्धकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	विव
१	२	३	४	५	६	७
११०	$\frac{७१७७}{३}$	धीमदुभगवद्गीता			३० का०	३०
११०	$\frac{८११३}{१०}$	पट्टश्लाघी-ममीना			३० का०	३०
११२	$\frac{४६४५}{५}$	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११३	४१४२	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११४	१२५२	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११५	३३१८	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११६	$\frac{२३६}{१२}$	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१२६ × ८१ सें० मी०	१४३ (१-१४३)	६	१६	पूर्ण	प्राचीन	३। श्री। मा। मा॥ तेषा॥ स॥ स॥ हि॥ या वेयासि बया॥ म्मा॥ वणि॥ ग॥ दशो॥ नू॥ नि॥ सु॥ ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सभादे मो॥ स॥ स॥ गो॥ मा॥ दशो १०८५५ ॥ १८॥ ममाज्जम् ॥
१६५ × १३ सें० मी०	२ (३८-३६)	८	१७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पट्टनोकी रामगीता संपूर्ण ॥
११२ × ८५ सें० मी०	४ (८-११)	५	११	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्स्यगीता की गीता संपूर्ण समाप्त ॥ ...
१३५ × ८१ सें० मी०	२ (१-३)	६	१३	अपूर्ण	सं० १६४०	इति श्री सप्तशती की गीता ममाज्जम् ॥ ब्रह्मसूत्र सवत् १६४० के अष्टादश १६४० ॥
१०३ × ६१ सें० मी०	१६	४	१०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री मत्स्यगीता की गीता संपूर्ण सप्त- माप्त ॥ लिप्योपेत डीमघेम मत १८ ७५ ॥ का। मोतोमाह सुधि ॥ १०॥
१२१ × ६६ सें० मी०	४ (१-४)	४	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्स्य
१६ × १०५ सें० मी०	१ (१७)	१२	१२	पूर्ण	प्राचीन	इति सप्तशती की गीता संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६७	$\frac{२२५२}{५}$	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	२०
१६८	४३६८	सप्तश्लोकी गीता			६० का०	२०
१६९	$\frac{६०६८}{२}$	सप्तश्लोकी गीता			१० का०	२०
२००	५७५६	सप्तश्लोकी गीता			६० का०	२०
२०१	$\frac{५८६६}{२}$	सप्तश्लोकी गीता			६० का०	२०
२०२	५६०८	सप्तश्लोकी गीता			२० का०	२०
२०३	$\frac{७१७८}{७}$	सप्तश्लोकी भगवद्गीता			२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान भाग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द. अ.	द.	म. द.	६	१०	११
१६१ × ११ सें० मी०	२ (१४-१६)	८ १६	५०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन सवादे सप्तश्लोकी गीता संपूर्ण ॥ सुम मस्तु मंगल ददायु ॥
१६२ × ८७ सें० मी०	१ (१-३)	७ २०	५०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यश्लोकी गीता संपूर्ण ॥
२२ × १०१ सें० मी०	१	८ ३८	५०	प्राचीन	इति सप्तरश्लोकी गीता समाप्ता ।
२० × १०७ सें० मी०	३ (१-३)	७ २४	५०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ॥ सं० १८८४। पीत विद ७। हस्ताक्षर अमृतराव के होम
१४३ × १०६ सें० मी०	१	८ १७	अपूर्ण	प्राचीन	
१७६ × ६८ सें० मी०	२	६ २३	५०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
१६६ × १० सें० मी०	३ (१-३)	४ १५	५०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी अथर्वगीता संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किंग वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	१६५२	सारसीना			दे० का०	दे०
ज्योतिष ✓ १	६६३५	भगवद्भक्त			दे० का०	दे०
२	२४२	अनर्दशा फल			दे० का०	दे०
३	१७५६	प्रक्षरचिन्तामणि			दे० का०	दे०
४	४५६१	प्रक्षरचूडामणि			दे० का०	दे०
५	६८१८	प्रभुतकृष्ण	नारायण		दे० का०	दे०
✓ ६	६६००	प्रपञ्चसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ प्र	अ	स	द	६	१०	११
१८ × १० ५ सें० मी०	३ (१-३)	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१८ × १२ ६ सें० मी०	२ (१-२)	१६	२७	पूर्ण	प्राचीन	इत्यग प्रश्न ॥
२२ ३ × १० ८ सें० मी०	८ (१-८)	६	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ × १० ५ सें० मी०	११ (१-११)	६	३८	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री अक्षरार्चितामणि समाप्ता संवत् १८३४
२२ ७ × १२ सें० मी०	६ (१-६)	७	२५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६३६	इत्याक्षर बुडामणि पुस्तक सम्पूर्ण संवत् १६३६ साके १८०१ समय आपाद मासे कृष्ण ३ शनी वासरे लिपिवा सौरी सम्मण्ये
३२ × १० सें० मी०	४२ (१-४२)	७	४५	पूर्ण	सं० १६३१	इति श्री ज्योति श्री रामसुत नारायण विरचिते अमृत कुम्भे ग्रहण लिखनानु- क्रम समाप्त ॥ संवत् १६३३ आशोज मासे शुक्ल प्रतिपदा मंदवासरे लिखित मिद पुस्तक अक्षर दत्तात्रय पुत्र नंद साक्ष नव ॥
२७ २ × ११ २ सें० मी०	२ (१-२)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८१८	इत्यर्थ काठ संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	द्विपि
१	२	३	४	५	६	७
७	४५०२	ग्रन्थदीपक (हिंदी टीका सहित)	८		२० का०	२०
८	३८०३	ग्रन्थप्रदेश			२० का०	२०
९	२४६	ग्रन्थजदकेवली			२० का०	२०
१०	७१८८	ग्रन्थकवग भरिष्टादि			२० का०	२०
११	६६०८	ग्रन्थकवगजातक (प्रथम अध्याय)			२० का०	२०
१२	५२७५	ग्रन्थप्रहयोग फल	नागेश्वर तान पण्डित		२० का०	२०
१३	२५७	ग्रन्थकवगप्रिहार			२० का०	२०

ग्रन्थ या पुष्ठा का संस्करण	पत्रगणना	प्रति पृष्ठ म पंक्तिनंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो उत्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	ग्रन्थ की अवस्था का विवरण
सं. क्र.	प.	सं.	द.	सं.	विवरण
२६५ × ११२ सं० मी०	५३ (१-५३)	६	२६	पू०	सं० १६४२ इति वेतुद्रयपन्न संपूर्ण समाप्त भूयात् सन्त १६४२ भागोत्तम भागि विसास माम् अक्षरपत्रे अनुपियाया शनिवासर कुसमाप्तन्या निखित पंडित राम सरूपजी यह पुस्तक ..
२३ × १०६ सं० मी०	१६ (१-१६)	१०	२५	अपूर्ण	प्राचीन इति अर्धग्रन्थोपे मुद्रितपत्र ॥ (पत्रसंख्या-११) X X X
२८६ × ११५ सं० मी०	५ (१-५)	८	३६	पू०	प्राचीन इति श्री अक्षरजद केवली संपूर्ण .. सं० १६११ मानो .. बादिर्य वासरे निखिता मुकलम पुरामध्य निखि विहारिन राम राम कृष्ण रा०॥
२३ × १०६ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन
२७५ × ११६ सं० मी०	४ (१-४)	६	४८	पू०	प्राचीन इत्यष्टक ज्ञानके प्रथमोप्याय समाप्त ॥
२१५ × ८२ सं० मी०	७ (१-७)	६	३२	पू०	प्राधुनिक इति अष्टग्रन्थोप्याय समाप्त ॥ श्री सत्त्व लय के स्वर सन्निधि निखित नायश्वर तान धादक गोपालनाथ निखित ॥
२२५ × १० सं० मी०	६ (१-६)	१३	३८	पू०	प्राचीन इत्यष्टक वर्गाधिकार समाप्त ॥ श्री॥

क्रमांक प्रो. विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	७३६०	अष्टात्तरीदशा (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१५	$\frac{५०३२}{८}$	ग्रहगण विधि			दे० का०	दे०
✓ १६	१५५७	ग्रहि चक्र			दे० का०	दे०
१७	१२८६	ग्रहियस चक्र (सटीक)			दे० का०	दे०
✓ १८	$\frac{५०५४}{१५}$	ग्रहोत्क चक्र			दे० का०	दे०
१९	४७७४	ग्रहाप्रश्न			दे० का०	दे०
२०	६६०५	ग्रामदायादि फन विचार (जैमिनि ज्ञात होना)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे पत्रसंख्या	तथा ग्रन्थ पूर्ण है अपूर्ण है वो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	स	द	९	१०	११
२११×१४६ से० मी०	२६	२०	१०	अपूर्ण	प्राचीन	
२१६×१४६ से० मी०	२ (१-२)	१६	२२	पूर्ण	प्राचीन	इति महर्गण विधि ॥
२६६×११८ से० मी०	४	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२०३×११८ से० मी०	५ (१-५)	१२	४१	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	इति नरपति जयचर्म स्वरौदये महिषस चक्रम् समाप्तम् ॥ इति स्वरौदयविवृती महिषस विवरणम् ॥ संवत् १६२१ भाद्र शुक्ल पष्ठमा वृषवाक्षरे तिथिदिनम्०
१६×७८ से० मी०	८ (१-८)	८	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति यागसीय सप्तमे आखंडक चक्र ॥
२१८×६ से० मी०	७ (१-७)	६	२५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री माया प्रश्न समाप्तम् ॥ सम्बत् १८६० ॥ साके १७२५ ॥ समये चंद्र भासे झुल्लु पक्षे द्वादश्या रविवाक्षरे विनेयित रघुवर रामेन भात्मा पठाथ पुस्तक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धि मस्तु ॥
२७४×११६	३ (१-३)	१५	६१	अपूर्ण	प्राचीन ॥ अथ श्री मज्जिमिनि जातका- नुसारेणायुदयादि फल विचार क्रियते ॥ (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२१	३६२६	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२२	३१८७	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२३	३०४६ ६ -	आजिप्रश्न			२० वा०	दे०
२४	६६११	आर्यभट्टमिहोत	आर्यभट्ट		दे० वा०	दे०
✓ २५	३८६६	आनन्द मनोरमा प्रश्न	वर्ग		दे० वा०	दे०
२६	३३९५	इष्टकान गोघन पूर्वादि (सटीक)			दे० वा०	६०
२७	३२६४	इष्टकानगोघन उत्तरादि (सटीक)			२० वा०	६०

पत्रा मा पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पत्तिसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	क्या यय पूर्ण १२ अपूर्ण है ता वतमान अक्ष वा विवरण	अवस्था भोग प्राचीनता	अन्य धावस्थर विवरण	
८ अ	८	म	द	६	१०	
१८६×१०७ सें० मी०	६ (१-६)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दश कृत प्रश्न समाप्त X X X X X X ॥
२५७×१२८ सें० मी०	७ (१-४)	१२	३६	अपू०	प्राचीन न० १८८	इति विष्णुराज कृत ग्राम पूर्ण ग्राम समाप्त सवत् १८८३ ॥ X X X
१६७×१३१ सें० मी०	५	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२६२×१२ सें० मी०	२६ (१-२६)	११	३६	पू०	प्राचीन न० १६५०	इति श्री मदावाय्याय्य भट विरचित महासिद्धांत गोलाध्याये कूटकाधिकारी नामाष्टादश ॥ संपूर्ण ॥ संपूर्णोप- माय्यभट सिद्धांत ॥ सवत् १६५० ॥
१७७×१२ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री र्ण विरचितालाक मनोरमा प्रश्न विसमा समाप्त्य ॥ (पृ० ३)
२६६×११६ सें० मी०	१० (१-१०)	१२	५३	पू०	प्राचीन न० १६०८	इति श्री लगान् पटराशिमध्ये चद्रे रत्नान चद्रसारणी । उदाहरण च समाप्त जुषमास्तु सवत् १६०८ माघ शुक्ल सोम निखित छत्रपुर श्री ॥ पूर्वादि समाप्त ।
२६८×११८ सें० मी०	७ (१-७)	१२	४६	पू०	प्राचीन न० १६०८	इति लगान् पटराशितोऽधिवे चद्रे सप्तमभाषाविविधसारण्युदाहरणे समाप्ते न० १६०८ कार्तिक वदि १२ मीमे छत्रपुरनिमिते श्री ॥ उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आमतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२८	१३६०	इष्ट सोधन			१० का०	१०
२९	४२६१	उद्दुष्टशास्त्रव्यक्रम			१० का०	१०
३०	६८५१	उद्दुष्टाग्र प्रदीप			१० का०	१०
✓ ३१	२०७७	उत्पात सभरण	यशोधर मिश्र		१० का०	१०
३२	६९२	अणु-धन चक्र ?			१० का०	१०
✓ ३३	६५१	अनुमंजरी			१० का०	१०
३४	११८	वसन्तवधमनुन	विष्णुधर शुभ		१० का०	१०
	२					

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
द ग्र	ब	स द	१०	१०	१०
२३ × १० ५ सें० मी०	६	८ २६	५०	प्राचीन	
२५ १ × ११ ३ सें० मी०	६ (१-६)	११ २७	५०	प्राचीन सं० १८१८	इति उद्दृष्टास्व पत्रम् श्री सवत् १८१८ भाके १६८२ वैशाख कृष्ण गुरी ति० द्विवेदिन जयन्तायस्य श्री "
२४ ५ × ११ सें० मी०	६ (१-६)	५ ३६	५०	प्राचीन सं० १६०१	इति पराशरीये उद्दृष्टाय प्रदीप समाप्तिमय- मत ॥ सवत् १६०१ आषाढ शु० १ गुरुवासरे ॥
३२ × ११ सें० मी०	८	६ ४५	५०	प्राचीन सं० १६१८	इति श्रीमत्कसारि मिश्रात्मज मिश्र यशोधर विरचिते ईदत्त चित्तामणौ उत्पात लक्षण समाप्तम् शुभमस्तु सवत् १६१८ के आश्विनि शुक्ल १५ शुक्र
१३ २ × ८ सें० मी०	५ (१-५)	८ १८	५०	प्राचीन	
२१ ६ × ६ २ सें० मी०	४	७ ३१	५०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्रीतुंगेश्वरी संपूर्ण स्वम्ब १८६० भाके १७२५
२८ × ६ सें० मी०	४	८ २६	५०	प्राचीन	इति कर्मन वध शत्रुन समाप्त ॥ शुभ- मस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ उपन पाठनयो ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त मर्यादा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टोकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	६६८७	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		१० का०	१०
३६	६८१५	वरणकुतूहल	भास्कराचार्य		१० का०	१०
३७	६४६४	* नरणकुतूहल	भास्कराचार्य		१० का०	१०
३८	३६४१	करण कीतूहल टीका	विश्वनाथदेवना		१० का०	१०
३९	३१८६	वरणप्रदीप	महादेव		१० का०	१०
४०	१६०२	वरण फल			१० का०	१०
४१	३८३६	चर्मप्रमाण (चर्मप्रमाण विज्ञापन प्रकार)			१० का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बर्त- मान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आक्षेपक विवरण
८ अ	५	स द	६	१०	११
२५ X १०.५ सें० मी०	१३ (१-१३)	१० २८	पू०	प्राचीन सं० १६६६	इति भास्वरीये करणे कुतूहले पर्व- नपनोनाम दशमोऽध्याय. ॥ सं० १६६६ वर्षे " "
२१.८ X १०.७ सें० मी०	१६ (१-१६)	६ २६	पू०	सं० १६१०	इति भास्वरीये करणे कुतूहले ॥ विदग्धवृद्धिबलमे शमोक सूर्ययोऽग्रह ॥ १०॥ सं० १६३०॥ शाके १७६५ मोनी वैशाख वदि १४ भूगो ॥
२३ X ६.३ सें० मी०	१६ (१-७, ६-१६, १८)	६ २६	अपू०	प्राचीन सं० १६६२	कणं कुतूहल समाप्त ॥ सं० १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्तमाने भाद्रपद शुदि नवम्या रवौ लिखित " " " "
२३.८ X १०.१ सें० मी०	६०	१० ३१	अपू०	सं० १८४२	इति श्री दिवाकर देवतात्मज विश्वनाथ देवज्ञ विरचिते ब्रह्मतुल्यस्योदाहरणे पाताधिकारस्योदाहरणम् ॥ श्रीविश्वनाथेन दिवाकरस्य सुतेन यत्माद्विचिता समाप्ता मोलाभिधायाम निवासिनेयमुद्राहृति खेट कुतूहल्य ॥ सं० १८४२
२३.८ X १०.१ सें० मी०	६ (२-४, ६-८)	८ ३१	अपू०	प्राचीन	
२०.८ X १०.८ सें० मी०	३	८ १६	अपू०	प्राचीन	
२२.६ X १५.२ सें० मी०	२ (१-२)	१४ ३१	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्याख्ये सवादे ज्ञानभास्करे० कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार मूलोद्धरेण लिखित ॥
(सं० सू० ६८)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रत्येक वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	७५६०	कर्मपवाशिना			१० का०	१०
४३	१०६१	कन्यास्तिनटीका			१० का०	१०
४४	४५६	कण्टावलि	रुद्र		१० का०	१०
४५	५१६८	कामभाषापिंड (सटीक)।	गर्ग ऋषि		१० का०	१०
४६	६६७८	कालचक्र ज्ञानक			मि० का०	१०
४७	६६४६	मानचन्द्रिका टीका			मि० का०	१०
४८	१०४६	कासजानक			१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे प्रक्षरसंख्या	नया ग्रन्थ पुरा है ? अपूर्ण है तो कत मान अंश का विवरण	प्रवस्था और श्रचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
२२'६" × १२'६" से० मी०	६ (३२-४०)	१५	१०	अपूर्ण	प्राचीन इति श्री कर्म प्रकाशिकाया जन्मा कानाक्षिपेककाल ज्ञान नामचतुर्था- धिकार (पत्र संख्या ३२)
३०'४" × १४'८" से० मी०	१७ (१-१७)	१५	४७	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६० समाप्तेषु बलिनीना इति श्री ॥ संवत् १८६० मा० १७१५ ज्येष्ठ मासि कृष्ण पक्ष अमावास्या त्रिदिन लिखित मिथ मुन्नाधर स्वयं पठनायम् उमाशिया जयति मगत्य कर ॥
२६'१" × १२'५" से० मी०	३ (१-३)	१२	३६	पूर्ण	प्राचीन इति ब्रह्मकुम्हटाविनिसूक्तं ॥१॥ कम्पायटक चैव मायम् ताद्रमाजने अवतरे बटवृक्षे च भुक्ता नाद्रायण चरेत ॥१॥
२२'२" × १२'५" से० मी०	४ (१-४)	११	२१	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३४ इति श्री कर्म ऋष्यवृक्षरिचरते कानान पण्डितेपरिप्रेक्षे चतुर्विंशति प्राक्षा सूत्रेणमात सं० १८३४ वै० शु० ८ शु० १०
२५' × १०'६" से० मी०	१६ (१-१६)	६	४२	पूर्ण	प्राचीन इति श्री इश्वर पाथतो सवादे काल- चक्र जातक समाप्तम् ॥
२५'१" × १०'५" से० मी०	१० (१-१०)	६	४२	पूर्ण	प्राचीन इति श्रीशेखरदत्त बाधिविषयेन आद्यराय पुत्रेण श्री बलान्तिष्ठ मुन सूय नामधेय देशिकप्रियशिष्येण मन्त्र बाधयेन इश्वरोक्त कालचक्र जातकामुदयि विधान दशाविपाक अकिचिद् याध्यातः ॥
२७'८" × ११'३" से० मी०	५ (१-५)	८	३०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६४४ इति कालजातक मापगुम्ता १२ बुधवार सकत् १६४४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४९	५५८२	कालज्ञान			३० का०	३०
५०	४७७०	कालज्ञान			३० का०	३०
५१	४८६०	कालज्ञान			३० का०	३०
५२	४८८६	कालज्ञान			३० का०	३०
५३	३५३७	कालज्ञानाभरवितागणित शास्त्र	शिव		३० का०	३०
५४	४१७	कालमार्तण्ड ?	कृष्ण देवरा		३० का०	३०
५५	६६३३	कालसूत्र व्याख्यान			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो चतुर्मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२४६×१३६ से० मी०	२ (१-४)	१३	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
२१७×८६ से० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन स० १८५६	संवत् १-५६ शाक १७२४ समथ मार्ग मास शुक्लपक्षे पंचम्या भीमवासरे ॥ वितपिरथुवरा रामेन काल ज्ञान समाप्तम् ॥ श्रीराम ...
२३×१२ से० मी०	६ (१-६)	८	२६	पूर्ण	प्राचीन स० १८५७	इति धाया ग्रन्थ समाप्तम् ॥ संवत् १८५७ साके १७२२ ॥
२७५×१२३ से० मी०	७ (१-७)	८	४८	पूर्ण	स० १९३६	इति खैरनन्दनाममाप्त चैत्रमासे कृष्ण पक्षे १३ दस्यु बुधवासरे ॥ लिपीत्वा गौरीद्विजस्य धामि पठनाय हेतवे संवत् १९३६ शाकाब्द १८०१ ॥
२६३×१३२ से० मी०	१३ (१-१५)	११	२५	अपूर्ण	प्राचीन स० १८८६	इति श्री गिव विरचिताया कालज्ञानसर-चितामणि शास्त्र समाप्त्य संवत् १८८६ मासुन कृष्णे १ शुक्ले श्रीराम-वहाय नमोनम ॥
२४×१० से० मी०	३१ (१, २१-५०)	६	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२८×११६ से० मी०	४ (२-५)	१०	५०	अपूर्ण	प्राचीन	इति वात्सूत्र व्याख्यानं तृतीयो-ध्याय ॥ ** (पत्रसंख्या ४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	२७६४	कुडमडपसिद्धि	विर्टल दीक्षित		६० का०	६०
✓ ५७	$\frac{१८८०}{९}$	वृषचक्रम्			६० का०	६०
५८	११४३	कूपतडागचक्रम्			६० का०	६०
५९	७०५१	केरलप्रश्न	केशवप्रसाद		६० का०	६०
६०	७५२०	वेरनप्रश्न			६० का०	६०
६१	४४६४	वेरलीमान			६० का०	६०
६२	१०३४	वैशवपद्धति	वैशव दीक्षित		६० का०	६०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	कथा वय पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान मस का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	३	॥ ८	६	१०	११
२४३ × ८३ सें० मी०	६ (२-१०)	६ १६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमत् ज्योतिषित विठ्ठल दीक्षित विरचिता कुंडमंडप सिद्धि ॥
२०२ × १३८ सें० मी०	३	१५ १२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ × १० सें० मी०	२ (१-२)	८ २८	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मयामले तडाग चक्रम् ।
२१२ × १२२ सें० मी०	५ (१-५)	१६ १४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री केशव प्रसाद विरचिते केरल प्रश्न समाप्त ॥ सुप्तम् ॥ लिखित मनभा- मनप्रसाद पठनार्थ ग्रह वनखंडेस्वरवासी पुजारी
२४३ × १०५ सें० मी०	५ (१-५)	६ २४	अपूर्ण	प्राचीन	
२५६ × ११५ सें० मी०	४ (१-४)	१४ ४४	पूर्ण	प्राचीन	इति केरली ज्ञानम् ॥ पार्थीती.....॥
२५८ × १३७ सें० मी०	८ (१-८)	७ ३६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री केशव देवजिविरचिते बेगवीय पद्धति समाप्तम् ॥ सवत् १८८६ बंगाय वदि ८ चद्रे लिखितमिद मुरलीदत्त स्वयं पठनार्थम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४६२५	केशवभट्टति (सटीक)	केशव दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६४	४७१३	केशवी टीका			दे० का०	दे०
६५	१६८८	केशवी पद्धति (संस्कृत टीका सहित)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
६६	२७८५	केशवी पद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
× ६७	१२८६	कोटवच			दे० का०	दे०
६८	१३७२	कोटुक चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६९	१८०६	महातन्त्राति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितमध्या और प्रति पत्रित म अक्षरसंख्या	कथा ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	ब	स द	६	१०	११
२८१×१४२ सें.मी०	३४ (१-३१, ३७-३६)	१६ ४३	अपू०	रचनाकाल सा १५४० लिपिकाल स० १८८६	गगनवेदशरेंद्रमिसे शके १५४० नभसि- भुकर वृषभगमे निषी गणपतेहि कृत मुखदसताविततशरमगाद्धरमापुरे ॥ इति सपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवायनम सवत् १८८६ शके १७५४ माघव मासि सितानवम्या ६ भौमवासरे लिखित- मिद पुस्तक भूतलोदत्त स्वय पठनार्थ गौडान्वयेलेखक पठित शुभमिति ॥
३०५×१५५ सें.मी०	४५ (१,६-७-१० २२-२४-४२, ४४-४६ ४६-४५)	१३ ४०	अपू०	स० १६१०	इति सपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवाय- नम ॥ सवत् १६१०। शके १७७५ पौषमासे सिते पक्षे एकादश्य विधु वासरे लिखत मिद पुस्तक मिश्र देवी सहाय स्वात्म पठनार्थमिति ॥
२२४×१४३ सें.मी०	२०	२१ ३३	पू०	प्राचीन	इति केशवाचार्य कृते केशवी पद्धति समाप्त ॥
१६७×८३ सें.मी०	१० (१-१०)	१० २२	पू०	प्राचीन स० १८२६	इति केशव देवज्ञ विरचिता केशवपद्धति समाप्ता । सवत् १८२६ वरधे आवण वदी सुतीया ३ वार सनिरवर पोषी निषी देवी ब्राह्मण ॥
२३८×१११ सें.मी०	५ (१-५)	६ ३०	अपू०	प्राचीन	
२०४×१० सें.मी०	८३ (२-१८, १८-८३)	६ २१	अपू०	प्राचीन स० १८०६	इति कौतुकचिंतामणि समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ सवत् १८०६ थावण कृष्ण २० " "
२२५×१३५ सें.मी०	८ (१-८)	११ २८	पू०	प्राचीन स० १६३४	इति गद्यत शानि सपूर्ण ॥ सवत् १६३४ प्रथम ज्येष्ठवदि ६ दिन रविवार त्रिखत पिदनासामण ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसख्या वा मस्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ७०	७२३०	गणक भूषण	समरसिंह		दे० का०	दे०
७१	६६४६	गणित ज्ञता	वल्लभ गणक		दे० का०	दे०
७२	२६२६	गर्गमनोरमा	गर्ग मुनि		दे० का०	दे०
७३	२७२६	गर्ग मनोरमा			दे० का०	दे०
७४	१५३६	गर्ग मनोरमा (टीका सहित)			दे० का०	दे०
७५	६६३४	गर्ग संहिता	गर्ग		दे० का०	दे०
७६	६६३२	गर्गघान नामधन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
२७ × ११ ४ सें. मी०	२३ (१-२३)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १११५	सगर सिंह... "सुग वन नद कु मिते म सुग वन नद कु मिते कर भेच ॥ निष्ठित मया गणन भूषण प्रमन स्वरित X X X X
३० ६ × १२ ७ सें. मी०	६ (१-६)	११	३२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१०	इति श्री बलनभ गणक कृता गणित तथा समाप्ता १ वि० उदीच्य वा० कृष्णभावेन मदन १६१० मार्गश्रिते हैरव तिथौ मन्दवामदे ॥
२७ ५ × ११ सें. मी०	६	१०	४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × ११ सें. मी०	४ (१-४)	१२	४३	पूर्ण	प्राचीन	इति वर्ग मनोरमा व्याख्या समाप्ता ॥ "
२५ × ११ २ सें. मी०	५ (१-५)	११	३१	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१२	इति वर्ग मनोरमाया प्रथम विद्याया वर्ग कृत टीका समाप्ता शुभ सवत् १६१३ ॥
२६ ६ × १२ ६ सें. मी०	५१ (१-५०, ५२)	७	४१	अपूर्ण	प्राचीन	मार्गसि ज्योति शास्त्रे प्रथमः ॥ " (पत्र संख्या १६)
२१ × १२ ४ सें. मी०	१७ (१-१७)	११	२२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२८	इति श्रीकालचक्रोपरिकृतमुद्राहरणं समा प्तम पाण्डित सं० १६२८ मार्गसि शुक्लाष्टम्या अवतिका धौत्रे शिष्यार्थ कृत मुद्राहतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४२४६	गुरुकाण्ड (राशिग्रह)			दे० का०	दे०
७८	६६४१	गुलिकादि फल			दे० का०	दे०
७९	६८५०	गुलिकासाधन			दे० का०	दे०
८०	३७२८	गोलग्रहेड (गोलाध्याय)			१० का०	दे०
८१	६४५३	गोलाध्याय	सत्ताचार्य		दे० का०	दे०
८२	५९२०	गोरी जातक			दे० का०	दे०
८३	६७१८	गोरीजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिमध्यामोंर प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२१७ × १ सें० मी०	८ (१-८)	६ २१	५०	प्राचीन सं० १८१६	इति श्री गुरुवाण्ड समाप्तम् ॥ सवत् १८५६ मांसे १७२४ समयमार्ग मासे कृष्णपक्ष एकादश्या शिवरात्रे विलेपि- रपथररामन आत्मपठार्थ पुस्तक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२१२ × ११७ सें० मी०	५ (१-५)	१२ २६	५०	प्राचीन	इति गुलिकादि फलम् ॥
२४४ × १० सें० मी०	१	१० ३६	५०	प्राचीन	इति प्राणनदः ॥
११३ × ११ सें० मी०	२१ (१-२१)	११ ३२	५०	प्राचीन	
२७ × १० ५ सें० मी०	२२ (१-२२)	१० ३६	५०	प्राचीन	आपूर्णे सत्सङ्गत गोलाध्याय ॥ याविन्द ज्योतिर्विस्मृतीमणिरस्येद पुस्त- कम् ग्रन्थसदया ॥ ४५० ॥
३४६ × १३ ५ सें० मी०	१३ (२-१४)	६ ६६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३१ × १० १ सें० मी०	३ (१-३)	१० १	अपूर्ण	प्राचीन	इति गीरी जानने शृंगारम् + + +

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रामाण्यता या सप्रमाण्यता की गणना	प्रमाण	प्रकार	टीकाकार	प्रत्येक वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
८४	४२६२	गोरी जातक			दे० का०	दे०
८५	४२६६	गोरीजातक वमं पद्धति	माधव		दे० का०	दे०
८६	६१८७	ग्रहफल			दे० का०	दे०
८७	१३०४	ग्रहफल			दे० का०	दे०
८८	४४६६	ग्रहदशातिर्दशा			दे० का०	दे०
८९	६२५२	ग्रहदशाफल			दे० का०	दे०
९०	७०६३	ग्रह द्वादशभाव फल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में श्लोक संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	१०	
२७६×११ सं० मी०	३ (१-३)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं० १६०२	इति श्री गौरि यातक शुभाशुभ फल समाप्तम् ॥ श्री शुभसम्बतसरा १६०२ शाकाब्दा १७६७ समय चैत्र कृष्ण ११
२६×१४ १ सं० मी०	३ (१-३)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र कटपात्रमज माघव विर- चिताया गौरि जातक कर्म पद्धिती दाहाखादशातर्दशाफलाध्याय ॥
२४४×१० सं० मी०	६ (१-६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री राहुप्रकरणम् ॥ सवत् १८५७ जेष्ठ कृष्ण ११
२६६×१० ८ सं० मी०	३ (१-३)	१७	४०	पू०	प्राचीन	इति ग्रहण फल मिति ॥
२४×११ सं० मी०	५ (१-५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १७६३	.. सं० १७६३ वा १६५८ माघ वदी १० भृगुवासरे लिखित..... ॥
२७×११ २ सं० मी०	४ (२-५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०८×११ सं० मी०	७ (२-३, ६- ८, १०-११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	नवग्रह पत्र संपूर्ण ॥.....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रामाण्यता या सप्रतिष्ठापन की मर्यादा	ग्रन्थनाम	संयोजक	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
६१	१७८२	ग्रहफल			दे० का०	दे०
६२	१८५६	ग्रहफलम्			दे० का०	दे०
६३	६३३८	ग्रहभावप्रकाश (हिन्दी टीका)	कविरत्न	गोपाल	दे० का०	दे०
६४	६०८८	ग्रहभाव फल			दे० का०	दे०
✓ ६५	४३००	ग्रहलाघव	गणेशदेवज्ञ		दे० का०	दे०
६६	५३२८	ग्रहलाघव	गणेशदेवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	५१५४	ग्रहलाघव	विश्वनाथ देवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिमह्यता और प्रतिपङ्क्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३	१४
२१ × ११ से० मी०	६ (१-६)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ × १० २ से० मी०	२७ (१-२७)	१०	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति विवाह ॥
२४ × १२ २ से० मी०	१३ (१, ३, ५, १५)	१७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ ५ × ८ ४ से० मी०	६ (३, ८-११)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ × १२ से० मी०	१३	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२० ७ × ११ से० मी०	८ (५-८, १४- १६, ३३)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचित गृह लाघवे चन्द्रमूष स्पष्टीकरण अधिकार + + + + + ॥ (१० ७)
३३ × १३ ८ से० मी० (सं० सं० ७०)	२०	१३	५१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री दिवाकर देवनात्मज विश्व नाथ देवज्ञ विरचिताया ग्रन्थाध्वस्य भोमादिस्पष्टीकरण स्यादा ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमददा या मप्रहरीशेष या तदया	ग्रन्थनाम	प्रथमार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६८	६६७१	ग्रहलाघटा			३० का०	३०
६९	७२१६	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१००	७०३०	ग्रहलाघव	गणेशदेवज्ञ		नि० का०	३०
१०१	७०३१	ग्रहलाघव	विश्वनाथदेवज्ञ		३० का०	३०
१०२	७०६१	ग्रहलाघव	गणेशदेवज्ञ		३० का०	३०
१०३	३७७१	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१०४	३७४३	ग्रहलाघव			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	नया ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स ८	९	१०	११
२० ८ X १० ५ सें. मी०	८ (२४-३१)	११ ३०	अ०	प्राचीन	
२५ २ X १० ५ सें. मी०	७	१० २५	अ० पृष्ठकलपत्र	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री महाराजागमाचार्य वैश्व बर्मा- वत्परिवार मन्त्री गणेशदेवजी विरचित ग्रहलाघव पंचारि स्यात्कारण समाप्त शुद्धमस्तु ॥ सन् ८६६ माघ शुक्ल १३ चतुर्दशी
२० ६ X १० ८ सें. मी०	६ (२-४, १७-१९)	८ २६	अ०	प्राचीन	इति श्री सकलागमाचार्य स्वर्ग श्री वे- क सत्त्वरात्म भा ५६ गण १ वैदिक विरचिते ग्रहलाघव त्रिप्रभातिहार पंचतुर्थ ॥ (पृ० १८)
२२ २ X १० ६ सें. मी०	६२ (२-२६, ३१-६३) पत्र २१ दो	८ ३३	अ०	प्राचीन १०१६६३	इति श्री विद्वान् वैदनात्मन विरच्य नाथ विरचिते ग्रहलाघव चंद्र ग्रहण- प्रकार स्थापन हृति समाप्ता । शब्द १६६३ आने १२ २ मार्गशीर्ष शुक्ल ३० X X (पृ० ६१)
२२ ६ X ११ ७ सें. मी०	३ (१-८)	१२ २६	अ०	प्राचीन	इति श्री गणेशदेवजी विरचिते ग्रहलाघव छन्दो मन्त्रयोगनि द्वादश + +
२७ ४ X १० २ सें. मी०	२ (१-२)	३ ३०	अ०	प्राचीन	
२६ X ११ १ सें. मी०	९ (१-६)	३ २४	अ०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सिद्धान्त रहस्ये गणेश देवजी विरचिते मध्यमाधि- वार + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमहत्वा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४३२३	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१०६	१७४४	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१०७	१७१०	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
१०८	११६०	ग्रहलाघव	विष्वक्ता - देवज्ञ		३० का०	३०
१०९	११६७	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
११०	११७४	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१११	११८५	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अथवा अधूरा है तो वत-मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स द	६	१०	११
३३ × १६ ५ सें० मी०	३५ (१-३५)	१५ ४८	पू०	सं० १६१२	इति श्री ग्रहनाथवे ग्रहणाधियाः समाप्त्य सवत १६१२ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ चतुर्दश्यां लिखित पदोलीमहतावरपठनाथ
२० × ११ २ सें० मी०	२१ (१-२, १-१६)	१० २६	अपू०	प्राचीन	
१६ × ११ ५ सें० मी०	७ (५-११)	१० २१	अपू०	प्राचीन	
२३ ५ × १२ सें० मी०	११ (८-१५, १७-१६)	१५ ३६	अपू०	प्राचीन	इति दिवाकर देवनाथमज विरचनाथ देवनाथ विरचिताग्रह तापवस्वमाधि-कारस्यापाहृति समाप्ता । ""अनेन रहित ""
२३ ७ × ११ सें० मी०	६ (२-१०)	८ २३	अपू०	प्राचीन	
१७ १ × १२ ५ सें० मी०	४ (३-६)	६ १८	अपू०	प्राचीन	
२२ ५ × १२ सें० मी०	१७ (१-१७)	६ २८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और निधय	मुस्तवाज की आगतसमस्या या सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११२	२६२८	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११३	१६४०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११४	१६७२	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११५	३६८०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११६	२३३०	ग्रहलाघव (सटीक)		गणेश दैवज्ञ	दे० का०	दे०
११७	४१२२	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	२६५५	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिमस्या पौर प्रति पक्ति म प्रक्षरसंख्या	क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण ता वर्त- मान प्रथ का विवरण	भवस्या पौर प्राचीनता	ग्रन्थ भाषाश्रव विवरण
८ प्र	८	म द	६	१०	११
१७ × १० ५ सं० मी०	२६ (१-२६)	११ २४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री सक्तागमाचार्य केशव साव- त्सरिकात्मज गणेश देवज विरचिते मिहान रहस्ये ग्रहनाथ संपूर्ण ॥
२२ × १६ ३ सं० मी०	११ (१-११)	६ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज कृते ग्रहनाथ तारा ग्रहस्य वरणम् ॥
२६ ७ × ११ १ सं० मी०	३७ (१-२४, २६-३८)	८ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ × ६ ५ सं० मी०	३१ (१-३१)	१० २८	पूर्ण	सं० १६३७	इति श्री ग्रहनाथप्रथ संपूर्णम् भवत् ॥ संवत् १६३७ शके १८०२ नदननाम संवत्सर × × × ॥
२४ ३ × १ सं० मी०	१६ (१-१६)	१० ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ × १५ सं० मी०	७ (१, ५-१०)	१३ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री विष्णुनाथ देवज विरचिते ग्रह- नाथवस्पष्ट ग्रन्थ चद्र तिथ्यादि द्वितीय (पृ० १०)
२३ × १२ १ सं० मी०	२० (१-२०)	११ ३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री केशव सावत्सरात्मज गणेश देवज विरचिते ग्रहनाथवे सिद्धांत रहस्येसमाप्त सप्तदश ॥

क्रमानुसार विवरण	पुस्तकानाम की आगतमहत्वा वा सप्रतिविधेय की गमना	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
११६	२५६७	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११७	४०४	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	७६६१	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११९	८९७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२०	८६६	ग्रहलाघवम्	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२१	७७७६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२२	६०८३	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आधार	परसंग्य	प्रति पृष्ठ म पवित्रसङ्ख्या प्रति प्रति शक्ति म सगरतद्ध्या	क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स	द	६	१०
२० × १२८ सं० मी०	३२ (१-३२)	६	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८०७
२० × १० सं० मी०	६ (१४-१८, २१)	१०	३०	अपूर्ण	प्राचीन
२० × ६८ सं० मी०	६ (१३, १८- १९, २२-२४)	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन
२७ × ११ सं० मी०	१३ (१-१३)	७	२०	अपूर्ण	प्राचीन
३० × १५ सं० मी०	१३	१३	४३	अपूर्ण	प्राचीन
२० × ६८ सं० मी०	६	६	३२	अपूर्ण	प्राचीन
२४ × १०२ सं० मी०	१५ (१-१५)	११	३२	अपूर्ण	प्राचीन
(सं० सु० ७१)					<p>मा० ६ गुरी सं० १९४० गते १८०७ ॥ (17-9-1885 = १७-९-१८८५)</p> <p>इति मणेशदेव० ग्रह० सिद्धा० पचागा समाप्त ॥</p> <p>इति श्री मणेशदे० ग्रह० ना० सिद्धांतरह० तिथि पञ्चादेव ग्रहणद्वयशाध्यम् × × × × (पृ० १६)</p> <p>इति श्री दिवाकरदेवशात्मज विश्वनाथ देवज विरचिता ग्रहलाघवस्य सग्न्यादि छाया यत्रभाग दिक्साधन नलिका- व्याधिकारस्योदाहृति ॥ * * *</p> <p>(पत्र सं० १५)</p>

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा मग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथनार	टीकाकार	ग्रथ जिस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२४७५	ग्रहलापव (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
१२७	३०१०	ग्रहलापव (उत्तरार्द्ध)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२८	४३१७	ग्रहलापवटीका		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२९	११९१	ग्रहलापवटीका		नृसिंहदेव	दे० का०	दे०
१३०	५७१९	ग्रहलापव	गणेश देव	नृसिंहदेव	दे० का०	दे०
१३१	५७१४	ग्रहलापवटीका	गणेशदेव	भुलारिदेव	दे० का०	दे०
१३२	१०८०	ग्रहलापवटीका			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का मातार	पत्रांक	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रतिपत्ति में अक्षरसंख्या	क्या अधपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	९	१०	११	१०	११	
२५२ × १०५ सें. मी.	५५ (१-७, १०-२५, २६-४१, ४३- ४७, ५०-५३, ६६-७५)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६५ × १५५ सें. मी.	३६ (१-३१, ३१-३५)	१३	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
३०३ × १६१ सें. मी.	३० (३५-६५)	१६	४१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री ब्रह्मापने वरण सिद्धांत रहस्ये तद्विषयक देवतावर्ग दिवाकरात्मज विश्व नाथ देवता विरचिते निदान रहस्यो- दाहरण समाप्ति × × सवर्ग १६०३ विक्रमाब्दमेवापकृष्ण ॥
२३२ × १०६ सें. मी.	८	८	२६	अपूर्ण (छाडित)	प्राचीन	
२६५ × ११५ सें. मी.	३१ (१, २, ४, ६, १५-४०)	८	४२	पूर्ण	प्राचीन	श्रीमद्ब्रह्मसंहितादेवतावर्ग ये प्रथा कृता स्ते सद्ब्रह्म पुत्रेण नृसिंह ज्योतिर्विदा स्व कृत ग्रन्थाध्व टीकाया ॥ (पत्र सं० १)
२७१ × १३८ सें. मी.	५२	१४	४६	पूर्ण	सं० १६१५	इति श्री मद्गणेश देवताकृत ग्रन्थाध्व- वस्य टीकाया मल्लारि देवता विर- चिताया मध्यम ग्रह साधनधिकाः प्रथम ॥ (५० १२)
२६५ × ११५ सें. मी.	२८	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	१६८६	ग्रहलाघव (मस्तुतटीका)	मणेशदेवज्ञ	विश्वनाथदेवज्ञ	२० का०	२०
१३४	२३८५	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	मणेश देवज्ञ	मुसिह ज्ञाति- विद	२० का०	२०
१३५	४७५२	ग्रहलाघवविवरण			२० का०	२०
✓ १३६	६९४६	ग्रहलाघवव्याख्या	विश्वनाथ देवज्ञ		२० का०	२०
१३७	२६०३	ग्रहलाघवसारणी			२० का०	२०
१३८	६२६	ग्रहलाघवसारणी			२० का०	२०
१३९	२९८६	ग्रहविचार			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठा का भावार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पत्तिम-या प्रोर प्रति पार्त म ग्रथोरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? गपूर्ण है तो वत मान ग्रथ का विवरण	ग्रथस्या और प्राचीनता	ग्रथ प्रावशगत विवरण
८ ग्र	ग्र	म	द	६	१०	११
२२२ × १४ पें० मी०	१० (१-७ , ३१)	१५	३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री देवनात्मज विश्वनाथ कृते मिद्वान रहस्य . . .
२४१ × १० ४ सें० मी०	५५ (१-५७)	११	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६८ × ११ १ सें० मी०	३६ (१-३६)	१०	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२५३ × १० ७ सें० मी०	१० (१-१०)	१७	५३	पूर्ण	सं० १६१४	इति श्री दिवाकर देवनात्म दिग्बनाथ देव विरचिताया ग्रहलाको वाह्यतो स्पष्टी करण ॥ (५० ५)
३१५ × १५ सें० मी०	१३ (१-१३)			पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ग्रहनाथवे शारणी समाप्त संवत् १८०७ (?) चैत्र शुक्ला १२ लिखित मिश्र मुरलीधर
२६६ × १३ २ सें० मी०	१५			अपूर्ण	प्राचीन	
२३४ × ६ ३ सें० मी०	१३ (१ १२, १५)	१०	४१	अपूर्ण	प्राचीन	

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की अंगनसूचिका या सप्रहविशेष की सूचना	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकावार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६२०६	ग्रहस्पष्टीकरण (ग्रह मल)			दे० का०	दे०
१४१	१७७०	ग्रहाधिपार			दे० का०	दे०
✓ १४२	६१२८	चंद्र ग्रहस्था			दे० का०	दे०
✓ १४३	८४५	चंद्रकुहली			दे० का०	दे०
१४४	६२६५	चंद्रग्रहणार्थ श्लोक			दे० का०	दे०
१४५	६८०६	चंद्रोन्मीलन			मि० का०	दे०
१४६	३७५५	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	नया प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वत- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	८	म द	६	१०	११	
२१×१२७ से० मी०	१६	२२	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
३१×१५१ से० मी०	१ (१४-१६)	१३	७२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८ ६	इति ह्यवधीद्राल्लेशके प्रधानयताधिकार इति षवमाधिकार समाप्त श्री तवत १८६६ तत्र यावण हृष्टा १० चद्र वासरे दपुस्तक निपत मित्र हरनदस्वा रम पठनाथ शुभ ममल ददाति श्री- रस्तु ॥ अथ चद्र अवस्था लिख्यते ॥ (आदि)
११×८८ से० मी०	६	६	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१८×१०५ से० मी०	८	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६×१११ से० मी०	७	१३	४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२५१×१०५ से० मी०	४७ (१-४७)	६	३६	पूर्ण	आधुनिक	इति चद्रो मीलन समाप्तम् ॥
२४८×१२१ से० मी०	१०	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति चद्रामीलने महागास्त्राणं ब चिनिषते मूल तत्राथ सबध प्रथम प्रकरण ॥ (पत्र सं० २)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आवृत्त संख्या या सग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१४७	१८३६	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०
१४८	६८१५	चंद्रोन्मीलनटीका			दे० का०	दे०
१४९	६६८५	चंद्रोन्मीलन टीपिका			दे० का०	दे०
✓ १५०	४२६७	॥ चक्ररत्नावली	वासुदेव		दे० का०	दे०
१५१	५१६२	चक्रावली			दे० का०	दे०
१५२	७६५४	चक्रतारचिन्तामणि	देवनाथभट्ट		दे० का०	दे०
१५३	२७८८	चक्रतार चिन्तामणि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितसंख्या और प्रति पत्रित म आक्षरसंख्या	क्या यह पुस्तक है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	घ	स द	६	१०	११
२३३ × ११ सें० मी०	१० (१०-१६)	१० २६	अपू०	प्राचीन	
२८८ × १२ सें० मी०	१६ (१-१६)	१३ ४५	पू०	प्राचीन	
३०५ × १२ सें० मी०	१७ (१-१७)	१७ ५६	पू०	प्राचीन	इति चन्द्रोमीलन टीकाया बाष्पादियु जलनिर्णय सप्तविंशति पटल ॥
२८५ × १२ १/२ सें० मी०	४ (१-४)	१० ५३	पू०	सं० १७१६	इति श्री वासुदेव कृता चक्र रत्नावली सभाप्ता ॥ सवत १६१६ समये ज्येष्ठ सुदि एकादश्या रविवासरे निमित्त जगज्जीवन ब्रह्मचारिणा ॥
२६ × ११ १/४ सें० मी०	२ (१-२)	१७ १०	अपू०	प्राचीन	
१६ × १२ १/४ सें० मी०	४० (२-४१)	१० १०	अपू०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्रीमहेश्वरामभट्टनाथण विरचिते चमत्कार चिंतामणि ग्रहभावफलाध्याय प्रापाद भासे कृष्णपक्षे तिथी ११ भृगुवासर सवत १६०३ माके १७६८
२५ १/२ × १० ३/४ सें० मी०	१४ (१-१४)	८ २७	पू०	प्राचीन सं० १६२५	इति विगतवसर जित्यामणि सपूर्ण सं० १६२५ वि० पौष वदि २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमध्या या प्रदर्शनीय की मध्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम वस्तु पर विधा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१५४	१०१८	चमत्कार चिन्तामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	३०
✓ १५५	५७६७	चमत्कार चिन्तामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	१०
१५६	७८८१	चमत्कार चिन्तामणि (सटीक)	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५७	३६८२	जलमणि			दे० का०	दे०
१५८	२०८१	चिन्तामणि टीका			दे० का०	३०
१५९	$\frac{२५३२}{१७}$	बीरलामप्रश्न			दे० का०	३०
१६०	१६७६	अमदीपक			दे० का०	३०

पत्रा या पृष्ठा का भावार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिगणना और प्रति पत्ति म प्रक्षरमध्या	क्या प्रयुग्म है ? संपूर्ण है तो वन मान अथवा विवरण	मवाया और प्राचीनता	प्रत्य भावस्थान विवरण
८ म	८	८	८	१०	११
२६३×११३ सं० मी०	१३ (१-१३)	८ ३३	पू०	सं०१६०२	इति श्री चमत्कार विनामणि सम्पूर्ण श्री सवत १६०२ नाम १७६७ मास मास शीत पक्ष दशम्या रविवार
२२×१०५ सं० मी०	११ (१-११)	११ २३	पू०	प्राचीन	इति श्री राज ऋषि (नारायण) रचित चमत्कार विनामणि नाम भावावधाय ॥संपूर्ण॥
२७३×११४ सं० मी०	२० (१-२०)	११ ३७	अपू०	प्राचीन	
१६८×१०७ सं० मी०	३ (१-३)	१० २७	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	
३२×६ सं० मी०	७४ (२-७४)	७ ४७	अपू०	प्राचीन सं०१६३६	
१३७×११५ सं० मी०	१ (१-२)	११ २६	पू०	प्राचीन	इति चौरनामग्रन्थ ॥
३०×११५ सं० मी०	१०० (१२ १४ ८० ८३ १०३)	६ ४१	अपू०	सं०१६१८	इति श्री जय दीप शास्त्रकार श्री हरि सुत सुत्रहृष्ट्या विर विरचित संपूर्ण शुभमस्तु । सवत १६१८ के साल भाषाढ सुदि ३

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	प्रपकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लियि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६७४	जन्मसमुद्र विवृति	नरचन्द्रोपाध्याय		२० का०	२०
१६२	६७१	जन्मसमुद्र विवृति	नरचन्द्रोपाध्याय		२० का०	२०
१६३	७३७	जन्मागपत्रावलि	.		२० का०	२०
१६४	८८६	जन्मजातक			२० का०	२०
१६५	४६२६	जातककर्म			मी०का०	२०
१६६	११४४	जातककर्म			२० का०	२०
१६७	४४१	जातककर्म पद्धति (शैशवी टीका)		शैशवी टीका	२० का०	२०

पत्री या पृष्ठो का संख्या	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पवित्रसंख्या प्रति प्रति पक्ति म संख्या	कथा अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान पत्र का विवरण	अवस्था और संज्ञाना	अथ आशयन विवरण
८ प्र	८	८	८	९०	९१
३०१५१६ सं० मी०	६ (१-६)	१३	५५	अ०	प्राचीन इति नरच पाध्याय कृतायां जन्मसम् द्राव्यवृत्ति वृत्ति गभ सभवादि वक्ष्ये प्रथम-प्रथम कृतान् अथात् जन्म विधिनामः पत्राला व्याख्यायत
३२५५१६ सं० मी०	२४ (१२४)	१३	५८	अ०	प्राचीन सं० १८८९ इति श्री वागहट्टगदीया श्री निहू सुनि गिप्यसदस्यवर श्रीनरचद्रोपाध्याय कृतायां वृत्ति वक्ष्या सनाया जन्म समुद्र प्रथम शतसरहारायाम् अष्टमवल्गल नाथ सादि पागदीया प्रयोग लक्षणो नामपुत्र कृतान् समाप्ताय प्रथम शुभ संवत् १८८९ ।
३२५५१३ सं० मी०	१६ (२-१७)	८	३०	पू०	प्राचीन इति सक्षप जन्म पभावलीकनम् शुभ मस्तु भगल ददातु दिप्यत देविसहाय विद्याधिपठनाय परपीत्र विप्युक्त का पुत्र भान सिंह का पुत्र बाहाद सिंह का संवत् १६०५ मासात्मास चत मासे दृष्ट्युक्त शुभ तिथि एकादस्या ११ तिरहरी मध्य राम ।
१४५५११ सं० मी०	१० (१-१०)	६	१४	पू०	प्राचीन सं० १९१२ इति जन्मातक संपूर्ण समाप्तम् ॥ भूयात् सं० १६१२ लिखित्वा मीनेकु ।
२१६५८८ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२४	पू०	प्राचीन सं० १८५९ इति श्रीजातकम् समाप्तम् ॥ सम्बत् १८५६ शाक १७२४ शमयवोपमाम कृष्णपक्ष त्रयोदश्या बुधवाशरे ॥
१६५१२५ सं० मी०	२६ (१-१४) १६-२७)	८	१८	अपूर्ण	प्राचीन
२४५१० सं० मी०	६६	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन इति केजव पद्धति सोदाहरण समाप्ता ॥ रचनाकार—सं० १५४० लिपिकाल । १८३६ सम्मित विक्रमस्य

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतगकया वा संग्रविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१६८	११४५	जातकचंद्रिका			दे० का०	३०
१६९	७६०९	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		३० बा०	३०
१७०	१०६२	जातकपद्धति	श्रीपति		३० का०	३०
१७१	३१६७	जातकपद्धति			दे० का०	३०
१७२	२४४३	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		३० बा०	३०
१७३	१४७४	जातकपद्धति	पाराशर		३० बा०	३०
१७४	१७३१	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		३० बा०	३०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्ररचना	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
म म	व	म द	ह	१०	११
१६ × १२ सें. मी०	१३	१० १६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१.१ × ८.५ सें. मी०	६ (१-३ ६-८)	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री कण्व देवज्ञ विरचिते जातक पद्धती भावाध्याय ॥ (पत्र १-२)
३१ × १४.८ सें. मी०	८६ (१-८३, ८६-८८)	१६ ४८	अपूर्ण	प्राचीन	
२२.५ × १०.३ सें. मी०	११ (५-१५)	६ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.४ × १०.३ सें. मी०	२७ (३-१५, १७-३०)	८ ३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१.७ × १०.६ सें. मी०	११ (१-११)	१० ३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इति पाराशर कृत जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत् १८६० चैत्रशुद्धि १२ चद्रवाप्तरे लिखित ॥ सुखग्रहायु ॥
२०.३ × १० सें. मी०	६ (१-६)	११ ३३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३६	इति श्री वेणव देवन विरचिता जातक पद्धति समाप्ता ॥ शवत् १८३६ शाने १७०४ वैशाख मास शुक्ल पक्ष त्रयो- विंशत्यमरे शुभमस्तु मंगलददातु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकान्तर्गत शास्त्रसम्बन्ध वा मन्त्रविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम किं वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१७५	३००	जातकपद्धति	बेशब देवज्ञ	नारायण	३० का०	२०
१७६	२०३०	जातकपद्धति	भनत देवज्ञ		३० का०	२०
१७७	५८६२	जातकपद्धति सदाहरण	कृष्ण देवज्ञ		३० का०	२०
१७८	६२५१	जातकपद्धति व्याख्या			३० का०	२०
१७९	७०६७	जातकमन्त्ररी	रघुनाथ		३० का०	२०
१८०	१०३३	जातकरत्नमाला	यशिष्ठ		३० का०	२०
१८१	३७६४	जातक सन्तानप्रकरण			३० का०	२०

प्रश्नो या पृष्ठो या प्रकार	परामर्श	प्रति पृष्ठ मे पत्रिनगणना भोर प्रति पत्रि मे प्रसारसख्या	क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान प्रथम वा विवरण	प्रदत्ता भोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अथ	य	ग	द	१०	११
२६ × ६६ सैं० मी०	४६ (१-४६)	१३	५२	पूर्०	प्राचीन सं० १७४५ इति श्री बल्लालदेवज्ञातमज गोविन्द देवब्रह्मत देवज्ञ नारायण कृता सोदा- हनिने केशवीय जातक पद्धति व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १७४५ शके १६११ समये भाद्र पद विंशतिवर्षभट्टनेद पुष्पकम् लेखीति ॥ शुभ भूयाल्लब्ध पाठायो ॥
३४ × १५२ सैं० मी०	१८ (१-१५, १५-१७)	१३	४१	अपूर्०	प्राचीन
२४२ × १०३ सैं० मी०	२५	१०	३६	अपूर्०	प्राचीन इति श्री बल्लाल देवज्ञातमज कृष्ण देवज्ञविरचिते श्रीपति भट्टीय जातक पद्धत्याह्वरे दृष्टि गणितोदाहरणम् । (५० १८)
२२८ × १०३ सैं० मी०	२८ (१-२८)	६	३५	अपूर्०	प्राचीन
७६ × ६५ सैं० मी०	१२ (१-१२)	६	३५	पूर्०	प्राचीन सं० १८३६ श्री रघुनाथ विरचिते जातकमन्त्र्या जातक प्रकरण प्रथम ॥ (पत्र ६० ३) सवत् १८३६ साकष १७०४ राम अपादकृष्ण प्रतिपदा तिथी बुधवासरे ॥ लिखित ठाकुर रामेण × × × ।
२८८ × १३५ सैं० मी०	१० (१-१०)	६	३२	पूर्०	सं० १६०३ इति श्रीवशिष्ठ कृत जातक मन्थोदय- विनार बालक ज्ञानफलद दशमोप्याय १० मिति थावण शुदि ८ सं० १९०३॥
२०१ × १०४ सैं० मी०	४ (१-४)	११	२१	पूर्०	प्राचीन इति जातक लम्ब गुण प्रकरण ॥
(सं० सू० ७३)					

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागतगम्या या ग्रन्थ विषय की संख्या	प्रमाण	प्रकार	टीकाकार	प्रथम विम दस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८२	६६३१	जातक विवरण			दे० का०	दे०
१८३	७०४१	जातकसार (सामुद्रिक)			दे० का०	दे०
१८४	६६५८	जातकसार			दे० का०	दे०
१८५	४०१२	जातकसारीदार			दे० का०	दे०
१८६	११६२	जातकाभरण	दुर्दिगज		दे० का०	दे०
१८७	३३६८	जातकाभरण	दुर्दिगज		दे० का०	दे०
१८८	२६८२	जातकाभरण			दे० का०	दे०

पक्ष या पक्षी या प्राकार	प्रमाणित के तहत पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ मे प्रमाणित पक्ष पक्षी ११				प्रमाणित पक्ष प्राकार	प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
	१	२	३	४		
१४५१३ सं० मी०	३ (१-३)	२८	४३	५०	प्राचीन सं० १७२७	इति श्री प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
२५७५१० सं० मी०	१० (१-१०)	१०	४९	५०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
२१५१०७ सं० मी०	३ (१-३)	१३	४७	५०	प्राचीन	इति श्री प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
३१५५११५ सं० मी०	८ (१-८)	१२	४०	५०	प्राचीन	इति श्री प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
२३७५११ सं० मी०	२०	१०	३९	अपूर्०	प्राचीन	
२३८५१०८ सं० मी०	२०२	१०	३०	अपूर्०	सं० १८३६	इति श्री प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११ प्रमाणित पक्ष पक्षी ११
२८३५१३८ सं० मी०	६	१३	४५	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१८६	२६८५	जातनाभरण			१० का०	१०
१८०	३०३७	जातनाभरण	दुंदिराज		१० का०	१०
१८१	६०१३	जातनाभरण	दुंदिराज		१० का०	१०
१८२	२४७३	जातनाभरण	दुंदिराज		१० का०	१०
१८३	३०८	जातनाभरण	दुंदिराज		१० का०	१०
१८४	२६२४	जातनाभरण	दुंदिराज देव		१० का०	१०
१८५	४६६५	जातनाभरण	दुंदिराज		१० का०	१०

पत्रा मा पृष्ठा वा माहार	पत्रा मा पृष्ठा	प्रति पृष्ठ मे पत्रा मा पृष्ठा	प्रति पृष्ठ मे पत्रा मा पृष्ठा	प्रति पृष्ठ मे पत्रा मा पृष्ठा	प्रति पृष्ठ मे पत्रा मा पृष्ठा	प्रति पृष्ठ मे पत्रा मा पृष्ठा
८	८	८	८	८	८	८
२१७५१०३ सं० मी०	६	८	२८	५००	प्राचीन	
२१८५११ सं० मी०	८ (१-१)	११	३८	५००	प्राचीन	
२१९५१२ सं० मी०	२८ (१-२०)	८	३०	५००	प्राचीन	
२२०५१०० सं० मी०	६६	८	२८	५००	प्राचीन	
२२१५१२५ सं० मी०	३३	१२	४३	५००	प्राचीन	इति ज्ञातवाभरणेऽ पटनं वर्णकला- ध्याय = ?
२२२५१०४ सं० मी०	२	८	२६	५००	प्राचीन	
२२३५१५५ सं० मी०	४४ (२-८, ११-१७, १६-४८)	१७	४७	५००	प्राचीन नं० १८६५	इति श्री देवज्ञ दुःशिरान् विरचिते जातवाभरणे स्त्रीजातनाभ्याय ज्ञानवाभरणे संपूर्ण ॥ सं० १८६५ मापाट कृष्ण १३ बुधवासरे निखिलमिदं पुस्तकं मिथिलकर्मणं तत्समुत्त मुरलिधर स्वयं पठनार्थं उनाशिवो- जयति ***

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की संग्रहित ग्रंथा या संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	४७८४	जातवाभरण	दुर्द्विराज		३० का०	२०
१६७	४७८	जातवाभरण (ग्रहभावफलानि)	दुर्द्विराज		३० का०	२०
१६८	५०५६	जातकालवार	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
१६९	६७७२	जातकालवार	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
२००	३७८४	जातकालवार	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
२०१	$\frac{३०५६}{६}$	जातकालवार	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०
२०२	५६२४	जातकालवार	गणेश देवज्ञ		३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर-संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बतें मान अक्षरों का विवरण	ग्रंथ-स्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवरण-विवरण
अ. अ.	ब.	स. द.	६	१०	११
२२६ x ११६ सें. मी.	५७ (२-१७, १६- २५, २७-२८, ३०-३१, ३५- ३६, ४२, ४५- ४७, ४८, ४९, ५३, ५६, ५८, ६३-६६, ६८, ७०, ७२, ८०- ८३, ८६-८८, ९५, ९७)	८ २७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री हंस्य ढुङ्गाज विरचिते जानिका भरने हम्पराध्याय ॥ (पत्रसं० ८०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०३	४३०३	जातवालकार	गणेश दैवज		दे० का०	दे०
२०४	५७३४	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०५	४३६	जातवालकार	गणेश दैवज		दे० का०	दे०
२०६	२४२१	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०७	२४०५	जातवालकार			दे० का०	दे०
२०८	६००४	जातवालकार	गणेश दैवज		दे० का०	दे०
२०९	३९८४	जातवालकार	गणेश दैवज		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पणितसंख्या और प्रति पणित मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०
३२'५ × ११'६ से० मी०	१० (१-१०)	७	३७	अपूर्ण	प्राचीन
२४'२ × १०'६ से० मी०	११ (१०-१६)	१०	३७	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८७१
३०' × १२' ॥ से० मी०	१४ (५-१८)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन
२४' × १०' ५ से० मी०	२१	७	३८	पूर्ण	सं० १८८६ सवत १८६६ माघ वदि ६ ॥ श्री दुर्गायनम ॥
२५' × १२ से० मी०	११ (१-११)	१२	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १८८३ इति श्री जातकालकारे भार्वाह्याज्यः समाप्त आद्रे मासितिते पक्षे द्वादश्या बुधवास्तरे संवत् १८८३ ॥
२१' ८ × ११' १ से० मी०	५ (१, ६, १७-१६)	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन
२६' × १३' ५ से० मी०	६ (१-६)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन
(सं० १०७४)					

क्रमानुसार क्रम	ग्रन्थालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२१०	५११५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२११	७०११	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१२	५४८०	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१३	६८१२	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१४	६८५४	जातकालकार (वशाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१५	१०३७	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ	हरिभागु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१६	४१६७	जातकालकार (सटीक)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रतिपेक्ति म अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कर्त- मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	म द	६	१०	११
२४४×१०६ सें० मी०	६ (१-६)	६ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४४×१०८ सें० मी०	२० (१-२०)	८ ३७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचिते जातशा- सकारे ब्रह्माध्याय मः प्रथम ॥ मयत् १८- २० अक्ष १७१४ श्री मनिर्गिरा- र्धनम् ॥
३०४×१४२ सें० मी०	१० (१-१०)	८ ४८	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३×१०६ सें० मी०	२८ (१-८, १०- २५, २७- ३०)	८ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री जातवाक्यकारे टीकाया ब्रह्मा- ध्याय समाप्तोप गद्य ॥
२३५×६६ सें० मी०	२१ (१-२१)	६ ३३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचिते जातशा- सकारे ब्रह्माध्याय ॥
३१×१४२ सें० मी०	२४ (१-२४)	१४ ५०	पूर्ण	प्राचीन मं० १८६६	इति श्रीमच्छन्दनाथगणेशोद्दिष्टानुमा- यिता जातवाक्यकारे टीका मं० १८६६ आदि १७६१ पाठसूत्र इत्यादि गण्यम् ॥ चन्द्रबाहरे दक्षुस्तार तिथिनि सुगुणधर मन्त्र पठनायम् उमानिरो जयति स्तिवायनमस्तु ॥
३४५×१३५ सें० मी०	१० (१-१०)	१२ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री जातवाक्यकारे समाध्यायः प्रथमः । (पत्रमात्र-३) X X

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	प्रयोग	प्रयत्न	टीकाकार	प्रयत्न किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७६६६	जातकालकार सटीक	गणेश देव	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१८	७४१३	जातकालकार टीका	गणेश देव		दे० का०	दे०
२१९	३५३५	जातकालकार टीका		हरिभानु	दे० का०	दे०
२२०	६९४३	जातकालकार टीका	गणेश देव		दे० का०	दे०
२२१	३८१५	जातकालकार सूचीपत्र			दे० का०	दे०
२२२	६९०४	जैमिनि उपदेशसूत्र			दे० का०	दे०
२२३	२५६३	जैमिनि उपदेशसूत्र	जैमिनी		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सरया और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
पं. क्र.	व.	सं.	द.	१०	१०	
३२३ × १४४ से० मी०	२८ (१-२८)	११	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति हरिभानु शुक्ल कृता जातवालकार व्याख्या समाप्ता शुभमस्तु सवत् १८८० फागुण कृष्ण १२ गुरो श्री ॥
२६५ × १०३ से० मी०	२०	१२	४०	पू०	प्राचीन (हमि कृतिंग)	इति श्री जातवालकारे टीकाया वशाद्वयाय समाप्तोऽयं शुभमस्तु सवत् १८८७ कार १७६२ पोष ३० ॥
२६२ × १२६ से० मी०	२७ (१-२७)	१३	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मच्छुबलापनामक हरिभानु- भाविता जातवालकार टीका समाप्ता सवत् १८८२ श्रावे १७४६ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ११ बुधवासरे ॥
२६४ × ११२ से० मी०	३४ (१-३४)	१०	४५	पू०	सं० १९०८	इति श्री गणेश देवकारचिने जातव सकारेवशाध्याय समाप्त श्री ३ सवत् १९०८ माघेमासी कृष्ण सूरवासरे लिखित "...." ॥
२७७ × १४ से० मी०	१० (१-१०)	१६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रथालकार प्रकरण समाप्त शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
२७१ × ११५ से० मी०	१६ (१-१६)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति जैमिन्पदेश सूत्रे चतुर्थाध्याये चतुर्थं पाद ॥३॥ "...."
२६२ × १२२ से० मी०	११	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर निष्ठा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२२४	७६६७	जैमिनि सूत्र			दे० का०	दे०
२२५	६६१३	जैमिनि सूत्र (मटीक)		नीलकण्ठ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२२६	६६०६	जैमिनि सूत्र (मटीक)			दे० वा०	दे०
२२७	३०२८	जैमिनि सूत्र वृत्ति		कृष्णामन्द मरस्यती	दे० वा०	दे०
२२८	४२५७	जैमिनि सूत्र व्याख्या		नीलकण्ठ (व्याख्याकार)	दे० वा०	दे०
२२९	६२४४	ज्ञानदीपिका			दे० वा०	दे०
२३०	६६०६	ज्ञान प्रदीप			दे० वा०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
१७२ × १११ से० मी०	२	१० २०	अपूर्ण	प्राचीन	इति जैमिनिमूत्रम् ॥
२७२ × १११ से० मी०	३१ (१-३१)	१३ ४३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठ ज्योतिर्विरचिताया जैमिनि मूत्र व्याख्याया मुद्राधिण्या द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ श्री शाक रस सप्तप्रपत्तिमिते नपाल राडे वरे श्री श्रीमद्भाग्यनूपान्न वरे राज्य प्रकुर्वन्ममी ॥ रेमी श्री जय शर्म मूरि तनुज श्री नीलकण्ठोद्दिष्ट शास्त्रे जैमिनिना कृते सुविबुद्धि भूषाक्षया आगते ॥
२७७ × ११८ से० मी०	२४ (१-२४)	१७ ४७	पूर्ण	प्राचीन	इति जैमिनि मूत्रे तृतीयाध्यायस्य तृतीय पाद ॥३॥
२६३ × १०४ से० मी०	८१ (१-८६)	६ ४२	अपूर्ण	प्राचीन	
३२ × १२ से० मी०	१४ (१-१६)	१४ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठज्योतिर्विरचिताया जैमिनिमूत्र व्याख्याया मुद्राधिण्या प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ X X X
२१२ × ७६ से० मी०	२१ (१-२१)	२ २४	पूर्ण	प्राचीन	ज्ञान दीपिका समाप्ता ॥
२७४ × ११७ से० मी०	२५ (१-२४) (एक विनिष्ट पत्र)	६ ४०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२६	इति श्री ज्ञान प्रदीप केरवीर वार्ध निदि कथनप्राय पाद समाप्त ॥ सं० १६२६ भा० १०६४ भागं अंशं कुल-५ X X X V.D.I.

क्रमक मोर विषय	पुस्तकानाम की आगतमन्त्रा वा मप्रहविशेष की समया	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२३१	४७६८	ज्ञानप्रदीपक			१० का०	१०
२३२	$\frac{४५३४}{२}$	ज्ञानबोधिनी	नंदलाल		१० का०	१०
२३३	१६७७	ज्ञानभास्कर			१० का०	१०
२३४	६५४५	ज्ञानमजरी	ऋषि शर्माचार्य		१० का०	१०
२३५	१२८६	ज्ञानमजरी			१० का०	१०
२३६	६४३६	ज्ञानस्वरोदय			१० का०	१०
२३७	६७०	ज्यौनिन सार जातव			१० पा०	१०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ से पणितसंख्या और प्रतिपत्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०
					११
२५४×१० से० मी०	२६ (१-२६)	८	३३	पू०	सं० १७५४ इति ज्ञान प्रदिपके समाप्त ॥ संवत् १७५४ समये कार्तिके ...
३०५×१२२ से० मी०	५६ (१-५६)	१०	५७	पू०	सं० १८१६ इति श्री मिथशिवराममुननदत्ताल विर- चिताया ज्ञानबोधन्या सव सरनाम ॥ ज्ञानबोधनी समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णा- र्पण मस्तु संवत् १८१६ मार्गश्रदि ३० शोबहतिथितमिद पुस्तक कालू चतुर्वे- दिन राम ॥ संवत् १८१८ के साल ... १५ वा ॥ लिखित साल वृजं साल ॥ ...
३०५×१२ से० मी०	४८	१०	२८	पू०	सं० १८१८ संवत् १८१८ के साल ... १५ वा ॥ लिखित साल वृजं साल ॥ ...
२४७×६५ से० मी०	२१ (१-२१)	१२	३५	पू०	प्राचीन इति श्री शर्माचार्य विरचिताया ज्ञान- मंजरीमंथर प्रश्न विद्या समाप्ता ॥१॥
२२६×११ से० मी०	३२ (२-३३)	८	२७	अपू०	प्राचीन इति श्री ज्ञानमंथरी समाप्ता ॥
२३२×१२३ से० मी०	२२ (१-२२)	१०	३२	पू०	प्राचीन इति श्री उमासहस्ररगवादे ज्ञान स्वरो दय ममात्मन ॥ मोति द्वितीय पाण्ड इत्यग ११ एकादश्य इदुवासर संवत् १८८४ बीरारी नाम मंदलगरे उदयन शाम कनु सन्निभुनह ममाप्त मुकाम जावा । इति श्री ग्यातिहगर दायक समाप्तविधित तदमो नाप भट्ट गात्रम्य ॥
२५५×१०५ से० मी०	४ (१,२,५,६)	६	१२	अपू०	प्राचीन
(म० मू० ७५)					

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किन् वस्तु पर निर्वाह है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
२३८	७८८०	ज्योति प्रबोध	केशव		३० का०	३०
२३९	३५२१	ज्योतिर्विदाभरण			३० का०	३०
२४०	२६६३	ज्योतिष कल्पतरु			३० का०	३०
२४१	११६०	ज्योतिषकल्पतरु			३० का०	३०
२४२	३०११	ज्योतिषरत्नाम्	सूदामणि		३० का०	३०
२४३	३०१६	ज्योतिषरत्नमकर			३० का०	३०
२४४	३०१७	ज्योतिषरत्नमकर			३० का०	३०

पत्रा गा पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिमध्या और प्रति पत्रि म प्रक्षरमध्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कट मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
अ अ	ब	स द	६	१०	११
२७७×११३ से० मी०	७ (१-७)	८ ४३	५०	प्राचीन	
३०८×१५८ से० मी०	६	११ ४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३×१२९ से० मी०	४१	१० ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२४×६७ से० मी०	७७	८ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२८१×११६ से० मी०	८३ (१-८३)	६ ३४	पूर्ण	प्राचीन शाक१५५०	याने जून्य सरेपु मीन विरले १५५० वैशाखमासे " इति श्री कवि ब्रह्मा मणि चम्पदवि विरचित ज्योतिषरत्न तरी जातक स्वर्ग्ये द्वात्रिंशोऽध्याय ३२ शुभमस्तु ॥
२७६×११५ से० मी०	२२५ (१-२५)	६ ३१	पूर्ण	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री ज्योतिष कल्पतरु जातक स्वर्ग्य विदया यागिनोदया कथन नाम षड्विंशतिदोऽध्याय श्री सवन १८८२ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथी १ मीम- वामर त्रिपिनमिद पुस्तक छत्रपुर मध्य " " ॥
२५८×१३१ से० मी०	१८ (१-१८)	१३ ३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष कल्पतरु मून समवे तृतीयोऽध्याय ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	३४२२	ज्यातिष कल्पतरु	चूडामणि		६० का०	६०
२४६	७३२४	ज्योतिषवीमुदी (प्रश्नप्रकरण)	नीलकण्ठ		६० का०	६०
२४७	१२२६	ज्योतिषवीमुदी	नीलकण्ठ		६० का०	६०
२४८	२०५३	ज्योतिष ग्रन्थ			६० का०	६०
२४९	१६६६	ज्योतिषचन्द्रिका			६० का०	६०
२५०	१०१५	ज्योतिष जातक			१० का०	६०
२५१	३४८६	ज्योतिषतन्त्र (ज्यातिष प्रश्न)	चिंतामणि		१० का०	६०

पत्रा या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	अक्षरसंख्या पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	३	स	द	६	१०	
					११	
२३७×१० सें० मी०	६२१	३७	३७	अपूर्ण	साव १५६५	आज्ञा पत्राव बाणदी १५६५ वंशाखे मुकुन्दमरे ॥ पत्रसंख्या शुद्ध पत्रे तु श्री मद यु दावनामरे ॥ ... इति श्री श्री चूडामणि विरचिते ज्योतिषकृष्णारोमिथ स्वधे उपसहारो नाम पत्रविशेष समाप्तश्चाय स्वध ॥ श्री ॥
२४४×१० सें० मी०	३	३०	३०	अपूर्ण	प्राचीन १०१८३६	इति श्री नीलकण्ठरचित ज्योतिष बौद्धा प्रश्न प्रकरण ॥ १०१८३६ मिति वैशाख कृष्ण द्वितीया २ वनी लिखित हरीयम दीक्षित × × × ॥
२४५×१० सें० मी०	३७ (१-३७)	३३	३३	पूर्ण	१०१८४७	इति श्री नीलकण्ठरचित ज्योतिषकौमु द्या प्रश्नप्रकरण समाप्तम् ॥ सवत १८४७॥ मिति आषाढ शुद्ध द्वितीया भीमवामर ॥ श्री ॥
२१२×८१ सें० मी०	५ (१-५)	२३	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति ज्योतिष ॥ ' ...
२०×१० सें० मी०	६	२७	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष चन्द्रिकाया पत्राया- न्वो प्रथम प्रकाश ॥ ॥ श्री रस्तु ॥
२५५×११ सें० मी०	२३	२६	२६	पूर्ण	१०१८८८	समत समत १८८८ समनानमिति जेठ मुकुन्दा द्याप्यया रविवासर ॥
२७६×१२ सें० मी०	२० (१-२०)	३६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री देवत चूडामणि श्री मन्महा- राज वदित पादावुज सिध्य जनाना- दशभिः सविद्याकुशलशास्त्रमुक्तप्रथम धामिचितामणि पठितवर्ष विरचितश्या ज्योति शास्त्रे प्रथम तत्र संपूर्णम् ॥ (पृष्ठ संख्या-१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	२५१४	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	१०
२५३	२६५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	१०
२५४	२०६५	ज्योतिष यज्ञ संग्रह			दे० का०	१०
२५५	६८४८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	१०
२५६	५०८१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	१०
२५७	२८६७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	१०
२५८	४४३७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	१०

पता या पृष्ठा का आकार	पत्रमन्था	प्रति पृष्ठ म पक्तिमन्था और प्रति पति मे मन्थसंख्या	क्या ग्रन्थ पूरा है ? अपूर्ण है तो कत मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवरण विवरण
सं. प्र.	व.	सं. द.	६	१०	११
२५५ × १५ सं० मा०	२०	१० ४१	अपूर्ण	प्राचीन	
३० × १३ सं० मी०	४ (१-४)	११ ३५	पूर्ण	प्राचीन	
१३८ × ८७ सं० मी०	२५	११ १६	पूर्ण	प्राचीन	
२४८ × १०६ सं० मी०	२६ (१-२६)	११ ५३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिषरत्नमाला समाप्त -
२३४ × ११४ सं० मी०	६ (३६१२ २०)	१३ ३८	अपूर्ण	आधुनिक	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया महत्त प्रकरण × × × (१० १०)
२३४ × ८३ सं० मी०	५२ (१-५२)	■ २८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७०५	इति श्री पति भट्टविचिताया ज्यामिष रत्नमालाया देवप्रतिष्ठा प्रकरण विज्ञानिम समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ समत १७७५ शक ॥ १९४० ॥ समये घोष शुद्धि ७ मन्थमी गुरोरह ॥ राम ॥ राम ॥
२६ × १०४ सं० मी०	३४ (२८ १३ १८ २२ ३० ३० ४१ ४१ ४३ ४५ ४७ ४६ ५३ ५४ ५६)	२ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति था आपति विरचिताया ज्योतिष रत्नमालाया षोडश प्रकरण चतुष × × (५० १४)

प्रमाण और विषय	पुस्तकान्तर्गत की आगतसम्पत्ति वा राशिविशेष की मध्या	ग्रन्थनाम	प्रकाशक	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५६	१३७१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६०	३१५०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६१	३३०८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६२	६५४६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६३	७३६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	४८१०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	४८३२	ज्योतिष रत्नमाला (तन्त्रप्रकरण)	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्ररस्य	प्रति पृष्ठ मे पत्तिरस्य और प्रति पत्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बत मान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	म द	६	१०	११
२४५ × १५ से० मी०	२६ (२-२७)	१४ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ × १० ३ से० मी०	२५ (१-२५)	१० ३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ ६ × ११ ५ से० मी०	८ (२-७, ८-१५, १६)	१३ ४६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष- शास्त्रमालाया लग्न प्रकरणं ॥ (प० १६)
२७ ८ × १० २ से० मी०	३१ (१-३१)	६ ३६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया लग्न प्रकरण द्वादश ॥
२५ ३ × ११ ५ से० मी०	६६ (२-६७)	७ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ × ८ ४ से० मी०	४७ (२-४४ ५०-५२)	६ ३३	अपूर्ण	स० १८२७	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्नमालाया सुर प्रतिष्ठा प्रकरण ॥ सवत १८२७ मार्ग सुदि १२ बुधके पुस्तक लिखित भोद्वरामेख स्वपाठार्थे ।
२७ ५ × ११ ५ से० मी० (८०-सू० ७६)	३६ (१-३६)	८ ३२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्न मालाया लग्न प्रकरणम् द्वादशम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आपतसंग्रह या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	दिनांक
१	२	३	४	५	६	७
२६६	६१३७	ज्यातिपत्रसंग्रह			दे० का०	दे०
२६७	७०५३	ज्यातिपत्रसंग्रह			दे० का०	दे०
२६८	१६२०	ज्यातिपत्रसंग्रह			दे० का०	दे०
✓ २६९	६१६३	ज्योतिषसार	नरचंद्र		दे० का०	दे०
२७०	४६०८	ज्यातिपत्रसार			दे० का०	दे०
✕ २७१	१७७४	ज्यातिपत्रसार			दे० का०	दे०
२७२	४२७९	ज्यातिपत्रसारसंग्रह (वाचनाधर)	भुजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त मान अक्षर ता विवरण	अक्षर और नामनामा	अक्षर आवश्यक विवरण
८ अ	८	स द	६	१०	११
१६८×७८ सं० मा०	६	७ २०	अपूर्ण	प्राचीन	
१७७×८६ सं० मा०	६१	८ १८	पूर्ण	प्राचीन	
२१×१६ सं० मा०	३२	१६ १५	अपूर्ण	कृमि तित	
२५२×१०३ सं० मा०	८	१६ ४५	अपूर्ण	प्राचीन	अहत जिन नत्वा नारवद्रणधीमता सार भुध्रयते किञ्चि छातिप क्षोर नारध ॥१॥ स्वरस्वतो प्रसादनय लका द्वार दृष्यन् । वरिष्य नरवद्रोह । मुखाना बाध देवव ॥२॥ (प्रारभ)
२१८×१६३ सं० मा०	११ (१-७)	१२ २२	अपूर्ण	प्राचीन स०१६११	इति जावनोसारसास्त्र समाप्त सवत् १६११ गीयमुदाद्विताम गृह वासर तादिन समाप्त सुभमस्तु मगल दशात ।
२४×१२४ सं० मा०	५ (२-६)	११ ३८	अपूर्ण	प्राचीन स०१८७६	इति श्री ज्ञानिकसार सास्त्र समाप्त संपूर्ण चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयो ७ भूगु वासर मयन १८७६ लिप्यत पश्चात् छरिया जुन परमाद सेवक कृष्ण के ॥
२३×६७ सं० मा०	१२ (२-७, १३, २१-२५)	८ ३१	अपूर्ण	प्राचीन स०१८५३	इति श्री मुजादित्येन विप्रेन ॥ गिर- चित जातिप सार सप्रहा वानवोप- कावसारसयद् अपूर्ण । मयत ॥१८ ॥१३॥ प्रद्योतम सवत्सरे ॥क्वार मास शुभे शुक्ल पक्ष त्रियादसी सुत्रवासर

क्रमानुसार विषय	पुस्तकानाम की आगतगम्या या सग्रहविषये की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- यस्तु पर निष्ठा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	१७२६	ज्योतिष सारसग्रह			१० का०	१०
२७४	१६३६	ज्योतिषादि सग्रह			१० का०	१०
२७५	७१३४	ताजबसार			१० का०	१०
२७६	६६२६	ताजिब (ह्यादस ग्रहफन)			१० का०	१०
२७७	५५२५	ताजिक नीलकठी	नीलकठ		१० का०	१०
२७८	२०४५	ताजिब नीलकठी	नीलकठ देवस		१० का०	१०
२७९	५५८३	ताजिक नीलकठी	नीलकठ भट्ट		१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठा का आन्तर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	कथा अथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत- मान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	
२३७×११ सें० मी०	१७ (१-१७)	८	४५	अपूर्ण	प्राचीन	इति ज्योतिष सार सप्तह मास नक्षत्र गोघ्नान गुरु रवि शुक्रिनाम द्वितीया- स्तवक ॥२॥ (पत्र संख्या-७)
१७५×१२ सें० मी०	२२	१६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२४४×१०.१ सें० मी०	३१ (१-३१)	१०	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६×६३ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२०	पूर्ण	प्राचीन सं० १७५३	ईति यतुफल ईति तान्त्रिक द्वादश भुवन घटान फल समाप्त श्री शुभमस्तु यादृष्ट पुस्तक दृष्टवा तादृष्ट लीपति मया X सवत् १७५३ मास सा० ॥
२४८×१०.७ सें० मी०	४४ (१-४४)	८	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
३३१५×२ सें० मी०	३	१३	४१	अपूर्ण	प्राचीन	
२२५×१०.५ सें० मी०	१० (१-२, ४- ११)	६	४३	अपूर्ण	प्राचीन	

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम यस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२८०	६८१०	ताजिक नीलवठी	नीलवठ दैवज्ञ		१० का०	१०
२८१	६८६२	ताजिक नीलवठी	विश्वनाथ दैवज्ञ		१० का०	१०
२८२	२७२०	ताजिक नीलवठी	नीलकठ		१० का०	१०
२८३	२७२८	ताजिक नीलवठी	नीलवठ भट्ट		१० का०	१०
२८४	१२८०	ताजिक नीलकठी	नीलवठ दैवज्ञ		१० का०	१०
२८५	४६०	ताजिक नीलकठी	नीलवठ दैवज्ञ		१ का०	१०
२८६	२४६३	ताजिक नीलवठी			१ का०	१०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ म पविनसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमख्या	क्या ग्रंथ पूरा है? अपूर्ण है तो वन मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२४२×१०६ सें० मी०	२८ (१-२८)	१० ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३२०×१२५ सें० मी०	५६ (१-५६)	१० ४२	अपूर्ण	प्राचीन	इति देवादेर देवनात्मज विश्वनाथ देवण विरचित नाटक ज्योतिर्वि कृत सनातन बाह्ययोगाध्यायस्य ध्याय्यो दाहति समाप्ता ॥ (पृ ४६)
२३३×११६ सें० मी०	२५ (१-२५)	६ ३४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठाचार्य विरचिते नील- नदीताम्रक संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२४२×१२४ सें० मी०	२१ (१-२१)	११ ३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१५×१२ सें० मी०	६ (१-६)	६ ४५	अपूर्ण	प्राचीन	
१८६×१५२ सें० मा०	२६ (१-२६)	१३ ३४	पूर्ण	सं० १६०६	इति श्री नीलकण्ठ विरचितताम्रक समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल दशानु सवत १६०६ शके १७७१ पीप कृष्ण अष्टम्या चद्रवासरे तिथित मिथ शिवदयाल श्री ॥
२४५×६८ सें० मी०	३१ (३४७६ २६३१३३)	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और दिवस	पुस्तकान्तर्गत वा सप्रतुष्टिप की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८७	३३०६	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०
२८८	४१२४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८९	१७४१	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ देवण		दे० का०	दे०
२९०	५२४५	ताजिक नीलकंठी (वपतत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२९१	६५४८	ताजिक नीलकंठी (वपतत्र)	नीलकंठ देवज्ञ		दे० का०	दे०
२९२	४८३	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ देवा		दे० का०	दे०
२९३	७०१३	ताजिक नीलकंठी (गणपत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपत्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२३ ए × ११ २ सें० मी०	१८ (१-१८)	१३ ३५	पू०	प्राचीन सं० १७७८	अने नदाभ्रवाणेंदुमित आश्विन मासके । शुक्लेष्टम्या..... सवत् १७७८ आके १६५३ कार्तिक शुक्ल पंचमी रवि वासरे समाप्त पुस्तक ॥ राजक नील कठी लिखित..... ॥
२६ × १३ सें० मी०	३७ (३-३७, ३६-४२)	८ २६	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ ३ × ११ सें० मी०	७० (१-२२, २५-२६, ३०- ३२, ३५ ५०, ५६-६२, ६६- ७२, ७६, ७६- ८८, ८२-८६)	५ २८	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × १३ ६ सें० मी०	२५ (१-२५)	११ ३०	पू०	रखनाला-आप-१५०७ निधिया-मवत-१५६७	अने नदाभ्रवाणेंदु ॥ १५०६ ॥ मिति अश्विन मासके शुक्लेष्टम्यामनुप्रय नीलकठ वधाकरोत ॥ इति श्री काशी निवासि बालकठ विरचित वप तत्र द्वितीय समाप्त ॥ धी सं० १८६६ ॥ तत्त्ववर्षे महामायल्यप्रदे मामोत्तमे भागे फाल्गुनमास शुक्ले पक्षे शुभ तिथी एकादश्या ११ शुभवासर
२४ ७ × १० ५ सें० मी०	२८ (१-२८)	॥ ३०	पू०	प्राचीन	अने नदा बाण्डुमित आश्विन मासके शुक्लेष्टम्या वप तत्र नीलकंठवधो अकरोत ॥ १५ ॥ शुभमवतु लीखीत वास देव ह्यम ॥
३० × ११ ५ सें० मी०	२७	११ ५०	पू०	सं० १८३८	इति वप तत्र संपूर्ण ॥ सं० १८३७ आके ७०२ आगतमेमाम अस्वन् मासे । शुभल पक्ष । पुन तिथी दसम्याया ॥ १० ॥ रव वासरे । लिपत जोत गराय पुत्र राम प्रसादना । नाग बाण । शुभ । शुभ श्रीरामजी सदा सहाय । सरस्वति नम ॥ ॥ ॥
२४ ए × ११ १ सें० मी० (मंस० ७७)	१८ (१-१८)	६ ३०	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री नीलकंठ्या सज्ञातत्र समाप्त + + सं० १८८२ समाप्त + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकर	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६४	४६६	ताजिक (मज्ञा तत्त) (मटीक)		समरसिंह	२० का०	२०
२६५	६१४७	ताजिक नीलकठी (सज्ञा तत्त)	नीलकठ दैवज्ञ		२० का०	२०
२६६	१४६	● ताजिक नीलकठी (सज्ञातत्त प्रकाशिका टीका) उत्तरार्ध	नीलकठ दैवज्ञ	विश्वनाथ	२० का०	२०
२६७	२६४	ताजिक नीलकठी	नीलकठ दैवज्ञ	दिवाकर दैवज्ञ	२० का०	२०
२६८	२६८१	ताजिक नीलकठी (संस्कृतटीका)	नीलकठ दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	२० का०	२०
२६९	५८०	ताजिक नीलकठी (संस्कृतटीका)			२० का०	२०
२७०	२६९	ताजिकनीलकठी (स० टीका) विष्णुबापनी	नीलकठ दैवज्ञ	माधव	२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या	क्या शेष पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द अ	ब	स	द	६	१०	११
३२५ × १४५ सें. मी०	१३ (२-१४)	१४	४४	अ०	स० १६०७	***समरसिंह कृत ताजिक तन्त्रे स्फुट प्रकटार्थमुक्तमस्ति** (पृ० ६) इति हर्षस्थान विचारयेत् लीढ्यतराम गोपाल चुलडर्ष कापडघावासमध्य स० १६०७ पृ० ४० १३ ॥
२५ × १०४ सें. मी०	२३ (१-२३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानतमूत नीलकण्ठी विरचित श्रद्धा तन्त्र समाप्त ॥ दद पुस्तकं दिनि तमाण वैश्वर ज्पातिविदी
२४५ × १०१ सें. मी०	७४	१२	३१	पू०	प्राचीन शक स० १५५१	प्रकारिविश्वनाथेन समातत्र प्रकाशिका ॥ टीकाटीकाकुला क्यारितज्जानज्जानु-बधनम् ॥१॥ चन्द्रवारुण शरचाद्र १५५१ सम्मिते हायनेनृपतिरलिषाहन् । मार्ग-शीर्षसित पञ्चमी तिथौ विश्वनाथ विदुषा समापिता ॥२॥ गादावरीतटे भाति गोलग्रामोऽति सुन्दर ॥
३१७ × १२७ सें. मी०	२२ (१-२२)	११	४१	पू०	प्राचीन स० १६१६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञ विरचिते श्री नीलकण्ठ उद्योतिवित कृत महातन्त्रे पचाशत्सहस्र सहित समाप्तम् तीया ध्याय सवत् १६१६ मार्गशिर शुक्ला ३ चद्र बासरे निषि कृत आनदि रामा-त्मज विहारिणः मोरणाद्य वासिना शुभम् ॥
२७२ × १५६ सें. मी०	१३	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्व नाथ दैवज्ञ विरचित नीलकण्ठ उद्योति विद्वक्त समातत्रे सहस्राभ्यासस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥
२७ × ११७ सें. मी०	१२ (१-१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१७ × १२८ सें. मी०	३३ (१-३३)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की अभिलेखिका वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	२२८	ताजिक नीलकण्ठी (१-२ तन्त्रम्)	नीलकण्ठ देवज्ञ		दे० का०	दे०
३०२	१७१०	ताजिक भाव विचार			दे० का०	दे०
३०३	१०६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० वा०	दे०
३०४	६६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० वा०	दे०
३०५	५२३७	ताजिकशास्त्र	हरिमट्ट		दे० वा०	दे०
३०६	७८६	ताजिकशास्त्र			दे० वा०	दे०
३०७	७५७	ताजिकशास्त्र			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२७ X ११ सें० मी०	२६ (१-१२, १-१३)	१२ ४३	पू०	प्राचीन	इति नीलकण्ठा द्वितीया समाप्त लिखित हर राम दीक्षितमराठले करेण स्वार्थ ॥ शुभभूयामलेखक पाठवाना ॥
२५ X ११ ६ सें० मी०	२३ (१-२३)	८ ३५	पू०	प्राचीन सं० १८२६ अ० १६६१	*** "संवत् १८२६ शके १६६१ वंशाष्ट मुद्रि १ ॥
२५ X ६ १ सें० मी०	३४ (१-५४)	१० २६	पू०	प्राचीन १० १७५५ अ० १६२०	इति श्री महर्दवज दु ठिराजात्मज गणेश देवजविरचितेता जिप्र भूगण भोजन चिन्ताकवस ॥ समाप्ता य ग्रंथ ॥ समाप्त । शुभमस्तु ॥ संवत् १७५५ शके १६२० प्रथम ज्येष्ठ वदि १३ गुरु- वासरे मुकुन्दपुर नगरे श्रीमहाराजा अवधूतसिंह देवस्थ पुस्तक लिखित मिद । श्रीमिश्रन्त हनुमन्नेन ॥
२६ X १४ सें० मी०	१७ (१-१७)	१५ ४४	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री महर्दवज दु ठिराजात्मज गणेश- गणेश विरचिते ताजिब नूपणे भाजन चित्रा विचारध्याय ॥ समाप्तायप ग्रंथ उमाशिवोजयति प्रातस्तत् संवत् १८६६ चैत्र शुक्ला १३ चतुर्थदिने लिखितमिद पुस्तक मिश्र मुरलियर स्वय पठनायम् श्री ॥
२६ X ११ १ सें० मी०	३५ (१-३५)	६ ३७	पू०	सं० १७७८	इति श्री हरिमट्ट विरज्यते ताजिनसारे दिनप्रकरण समाप्त संवत् १७७८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे १ प्रतपदाम्मे ताजिन सार
३४ X १२ ८ सें० मी०	१६ (२, ६-२०)	६ ६२	अपू०	प्राचीन	
२६ X १० ३ सें० मी०	८ (२, ६, ११, १५-१७, ३२, ३४)	१० ३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	मूल्य
१	२	३	४	५	६	७
३०८	४२७२	ताजिकसार	हरिहर भट्ट		दे० का०	दे०
३०९	७५६८	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३१०	७६२६	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३११	<u>१०५५</u> ३	तिथि ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३१२	५६००	तिथितत्व दर्शन (तिथि निर्णय)	विद्यमोहिनी पंडित		दे० का०	दे०
३१३	५१११	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
३१४	<u>२५३२</u> १७	तिथिनिर्णय			मि० का०	दे०

पत्रो या पष्ठो का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	९	१०	
					११	
२४×१० से० मी०	४ (१-४)	६	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२०.५×१६ से० मी०	४६ (१-४६)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीताजक शारे मिश्रभावाध्याय (पत्र सद्यः ४६)
१६.७×११.८ से० मी०	२७ (१-२७)	१५	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८४१	इति श्री हरिभट्ट विरचित नाजिकसार संपूर्णम् सं० १८४१ आगे १७०६ मिति आपाद कृष्णामाया गुरु वासरे
२०.३×१०.८ से० मी०	४ (१-४)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३०.३×१२.३ से० मी०	११ (१-११)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१६	इति श्री मद्रासचंद्र चरणारविंद मनि- मकरन्द मधुपेन शिवगोविंद पंडितेन विरचित तिथितत्व दर्शन नाम तिथि निर्णय समाप्त शुभमस्तु शुभभूमात् सं० १६१६ के साल अश्विन वदि ..
२२×१० से० मी०	४ (४-६,९)	८	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
१३.७×११.५ से० मी०	२३	६	२४	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०१	सं० १६०२ के साल मिति पत्रवदि ३० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३१५	२३१	तियिपत्र			दे० का०	दे०
३१६	$\frac{२४२२}{१७}$	तियि प्रकाश			दे० का०	दे०
३१७	७६४६	तिथिप्रकाश निरुप	गंगाधर		दे० का०	दे०
३१८	२३५०	तिथिराशि गुणानुभ विचार			दे० का०	दे०
३१९	२४७	० तिविषयसतम्	द्विविषयापार्थ		दे० का०	दे०
३२०	६१४४	त्रिषण् पत्तोरी टीका	राम		दे० का०	दे०
३२१	७८१४	दरिणिन	बगल मिहिर		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति शक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कते मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
क	ख	ग	द	१०	११	
१६×६५ सं० मी०	५२	१६	२७	अपूर्ण	प्राचीन (जोण)	
१३७×११५ सं० मी०	१०	१२	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री तिथि प्रकाश समाप्त शुभ- मस्तु ॥
६१×८६ सं० मी०	३ (१-५)	८	३२	पूर्ण	प्राचीन स० १८७४	इति श्री द्विवेद गंगाधरकृतो तिथि- प्रकाश निर्णय समाप्त शुभमस्तु ॥ स० १८७४ चैत्र सुदि ३ गुरीक पुस्तक लिखित × × ×
२२३×१०४ सं० मी०	५	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६८×१०७ सं० मी०	५ (१-५)	१२	३६	पूर्ण	प्राचीन स० १८३७	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य निरचित त्रिविजयशत संपूर्ण ॥ स० १८३७ ॥ आव ॥ १७०१ ॥
२६१×११३ सं० मी०	१४ (१-१४)	८	६३	पूर्ण	प्राचीन स० १९१७	इति मित विश्व वयोग्पा कृष्णकने मन्त्री निवृत्ता कन बालुवाया वयो योरक्ष पुस भित्ति मुरजनुपा रामेरा उत ॥ स० १९१७ माघे मात ॥
२४६×१०६ सं० मी०	१० (१-८-१०- ११)	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति दर्वागल समाप्त ॥ श्री ॥

(स० स० ७८)

क्रमांक और विषय	मुस्तकालम की आगतसरया या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस दस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३२२	४४११	दशाचक्र			दे० का०	दे०
३२३	६६५०	दशाचितामणि			दे० का०	दे०
३२४	७६८८	दशाचितामणि			दे० का०	दे०
३२५	४८३५	दशाफल			दे० का०	दे०
३२६	२५३२ १७	दिवाभूत			दे० का०	दे०
३२७	२६२२	दैवज्ञचितामणि			दे० बा०	दे०
३२८	४०१२	दैवज्ञ जीवन	श्रीनरमण त्रिपाठी		दे० बा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में प्रक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०
२६७ × ११४ सें. मी०	५ (२-६)	६	४२	अपूर्ण	प्राचीन
२४३ × १०४ सें. मी०	१३ (१-१३)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन इति दशावितानि समाप्त ॥
२७३ × ११४ सें. मी०	१६ (१-१६)	७	३४	पूर्ण	प्राचीन
२४५ × ६ सें. मी०	१२ (१-१२)	७	३२	अपूर्ण	प्राचीन
१३७ × ११५ सें. मी०	१३½	६	२३	पूर्ण	सं० १६२४ अथ शुभ सं० १६२४ के माने १७८६ कार्तिक वदि १५ समाप्ति दिन सिधि तेद पुस्तक श्री पश्चित नगरामेपु
३२ × १२८ सें. मी०	६ (१-५, ७)	७	३४	अपूर्ण	प्राचीन
३७ × १४१ सें. मी०	३३	१७	२८	अपूर्ण	प्राचीन (जोश)
					इति श्री द्विज दिनकरात्मजस्त्रिपाठो श्री लक्ष्मण बृहत्सावतसराय विर-जितास्त्रिगुण सहिता *** (पुष्पिनी)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२६	$\frac{२५३३}{३}$	दापमान			१० का०	३०
३३०	६२४२	द्वादशराशिपत्र			३० बा०	३०
३३१	७५०५	द्वादशराशिफल प्रश्नावली			३० बा०	३०
३३२	$\frac{५३३२}{८}$	द्विषटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३३	४०८५	द्विषटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३४	$\frac{२५३२}{१०}$	द्विषटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३५	७५७६	घोषाट (भवगरिज्ञानाधिवार)	घोषति		३० बा०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या शब्द पूर्ण हैं ? अग्रसूत्र है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	१०	१०	१०
१०२ × १२५ से० मी०	२	८	१६	५०	प्राचीन इति दापज्ञान ॥
२१५ × ११ से० मी०	७ (१-७)	१३	३२	५०	प्राचीन सं० १६१५ इति श्री राणी मण्डल द्वादश राणी फल ॥ समत १६१५ शके ७७८० आदा शुक्ल ज्योतिषी ०
२१८ × १२ से० मी०	८ (१-)	६	२७	५०	प्राचीन सं० १८५८ इति द्वादश रासिफल लिप्यते ॥ शुभ- भवस्तु शिदिशतु सवत् १८५८ फालगुन वदि
२१६ × १५६ से० मी०	३	१३	२३	५०	प्राचीन इति शिरशिवा विरचित दुपटीया मूर्हत मपूण ॥ श्री ॥
२३ × ३८ से० मी०	१६ (१-१६)	४	३७	५०	प्राचीन सं० १८५६ इति श्री ज्योतिष शास्त्रगारे पार्वती शिव सवादे शिव प्राप्त द्विपतिकाश- माप्त ॥ सवत् १८५६ शके १७२१ ० ० ॥
१३७ × १५५ से० मी०	१६ (१-१६)	१४	२८	५०	सं० १६२४ इति श्री शिव कृतद्विपटिका मूर्हत संपूर्ण शुभमस्तु ॥ सवत् १६२४.....
२१८ × ११ से० मी०	५	६	२४	५०	प्राचीन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२४८१	नक्षत्र कण्ठावली			दे० का०	दे०
३३७	६८०८	नक्षत्र चूणामणि			दे० का०	दे०
३३८	७०१२	नक्षत्र विधान			दे० का०	दे०
३३९	१०४१	नक्षत्रायुदशाफलम्			दे० का०	दे०
३४०	१८६१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४१	२५८४	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४२	६८७१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या	क्या प्रश्न पूर्ण है अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का निवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण	
८ प्र	व	स	द	९	१०	
१६२×८३ से० मी०	४ (१-४)	१०	२६	५०	प्राचीन	इति नक्षत्र चण्डावलि संपूर्ण ॥
२३६×१०३ से० मी०	३२ (१-३२)	६	३३	५०	प्राचीन	॥ इति स ॥
२२'×६६ से० मी०	२ (१-२)	६	३६	५०	प्राचीन	इति नक्षत्र विधान संपूर्ण ॥ × ×
२१२×१०८ से० मी०	११ (१-११)	८	२८	५०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्री भूमि अष्टदश्यात्मजमा(घ) व रवितेजक्षत्रापुराणा नमविभाग- नयानफल समाप्तम् ॥
२४१×१०२ से० मी०	१३ (१-१३)	१२	४१	अपूर्ण	प्राचीन	इति नरपति अथर्ष्यायां स्वरोदये गङ्गे सप्ताध्याये शास्त्र सप्तदा नाम प्रथमाध्याय ॥ (पृ० ४)
१२१×१२२ से० मी०	६१ (१०-४६ ४६-८३, १३१-१४१)	१३	४४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नरपति नदि विरचितानां नरपति अथर्ष्यायां प्रथम गङ्गा ॥ सं० १८७० ॥
२७६×१३६ से० मी०	२२७ (१-२२७)	१०	३३	५०	प्राचीन	इति श्री पट्टिन नरपति विरचितेयां यात्राप्रवर्तनविनिरातुनानिगमाष्टानि- × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिवि
१	२	३	४	५	६	७
३४३	६६०१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	३०
३४४	३७५०	नरपतिजयचर्या			३० का०	३०
३४५	७३६०	नरपतिजयचर्या- स्वरोदय	नरपति		३० का०	३०
३४६	१६२१	नरपतिजयचर्या- स्वरोदय			३० का०	३०
३४७	$\frac{५०५४}{१२}$	नगर विमिनशतयोग			३० का०	३०
३४८	६६२१	नटजम घटल			३० का०	३०
३४९	६१८	नटजमाध्याय			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितमख्या और प्रति पत्रि- में प्रसरसंख्या	नया ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बत- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६'६ × ११'२ सें० मी०	६४	६	३५	अपूर्०	प्राचीन	इति नर ५० रज्जुवधे चक्र ॥
३३ × १२'५ सें० मी०	३० (५-३०, १२७, १२६, १३१, १३२)	१३	४४	अपूर्०	प्राचीन	
३१'७ × १३'३ सें० मी०	६५ (१-६५)	१२	५२	पूर्०	प्राचीन म० १८६५	इति श्री नरपति जयचम्याया स्वरोदये तात्कालिक पञ्चाग समाप्तम् ॥..... साके १७३० । सं० १८६५
२५ × १२ सें० मी०	२३	१२	४२	अपूर्०	प्राचीन	
१६ × ७ ८ सें० मी०	८	६	१८	अपूर्०	प्राचीन	
२०'७ × ६'३ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३०	पूर्०	प्राचीन	इति श्री रुद्र संहिताया हर शर्वती सवादेनष्टजन्म पटलाध्याय समाप्त ॥ श्री शिवार्पणं मस्तु ॥
२३'६ × १०'५ सें० मी०	१० (१-१०)	१४	३८	अपूर्०	प्राचीन	
(म० मू० ७६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	६६१७	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५१	७७६८	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५२	२८०३	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५३	६६२६	नष्टजातक प्रश्न			मि० का०	दे०
३५४	२२७६	नारदद्रष्टिपत्र	श्रीसामरचद्र गूरि		दे० का०	दे०
३५५	$\frac{२६७६}{२}$	नारायण प्रश्न			दे० का०	दे०
३५६	६६१०	निषेवनासमुद्रि			दे० का०	दे०

पद्यो या पृष्ठो का भावार	पद्यसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	कथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्था और श्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	९	१० ११	१२	१३	१४
२७३ × ११२ से० मी०	३ (१-३)	६ ३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्न मार्गे नष्ट प्रकाराध्याय- स्ममाप्तिमगमत् ॥ -
२०३ × १६ से० मी०	३ (१-३)	१७ २५	अपू०	प्राचीन	
२७३ × ११६ से० मी०	२ (१-२)	८ २६	पू०	प्राचीन	इति नष्टजातकाध्याय ॥
१६८ × ६५ से० मी०	४	११ ३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नमार्गेनष्टप्रकाराध्याय ॥
२४१ × १२५ से० मी०	३२ (१-३२)	६ २६	पू०	प्राचीन स० १८०७	इति नारवद्रटिप्पनके श्रीसागर- चन्द्र मूरि कृते प्रथम प्रकीर्णक संवत् १८०७ वर्षे भावणवदि तृतीया- ३ अध्यायसरे लिखित व्यास जय शकरी ॥
१७८ × १२५ से० मी०	१५३	१२ २५	अपू०	प्राचीन	
२७६ × ११६ से० मी०	६	१३ ४४	पू०	प्राचीन स० १६२६	स० १६२६ सायाह व १३ दुधे विनायक वेतालस्याय लेखः ॥

क्रमिक क्रोर विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	
३५७	११०५	नीलकंठी	राम दैवज्ञ		३० बा० ३०	७ ३०
३५८	२५३२ १७	नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		३० बा०	३०
३५९	६६९३	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	३० का०	३०
३६०	२६१७	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	३० का०	३०
३६१	६८७७	नीलकंठी (टीकासहित)	नीलकंठ		३० का०	३०
३६२	७३३४	नीलकंठी (संज्ञावज)	नीलकंठ		१० का०	३०
३६३	७४७	नृगण			२० बा०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिनसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	व्याख्य पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
२१६ × १५३ सें० मी०	४० (१-४०)	१२	३७	पू०	प्राचीन स० १६१७	इति श्री दैवज्ञानतन्त्र दैवज्ञ राम विर- चित वर्षलपः ... मासपक्षे च दिन- पक्षे नीलकण्ठ नाम ग्रन्थ संपूर्ण ॥ समाप्त शुभश्रवण दश्यात् ॥ सवत् १६१७ । मिति अमुन यदि ॥३॥ शुद्धे...
१३७ × १५५ सें० मी०	१२	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति नीलकण्ठ तन्त्रे प्रथम समाप्त ॥
३१ × ११६ सें० मी०	२१	६	४४	अपू०	प्राचीन जीर्ण	इति श्री दिवाकर दैवज्ञास्मविज्ञा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकण्ठ- व्यातिविकृत सप्ता तन्त्रे सहमा- ध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति संपूर्ण ॥
२३७ × १२३ सें० मी०	३१ (२२-३२)	१०	३८	अपू०	स० १८६६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञास्मविज्ञा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकण्ठ- व्यातिविकृत कृत सप्ता तन्त्रे सहमा- ध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति संपूर्ण ॥ सवत् १८६६ शके १७३४ ॥
२४३ × १०२ सें० मी०	२६ (१-२६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२७१ × ११५ सें० मी०	१२ (१-१२)	११	३८	पू०	प्राचीन स० १६१२	इति श्री नीलकण्ठ इत सप्ताविवेके सहमानिव्यदश्यात् ॥ प्रथमतस्त समाप्त । × × ॥
२५१ × १०६ सें० मी०	६ (१-६)	११	२६	पू०	प्राचीन स० १६०७	इति श्री नृपान पुस्तक समाप्त थावन मासे कृष्णपक्षे कृष्ण चतुर्दश्यवधि- वासरे सवत् १६०७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आयत सख्या या राश्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४६८७	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६५	५०९६	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६६	४०३२	पचपक्षी			मि० का०	दे०
३६७	३००७,	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६८	६७३६	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६९	५३३२ ८	पचम भाव विचार			दे० का०	दे०
३७०	२८६४	पचपक्षी	परमेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रसरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८४	ब	स	द	१०	११
२८५ × १२'५ सं० मी०	६ (१-६)	११	४४	पू०	सं० १६०६ इति श्री श्रीवोक्त पञ्चपक्षि समाप्त- म् । शुभ सम्बत १६०६ ॥ शाके १७०४
२० × ७६ सं० मी०	२५ (१-६, १- ७, १-६)	६	३३	अपू०	प्राचीन ग्रन्थ पञ्चपक्षिणा सख्या विधीयते ॥ (प्रारम्भ)
२० × ७७ सं० मी०	१३ (१-१३)	६	३६	पू०	सं० १६२५ इति पञ्चपक्षी समाप्ता ॥ सवत १६२५ मार्गशीर्षवद्य शुभवार हर्षिकरी- पनाक राम चद्रेण लिखित स्वा० ॥
२४ × १५ सं० मी०	२	१०	२८	पू०	प्राचीन इति पञ्चपक्षी प्रश्न सपूर्ण ॥
३३२ × १०'२ सं० मी०	३ (१-३)	१२	५३	पू०	प्राचीन इति रत्नाकर खडे स्कन्दाग्रस्त्य सवादे पञ्चपक्षी प्रश्न समाप्त ॥ लिखितमिद विनायक वेतालेन ॥
२१६ × १४६ सं० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन ग्रन्थ पञ्चम भाव विचार + + (प्रारम्भ)
२४५ × १३५ सं० मी०	२ (१-२)	६	२३	पू०	प्राचीन इति श्री सना कुला वतशपरमसुरयो- पाध्याय कृते पञ्चमरा ग्रन्थे आयुर्दायो द्वितीयोऽध्याय समाप्त ० जयशिव ०: जयछम जानकी ॥ जयश्रीरी शंकर

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७१	७३७८	पञ्चस्वरनिर्णय (सुबोधिनी टीका)	नवाग्रसायदेवज्ञ	प्रजापतिदास	३० का०	३०
३७२	२६६७	पञ्चस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७३	४७१४	पञ्चस्वरा	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७४	६८५३	पञ्चस्वरा			३० का०	३०
३७५	६६२०	पञ्चस्वरा	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७६	६६१२	पञ्चस्वरानातव (मटीका)	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७७	६८१७	पञ्चस्वरानिर्णय	प्रजापतिदास		३० का०	३०

पत्तों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में पदसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वद-मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द ग	ब	स द	६	१०	११
२६'८ X ११'२ सं० मी०	२६ (१-२६)	६ ३५	५०	प्राचीन	इति श्री मदुर्दनियोपनामक अक्षर मणि- मुत्त गंगाप्रभा विरचिताया पंचस्वर निर्णये मत्तमोऽध्यायः ॥७॥ पौपेमासे कृष्णपक्षे X X X X X ॥
२७ X ११'१ सं० मी०	५ (१-५)	१० ३६	५०	प्राचीन	
३४'४ X १७'५ सं० मी०	७ (१-७)	१५ ५२	५०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास कृत पंचस्वरा समाप्तं ॥
२४'२ X १०'७ सं० मी०	१० (१-१०)	६ ३०	५०	प्राचीन	
२७'३ X ११'५ सं० मी०	१३ (१-१३)	६ ४३	५०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास विरचिते पंच स्वरायां सप्तमोऽध्यायः ॥७॥
१६'२ X ११'४ सं० मी०	१७ (१-१७)	११ ३४	५०	प्राचीन	इति पंच स्वराज्जातके वातारिष्टम् ॥१॥ (पत्र-संख्या ५) इति श्री गौड त्र(प)दाचार्ये वि० पंचस्वर टिप्पण समाप्तम् ॥ (पत्र-संख्या १६)
३२'५ X ६'८ सं० मी०	१० (१-१०)	११ ३५	५०	स० १६४६	इति प्रजापतिदास कृतः पंचस्वरा निर्णयः समाप्तम् ॥ सम्बत् १६४६ ॥ श्राके १८१४ तिथिम् पंचदशमि शुद्ध वासरा नितम्या ॥
(सं० मू० ८०)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या मसूदाविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७८	४०३१	पंचांग वर्योम			मि० का०	दे०
३७९	२६२७	पक्षिपंचक			दे० का०	दे०
३८०	७३९६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८१	७४६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८२	४२५६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८३	१८१२	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८४	१०६७	पद्मकोश	गोवर्द्धन ज्योतिष		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो या मावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	स	द	६	१०	
२० X ७७ सं० मी०	८ (१-८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति पारिजात रत्नाकरे पद्मावर्ण- नोत्तम प्रथमाध्याय ॥
२७ ३ X १० = सं० मी०	५ (१-५)	८	४३	अपूर्ण	प्राचीन	
१८ २ X १० ६ सं० मी०	२६	७	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ १ X ११ सं० मी०	१६ (१-१६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति पद्यकाव्य भाव फलम् समाप्तम् ॥ सं० १६०६... स्वस्ती श्री रघुवर त्रिपाठी तस्य आरमज दाता राम त्रिपाठी तस्य पुत्र्य भार्या रा लोचन रामेन *****मदपमेधे ॥
२३ X १० सं० मी०	१२ (१-१२)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति श्री ताजकीय पदमहोरा व्यग्रय समाप्तोऽयम् वैशाख शुक्ला ४ चद्रवासरे सं० १६११ ॥
२५ १ X १० ६ सं० मी०	६ (१-६)	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ ६ X १० ७ सं० मी०	११	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति षट्मकोश सं० १८८६ महासोत्तमा- से चैत्रशुक्ला ७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	३५८	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८६	१६३८	पद्मकोश भातक			दे० का०	दे०
१८७	५६६	पद्मकोश वपपत्त			दे० का०	दे०
३८८	७६०६	पद्मपञ्चाशिका			दे० का०	दे०
३८९	१५१५	पद्मपञ्चाशिका			दे० का०	दे०
३९०	२८२३	पद्मपञ्चाशिका	श्रीपति		दे० का०	दे०
३९१	३६५२	पद्मपञ्चाशिका			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या आर प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूरा है ? प्रपूरा है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
१७५ × १३२ सें० मी०	१२	२० २०	पू०	प्राचीन स० १६५	इति राहुफल इति ताजकीय पदम व शाव्यपथ समाप्तोयम मीम शिर कृष्णा - बुधवार सवत १६३४ शुभम् लिखित वनवारि लाल स्वय पठनाय ।
२०८ × १०८ सें० मी०	२५	= २६	अपू०	प्राचीन स० १६५१	
१४६ × १०३ सें० मी०	६ (१-६)	= ४१	पू०	प्राचीन स० १६३५	इति श्री पदमकोश वर्षफल नक्षत्रादि फल संपूर्णम् ॥ सवत् १६३५ वैशाख कृष्ण प्रतिपदा १ आर बृहस्पतवार मथाद्यावदलानके १ ॥
२३५ × १११ सें० मी०	१० (१-१०)	= ३४	पू०	प्राचीन स० १६०८	काश स्वा मीठ विम हररस कवि व श्रवक सज्जनाना कुर्वे सिद्धात सार मून मनुजनत पद्य पचासकीय २ पादि पचासास पुन समापति ॥ सवतु १६०८ ॥ (पत्र संख्या-१)
२३८ × १०७ सें० मी०	७	६ ३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०६ सें० मी०	१४ (१-१४)	६ २८	पू०	प्राचीन स० १८६६	इति श्री कविद्रक विभूषण पद्धति श्रौपति विरचिताया पद्यपचासकीय ॥ समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत १८६६ ॥ सके १७३१ श्रीरामायनम् । श्रीराम चन्द्र मम श्रीगणेशायनम् ॥
२५५ × १३ सें० मी०	१० (१-१०)	६ २५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदम पचासिका समाप्ता ॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६२	३६८६	पद्यपचाशिका	श्री पति		दे० का०	दे०
३६३	६८०७	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३६४	२१३०	पद्यप्रदीप जातक	श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
३६५	६८६	पल्लिभरट विचार			दे० का०	दे०
३६६	२८११	पत्नीपठन			दे० का०	दे०
३६७	१४६८	पत्नीपठन			दे० का०	दे०
३६८	२४३२ १७	पत्नीपठन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का मावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ घ	ब	स द	६	१०	१०
२२×१२ सं० मी०	४	१७ ३६	अपूर्ण	सं० १८७७	इति श्री बबोद्वकुनमूपापण्डित श्री- पति रचितया पद्यवासवाय समाप्तम् ॥ सवत् १८७७ भाद्रपद कृष्णपक्षे ५ रवि तिथ्यत यस्य छोटेसालऽस्थित मिर- पुरे गगानिकटे विध्यमोत्रे
२४१×१०५ सं० मी०	१० (१-१०)	७ ३१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२५×१२३ सं० मी०	२० (१-२०)	१० ४२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री बबोद्वकुनकलमपण्डित श्रीपति विरचिते पद्यप्रदीपाध्यजातकं समाप्तम्
२२६×११७ सं० मी०	३ (१-३)	१० २६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०८	इति श्री पतिन पत शपट प्ररोहण विचार शम स० १६०८ शारे १७७३ अश्विनमासगुप्त पक्षे नवम्या शुभ वाशेर तिथतरामहिनि श्रेण प्रप- मार्थक पुस्तक मिदम् ।
२७१×१११ सं० मी०	२ (१-२)	६ ४१	पूर्ण	प्राचीन	इति परिक्षा पत्नी पतन पत्राकन मान्ति विधि प्रहरमण तिथिवार नक्षत्र सम्प मृग्य ॥
१६७×६३ सं० मी०	३ (२-३-४)	११ २६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३७	इति पत्नी पतन गमानम् ॥ मिथ नोबन राय पटनाथ सं० १८३७ मार्ग शिर स० २ मियत कृष्णमी तिथ करी ॥
१३७×११२ सं० मी०	१०	११ २४	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
३६६	$\frac{७२५१}{२}$	पत्नीपतनविचार			३० का०	३०
४००	६६७३	पत्नीपतनविचार (दुःस्वप्नदमन)		१	३० का०	३०
४०१	१७३२	पत्नीशरट विद्यान	कमलावरधट्ट		३० का०	३०
४०२	$\frac{१८६०}{४ (घ)}$	पत्नीशरटविद्यानम्			३० का०	३०
४०३	६६५१	पत्नीशरटविद्यान	मर्ग उपाध्याय		३० का०	३०
४०४	६६१६	पवनविजय			३० का०	३०
४०५	६२०५	पवनविजयस्वरोदय			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रति पत्रित मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
१४६×८९ से० मी०	६ (१-६)	७ १६	५०	प्राचीन स० १६३८	इति श्री पल्लीविचारोद्घ्याय समाप्तम् ॥ स० १६३८॥ पाल्गुण मासेसित पक्षे पष्टम्या गुरुवातरे ॥ X X X X
२०५×१५१ से० मी०	१ पत्रा	२६ २७	५०	प्राचीन	इति श्रीमृतवचनात् पल्लीपत्रनविचार समाप्त ॥
२५८×१०७ से० मी०	१३ (१-१३)	१० ३७	५०	प्राचीन	इति श्रीब्रम्हवैवर्ते महापुराणेनारायण- नारद सवादे श्रीकृष्णपर्वे भगवन् दसवादे दुस्वप्नदर्शनकथन नाम द्वासीतितमो- ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥
१२६×८८ से० मी०	६ (१-६)	८ १३	अपूर्ण		इति पल्ली शरट विधान समान्तम् शुभमस्तु ॥
२१७×१०१ से० मी०	२ (१-२)	११ ४८	५०	प्राचीन	इति शर्गोपाध्याय विरचित पल्ली संग्रहो विधान समाप्त ॥
१४३×८२ से० मी०	७ (१-७)	११ २२	५०	प्राचीन	इति श्री पवन विजय नाम प्रथमोऽध्याय स० १७७५ शुभमस्तु ॥ स० १७७५ कानिच शुक्रा मन्मथी उरयो निपत मनसा रामपौड वाह्यन जलेन नगरमध्ये शुभ भवान् ॥
२२१×१८४ से० मी०	११ (१-११)	६ २४	५०	प्राचीन स० १८६६	इति ॐ तत्सविहि नित्य उमामहादे- व्यो नमः प्रकृत्यादिन पवन विजय नाम स्वरोदयं समाप्तम् ॥ स० १८६६ भाष भाग कृष्णपक्षे " "

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ४०६	६३०४	पवनविजय स्वरोदय			२० का०	२०
✓ ४०७	६३५६	पातसाधन विवृति	विश्वनाथ		२० का०	२०
४०८	३०१८	पाराशर जातक			२० का०	२०
४०९	७०४७	पाराशर होरा मुशतोकी- शतक			२० का०	२०
४१०	५६६३	पाराशरीय जातक (सटीक)			२० का०	२०
४११	५६७२	पाराशरीय जातक			२० का०	२०
४१२	३१८७	पाराशरीय जातक (सटीक)			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क	ख	ग	द	६	१०	११
२२२ x १३६ सें. मी०	२४ (१-२४)	६	१८	पू०	प्राचीन स० १८६६	ॐ तत्सदिति उमामाहेश्वर सदादे नव प्रकरणान्वित पवनविजय नाम स्वराक्षय समाप्तम् संपूर्ण सवत् १८६६ मासाना मासे माघ शुक्ला ५ शनी लिखित "

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	६६१८	पाराशरी होरा			दे० बा०	दे०
४१४	६२८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१५	३७५८	पाशकेवली	श्रीतम		दे० का०	दे०
४१६	२८६७	पाशकेवली	गर्गाचार्य		दे० बा०	दे०
४१७	७०८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१८	६६७६	वीरगुप्तारा (महर्षि चिंता- मणि टीका, गोचर प्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० बा०	दे०
४१९	६६७९	वीरगुप्तारा (महर्षि चिंता- मणि टीका, तिथि, वार, महासंप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० बा०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का पाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या योग प्रति पत्र मे प्रहारसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	९	१०
					११
२७४ × ११५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३०	पूर्ण	प्राचीन इति पराशरायि केरलमारे कारक प्रकरण ॥ ' ...
२६२ × १२८ सें० मी०	७	१४	३३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७६२ इति पाशाकेवली समाप्ता ॥ मूर्त शुभ बलाया पाशना बार म छुम × × × × × सवत् १७६२ पोष शुक्ल प्रतिपाद ताम्रराजे लिखिता ॥
१६ × १२ सें० मी०	१० (१-७, ७-६)	६	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१७ इति श्री गोत्तम कृता पाशाकेवली समाप्ता ॥ सवत् १६१७ मिश्र सेठ मल्ल जी तस्यात्मज छजुरामेण लिखिता पाशाकेवली विष्णो प्रसादा- स्थुमस्तु श्रीकृष्णायनम ॥
२३८ × ११ सें० मी०	५ (४-६, ८-६)	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३६ इति गणाचार्य विरचित पाशाकेवली समाप्त ॥ शुभमस्तु समाप्त ॥ सवत् १८३६ फाल्गुने मासि शुक्ले प्रति- पदाया भौमवासरे शुभ ॥
१४६ × १०३ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	१८	पूर्ण	प्राचीन पाशाकेवली समाप्तिता ॥ श्री सुभ भुया ॥
२५८ × १२२ सें० मी०	४४ (१-४४)	७	३३	पूर्ण	सं० १८८८ इति श्री दैवतान्तसुत देवश राम विर- चिते मुद्रित चिन्तामणी गोचर प्रकरण ... गोविदेन विनिमिते नवनिघो पीयूषधाराभिधे व्याख्याने छलु गोचर प्रकरणे संपूर्णता ... सवत् १८८८ ॥
२५६ × १२३ सें० मी०	१६२ (१-१६०) पत्र २६ एवं ५३ दो, दो	७	३२	पूर्ण	सं० १८८८ इति श्री विद्वांस मुकुटालकार नीलकण्ठ ज्योतिर्विपुत्रगोविदग्योतिर्विद्विरचिताया मूर्त चिन्तामणि टीकाया पीयूषधारा- मिधायी सविचार विमिवारनयन प्रक- रण समाप्ति सं० १८८८ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	६६७५	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मणिटीका राज्याभिषेक प्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२१	६६७८	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मणि टीका, विवाह प्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२२	६६८६	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मणि टीका, शुभाशुभप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२३	६६७७	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मणि टीका, सत्रातिप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२४	६६८७	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मणि टीका, संस्कारप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२५	६८७५	पैतामहतिद्याति			दे० का०	दे०
४२६	२७३६	ग्रन्थ निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	अ	स द	६	१०	११
२५७ × १२१ सं० मी०	२५ (१-२५)	७ ३५	पू०	स० १८८८	***मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युव- गोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी राजामिषेक प्रकरण समाप्तिमगमत्*** स० १८८८ *** **
२६ × १२१ सं० मी०	१७६ (१-१७६)	७ ३६	पू०	स० १८८८	इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी दिवाह प्रकरण समाप्तिमगमत्॥ स० १८८८ ॥
२५८ × १२२ सं० मी०	१०० (१७-१११)	७ ३०	अपूर्ण	स० १८८८	इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युव गोविंदज्योतिर्विद्विरचि- ताया मुहूर्तचिंतामणिटीकाया पीयूष- धाराभिधायी शुभाशुभ प्रकरण समाप्त वर्मान ॥ स० १८८८ ॥
२६ × १२२ सं० मी०	४२ (१-४२)	७ ३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीवैद्य मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युव गोविंद ज्योतिर्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति । इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नील- कंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्वि- रचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति मगमत् स० १८८८ आश्विन ६ ।
२५७ × १२१ सं० मी०	१३६ (१-१३६)	७ ३३	पू०	स० १८८८	इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति । इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नील- कंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्वि- रचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति मगमत् स० १८८८ आश्विन ६ ।
२७ × ११६ सं० मी०	१२ (१-१२)	११ ४०	पू०	प्राचीन स० १८८७	इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति । इति श्री विद्वद्वैद्य मुकुटालकार नील- कंठ ज्योतिर्वित्युवगोविंद ज्योतिर्विद्वि- रचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी सहासि प्रकरण समाप्ति मगमत् स० १८८८ आश्विन ६ ।
२७ × ११३ सं० मी०	१४	१० ३७	पू०	स० १८१७	इति प्रथम निरुक्त, शुभ प्रयाग संवत् १८१७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आपतसङ्ख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
४२७	१६६	ग्रन्थ ग्रन्थ			२० का०	२०
४२८	३००८	ग्रन्थ ग्रन्थ (हिंदी टीका)			२० का०	२०
४२९	४२१९	ग्रन्थग्रन्थ			२० का०	२०
४३०	४३४२	ग्रन्थचंद्रशेखर			२० का०	२०
४३१	$\frac{२४३२}{७७}$	ग्रन्थचिंतामणि			२० का०	२०
४३२	४८२८	ग्रन्थज्ञान			२० का०	२०
४३३	$\frac{१०२४}{१}$	ग्रन्थ ज्ञानम्	जामिनाथ		२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितसंख्या और प्रति पत्र में प्रसारसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्णमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ प्र	९	१०	११	१२	१३	१४
२०२५१५ सं० भी०	५ (३-७)	७	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१५१५१५ सं० भी०	४ (१-४)	८	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
२३९५१०६ सं० भी०	५ (१-५)	१२	२८	पूर्ण	प्राचीन	ग्रन्थ प्रश्नग्रन्थ लिख्यते (प्रारम्भ) शुभमस्तु सम्पूर्णम्। *** (अंत)
३०५५१५ सं० भी०	१८ (१-१८)	१६	३७	अपूर्ण	सं० १८६४	इति श्री चण्डेश्वर ब्रह्मविद्याय गंगागङ्गा- रूपमाद्यो एकादश X X उमाशङ्कराय नमः सम्मत १८६४ *** पृ० (१८)
१३७५११५ सं० भी०	२३	१८	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति प्रश्नविद्याय नमः ॥
२४२५१०३ सं० भी०	२ (३-४)	६	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२०३५१०८ सं० भी०	७ (१-७)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा उपग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३४	४४७६	प्रश्नतन्त्र	नीलकण्ठ		दे० का०	दे०
४३५	६८४४	प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
४३६	१७५३	प्रश्नदीपक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४३७	३६२०	प्रश्नपारिजात			दे० का०	दे०
४३८	३००० ३	प्रश्नप्रकरण			दे० का०	दे०
४३९	१८३	*प्रश्नप्रवाण			दे० का०	दे०
४४०	४०८०	प्रश्नप्रदीप	वासीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिमख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो बर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ प्र	८	स द	६	१०	११
३० ३ x १५ x सें० मी०	१८ (२-३, ७-२२)	१५ ४७	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति श्री निरुक्त विरचित ज्योतिषि नीमुटा प्रशान्त वरुण समाप्त सं० १६०४ गार १७६६ बंर कृष्णशंकरादश्या भृगुदिने ..
२१५ x १०१ सें० मी०	१	११ ४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ x १००२ सें० मी०	१३ (१-१३)	६ ३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री वागानाथ हृत्तो प्रसन्नदीपक समाप्त ॥ अथ शुभ सत्यगरे श्री नृपति विजयमहाराजे सन् १८७० वर्षे माहात्म्यलमास पोषमास शुक्ल पक्षे शुभतिथी दशम्या (दशम्या) शनिवार वारं मिथ तनुपुत्र स्वाम् पठनाथ ॥ शंभ भवतु ॥
२३ ८ x ११२ सें० मी०	२ (१-२)	१० ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१७२ x ११८ सें० मी०	१६३	१६ २४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ x ८६ सें० मी०	१२	= २६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ज्योतिर शास्त्र सारे प्रश्न शास्त्र प्रश्न प्रश्नसंख्या समाप्त ॥
२१२ x ८७ सें० मी०	११ (१, ३-१४)	६ २८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७६४	इति श्री वागानाथ दिग्विजय प्रश्न प्रश्न समाप्त शुभमस्तु सत्यगरे ॥ अथ १७६४ गार १६७६ क मासि शुनि २ थीम बर तिथि तिथि प्रश्ननाथ स्वाम्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	७३६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४२	७४६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४३	३३११	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४४	२८४६	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४५	११३२	प्रश्नप्रदीप जातक (खटीक)	प० श्रीपति	हीरावाज	दे०, का०	दे०
४४६	१०७८	प्रश्नप्रदीपिका	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
४४७	४४३	*प्रश्नभंडार	गंगाधर देव		दे० का०	

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरपङ्कथा		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बताना ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका घोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	८	१०	११
११ × ७'४ सं० मी०	१२	१०	१८	अ००	प्राचीन	
२४२ × ११२ सं० मी०	८ (३३-३७, ३६-४१)	६	३०	अ००	प्राचीन	
२२५ × १२७ सं० मी०	८ (१-८)	१६	३४	५०	प्राचीन सं० १८४५	इति काशीनाथ कृतो प्रश्नप्रदीपक समाप्त ग्रन्थमस्तु भगवत् दशातु सवत् १८४५ पीपशुक्ल ॥
२३३ × १०५ सं० मी०	१७	७	२८	५०	सं० १६१८	इति श्री काशीनाथ विरचिते प्रश्न-प्रदीपिका समाप्त ॥ सं० १६१८ ॥
३३३ × १२८ सं० मी०	२०	६	४६	५०	प्राचीन	इति श्री कबीरकुमारनाथ पंडित श्रीपति विरचिते प्रश्न प्रदीपाख्य जातिक समाप्तम् ।
२०५ × १० सं० मी०	१६	८	३२	५०	सं० १६१४	इति श्री सर्व विद्या विहारद काशी-नाथ कृतो प्रश्न प्रदीपिका समाप्त ॥ समस्त १६१४ भाद्र १७३६ वैशाख कृष्ण चतुर्दशी १४ कृष्णत मासरे । शुभमस्तु श्री राम निधिर मिथ देवी-सहाय ॥ श्री रत्न ॥ शुभ मस्तु ॥
२४५ × १२३ सं० मी०	२१	११	३८	अ००	सं० १८२०	इति श्री भंडार देवातालय गंगाधर देवदत्त विरचित प्रश्नप्रदीपिका समाप्त सं० १८२० ज्येष्ठ १४ पूर्णिमा शुभ मस्तु निवर्तनीय राय धाम-पटनाई ॥ श्रीमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमर्यादा वा सप्रतिविशेष की संख्या	व्यवनाम	व्यवहार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४८	१०१४	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४४९	१४२१	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५०	११२२	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५१	६६१८	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५२	७३०७	प्रश्नमहोदधि (सटीक)			३० का०	३०
४५३	६६४७	प्रश्नरत्न	मदराम		३० का०	३०
४५४	३२७२	प्रश्नरत्न	मदराम		३० का०	३०

पत्री या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या	क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	अ	स	द	६	१०	११
२६'१×१०'६ से० मी०	४ (१-४)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता प्रश्नमनोरमा समाप्ता ॥ लिखिते सेवाराज स्वको- धार्य ॥ राम शुभभूयात् ॥
२४'४×१३'४ से० मी०	६ (१-६)	१४	३८	पू०	स० १८८३	सवत् १८८३ सरोहदतिभूवत्सरैभक्त- ज्येष्ठमिश्रनीमुरतिदत्तेन लेख्यम भार। द्वान कुले शुभे ॥ सक्षमण सुताभव.।- शुभभूयात् ॥
२०'२×१०'३ से० मी०	७ (१-७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता श्लोक प्रश्न- मनोरमा प्रश्न विद्या समाप्ता ॥ ... लेखिता पुस्तकी सु दरमनोरमप... ॥
१६'६×८'१ से० मी०	२	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति प्रश्न मनोरमा समाप्ता ॥ श्री- कृष्णार्पणमस्तू ॥
२३'१×११'४ से० मी०	८ (१-८)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	
२६'७×११'५ से० मी०	६ (१-६)	१६	६२	पू०	स० १६३१	इति प्रश्नरत्न संपूर्ण ॥ सवत् १६३१ भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्रवारे लिखित ॥
३३'२×१३ से० मी०	१४ (१-१४)	१०	४५	पू०	स० १६०१	इति श्री विभ नंदराम हन केरलि शास्त्रे प्रश्नरत्न नाम ४५ समाप्तम् सवत् १६०१ मिति जेष्ठ शुक्ला नवम्यां रविवाररात्रिवासा समाप्तोप लिपितं वासुदेव समण धरीपदामे ॥ शुभं भूयात् ॥ धी ॥ धी ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५५	८१४	प्रश्नरत्नटिप्पणी			दे० का०	दे०
४५६	१८६७	प्रश्नरत्नस्य	विष्णुराज		दे० का०	दे०
४५७	७२७३	प्रश्नविचार	देवत		दे० का०	दे०
४५८	१३८६	प्रश्नविनिश्चय			दे० का०	दे०
४५९	१४७१	प्रश्नविनोद			दे० का०	दे०
४६०	१४५५	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास		दे० का०	दे०
४६१	१६२०	प्रश्नवैष्णव			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आन्तर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रथम पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	१०	११
२७ ६ × १२ २ से० मी०	४४ (१-४४)	११ ३४	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री स्वकृत प्रश्न रत्नस्य टिप्पणी संपूर्ण ॥ सवत १८६५ भाद्रपद कृष्ण १० गुरुदिने महापुन्य क्षत कनकलेख निर्मित पठनायक्य शुभ ॥
२४ × १५ से० मी०	५	१ ३०	पू०	सं० १९२१	इति श्री विष्णुराज निमित्त प्रश्नरहस्य समाप्त । इदं पुस्तकं लिखित श्रीरामसेन शिव दयाल आत्मज शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु शुभ सवत् १९२१ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टम्या ८ रविवारे
२५ × १२ ७ से० मी०	३ (१-३)	११ ३७	पू०	प्राचीन	इति देवत कृत प्रश्न संपूर्णमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की अंगणसम्पत्ति का संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	यद्यपि वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३४०१	प्रश्नवैष्णव	नारायण दास		दे० का०	दे०
४६३	६६७४	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६४	२६७८	प्रश्नसंग्रह	शिव		दे० का०	दे०
४६५	३७४६	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६६	६१५०	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६७	७००१	प्रश्नसार	मोचि दैवा		दे० का०	दे०
४६८	६८३६	प्रश्नसार	हयग्रीव		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमर्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०	११
३३.८ × १५.७ सें० मी०	३१ (१-३१)	१३	५३	पू०	म० १७५५	इति ब्रह्मदाशपुत्र श्रीनारायणदास सिंह विरचिते प्रश्न वैष्णव शास्त्रे पञ्चदशो- ध्याय. १५ श्री सदात् १८७४ भाद्रपद- मासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ रववासरे शुभमस्तु मंगलदानि लिपित मिद पथी दुर्वागिरधारा
२१.३ × ८.७ सें० मी०	८ (१-८)	११	३०	पू०	प्राचीन शाके १७५३	इति प्रश्न सग्रह. समाप्ता ॥ श्रीराम चन्द्रार्णमस्तु ॥ शके १७५३ चर- सवत्सरे गुजरोपनामक रामचंद्रेण लिखित ॥ श्री गजानन ॥
३१.२ × १४ सें० मी०	६ (१-६)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव विरचित प्रश्नसग्रह समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु
१६ × १३.५ सें० मी०	६ (१-६)	६	१६	पू०	म० १८००	इति प्रणयसाधु ॥ रावत् ॥ १६०० चैत वैदिमादिपथा ॥
२२.५ × १०.३ सें० मी०	४ (१-४)	६	२८	अपू०	प्राचीन	श्री गणेश नमस्तुभ्य श्रीगुरु गिरिजा- पति देवज्ञान हितायार्थ क्रियते प्रश्न संग्रह है —(पादि)
२०.६ × १६.५ सें० मी०	४ (१-४)	१८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्य स्तव नियमित पाचाप वशाद्भय विष्णु देवज्ञानमज गोविंद देवज्ञ विरचिते प्रश्नसार मंगलः ॥
२१.४ × १२.५ सें० मी०	१२ (१-१२)			पू०	प्राचीन म० १६०५	हयग्रीव विरचित प्रश्नसारः सनातनम- गमन् ॥ म० १६०५ ॥

क्रमानुसार क्रम	पुस्तकालय की आगतमध्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	यस विषय वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४६६	४६०१	प्रश्नसार	शङ्खभट्ट		मि० का०	दे०
४७०	४०७६	प्रश्नसार	जीवज्योति		दे० का०	दे०
४७१	२३६४	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७२	२६०३	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७३	१२६४	प्रश्नस्वरूपदश			दे० का०	दे०
४७४	$\frac{१८२०}{२}$	प्रश्नावली			दे० का०	दे०
४७५	८४६	प्रश्नावली	जटभरत		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पवित्संख्या और प्रतिपत्ति मे यक्षरसंख्या	क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष वा विवरण	ग्रथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक दिवरण
८ अ	८	म द	६	१	११
१६५×६६ से० मी०	७ (१-७)	७ २८	पू०	म०१६२	इति श्री मद्रयामन गणेश त्रिमित प्रणसार ग्रथ समाप्तम् १६२७ द्वितीय वर्षाद्य शुक्ला १५ ॥
२३५×११ से० मी०	३ (६-८)	७ २३	अपूर्ण	प्राचीन	इति याज्ञिक तद्वहिर गुन जीव ज्यानि विरचित ग्रन्थसार समाप्त ॥ ५ ५
२२५×६५ से० मी०	६ (१, ३-७)	१० २८	अपूर्ण	म०१६३	इति ग्रन्थसार समाप्तम् ॥ त० १६३६ पूर्वार्ध ४ वर ॥
२६५×११५ से० मी०	६	६ ३०	अपूर्ण	म०१६१३	इति श्री विष्णु देवनात्मज गाविश देवन विरचित ग्रन्थसार समाप्त ॥ आह्वयार्थम् ॥ नवत १६१३ शाक १७७४ माननम माग अथाङ्क नाम शुभे कृष्णपक्ष तिथी १४ चतुदश्या भोयनासर - "
१६×६२ से० मी०	६ (३-११)	८ १६	अपूर्ण	प्राचीन	इति माधारण ग्रन्थसारस्य त्रिपित गावीद्वय - "
१८×१३२ से० मी०	१०	८ १३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतमख्या या संग्रहचिह्नपत्र की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	प्रथम विम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	६६२८	प्राणपद-गायन प्रकार			२० का०	२०
४७७	२६३०	फलविचार			२० का०	२०
४७८	७०७३	फारसी काव्याधिवार	हीरानन्द		२० का०	२०
४७९	६५४२	वालवुद्धि प्रकाशिका	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८०	७०३७	वालवुद्धि-प्रकाशिकी	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८१	६८६८	वानवुद्धि-प्रकाशिकी	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८२	३०१४	वालशोध	मुजादित्य		२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में वर्तित पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक दिवस
८ घ	८	सं द	६	१०	११
२७ ५ × १२ से० मी०	४ (१-४)	१२ ३२	५०	प्राचीन	
२४ × १२ १ से० मी०	२२		अपूर्ण	प्राचीन	

नमाल और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- स्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८३	११८८	बालबोध	मुजादित्यविप्र		दे० का०	दे०
४८४	६८११	बालबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८५	२३३८	बालबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८६	२७३६	बालबोध व्याख्या	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८७	$\frac{७०४३}{४}$	बालबोध (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८८	$\frac{७४७८}{२}$	बालबोध सारसंग्रह	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८९	४२२	बालबोधक (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रतिपङ्क्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बतें- मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	८ स ८ द	८	१०	११
१२८ × १३.३ से० मी०	१७ (३-१७, १६-२०)	११ २८	अपूर्ण	सं० १८४७	इति श्री मुजादित्यविप्रविरचित बाल- बोध प्र समाप्तम् सुभ्रमस्तु सवत् १८४७ साके १७१२ आषाढ यदि ६ शुभ्रमस्तु राम ॥
३३ × १०.६ से० मी०	१७ (१-१३, १६-१६)	१० ३४	अपूर्ण	सं० १८६३	इति श्री मुञ्जा दित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्र बालबोधभाष्या सार सम्बद्ध समाप्तम् ॥ १८६५ शुभ्रमस्तु ॥
७४.५ × ११ से० मी०	१४ (१-११, १३-१४)	६ ३४	अपूर्ण	सं० १७४४	इति श्री मुजादित्येन विरचितं ज्योतिष शास्त्र बालबोधभाष्या सारसम्बद्ध समाप्त सवत् १८४४ ज्येष्ठ शुदि मीने...
७१.५ × १८ से० मी०	१२	१३ १३	पूर्ण	सं० १८१४	इति श्री मुजादित्येन विरचित ज्योतिष शास्त्र बालबोध भाष्या समाप्त ॥ शुभ्रमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥ सवत् १८१४ पौष यदि ३० ॥
१४७ × १३.३ से० मी०	१६	११ १५	अपूर्ण	प्राचीन	